नव-नालन्दा-महाविहार-गन्थमाला

परमत्थजोतिका

(खुद्दक पाठट्ठकथा)



संसोधको

डा० नन्दकिशोर उपाध्याय



नव-नालन्दा-महाविहार-गन्थमाला
बिहाररज्जाणाय पकासिता

परमत्थजोतिका

(खुद्दक पाठट्ठकथा)

पधान संसोधको
डा० चन्द्रिका सिंह 'उपासक'
एम० ए० (द्वय), पी-एच० डी० (लण्डन)
निदेशक,
नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा

संसोधको
डा० नन्दकिशोर उपाध्याय
एम० ए० (हिन्दी, पालि, संस्कृत), पी-एच० डी०
हिन्दी व्याख्याता
नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा



नव नालन्दा महाविहार
नालन्दा (बिहार)

बुद्धाब्द २५२२ ई० १९७८ विक्रमाब्द २०३५

मुख्य वितरक :—

चौखम्बा संस्कृत सिरीज,
गोपाल मन्दिर लेन,
पो० बॉ० नं० ८,
वाराणसी-१
(उत्तर प्रदेश)

मूल्य 24/ रुपये मात्र



मुद्रक :—
बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि० प्रेस,
एक्जीबीशन रोड, पटना-८०००१

Nava Nālandā Mahāvihāra Publication
Published under the authority of
Government of Bihār

THE

PARAMATTHAJOTIKA

(Khuddakapāṭha.aṭṭhakathā)

General Editor,
Dr. C. S. Upasak
M. A. (Double), Ph. D. (London)
Director,
Nava Nālandā Mahāvihāra, Nālandā

Editor,
Dr. Nand Kishor Upadhyay
M. A. (Pali, Hindi, Sanskrit), Ph. D.
Lecturer in Hindi
NAVA NALANDA MAHAVIHARA



NAVA NĀLANDĀ MAHĀVIHĀRA
NĀLANDA (Bihar)

B. E. 2522 C. E. 1978 V. E. 2035

Sole Agents :—
M/s. Chaukhamba Sanskrit Series
Gopal Mandira Lane,
Post Box No. 8,
Varanasi-1
(U. P.)

Price : Rs. only.

Printed by :—
Bihar Rajya Shikshak Sahayog Sangh Ltd. Press,
Exhibition Road, Patna-800001.



The Government of Bihar established the Nalanda Institute of Post-Graduate Studies and Research in Buddhist Learning and Palī (**The Nava Nālandā Mahāvihāra**) at Nalanda in 1951 with the object, *inter alia*, to promote advanced studies and to publish works of permanent value to scholars. This Institute is one of the five others, planned by the Government as a token of their homage to the tradition of learning and scholarship for which ancient Bihar was noted. It has been doing useful work in the field of scholarship for the last twentyfive years.

As part of the programme of rehabilitating and reorientating ancient learning and scholarship, the edition and publication of the *Aṭṭhakatha* have been undertaken with the co-operation of the scholars of the Institute. The Government of Bihar hope to continue to sponsor such projects and trust that this humble service to the work of scholarship and learning would bear fruit in the fulness of time.

प्रधान सम्पादकीय

पालि त्रिपिटक के सुत्तपिटक के अन्तर्गत खुद्दकनिकाय ऐसा विभाजन है जिसमें पन्द्रह ग्रंथ हैं, इसके विपरीत अन्य चार निकायों में एक-एक ग्रंथ हैं। पन्द्रह ग्रंथों का संकलन एक निकाय के अन्तर्गत होना इस बात का द्योतक है कि यह विभाजन अपेक्षाकृत बाद का है। बात भी सही है। इस निकाय के अनेक अंश अन्य निकायों में यत्र तत्र मिलते हैं, और साथ ही कुछ एक ऐसे ग्रन्थ हैं जो भाषा की दृष्टि से भी बाद के प्रतीत होते हैं। इसके जो पन्द्रह ग्रन्थ हैं, वे बुद्धोपदेशित धर्म के लिए अपनी विशिष्टता रखते हैं, साथ ही छोटे एवं सुललित होने के कारण बौद्ध जगत में लोकप्रिय भी हैं।

परम्परा से इन पन्द्रह ग्रन्थों की सूची में 'खुद्दक पाठ' का नाम सबसे पहले आता है। इसे ग्रन्थ न कहकर एक छोटा (खुद्दक) संकलन (पाठ) कहना अत्यन्त उपयुक्त है। यह इतना छोटा है कि इसमें मात्र नौ सुत्त हैं। इसके प्रायः सभी सुत्त मुख्यतः गाथाओं में हैं। कुछ एक सुत्तों में गद्य अंश भी आ गये हैं। इसमें संकलित सुत्त धर्म भावना की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कुछ एक सुत्त तो ऐसे हैं, जो धर्म प्राण बौद्ध समाज के लिए आज भी मङ्गलदायक हैं। इस ग्रन्थ में संकलित महामङ्गल सुत्त का थेरवादी बौद्ध समाज में इतना विशद प्रचार है कि सभी माङ्गलिक अनुष्ठान इसी सुत्त के पाठ से प्रारम्भ होते हैं। 'मेत्तसुत्त' में विश्वमैत्री की रूपरेखा के जो भाव आये हैं, वैसा उदाहरण शायद ही किसी साहित्य में उपलब्ध हो। मैत्रीकरूणा-मुदिता और उपेक्षा के समन्वित रूप को 'ब्रह्मविहार' कहा गया हैं। पूरे ब्रह्माण्ड के आगत अनागत जितने भी जीव हैं, उनके प्रति हमारे मन में एकनिष्ठ मैत्री रहे यही इस सुत्त की मङ्गलमयी भावना है। सत्य, अहिंसा और प्रेम के जिस आदर्श का निरूपण इस सुत्त में हुआ है वैसा आज तक अन्यत्र दुर्लभ ही बना हुआ है। इसी प्रकार 'रतनसुत्त' में बुद्ध, धर्म और संघ के उच्चादर्श की जो प्रतिष्ठापना की गई है वह अपने आप में एक है। बुद्ध महामानव थे। हम सांसारिक लोग उस महामानव के प्रति कृतज्ञ हैं, जिसने संसार से निवृत्त होने की दिशा दिखायी है। ऐसे 'रतन' के प्रति हम कृतज्ञ हैं। इसी प्रकार उनका अनुत्तर धर्म भी हमारे लिए मङ्गलकारी है, और उनके द्वारा प्रतिष्ठापित संगठित एवं सुशिक्षित संघ भी हमारे लिए पूज्य है क्योंकि यह भी बुद्ध से प्रादूर्भूत है। अतः ये दोनों 'रतन' भी संसार में सर्वोत्तम रतन हैं ओ आज भी उसी तरह प्रभास्वर है।

इन कुछ एक महत्वपूर्ण सुत्तों के अतिरिक्त अन्य सुत्त भी किसी न किसी प्रकार बुद्ध के द्वारा प्रतिष्ठापित अनित्य, अनात्म दुःख, और प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धान्त का प्रकारान्तर से प्रतिनिरूपण करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी लोकप्रियता तथा कुछ एक सुत्तों में आगत सूक्ष्म धर्म-तत्व विवेचन के कारण ही संभवतः इसकी अट्ठकथा लिखी गयी। छोटा ग्रन्थ होने के कारण अपेक्षाकृत अट्ठकथा का आकार भी छोटा है। इसी कारण खुद्दकनिकाय के एक अन्य ग्रन्थ सुत्तनिपात की अट्ठकथा को भी समन्वित कर 'अट्ठकथा का नाम' परमत्थजोतिका दिया गया, यद्यपि दोनों अट्ठकथाओं के अंश भी अलग-अलग दे दिये गये हैं। इस प्रकार हम यह भी कह सकते हैं कि परमत्थजोतिका का एक अंश खुद्दकपाठ-अट्ठकथा है और दूसरा अंश सुत्तनिपात-अट्ठकथा है।

× × ×

थेरवादी बौद्ध जगत में भिन्न-भिन्न लिपियों में त्रिपिटक तथा उस पर लिखी गयी अट्ठकथायें आज भी उपलब्ध हैं। नव नालन्दा महाविहार (नालन्दा पालि प्रतिष्ठान) ने अपने कार्यक्रमों में सम्पूर्ण पालि साहित्य को देवनागरी लिपि में प्रकाशित कराने की एक योजना बनायी। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण पालि त्रिपिटक वर्षों पूर्व देवनागरी लिपि में प्रकाशित हो चुका है। इसके बाद हमने अट्ठकथाओं के प्रकाशन का कार्य किया। अब तक हमने अधिकांश अट्ठकथाओं का प्रकाशन कर लिया है। थोड़ा शेष है जिसे हम यथा-शीघ्र प्रकाशित करने में प्रयत्नशील हैं। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत हम 'परमत्थजोतिका' के अन्तर्गत खुद्दकपाठ अट्ठकथा को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पूर्व महाविहार ने परमत्थजोतिका के अन्तर्गत सुत्तनिपात अट्ठकथा का प्रकाशन कर दिया है। इस अट्ठकथा का सम्पादन हमारे विद्वान सहयोगी डा० नन्दकिशोर उपाध्याय ने बड़े ही मनोयोग और निष्ठापूर्वक सम्पन्न किया है। डा० उपाध्याय ने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखी है जो, हमारा विश्वास है कि यह अट्ठकथा बौद्ध विद्या के विद्वान विशेषकर प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्वेषकों के कार्य में सहायक सिद्ध होगी। इसी प्रकार भाषा विज्ञान तथा भारतीय संस्कृति के विद्यार्थियों के लिए भी यह ग्रन्थ सन्दर्भ के लिए उपयोगी होगा।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि हमारे इस प्रयास में पालि के विद्वानों का ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

सी० एस० उपासक

२१-३-७८

निदेशक

नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा (विहार)

प्राक्कथन

भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त विहार सरकार का ध्यान अपने गौरवमय अतीत की ओर आकृष्ट हुआ। नालन्दा, बैशाली, मिथिला और पाटलिपुत्र के स्मरण मात्र से ही हम गौरवान्वित हो उठते हैं। नालन्दा में दुनियाँ का पहला और शायद सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था। जैसा नाम से पता चलता है, नालन्दा महाविहार बौद्धविश्वविद्यालय था। महाविहार का अर्थ ही होता है 'बौद्ध विद्या का सर्वोच्च केन्द्र'। किन्तु इस विश्वविद्यालय में बौद्धेतर विषयों की भी पढ़ाई होती थी। ब्रह्मवेताओं और जनक की भूमि मिथिला में कालान्तर में ब्राह्मण न्याय का भारत प्रसिद्ध केन्द्र बन गया। सदियों तक बौद्ध न्याय के गढ़ नालन्दा से इसका बौद्धिक संघर्ष चलता रहा। इस संघर्ष ने हमें दिङ्नाग, शीलभद्र, शंकरस्वामिन्, धर्मकीर्ति, चन्द्रकीर्ति, कमलशील, वाचस्पति मिश्र, वात्स्यायन, उदयनाचार्य, उद्दोतकर और रत्नाकरशान्ति जैसे विद्वानों को प्रदान किया। यह हमारे प्राचीन इतिहास का गौरवमय अध्याय है। इस अध्याय को उजागर करने के लिए एवं इन पुनीत स्थानों में प्राचीन गौरव को पुनः प्रतिष्ठापित करने की दृष्टि से नवनालन्दा महाविहार और मिथिला संस्कृतशोध जैसे संस्थानों का सरकार द्वारा १९५१ ई० में निर्माण किया गया। इसी समय भगवान महावीर की पुण्यभूमि वैशाली में प्राकृतशोध संस्थान और पटना में जायसवाल शोधसंस्थान तथा हिन्दी राष्ट्रभाषा परिषद की स्थापना की गयी। यह सांस्कृतिक निर्माण का संक्रान्ति काल था। महापंडित राहुल सांकृत्यायन, भिक्षु जगदीश काश्यप, डा० हीरालाल जैन, डा० परशुराम लक्ष्मण वैद्य, डा० काशीप्रसाद जायसवाल तथा अनन्त सदाशिव अल्टेकर जैसे विद्वान इस पुनर्जागरण और नवनिर्माण की भूमिका निभा रहे थे। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डा० श्रीकृष्ण सिंह, बिहार के शिक्षा मंत्री आचार्य बदरीनाथ वर्मा तथा बिहार के शिक्षा सचिव डा० जगदीशचन्द्र माथुर ने अपने प्रशासकीय सहयोग से इसे मूर्त्त रूप प्रदान किया।

नवनालन्दा महाविहार के निर्माण में विदेशों का पूर्ण योगदान रहा है। श्री लंका, बर्मा, थाईलैंड, वियत्तनाम, लाओस, कम्बोडिया, चीन, तिब्बत जापान आदि देशों में इसके लिए काश्यप जी ने मिशिनरी ढंग से काम किया। यह इसी का प्रतिफल था कि नालन्दा के शिलान्यास के अवसर पर इन देशों ने अपने-अपने राष्ट्राध्यक्ष और विशेष दूतों को भेजकर नालन्दा की शोभा बढ़ायी। इसी अवसर पर इन देशों ने अपने-अपने देश की लिपियों में बौद्ध

ग्रंथों का प्रदान किया। बौद्ध साहित्य के ग्रंथों की संख्या विशाल है। बौद्धधर्म मुख्यतः दो भागों में विभक्त है—स्थविरवाद और महायान। स्थविरवाद के सभी ग्रंथ पालि भाषा में हैं, इनका विकास श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया तथा वियत्तनाम आदि एशिया के दक्षिण पूर्वी देशों में हुआ। महायान के विपुल ग्रंथ बौद्ध संस्कृत में लिखित थे। इनका विकास चीन, जापान तथा तिब्बत के देशों में हुआ। दुर्भाग्य की बात है कि इन दोनों सम्प्रदायों के सारे के सारे ग्रंथ भारत से विलुप्त हो गए।

स्थविरवाद का विशाल साहित्य पालि भाषा में सिंहली और बर्मी लिपि में सुरक्षित था। नालन्दा के निर्माण होने पर इन देशों ने इसे अपना सम्पूर्ण साहित्य प्रदान कर दिया। महायान के विपुल ग्रंथ, जो मूलतः संस्कृत में थे, चीनी और तिब्बती अनुवादों में आज भी सुरक्षित हैं। चीनी यात्री ह्वेनसांग नालन्दा के छात्र थे। वर्षों नालन्दा रहकर अनेक प्रसिद्ध ग्रंथों का चीनी में अनुवाद किया और कुछ स्वतंत्र ग्रंथों की भी रचनाएं की। ह्वेनसांग अपने साथ अनेक ग्रंथ चीन लेते गए। कुछ यहाँ के विद्वान चीन जाकर यहाँ के ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। इस तरह महायान का विशाल साहित्य चीनी स्रोतों में उपलब्ध है। तिब्बती स्रोतों में भी महायान के ग्रंथ उपलब्ध हैं। महामति राहुल सांकृत्यायन ने हजारों की संख्या में भोटदेश की भाषा में महायान के ग्रंथों को भारत ले आने में सफलता प्राप्त की। ये सभी ग्रंथ काशीप्रसाद जायसवाल शोधसंस्थान, पटना में सुरक्षित हैं। इसे उन्होंने नालन्दा के लिए लाया था, किन्तु उस समय नालन्दा का निर्माण नहीं होने के कारण यहाँ उन्हें रखा गया। काश्यप जी चीन जाकर चीनी सरकार को नालन्दा के लिए प्रेरित करने में सफल हुए। इतिहास ने पलटा खाया। ह्वेनसांग की पवित्र अस्थियों के साथ-साथ पाँच लाख रुपये और चीनी ग्रंथों को नालन्दा के एक बड़े समारोह में, भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू को, चीनी सरकार ने तिब्बत के धर्म गुरु दलाई लामा के माध्यम से समर्पित किया। अब नालन्दा को सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य प्राप्त हो गया। ग्यारह लाख की लागत से ह्वेनसांग मेमोरियल भवन का निर्माण हो गया है। किन्तु अब तक उसमें चीनी और तिब्बती ग्रंथ नहीं जा सके हैं, ह्वेनसांग की अस्थियाँ भी नहीं जा सकीं हैं। यह चीनी और भारतीय संस्कृति के अध्ययन की बहुत बड़ी योजना है। स्वर्गीय पंडित नेहरू के इस अधूरे कार्य को उनकी सुपुत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ही पूर्ण कर सकती हैं। शायद समय प्रतीक्षा में है।

नालन्दा अपने कार्य में प्रयत्नशील हैं। इसका निर्माण पालि विद्या के शोध और अध्ययन के लिए हुआ है। अतः महाविहार का यह नैतिक दायित्व था कि सिंहली और बर्मी लिपि में उपलब्ध पालि ग्रंथों को पाठकों के लिए

देवनागरी लिपि में उपलब्ध करा दे। इसके लिए काश्यप जी ने योजनाबद्ध रीति से काम किया। उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से सम्पूर्ण त्रिपिटक को ४१ जिल्दों में देवनागरी लिपि में प्रकाशित कर एक अभूतपूर्व काम किया। वे इसका हिन्दी अनुवाद भी करना चाहते थे। इस तरह सदियों से निर्वासित बौद्धसाहित्य का एक अंश हमें उपलब्ध हो गया। काश्यप जी तो मिशीनरी थे, चुप कैसे बैठते। बिहार सरकार की सहमति से त्रिपिटक की अट्ठकथाओं (भाष्य) के प्रकाशन की भी योजना बनायीं। इस योजना के अन्तर्गत महाविहार ने अबतक कई ग्रंथों का प्रकाशन किया है। संक्षिप्त पालि त्रिपिटक के प्रकाशन की योजना भी उन्हीं की थी। इन दोनों के प्रकाशन की उनकी अपनी नयी योजना थी। इसे वे एक टीम के रूप में पूरा करना चाहते थे। क्योंकि इससे ग्रंथ, भाषा और उसके इतिहास में एक क्रमबद्धता होती, किसी खास निष्कर्ष की मान्यता होती, कितने ही अन्धकारपूर्ण स्थलों का उद्घाटन होता और टूटे इतिहास की कड़ियों में एक नयी श्रृङ्खलाएं आबद्ध होती। संक्षिप्त त्रिपिटक की भी उनकी कुछ दूसरी ही योजना थी। सम्पूर्ग दक्षिण पूर्व के बौद्ध देशों के विद्वानों की सभा में इस संक्षिप्त त्रिपिटक की प्रमाणिकता की सम्पुष्टि होती, मूल बुद्धवचन एक भाग में होते, भिक्षुओं द्वारा उपदिष्ट सुत्त दूसरे भाग में होते, मात्र पेय्याल को हटाकर इसके कलेवर को काट-छाँटकर ही नहीं बल्कि इसके सारतत्व को नए रूप में उपस्थित किया जाता और तब यह त्रिपिटक से अपने कलेवर और स्वरूप में एकदम भिन्न होता। अगर महाविहार और प्रशासन नालन्दा में थेरवाद बौद्ध देशों के विशिष्ट भिक्षुओं की सभा बुलाने में सफल हो जाय तो यह भी बहुत बड़ी उपलब्धि हो।

प्रस्तुत ग्रंथ परमत्थजोतिका अर्थात् खुद्दकपाठट्ठकथा अट्ठकथा योजना के अन्तर्गत एक प्रस्तावित ग्रंथ है। देवनागरी लिपि में प्रथम बार इसका प्रकाशन हो रहा है। इसके प्रकाशन का आधार बर्मा के षष्ट संगायन १९५८ के प्रकाशित बर्मी लिपि का ग्रंथ है। नालन्दा देवनागरी त्रिपिटक प्रकाशन की प्रणाली और प्रक्रियाएं इसमें अपनायी गयी हैं। सिंहली, स्यामी और रोमन लिपियों में प्रकाशित प्रतियों द्वारा इस संस्करण को तुलनात्मक बनाया गया है। विभेदवाले अंशों को पादटीप्पणियों में दे दिया गया है। आवश्यकतानुसार शीर्षक तथा उपशीर्षक आदि में परिवर्तन किये गए हैं। त्रिपिटक के सन्दर्भ देवनागरी नालन्दा प्रकाशन से उद्धृत किये गए हैं। बर्मी और रोमन प्रतियों की पृष्ठ संख्या उपयुक्त स्थान पर अंकित कर दिये गए हैं।

यह मेरा सौभाग्य था कि विगत १२ वर्षों तक लगातार पूज्य काश्यप जी के एकदम निकट रहकर पालि साहित्य और बौद्ध दर्शन पढ़ने का अवसर मिला। शोध प्रबन्ध लिखने के क्रम में उनके चरणों में बैठकर सम्पूर्ण त्रिपिटक

को पढ़ने का कई बार अवसर मिला। आज इस क्षेत्र में मेरा जो कुछ भी है, वह सब उन्हीं का है, और यही इसके सम्पादन का सम्बल है। मनुष्य की काया में इस देवतुल्य बोधिसत्व[१] के श्री चरणों में श्रद्धायुक्त प्रणाम है। यद्यपि वे आज नहीं हैं, किन्तु उनका धर्मकाय इसे अवश्य स्वीकार करेगा। इसके अतिरिक्त जो मेरी भौतिक उपलब्धियाँ हैं, उसके लिए मैं अपने आचार्य डा० नथमल टाटिया भूतपूर्व निदेशक, नवनालन्दा महाविहार एवं वर्त्तमान निदेशक, जैन विश्वभारती राजस्थान का पूर्णरूपेन कृतज्ञ हूँ।

वर्त्तमान निदेशक एवं प्रस्तुत ग्रंथ के प्रधान संशोधक डा० चन्द्रिका सिंह उपासक जी ने इसके सम्पादन का मुझे सुअवसर प्रदान किया है। आपने मुझे ललितविस्तर जैसे बौद्ध-संस्कृत के ग्रंथ के अनुवाद का भार दिया है, जिसके कई अंश पूर्ण हो चुके हैं। अपने पालि हिन्दी शब्दकोश प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत मुझे भी कार्य देकर मेरा मार्ग प्रशस्त किया है। प्रस्तुत ग्रंथ के सम्पादन में आपकी सदाशयता को बड़ा ही महत्वपूर्ण माना जा सकता है। प्रथम संगीति के अवसर पर ही त्रिपिटक का लिखा जाना, लंका में वट्टगामिनी अभय के समय त्रिपिटक एवं अट्ठकथाओं का मात्र लिप्यान्तरण करना, 'सकाय निरुत्तिया' के अर्थतत्व में भावतत्व का प्रतिबोध कराना आदि दुरूह स्थलों के रहस्योदघाटन में आपकी सहायता की बड़ी अपेक्षा थी। आपके साथ मेरा सम्बन्ध रेखागणित के दो समानान्तर सरल रेखा के सिद्धान्त पर आधारित रहा है, अतः इस परिप्रेक्ष्य में आपकी उपर्युक्त सहायता का बड़ा महत्व हो जाता है। आचार्य! आप स्तुत्य हैं। हिन्दी साहित्य के दो प्रकाण्ड विद्वान प्रोफेसर केसरी कुमार, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय एवं डा० कुमार विमल, अध्यक्ष लोक सेवा आयोग की सदाशयता एवं सत्प्रेरणा के लिए हम आभारी हैं। श्री जनार्दन प्रसाद शर्मा अधिवक्ता विहार शरीफ के प्रति आभार प्रकट करने के लिए वाणी मौन हो जाती है। डा० महेश तिवारी, अध्यक्ष पालि विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, इस कार्य के आदि प्रेरक रहे हैं। आप हमारे आचार्य भी हैं, आपकी कृपा बनी रहे यही कामना है। श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी, पुस्तकाध्यक्ष संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी एवं श्री श्यामदेव द्विवेदी, अवर सचिव पुस्तकालय विधान सभा, पटना से भी कई प्रकार की सहायता मिली है, आप दोनों स्मरणीय हैं। श्री मुसाफिर सिंह एम० ए० को अपेक्षित सहायता के लिए धन्यवाद हैं।

---

१. जापान के विद्वान् सन्त फूजी गुरूजी ने भी रत्नगिरि शान्तिस्तूप के अपने उद्घाटन भाषण में इन्हें बोधिसत्व का अवतार माना है।

डा० अंगराज चौधरी, डा० नन्दकिशोर प्रसाद, डा० पारसपति नाथ सिंह एवं श्री मिथिलेश्वर प्रसाद के सम्पादित पुस्तकों से पथ प्रदर्शन हुआ है। दूसरे रूप में आपके कई प्रकार के सहयोग भी मिले हैं, आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने सहयोगी प्रो० श्री उमाशंकर व्यास, डा० विजय कुमार शर्मा, प्रो० श्री कृष्णा चौधरी जी का स्मरण करना आवश्यक है। आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तकाध्यक्ष के अतिरिक्त पुस्तकालय विभाग के श्री छोटन प्रसाद एम० ए०, श्री हरिप्रसाद एवं श्री राजेन्द्र प्रसाद पुस्तकों की यथासम्भव उपलब्धि कराते रहे, आप सबों की मंगल कामना करता हूँ।

डा० सुरेन्द्रकुमार, व्याख्याता तिब्बती शोध संस्थान सारनाथ, वाराणसी, ने अपनी पूरी तत्परता एवं मनोयोग से इसके प्रूफ देखने का काम किया है, इसके लिए साधुवाद देता हूँ, साथ-साथ मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। इनके अधूरे कार्य को उतनी ही तत्परता से डा० सत्येन्द्र प्रसाद सिंह, व्याख्याता बी०डी० इवनिंग कालेज मीठापुर, पटना, ने पूर्ण किया, इसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। कामना है आपका भविष्य सुन्दर हो।

विहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ प्रेस, पटना के पदाधिकारी श्री जगधारी पाण्डेय और श्री ठाकुर प्रसाद सिंह की तत्परता का ही फल है कि समय पर इसका प्रकाशन हो सका। श्री योगेन्द्र तिवारी, श्री रामप्रसाद जी एवं श्री उदयनारायण को भी साधुवाद है।

शुद्धि पत्र लगाने की आवश्यकता नहीं प्रतीत हुयी है, क्योंकि उसकी अशुद्धि होने पर फिर क्या किया जाएगा? अतः लोग सुधार कर स्वयं पढ़ लेंगे, यही अपेक्षा है। इसके आदि से अन्त तक के सभी काम मैंने स्वयं ही किया है। अतः जो दोष होंगे वह मेरे ही।

नन्दकिशोर उपाध्याय

भूमिका

परमत्थजोतिका—(खुद्दकपाठ अट्ठकथा) खुद्दकपाठ की अट्ठकथा

(क) **खुद्दकनिकाय** :—'परमत्थजोतिका' खुद्दकनिकाय के प्रथम ग्रंथ 'खुद्दक पाठ' की अट्ठकथा है। खुद्दकनिकाय सुत्तपिटक का पाँचवाँ 'निकाय' है। सर्वास्तिवादी परम्परा में खुद्दकनिकाय को 'क्षुद्रकागम' कहा गया है। सम्पूर्ण त्रिपिटक में खुद्दकनिकाय सर्वाधिक विवादास्पद 'निकाय' है। सुमङ्गलविलासिनी के अनुसार खुद्दकनिकाय के ये १५ ग्रंथ हैं :—

(१) खुद्दकपाठ (२) धम्मपद (३) उदान (४) इतिवुत्तक (५) सुत्त-निपात (६) विमानवत्थु (७) पेतवत्थु (८) थेरगाथा (९) थेरीगाथा (१०) जातक (११) निद्देस (१२) पटिसम्भिदामग्ग (१३) अपदान (१४) बुद्धवंस और (१५) चरियापिटक।

किन्तु 'मज्झिम भाणकों' की इस मान्यता का 'दीघभाणकों' ने विरोध किया है और उन लोगों ने खुद्दकनिकाय के ग्रंथों की गणना अभिधम्मपिटक के अन्तर्गत की है[1]। दीघभाणकों ने खुद्दकपाठ, चरियापिटक, बुद्धवंस और अपदान के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिया है[2]। प्रथम संगीति के अवसर पर महाकाश्यप आनन्द से पूछते हैं "सुतन्तपिटके चतस्स संगीतियो, तासु पठमं कतरं संगीतिं ति[3]"? सुत्तपिटक में चार संगीतियाँ हैं—पहले किसका संगायन करना होगा? अट्ठसालिनी से ही पता चलता है कि सम्पूर्ण विनयपिटक, सम्पूर्ण अभिधम्मपिटक तथा खुद्दकपाठ आदि १५ ग्रंथ सभी खुद्दकनिकाय के अन्तर्गत गिने गये हैं—'सकलं विनयपिटकं अभिधम्मपिटकं खुद्दकपाठादयो च पुब्बे निदस्सित पंचदसभेदा, ठपेत्वा चत्तारो निकाये अवसेसं बुद्धवचनं ति अयं खुद्दकनिकायो[4]'। इस गणना में मात्र चार निकायों को छोड़ दिया गया है। अभिधम्म 'धम्म' का 'सुत्त' का परिशिष्ट है। सुत्त के अतिरिक्त सभी अभिधम्म हैं, अतिरिक्त धर्म है—श्रेष्ठ धर्म है। सिंहल देश की परम्परा में खुद्दकनिकाय के १५ ग्रंथों में से निद्देस (चुल्लनिद्देस और महानिद्देस) को दो मानकर इसकी संख्या १६ मानते हैं।

---

१. सुमङ्गलविलासिनी—निदानकथा।

२. अट्ठसालिनी—निदानकथा।

३. सुमङ्गलविलासिनी—डा० महेश तिवारी, पृ०—१९।

४. खुद्दकपाठो धम्मपदं उदानं इतिवुत्तकं सुत्तनिपातो विमानवत्थु पेतवत्थु थेरगाथा थेरीगाथा जातकं निद्देसो पटिसम्भिदामग्गो अपदानं बुद्धवंसो चरियापिटकं विनयपिटकं अभिधम्मपिटकं ति अयं खुद्दक निकायो—गन्धवंस-५७

बर्मा में मिलिन्दपञ्ह, सुत्तसंगह, पेटकोपदेस और नेत्तिपक्करण को जोड़कर खुद्दकनिकाय के ग्रंथों की संख्या १९ मानते हैं[१]। १८९४ ई० के प्रकाशित स्यामी संस्करण में विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, जातक, अपदान, बुद्धवंस और चरियापिटक को खुद्दकनिकाय में सम्मिलित नहीं किया गया है। चीनी आगमों में स्वतंत्र निकाय के रूप में खुद्दकनिकाय का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। स्थविरवादी और सर्वास्तिवादी दोनों ही परम्पराओं में चार निकायों की ही प्रधानता दीख पड़ती है[२]। जो हो, किन्तु दीघ भाणक और मज्झिम भाणक भिक्षुओं के आपसी मतभेद से इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि प्रथम संगीति काल से ही खुद्दकनिकाय कमोवेश रूप मे अपना अस्तित्व ग्रहण कर चुका था। तृतीय संगीति तक इसमें परिवर्त्तन और परिवर्द्धन होते रहे। थेरगाथा की कुछ गाथाएँ अशोक के समय की मानी गयी हैं, क्योंकि इसमें अशोक के भाई वीतसोकथेर की गाथाएँ भी सम्मिलित हैं। भारहुत और साँची के स्तूपों में कई जातक कथाओं के चित्रण देखने को मिलते हैं। इन स्तूपों का समय ईसा से ३०० वर्ष पूर्व का माना गया है। प्रथम शताब्दी ई० पूर्व के ग्रंथ मिलिन्द पञ्हों में खुद्दकनिकाय के ग्रंथों की चर्चा मिलती है।

उपर्युक्त बातों को अगर एकाग्र रूप से देखा जाय तो यह स्पष्ट होगा कि खुद्दकनिकाय के मात्र पाँच ग्रंथ प्रामाणिक होंगे। इसे इस प्रकार देखें—

(क) प्रथम संगीति के अवसर पर दीघभाणक भिक्षुओं द्वारा अप्रमाणिक ग्रंथ :—

(१) बुद्धवंस (२) चरियापिटक (३) अपदान।

(ख) द्वितीय संगीति के भिक्षुओं ने जिन्हें अप्रमाणिक बताया :—

(१) पटिसम्भिदामग्ग (२) निद्देस (३) जातक (कुछ अंशों को छोड़कर)

(ग) स्यामी परम्परा ने जिन ग्रंथों को स्थान नहीं दिया :—

(१) विमानवत्थु (२) पेतवत्थु (३) थेरगाथा (४) थेरीगाथा (५) जातक (६) अपदान (७) बुद्धवंस और (८) चरियापिटक।

इस प्रकार (१) विमानवत्थु (२) पेतवत्थु (३) थेरगाथा (४) थेरीगाथा (५) जातक (६) अपदान (७) बुद्धवंस (८) चरियापिटक (९) पटिसम्भिदामग्ग और (१०) निद्देस अप्रमाणिक ग्रंथ हैं।

---

१. पालि लिटरेचर आफ बर्मा—मेबिल बोड़, पृष्ठ-५।

२. खुद्दकपाठ की अट्ठकथा परमत्थजोतिका में प्रथम संगीति के अवसर पर ही खुद्दकनिकाय के ग्रंथों के संगायन का उल्लेख मिलता है —

"इमिस्सा पठम महासङ्गीतिया वत्तमानाय सब्बं दीघनिकायं मज्झिमनिकायादिं च पुच्छित्वा अनुपुब्बेन खुद्दकनिकायं पुच्छन्तेन......भासितं"—

परमत्थजोतिका, पृ०—११७।

शेष ग्रंथ (१) खुद्दकपाठ (२) धम्मपद (३) सुत्तनिपात (४) उदान और (५) इतिवुत्तक बच जाते हैं। खुद्दकपाठ को छोड़कर शेष चार ग्रंथ चीनी अनुवाद में भी उपलब्ध हैं। हो सकता है कि पहले सुत्तपिटक को चार निकायों के अन्तर्गत रखने की प्रणाली ही थी, बाद में यह एक स्वतंत्र ग्रंथों का निकाय ही बन गया जिसकी न तो ग्रंथ संख्या ही ठीक-ठीक ज्ञात है और न यह ही कि इसे किस पिटक में रखा जाय—सुत्तपिटक में या अभिधम्मपिटक में। खुद्दक पाठ कई ग्रंथों के सुत्तों का संकलन है। सम्भवतः इसी कारण चीनी अनुवादकों ने इसका अनुवाद न किया हो। अकेले सुत्तनिपात के तीन सुत्त इसमें संकलित हैं। इस तरह उपर्युक्त पाँच ग्रन्थ खुद्दकनिकाय के प्रामाणिक ग्रंथ हैं, इसे निर्विवाद रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

(ख) **खुद्दकपाठ** :—'खुद्दकपाठ' खुद्दकनिकाय का प्रथम ग्रंथ है। यह एक अत्यन्त लघु ग्रंथ है। इसमें मात्र ९ सुत हैं:—(१) सरणत्तय (२) दससिक्खापद (३) द्वतिसाकार (४) कुमारपञ्ह (५) मङ्गलसुत्त (६) रतनसुत्त (७) तिरोकुड्डसुत्त (८) निधिकण्डसुत्त और (९) मेत्तसुत्त।

मङ्गलसुत्त, रतनसुत्त और मेत्तसुत्त सुत्तनिपात में भी हैं। सुत्तनिपात में मङ्गलसुत्त को महामङ्गलसुत्त कहा गया है। तिरोकुड्डसुत्त पेतवत्थु में है। तीन शरण और दस शिक्षापदों के विवरण विनयपिटक में मिलते है। दीघनिकाय के संगीतिपरियायसुत्त एवं दसुत्तरसुत्त तथा विनयपिटक में 'कुमारपञ्हों' के उत्स मिलते हैं। ३२ आकारों का वर्णन दीघनिकाय और मज्झिमनिकाय के महासतिपट्ठान और सतिपट्ठान जैसे सुत्तों में मिलता है। महासतिपट्ठान में ३१ अङ्गों का वर्णन है, किन्तु खुद्दकपाठ में ३२ अङ्गों का वर्णन है मत्थके मत्थलुंगं यहाँ एक अधिक है। कायगतासति का बौद्धयोग में अत्यधिक महत्व है। संयुत्तनिकाय, धम्मपद एवं उदान में इसके महत्व पर प्रकाश डाला गया है[1]। इस प्रकार त्रिपिटक के कुछ चुने हुए सुत्तों का यह लघु संग्रह है। मात्र निधिकण्डसुत्त इस संकलन का अपना सुत्त है।

खुद्दकपाठ यद्यपि छोटा है, किन्तु बौद्धदेशों में इसका महत्व अत्यधिक हैं। वहाँ परित्त या महापरित्त के रूप में इसके सुत्तों का प्रयोग किया जाता है। परित्त का अर्थ ही है परित्राण। भिक्षुओं और गृहस्थों की रक्षा के उद्देश्य से सुत्तपिटक के लगभग ३० सुत्तों का एक अलग ही संग्रह कर लिया गया है। इस संग्रह को परित्त या महापरित्त कहते हैं। लंका और वर्मा में परित्त पाठ का बहुत बड़ा महत्व है। मेबिल बोड़ का कथन है कि बर्मा में इससे अधिक कोई लोकप्रिय ग्रंथ दूसरा है ही नहीं।

"The Paritta or Mahaparitta, a small collection of texts gathered from the Suttapitaka, is to this day, more widely known by the Burmese Laity of all classes than any other Pali book"[2].

---

१. कस्सपसुत्त—सं० नि०—. , धम्मपद—२१/१०/उदान पृ० ५८ एवं १०५.
2. The Pali Literature of Burma—Mabel Haynes Bode P. 3.

खुद्दकपाठ के ९ सुत्तों में से सात सुत्त परित्त में भी सम्मिलित है। इससे भी खुद्दकपाठ की लोकप्रियता का पता चलता है। परित्तपाठ की प्रथा बुद्धकालीन है, स्वयं बुद्ध की देन है। रतनसुत्त से पता चलता है कि वैशाली में दुर्भिक्ष के समय स्वयं भगवान् बुद्ध ने राजगृह से वैशाली जाकर रतनसुत्त का पाठ किया था और वैशाली नगरवासियों को दुर्भिक्ष और महामारी से त्राण मिला था। आर्य महाकाश्यप की बीमारी के समय स्वयं बुद्ध ने 'बोज्झाङ्ग' सुत्त का पाठ किया था। स्वयं बुद्ध की बीमारी के समय महाचुन्द स्थविर ने बोज्झाङ्ग सुत्त का पाठ किया था। गिरिमानन्द भिक्षु के रोग परिशमन हेतु भगवान् बुद्ध ने आनन्द को 'दससञ्ञासूत्र' के पाठ करने का आदेश दिया था। "सचे खो त्वं आनन्द ! गिरिमानन्दस्स भिक्खुनो उपसंकमित्वा दस सञ्ञा भासेय्यासि, ठानं सो पनेतं विज्जति यं गिरिमानन्दस्स भिक्खुनो दस सञ्ञा सुत्वा सो आवाधो ठानसो पटिप्पस्सयेय्या"[1]। इस अर्थ में परित्त भगवान् बुद्ध के उपदेश हैं—"परित्ता च भगवता उद्दिट्ठाति"[2]। इन परित्तों का धार्मिक महत्व चाहे जो भी हो, इसका मनोवैज्ञानिक महत्व भी है। उदात्त भावनाओं से परिप्लावित हो जाना मनोविकारों से ऊपर उठ जाना है, जो शरीर को और साथ-साथ मन को हल्का कर देता है। मनोविश्लेषण पद्धति के जनक डॉ० फ्रायड ने भी इसे स्वीकार किया है कि मन के स्तरों को खोलकर अलग-अलग कर देने से कई मानसिक रोगों का परिशमन हो जाता है। I D की व्याख्या में उन्होंने इसे स्पष्ट किया है।

इस परिप्रेक्ष्य में इतना तो सुस्पष्ट है कि खुद्दकपाठ अपनी 'लघिमा' में त्रिपिटक साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। परमत्थजोतिका इसी महत्वपूर्ण ग्रंथ 'खुद्दकपाठ' की अट्ठकथा है।

(ग) अट्ठकथा :—अट्ठकथा अर्थात् अर्थकथा को संस्कृत का भाष्य कह सकते हैं। शब्द कल्पद्रुम में भाष्य की परिभाषा इस प्रकार दी गई है—

सूत्रार्थो वर्ण्यतेयत्र, वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं, भाष्यविदो विदुः॥

शिशुपालबध नाटक में महाकवि भास ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है—

संक्षिप्तस्याप्यतोऽस्यैव वाक्यस्यार्थ गरीयसः।
सुविस्तरता वाचो भाष्यभूता भवन्तु मे॥

संस्कृत के भाष्य इस परिभाषा पर पूरे उतरते हैं। किन्तु पालि अट्ठकथा (अर्थकथा) इससे कुछ भिन्न है, कुछ दूसरी ही है। इसमें मात्र सूत्र के अर्थ का सुविस्तार ही नहीं है, बल्कि अर्थ की व्याख्या के साथ-साथ उसकी ऐतिहासिकता,

---

१. गिरिमानन्द सुत्त—अ० नि० ४-१८५.
२. मिलिन्द पञ्हो—१५३.

भौगोलिकता एवं उसके अविच्छिन्न पारम्परिकता के एक तारतम्य का भी बोध कराता है। बौद्ध धर्म के पच्चीस सौ वर्ष में भी इसकी ऐसी ही व्याख्या मिलती है[१]।

पालि अर्थकथा साहित्य का अपना एक अलग इतिहास है। सामान्यतः यह कहा जाता रहा है कि चौथी-पांचवीं शताब्दी के बुद्धदत्त, बुद्धघोष, और धर्मपाल जैसे विद्वानों ने पालिअट्ठकथा साहित्य का निर्माण किया वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। आचार्य रेवत स्थविर के इस कथन के पीछे इसका एक लम्बा इतिहास छिपा है—"इधावुसो बुद्धघोस, जम्बुदीपे पिटकत्तयपालिमत्तमेव अत्थि, तस्स अट्ठकथा च आचरियवादा च न विज्जन्ति, सीहलट्ठकथा पन सङ्गीतित्तय मारूळ्हा सारिपुत्तादीहिकतं महिन्देन कथामग्गं ओलोकेत्वा सीहलभासाय कता सीहलदीपे पवत्तति। त्वं पि तत्थ गन्त्वा सब्बं उपपरिक्खित्वा मागधाय निरूत्तिया परिवत्तेह"।[२] अर्थात् जम्बुदीप में मात्र पालि त्रिपिटिक ही है। यहाँ उसकी अट्ठकथाएँ और आचार्यवाद नहीं है। सारिपुत्रादिथेरों द्वारा निर्मित तीनों संगीतियों द्वारा संशोधित तथा संबर्द्धित अट्ठकथाएँ और आचार्यवाद महेन्द्र द्वारा लंका ले जाये गये। उन्होंने ही उसे सिंहली भाषा में परिवर्त्तन भी किया। रेवत स्थविर बुद्धघोष को आदेश देते हैं कि वे लंका जाकर उन सभी अट्ठकथाओं और आचार्यवाद को मागधी भाषा में रूपान्तरित कर पुनः भारत ले आवें। इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय संगीतिकाल तक अर्थात् प्रियदर्शी अशोक के समय तक अधिकांश पालि अट्ठकथाओं और विभिन्न आचार्यवाद और पोराण साहित्य की रचना हो चुकी थी। इस पर हम आगे विचार करेंगे। इस सन्दर्भ में यहाँ पोराण साहित्य के इस उद्धरण पर पहले विचार करना आवश्यक है।

पालिमत्तमिधानीतं, नत्थि अट्ठकथा इध।
तथाचरियवादा च भिन्न रूपा न विज्जरे॥
(सद्धमसंगहो, डा० महेश तिवारी, पृ० ३२)

यहाँ अर्थात् भारत में पालि त्रिपिटिक ही लाये गये हैं, अट्ठकथाएँ नहीं। आचार्यवाद और उससे भिन्न साहित्य भी नहीं लाये गये हैं।

बात स्पष्ट है, चौथी शताब्दी के आते-आते पालि त्रिपिटिक, उसकी अट्ठकथाएँ और आचार्यवाद की सभी परम्पराएँ भारत से विलुप्त हो गयीं। यह एक विचित्र

---

१. Pali commentries have often been bracketed with Sanskrit bhāsyas and ṭikas. But there is nothing in Indian bhāsya literature which could stand comprision with the Pali Aṭṭhakathā. Along with textual explanatory notes, the aṭṭhakathās abound in historical material of thc greatest importance. Pali commentators have given proof of a historical sense not met with elsewhere in bhāsya literature.

—25 Hundred years of Buddhism p. 192.

२. सद्धम्मसङ्गहो, पृ० ३१, डा० महेश तिवारी।

घटना है। पालि साहित्य के अध्येयताओं के लिए यह गंभीरतम शोध का बिषय है। यह पालि साहित्य का अन्धकारपूर्ण अध्याय है। इसका उद्घाटन होना ही चाहिए। हो सकता है कि सर्वास्तिवाद और महायान की अत्यधिक लोकप्रियता के कारण इस ओर से लोगों का ध्यान हट गया हो। किन्तु कुछ कट्टरपंथी स्थविरों ने किसी प्रकार त्रिपिटिक को सुरक्षित रखा। महाराज अशोक के समय की तृतीय संगीति से ही स्पष्ट होता है कि उस समय तक १८ सम्प्रदायों में बौद्धसङ्घ विभक्त हो चुका था। उन १८ सम्प्रदायों का अपना-अपना त्रिपिटक और साहित्य था। महाराज कनिष्क के समय तक तो इन सम्प्रदायों ने अपनी काफी जड़ें जमा लीं। फलतः स्थविरवाद को काफी क्षति उठानी पड़ी। प्रथम शताब्दी के पूर्व बौद्धकवि अश्वघोष ने अपने संस्कृत महाकाव्यों द्वारा बौद्धधर्म को लोकप्रिय और सर्वसुलभ बना दिया। आर्य नागार्जुन, असङ्ग, वसुवन्धु आदि ने भी अपनी रचनाएँ संस्कृत में ही की। फलतः तत्कालीन और सभी परवर्ती बौद्ध साहित्य संस्कृत में ही लिखे गये। शुङ्ग, सातवाहन और गुप्त राजाओं ने भी संस्कृत को ही प्रोत्साहन दिया। अतः राजाश्रय प्राप्त कर इस युग में संस्कृत का काफी विकास हुआ। इसे पालि साहित्य के ह्रास का कारण माना जा सकता है। महायान के वेपुल्य सूत्रों ने संस्कृत को एक नया आयाम दिया। इसे बौद्धसंस्कृत[1] के नाम से अभिहित किया जाता है। बौद्ध जगत में संस्कृत का अबाध प्रदेश ही संभवतः सबसे बड़ा कारण था जिसके चलते इस युग में भारत से पालि साहित्य का उन्मूलन सा हो गया।

दूसरी तीसरी शताब्दी तक तो सम्पूर्ण भारतवर्ष में महायान सम्प्रदाय का जैसे जाल सा बिछ गया। दक्षिण भारत के श्री पर्वत से गान्धार, पेशावर, और कश्मीर तक महायान छा गया। मध्यभारत में भी इसके कई प्रमुख केन्द्र बन गये। नालन्दा सर्वप्रथम सर्वास्तिवाद और कालान्तर में महायान का गढ़ बन गया। ओड़िसा, अङ्ग और बङ्गभूमि भी इस अभियान से वंचित नहीं रहा। भारहुत, अमराबती के स्तूप तथा बोधगया के मंदिरो पर उत्कीर्ण बोधिसत्व की प्रतिमाएँ और अनेक बौद्ध देवी-देवताओं के चित्रण से भी पता चलता है कि उक्त समय तक महायान धर्म का पूर्ण अभ्युदय हो चुका था। महामानव बुद्ध की नैतिकावादी शिक्षा पर आधारित स्थविरवाद दब सा गया। इसके कर्मनिष्ठ और ज्ञानी तपस्वी भिक्षुओं की संख्या में भी गुणात्मक ह्रास हुआ। ऐसा कोई भी श्रुतधर भिक्षु नहीं बचा जो त्रिपिटक सहित अट्ठकथाओं और आचार्यवाद को कंठस्थ रख सके। यही नहीं इनकी पकड़ से बड़े-बड़े विहार और मठ छूटते गये। हमें ज्ञात होता है कि संभवतः भारत के बोधगया का विहार सीधे लंका के सम्पर्क में बना रहा। राजा कीर्ति श्री मेघवर्ण ने महाराज

---

१. Hybrid Sanskrit.

समुद्रगुप्त की स्वीकृति से बोधगया में एक विहार का निर्माण करवाया था[१]। संभवतः महाराज वट्टगामिनी अभय के समय श्रीलंका मे लिखित त्रिपिटिक की मूल प्रतियाँ उसी समय इस विहार में लायी गयी हों। किसी कारणवश त्रिपिटिक की अट्ठकथाएँ और पोराण साहित्य नहीं लाया गया हो। बुद्धघोष के आचार्य रेवत स्थविर इसी लंका द्वारा संचालित बिहार के प्रधान स्थविर या कुलपति थे। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि रेवत स्थविर का सीधा सम्बन्ध लंका के अनुराधपुर महाविहार से था। अतः यह भी हो सकता है कि लंका में लिखित त्रिपिटिक, अट्ठकथाएँ और आचार्यवाद को ही उन्होंने शुद्ध माना और तत्कालीन भारत देश में प्राप्त त्रिपिटक और अट्ठकथाओं आदि को उन्होंने स्वीकार ही नहीं किया हो।[२] लंका शासित बोधगया के इसी विहार में बुद्धघोष ने पालित्रिपिटक का अध्ययन पूर्ण किया। यहीं रहकर उन्होंने स्वयं रेवत स्थविर से या किसी दूसरे से सिंहली भाषा का अध्ययन किया। यही कारण था जिससे बुद्धघोष लंका जाकर सिंहली भाषा में प्राप्त अट्ठकथा और आचार्यवाद को सहजतया समझने में समर्थ हुए और शीघ्र ही भाषान्तर कार्य में सफल हो सके।

इस सन्दर्भ में कुछ विचारणीय प्रश्न हैं। प्रथम तो यह कि अट्ठकथा, आचरियवाद, भिन्न रूप तथा पोराण साहित्य क्या हैं ? इनकी परम्पराएं क्या हैं ? ये भारतीय रचनाएं हैं या सिंहल की।

दूसरा विचारणीय प्रश्न है कि क्या भिक्षु महेन्द्र अपने साथ अलिखित (मौखिक) साहित्य ही लंका ले गये थे ?

अट्ठकथा के सम्बन्ध में ऊपर विचार किया जा चुका है। आचरियवाद, भिन्नरूप तथा पोराण साहित्य के सम्बन्ध में हम यथा स्थान विचार करेंगे। यहाँ हम भारत के प्राचीन पालि अट्ठकथाकार और उनकी अट्ठकथाओं पर विचार करेंगे। मौखिक साहित्य पर भी हम आगे विचार करेंगे।

---

१. About the middle of the 7th century A. D., Wang-Huen-tse composed his History of China refering to the interesting incident of despotch of the two Buddhist monks Mahāyāna and upsena with valuable presents by king Megha Varma (Megh Varṇa of Ceylone as envoys to king Samudra Gupta of Northern India for the latter's permission to built a suitable retreat at Bodh-Gaya for the accomodation of the Ceylonese Buddhist pilgrims. —Gaya and Buddha-Gaya, B. M Barua, p. 195.

२. सीहलट्ठकथा सुद्धा, महिन्देन मतीमता। सङ्गीतित्तयमारुळ्हं, सम्मासम्बुद्धदेसितं ॥
सारीपुत्तादीहि कतं, कथामग्गं समेक्खिय कता सीहल भासाय, सीहलेसु पवत्तति ॥
—सद्धम्मसंगहो, पृ० ३२, डा० महेश तिवारी।

(ख) प्राचीन अट्ठकथाकार

पालि साहित्य के अन्तर और र्वाहसाक्ष्यों के आधार पर पालि अट्ठकथाओं को त्रिपिटककालीन या बुद्धकालीन रचनाएं मानी जा सकती हैं। बुद्ध के जीवनकाल में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है, जब भिक्षु त्रिपिटक के कठिन स्थलों की चर्चा बुद्ध से करते हैं। इसके उत्तर के विसर्जन स्वरूप वे उसकी एक वृहत् व्याख्या ही प्रस्तुत कर देते हैं। सूत्र रूप में प्रतीत्यसमुत्पाद की अनेक स्थलों पर चर्चा की गयी है, किन्तु आनन्द को लक्ष्य कर महानिदानसुत्त के जो उपदेश दिये गये हैं, उसे प्रतीत्य समुत्पाद का वृहतभाष्य या अट्ठकथा ही कहा जा सकता है। त्रिपिटक में ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। सळायतन विभङ्ग, धातु विभङ्ग, दक्खिण विभङ्ग आदि मज्झिमनिकाय के सुत्त हैं, जिसका विस्तार अभिधम्मपिटक में मिलता है। विस्तार क्या ? यहाँ तो उनकी पूर्ण व्याख्या ही मिलती है। पोटलिपुत्त और समिधि के वार्तालाप से बुद्ध को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ था कि समिधि ने कर्म की अच्छी व्याख्या नहीं की है। इस निमित्त उन्होंने स्वयं उसकी वृहत व्याख्या प्रस्तुत कर दी। कहा जा सकता हैं कि मज्झिमनिकाय का महाकम्म विभङ्ग और चूलकम्म विभङ्ग इसी के उत्तरस्वरुप विरचित व्याख्या पूरक सुत्त हैं।

भगवान बुद्ध के समय राजगृह, वैशाली, नालन्दा, पावा, उज्जेनी, चम्पा तथा सावत्थी आदि अन्य अनेक स्थल बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र बन गये थे। भिक्षुओं को जब कभी किसी बात की शंका होती थी, वे इन स्थलों में पहुँच कर स्वयं बुद्ध या उनके प्रमुख शिष्यों से अपनी शंकाओं के उत्तर प्राप्त कर सन्तुष्ट हो जाते थे। सुत्तनिपात्त के 'परायण वग्ग' से ज्ञात होता है कि सुदूर दक्षिणपथ का बाबारिब्राह्मण अपनी विशाल शिष्य मण्डली को हजारों मील दूर अवस्थित भगवान बुद्ध के पास अपनी शंका के निवारणार्थ भेजता है। सुत्तनिपात का समूचा परायण वग्ग इन्हीं ब्राह्मण जिज्ञासुओं और बुद्ध के प्रश्नोत्तरों का संकलन है। इस वर्ग में तत्कालीन कई मत मतान्तरों तथा मिथ्यादृष्टियों का खण्डन किया गया है। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बाबारि ब्राह्मण बौद्ध धर्मावलम्बी नहीं था, किन्तु उसे बुद्ध के प्रति बड़ी आस्था थी।[1]

इस तरह हम देखते हैं कि बुद्ध के समय में ही अज्ञात रूप से अट्ठकथा ने अपना स्वरूप ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया था। बुद्ध इसके आदि जनक थे तथा उनके प्रमुख शिष्य इस परम्परा को सुदृढ़ करने में सफल हो सके।

सारिपुत्र : त्रिपिटक के कतिपय सूत्र सारिपुत्र द्वारा रचित बताये गये हैं। कुछ तो ये सूत्र अपने मूल रूप में हैं, किन्तु कुछ सूत्रों को व्याख्या या अर्थकथा का ही दूसरा रूप कहा जा सकता है। उदाहरणस्वरूप मज्झिमनिकाय के सच्चविभङ्ग सुत्त को देखा जा सकता है। सरिपुत्र ने इस सुत्त में आर्य सत्यों की इतनी अच्छी व्याख्या प्रस्तुत की है कि स्वयं

---

१. द्रष्टव्य—परायणवग्ग—सुत्तनिपात।

बुद्ध ने दूसरे भिक्षुओं को भी इसे इसी तरह समझने के लिए अनुप्रेरित किया। किसी शब्द का शाब्दिक अर्थ उसका विभाजन एवं उसका विस्तार किस प्रकार किया गया इसपर स्वयं बुद्ध ने टीप्पणी की है—"सेवेथ, भिक्खवे, सारिपुत्त मोग्गल्लाने...सारिपुत्तो भिक्खवे पट्टोति अरियसच्चानि वित्थारेन आचिक्खितुं देसेतुं पञ्ञापेतुं पट्ठपेतुं विवरितुं विभजितुं उत्तानी कातुं" ति[1]। यहाँ सारिपुत्र की प्रज्ञा की प्रशंसा की गयी है। इसी सन्दर्भ से अट्ठकथा शब्द के अर्थ का भी परिज्ञान होता है। अभिधम्मपिटक के विभङ्ग ग्रंथ में आर्य सत्य की जो विस्तृत व्याख्या मिलती है, वह सम्भवतः इसी सच्च-विभङ्ग का विस्तार है। सति या स्मृति का त्रिपिटक में कई स्थलों पर उल्लेख हुआ है। मज्झिमनिकाय के सतिपट्ठान सुत्त में इसकी व्याख्या की गयी है। किन्तु इसकी विस्तृत व्याख्या तो दीघनिकाय के सारिपुत्र रचित 'महासतिपट्ठान सुत्त' में ही मिलती है। यह निश्चित रूप में सतिपट्ठान का भाष्य या अट्ठकथा है। प्रश्नोत्तर शैली में सारिपुत्र ने बुद्धवचनों की व्याख्या कई स्थलों पर की है। उदाहरणस्वरूप संगीति सुत्त को लिया जा सकता है। इसमें विषय वस्तु के वर्गीकरण और अर्थ निष्पादन की शैलीगत विशेषता दर्शनीय है। संयुत्त और अङ्गुत्तर निकाय के अधिकांश सुत्तों पर इसके प्रभाव को देखा जा सकता है। पुग्गलपञ्ञत्ति ग्रंथ की रचना का यह सुत्त आधार है। इस सुत्त को संस्कृत में भी लिखा गया। यह चीनी और तिब्बती भाषा में संगीति परियाय सुत्त के रूप में मिलता है। जो हो, इस तरह के व्याख्या पूरक सुत्त सारिपुत्र द्वारा उपदिष्ट सुत्त बहुत ही कम मिलते हैं। वस्तुतः प्रारम्भ से ही सारिपुत्र विस्तारपूर्ण बात को अतिसंक्षेप में ही कहने में प्रज्ञा सम्पन्न थे।

महाकच्चान :—महाकच्चान की विद्वता सर्वविदित है। अङ्गुत्तर निकाय के एतदग्गवग्ग में भगवान बुद्ध ने इनकी विशिष्टता को बतलाते हुए कहा है। "सङ्खित्तेन भासितस्स वित्थारेन अत्थं विभजन्तानं यदिदं महाकच्चानो"। अर्थात् सूत्रात्मक रूप से बुद्ध के संक्षिप्त उपदेशों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करने में महाकच्चान सभी भिक्षुओं में अग्र थे[2]। उनके इन सुत्तों में नेतिपक्करण, पेटकोपदेस एवं ज्ञानप्रस्थान जैसे प्रौढ़ ग्रंथों के बीज पाये जाते हैं। प्रथम दो तो पालि में रचित हैं, किन्तु ज्ञानप्रस्थान शास्त्र की रचना बौद्ध संस्कृत में हुयी है। ये तीनों ग्रंथ महाकच्चान के ही बताये जाते हैं।[3]

---

१. म० नि० ३३४।

२. Thera Mahākaccāyana who was allowed to enjoy the reputation of one who could give a detailed exposition of what was said by tho Buddha in brief.

—The life and work of Buddha Ghosa, B. C. Law, p, 54.

३. 'The Majjhima Nikāya alone furnishes four exegetical fragments written by Mahākaccāyana, which are of great value as forming the historical basis of three later works, two in Pali and one in Buddhist Sanskrit, which are all ascribed to him'.

—The Life and Works of Buddhaghosa, B. C. Law, p, 55.

विभिन्न दिशाओं में मानवमन (चित्त) किस रूप में प्रवर्त्तमान रहता है इस पर महाकच्चान ने बड़ा अच्छा प्रकाश डाला है। बुद्ध के प्रथम सिद्धान्तों की व्याख्या में इन्होंने तात्विक शब्दों की व्यंजना के साथ-साथ इसके अभ्यान्तरिक दार्शनिक तत्वों का पूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया है। इन्होंने मात्र प्राविधिक शब्दों की परिगणना प्रस्तुत नहीं की है, अतः इस अर्थ में ये सारिपुत्र से बहुत ही आगे हैं। सतरहवीं शताब्दी के वर्मी विद्वान् नन्दपञ्हा ने अपने ग्रंथ गन्धवंश में महाकच्चान के सम्बन्ध में बताया हैं कि उन्होंने न केवल प्रथम बौद्ध संगीति में भाग लिया अथवा समय-समय पर बुद्ध के सिद्धान्तों की व्याख्या की, बल्कि इन्होंने अलग से स्वतन्त्र शास्त्रों की रचना की है[१]। महाकच्चान अवन्तिराज चण्डप्रद्योत के राजपुरोहित थे और जम्बुदीप के आचार्य के रुप में प्रसिद्ध थे[२]। निम्नलिखित ग्रंथ इनके रचित बताये जाते हैं[३]—

(१) कच्चायनगन्धो।
(२) महानिरुत्ति गन्धो।
(३) चूलनिरुत्ति गन्धो।
(४) नेत्ति गन्धो।
(५) पेटकोपदेस गन्धो।
(६) वण्णनीति गन्धो।

प्रायः ये सभी ग्रंथ त्रिपिटक के प्रारम्भिक अट्ठकथापूरक ग्रंथ माने जा सकते हैं।

प्रथम संगीति से तृतीय संगीति में भाग लेनेवाले स्थविरों की गणना पोराणचरियों की श्रेणियों में की गई है, किन्तु इस गणना के अन्तर्गत महाकच्चायन को नहीं गिना गया है।[४] इन्हें तिविध नाम आचरिय के अन्तर्गत माना गया है और इस क्षेत्र में महाकच्चायन अकेले दीख पड़ते हैं।[५]

महाकोट्ठितः— मज्झिमनिकाय के कई सुत्तों की रचना महाकोट्ठित ने की है। इन्होंने अभिधम्म के प्राविधिक शब्दों की व्याख्या 'अत्थ', 'धम्म', 'निरुत्ति' और पटिभान की दृष्टि से करके बुद्ध के मूलसिद्धान्तों का बड़ा ही सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत

---

१. The Gandha Vaṁsa, a quite modern work written perhaps in the 17th century, by Nand Paññа of Burma, sinsles out Mahākaccāyana as the teacher who not only took part in the First council or explained from time to time the doctrines of the Buddha but compiled separate treatises.

२. 'महाकच्चायनो जम्बुदीपिकाचरियो सो हि अवन्तिरट्ठे उज्जेनीनगरे चण्डपच्चोतस्स नाम रञ्ञो पुरोहितो—ग० व० पृ० ६६।

३. 'कच्चायन ग धो महा निरूत्ति गन्धो चूल्ल निरूति गन्धो नेत्ति गन्धो पेटकोपदेस गन्धो वण्णनीति गन्धो ति इमे छ गन्धा महाकच्चायनेनकता—ग० वं० पृ० ५६।

४. महाकच्चायनं ठपेत्वा अवसेसा पोराणचरियानाम—ग० वं०, पृ० ५६।

५. कतमे तिविधनामकाचरिया। महाकच्चायनो तिविध नामो।—ग० वं० ५६।

किया है। भगवान् बुद्ध इनकी इस प्रतिसंविद ज्ञान से पूर्ण परिचित थे। इसे स्वीकार करते हुए अंगुत्तरनिकाय के एतदग्गवग्ग में स्वयं बुद्ध ने कहा है "एतदग्गं भिक्खवे मम सावकानं भिक्खूनं पटिसम्भिदाप्पत्तानं यदिदं महाकोट्ठितो"।[1] अर्थ, धर्म, निरुक्ति और पटिभान के समन्वित ज्ञान को प्रतिसंविदज्ञान कहा गया है। आगे चलकर 'सकाय निरुत्तिया' के विवेचन के क्रम में हम इस निरुत्ति शब्द पर विशेष विचार करेंगे।

नेत्तिपक्करण, कथावत्थु और वाद के मिलिन्द पञ्हो तथा बुद्धघोष की रचनाओं के प्रेरक तत्व के रूप में महाकोट्ठित को सर्वाधिक रूप से स्मरण किया जाता रहेगा। जैसा हम ऊपर कह आए हैं श्रेष्ठ धर्म, अतिरेक धर्म ही अभिधम्म है, वस्तुतः इस दृष्टि से अभिधम्म सुत्त का, धम्म का भाष्य है।

इस तरह हम देखते हैं कि त्रिपिटक के साथ ही साथ उसकी अट्ठकथाएं भी समानान्तर रूप से उद्भूत हुयी हैं। कठिन सूत्रों की व्याख्या या तो स्वयं बुद्ध ने कर दी है या फिर सारिपुत्र, महाकच्चान, महाकोट्ठित, मोदगल्यान, आनन्द धम्मदिन्ना और खेमा आदि कई प्रमुख भिक्ष और भिक्षुणियों ने कर दी है। इसे अट्ठकथा का प्रारम्भिक रूप मानने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

बुद्ध निर्माण के पश्चात् तृतीय संगीति अर्थात् प्रियदर्शी अशोक के राज्यकाल तक भारत में अट्ठकथाओं का निर्माण होता रहा। प्रथम, द्वितीय और तृतीय संगीति के समय त्रिपिटिक के शुद्धिकरण और परिबर्द्धन के साथ-साथ संगीतिकारक भिक्षुओं में से कुछ विशिष्ट स्थविरों ने अट्ठकथाओं की भी रचनाएँ कीं। इन्हें 'पोराणाचरिय' कहा गया है। साथ-साथ यह भी उल्लेख है कि जो 'पोराणाचरिय' हैं वे 'अट्ठकथाचरिया' भी हैं। इन पर हम यथास्थान विचार करेंगे। इनमें से कुछ लोगों ने त्रिपिटक के निगूढ़तम विषयों पर जो अपना सिद्धान्त निरूपण किया, उसे ही कालान्तर में आचार्यवाद कहा जाने लगा। बी० सी० ला० ने इसे गैर स्थविरवादी आचार्यों का विभिन्न मतवाद कहा है।[2] महासंघिकों के सिद्धान्तों को आचार्यवाद (Sectarian) और पुराणपंथी भिक्षुओं के विचारों से सम्बन्धित साहित्य को थेरवाद या orthodox doctrine कहा जा सकता है। हम समझते हैं कि इस आचार्यवाद से सम्बन्धित सभी विचार और साहित्य लंका में पहुंच गया था। थेरवाद का तो

---

१. Thera Mahākotthita who was regarded as an authority next to none but the Buddha himself on Patisambhidā or methodology of the Buddha's analytical system.

—The Life and work of Buddha Ghosa, B. C. Law, p. 56.

२. The divergent opinions of the teachers other than the Theravadins. —Life and Work of Buddha Ghosa, B. C. Law, p. 74.

लंका गढ़ रहा ही है। सासनवंश में थेर परम्परा और आचार्यपरम्परा का उल्लेख हुआ है। भगवान् बुद्ध के साक्षात् शिष्य उपालि स्थविर से थेर परम्परा की शुरुआत मानी जाती है। उपालि, दासक, सोणक, सिग्गव, चण्डवज्जी इन पाँच स्थविरों को आचरिय परम्परा का आदिभूत कारण माना है।[1] मोग्गलिपुत्त तिस्स स्थविर के शिष्य महामहिन्द थे। आज तक लंका में इन्हीं की शिष्य परम्परा चल रही है।[2] संभवतः इसी आचार्य परम्परा को तो आचार्यवाद नहीं कहा गया है?

प्रारम्भिक बौद्धसंघ के दो विभाजन को 'थेरवाद' और 'आचरियवाद' के नाम से जाना जाता है। इस आचार्यवाद का विपुल साहित्य स्थविरवाद से बहुत अंशों में भिन्न था। महासंघिकों ने अपनी मान्यताओं के आधार पर ही त्रिपिटक की व्याख्या प्रस्तुत की। सासनवंश से हमें मात्र 'आचरिय परम्परा' का पता चलता है, आचार्य-वाद का नहीं। पहले अपने सम्प्रदायों के साथ-साथ दूसरे सम्प्रदायों के ग्रंथों के पढ़ने की भी परम्परा थी। संभवतः यही कारण था कि लंका में थेरवाद के साथ-साथ आचार्यवाद का भी अस्तित्व था। ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्यवाद के अतिरिक्त भी 'कुछ और भिन्न रूप' था जो आचार्यवाद और थेरवाद दोनों से भिन्न था। इसकी संख्या विशाल रही होगी क्योंकि इसमें इन दो प्रमुख सम्प्रदायों के अतिरिक्त सभी अन्य बौद्ध सम्प्रदायों का साहित्य रहा होगा। इसके अतिरिक्त भी कुछ और साहित्य के होने का पता चलता है। इसे 'पोराण साहित्य' कहा गया है। अपनी अट्ठकथाओं में स्थान-स्थान पर महामति आचार्य बुद्धघोष ने इस पोराण साहित्य के उद्धरणों को अपने समर्थन में प्रस्तुत किया है। नन्दपञ्ञा ने चार प्रकार के आचार्यों का उल्लेख किया है, पोराणाचार्य, अट्ठकथाचार्य, ग्रन्थकाचार्य और तिविधनामकाचार्य।[3] प्रथम संगीति, द्वितीय संगीति और तृतीय संगीति के समय उपस्थित (५००+७००+१०००) =२२०० – १ (महाकच्चायन को छोड़कर)=२१९९ स्थविरों को पोराणाचार्य कहा गया है।[4] वहीं साथ-साथ यह भी उल्लेख है कि जो पोराणाचार्य हैं वे सभी अट्ठकथाचार्य

---

१. सम्मासम्बुद्धस्स हि भगवतो सद्धिविहारिको उपालि थेरो, तस्स सिस्सो दासकथेरो, तस्स सिस्सो सोणकथेरो, तस्स सिस्सा सिग्गव थेरो, चण्डवज्जी थेरो च। इमे पन्चमहाथेरा सासनवंसे आदिभूता आचरिय परम्परा नाम। —सा० वं० पृ० १६।

२. 'यावज्जतना तेसं येव अन्तेवासिक परम्परभूताय आचरिय परम्पराय आभतं।—सा० वं० पृ० १६।

३. आचरिय पन अत्थि पोराणाचरिया अत्थि, अट्ठकथाचरिया अत्थि, गन्धकारकाचरिया अत्थि, तिविधनामकाचरिया।—गन्धवंस ५८।

४ कतमे पोराणाचरिया। पठमसंगायनायं पन्चसता खीणासवा पञ्चन्नं निकायानं नामं च अत्थं च अधिप्पायं च पदं च व्यञ्जनं च सोधन किच्चं अवसेसं करिंसु। दुतियसंगायनायं सत्त सता खीणासवा तेसं येव सद्दत्थादिकं किच्चं पुन करिंसु। ततिय संगायनायं सहस्समत्ता खीणासवा तेसं येव सद्दत्थादिकं किच्चं पुन करिंसु। इच्चेवं द्वे सताधिका द्वे सहस्स खीणासवा महाकच्चायनं ठपेत्वा अवसेसा पोराणाचरिया नाम।—गं वं ५६।

भी हैं।[१] अट्ठकथाओं के अतिरिक्त इनके साहित्य को 'पोराण साहित्य' कहा गया है। बुद्धघोष को गन्थकाचार्य और महाकच्चायन को तिविधनामकाचार्य कहा गया है।[२]

इस तरह त्रिपिटक के अतिरिक्त अनेक प्रकार की अट्ठकथाएँ, आचार्यवाद, थेरवाद, पोराण साहित्य और कई अन्य विधाओं का विशाल और समृद्ध साहित्य था। इस क्रम में हमें यह भी ज्ञात होता है कि अट्ठकथाओं के कई प्रकार थे। जैसा ऊपर हमने देखा है अभिधम्मपिटक धम्म की, सुत्त की व्याख्या है। कथावत्थुको अभिधम्म पिटक का एक ग्रंथ मानने से उसे अभिधम्मपिटक का अट्ठकथा कहना अधिक ठीक प्रतीत होगा। मिलिन्द पञ्हो थेरवादी बौद्धदर्शन का एक विवेचनात्मक भाष्य ग्रंथ है। मिलिन्द पञ्हो जैसे कुछ और ग्रंथ रहे होंगे जिनसे लोगों को बौद्धदर्शन सम्बन्धी बातों का पता चला होगा, किन्तु इनके अस्तित्व के बारे में इतिहास आज तक मौन है।

सम्पूर्ण त्रिपिटक, महाकच्चायन के ग्रंथ, कथावत्थु, मिलिन्द पञ्हो, थेरवाद, आचार्यवाद, पञ्ञातिवाद (गैरथेरवादी आचार्य) वितण्डावाद, प्रकृतिवाद (सांख्य एवं योगदर्शन के आचार्य) एवं श्रीलंका के स्थविर और पोराणाचार्य आदि आचार्य बुद्धघोष की और उनकी कृतियों के निर्माण के आधार और प्रेरक तत्व माने जा सकते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि अट्ठकया साहित्य के निर्माण में भारतीय और सिंहल दोनों देशों के भिक्षुओं का योगदान है। लंका के बंस साहित्य और स्वयं बुद्धघोष की अट्ठकथाओं से ऐसा परिज्ञात होता है कि बुद्धघोष पूर्व श्रीलंका में अट्ठकथाओं के तीन प्रमुख रूप मौजूद थे — महाअट्ठकथा, महापच्चरिय अट्ठकथा और महाकुरुन्दअट्ठकथा।[३] इस पर हम बुद्धघोष की रचना के क्रम में विचार करेंगे। यहाँ इस सन्दर्भ में इतना भर उल्लेख कर देना अभिप्रेत है कि त्रिपिटक के साथ विभिन्न अट्ठकथाएँ अपने साथ सर्वप्रथम महेन्द्र लंका लेते गये और उन्होंने ही उन्हें सिंहली भाषा में रूपान्तरित किया।[४] इन्हें सिंहल अट्ठकथा के नाम से अभिहित किया गया है। हो सकता है कि महेन्द्र द्वारा मूल रूप से ले गये अट्ठकथाओं के आधार पर सिंहल के विद्वान् भिक्षुओं ने अपनी अट्ठकथाएँ लिखीं हों। इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

---

१. ये पोराणाचरिया ते येव अट्ठकथाचरिया नाम।—गं० वं० ५९।

२. महाबुद्धघोसादयो अनेकाचरिया गन्धकारकाचरिय नाम, महाकच्चायनो तिविधनामो।
—गं० वं० ५९।

३. समन्तपासादिकाय वुत्तातिविध अट्ठकथा। कतमा? महाअट्ठकथा च महापच्चरि अट्ठकथा च महाकुरुन्द अट्ठकथा चा ति तिस्सो अट्ठकथायो सीहलट्ठकथा नाम—स० सं० ३४।

४. अत्थप्पकासनत्थं, अट्ठकथा आदितोवसिसतेहि।
पञ्च हि सङ्गीता अनुसङ्गीता च पच्छा पि॥
सीहलदीपं पन आभताथ, वसिना महामहिन्देन।
ठपिता सीहलभासाय, दीपवासीनमत्थाय॥ सु० वि० ३॥

परम्परा कहती है कि महापरिनिर्वाण के २३६ वर्ष पश्चात्[1] महेन्द्र मौखिक रूप से अर्थात् अलिखित त्रिपिटक और अट्ठकथाएँ लंका ले गये थे। महापरिनिर्वाण के ४३३ वर्ष पश्चात् श्रीलंका के महायशस्वी राजा वट्टगामिनी अभय के समय में सम्पूर्ण त्रिपिटक और उनकी अट्ठकथाओं को पहली बार लेखबद्ध किया गया।[2]

किन्तु यह बहुत ही अविश्वसनीय है क्योंकि इस घटना के आधारभूत ग्रंथ अविश्वसनीय ही हैं। चूलवंस, गन्धवंस, सासनवंस तथा सद्धम्मसंगहो आदि तो इतने बाद के ग्रंथ हैं कि इनकी सत्यता पर विश्वास किया ही नहीं जा सकता है। ईसा से प्रायः छः सौ वर्ष पूर्व भगवान् बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ। बुद्ध के निर्वाण के २३६ वर्ष बाद महेन्द्र द्वारा बुद्धवचन लंका ले जाया गया। इसके २०० वर्ष बाद अट्ठकथाओं सहित बुद्धवचन के प्रथम बार लंका में लेखबद्ध होने का उल्लेख है। क्या इस समय तक भी भारतवासियों को लिपिशास्त्र का ज्ञान नहीं हो पाया था? अगर हाँ, तब वह कौन सी परिस्थियाँ थीं जिसने लंका में लिखित त्रिपिटक को हमें स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। ये सभी बातें इतिहास विरुद्ध, अमनोवैज्ञानिक एवं अवैज्ञानिक हैं। ऐसा कभी हो ही नहीं सकता है। भारत में लिपिशास्त्र का प्रचलन अत्यन्त प्राचीन काल का है। स्वयं त्रिपिटक में ही अनेक उद्धरण हैं जिससे लेखन कला पर प्रकाश पड़ता है। बच्चों द्वारा अंगुलि से हवा में लिख कर 'अक्खरिका' नामक 'बुझौअल' का खेल खेलना लेखनकला की प्रौढ़ता और उसकी लोकप्रियता का ही द्योतक है। 'लिखितक चोर' अर्थात् राजदरबार में पंजीकृत चोर को संघ में प्रवेश की अनुमति नहीं थी, ऐसा हमें त्रिपिटक से ही पता चलता है। जातक कथाओं से भी लेखनकला का बोध होता है। महाराज अशोक के समय तो लेखन कला और लिपिशास्त्र का पूर्ण प्रचलन था। अशोक के शिलालेखों के अध्ययन से यह बात पूर्ण रूपेण सुस्पष्ट है कि उस समय भारतीयों को लिपिशास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। इस समय की लिपि को ब्राह्मी लिपि या विशेष अर्थ में अशोक के शिलालेखों की लिपि कहा गया है। तब यह बात हमें समझ में नहीं आती है कि अशोक के पुत्र महेन्द्र अलिखित या मौखिक बौद्ध साहित्य ही लंका क्यों ले गये? भगवान् बुद्ध ने कभी ऐसा नहीं कहा कि बुद्धवचन को लिपिबद्ध नहीं करो। हाँ एक बात का उन्हें हम निषेध करते हुए देखते हैं, जब कुछ भिक्षु उनसे बुद्धवचन को छन्दस की भाषा में निरूपित करने की अनुज्ञा प्राप्त करना चाहते हैं और कहते हैं—'हन्द मयं भन्ते बुद्धवचनं छन्दसो आरोपेमाति' क्योंकि 'सकाय

---

१. आयस्मा महिन्दत्थेरो सम्मासम्बुद्धस्स परिनिब्बाणतो दिन्नं वस्ससतानं उपरिछत्तिसतिमे वस्से इमस्मिं दीपे पतिट्ठहीति वेदितब्बा —स० स० १६।

२. सम्बुद्धपरिनिब्बाणा, चतुवस्ससतेसु च।
तेत्तिंसेसतिक्कन्तेसु, राजाहु वट्टगामिनि॥
सब्बम्पि थेरवादं च, सब्बं साट्ठकथं च तं।
मुखपाठेन आनेत्वा, पोत्थकेसु लिखापयुं॥ स० स०॥

निरुत्तिया बुद्धवचनं दूसेन्ति'। तब वे इसका पूर्णतः निषेध करते हैं और बुद्धवचन को अपनी भाषा में ही निरूपण करने का आदेश देते है। आगे बढ़ने से पूर्व हमें यहाँ 'सकाय निरुतिया' पर विचार कर लें।

'सकाय निरुत्तिया 'अर्थात् अपनी-अपनी भाषा में बुद्धवचन जानने की बुद्ध द्वारा अनुज्ञा प्रदान की जाती है। किन्तु अपनी-अपनी भाषा में बुद्धवचन के होने से कई प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाने का भय था, इसलिए उस समय की सुपरिनिष्ठित या स्टैण्डर्ड भाषा अर्थात् छन्दस की भाषा में निरूपित करने की कुछ भिक्षु प्रार्थना करते हैं, अस्वीकार कर देते हैं। बुद्ध उपर्युक्त दोष से परिचित थे ऐसा होने से तो बहुत बड़ी जिसे गड़बड़ी हो जाती क्योंकि बौद्ध संघ में भारत के अनेक भागों के भिक्षु थे जिनकी भिन्न-भिन्न भाषाएँ थीं। कौन मूल बुद्धवचन किसे सुनाता और कौन किससे सुनता। और अगर ऐसा होता भी तो इनका सारा जीवन इसी में लगा रह जाता। किन्तु बात ऐसी नहीं है। एक उदाहरण से बात स्पष्ट हो जायगी। मैथिल, भोजपुरी, मगही, बुन्देलखण्डी, मराठी, पंजाबी, सिन्धी आदि भाषा-भाषी जब अपने लोगों से बात करते हैं तब वे आपस में अपनी बोली में ही बातचीत करते हैं, किन्तु जब ये सभी भाषा-भाषी एक जगह एकत्र होते हैं या कम से कम दो विभिन्न भाषा-भाषी मिलते हैं, तब वे इस समय की स्टैण्डर्ड या सुपरिनिष्ठित राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग करते हैं। ठीक यही बात उस समय भी थी। जब एक भाषा को समझनेवाले दो भिक्षु आपस में मिलते थे तब वे अपनी ही भाषा या बोली का प्रयोग करते थे, किन्तु दूसरों से बातें करते समय इसका ध्यान रखते थे, और उस समय की स्टैण्डर्ड राजभाषा जो पूरे मध्यमंडल की भाषा थी, उसी में बात करते थे। उस समय मगध साम्राज्य का प्रभाव सर्वाधिक था। पुनः महाराज बिम्बिसार और अजातशत्रु का संरक्षण बुद्ध और संघ को बराबर मिलता रहा। अंग, काशी, कोशल और वैशाली पर मगध साम्राज्य छाया हुआ था। अतः उस समय मध्यमंडल की भाषा मागधी थी। 'हम लोगों की अपनी भाषा' कहने में बुद्ध के यही मन्तव्य थे। सकाय का प्रयोग यहाँ बहुवचन के अर्थ में हुआ है, ऐसा होने से सारी परिस्थियाँ सुलझ जाती हैं। आचार्य बुद्धघोष ने प्रकारान्तर से इसे ही स्वीकारा है—'सत्थसका निरुत्ति नाम सम्मा सम्बुद्धेन वुत्तप्पकारो मागधको वोहारो'। यही अर्थ समीचीन जान पड़ता है, क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो बुद्ध छन्दस की भाषा का विरोध नहीं करते, क्योंकि छन्दस की भाषा भी तो किसी भिक्षु की 'सकाय निरुत्तिया' रही होगी। इस सन्दर्भ में यहाँ एक बात और सामने आती है वह यह कि किसी लिखित साहित्य को ही 'छन्दस' की भाषा में परिवर्त्तन करने की बात हो सकती थी। बुद्ध परिनिर्वाण के तुरत बाद राजगृह की प्रथम सभा का मूल कारण भी यही प्रश्न है। सुभद्र की चुनौती का सामना किसी लिखित साहित्य से ही किया जा सकता था। इस सभा का नाम ही संगायन है, संगीति है, जिसमें बुद्धवचन का संग्रह किया गया और पूरी तरह उसे सुनाकर सभा द्वारा प्रमाणित माना गया। प्रतीत तो यही होता है कि बुद्ध के जीवनकाल में ही उनके कुछ उपदेशों को लिपिबद्ध

कर लिया गया और राजगृह की प्रथम सभा में समग्र रूप से बुद्धवचनों का प्रमाणित संग्रह लेख बद्ध किया गया। सातवीं शताब्दी ई० में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने वृत्तान्त में लिखा है कि सारे देश में लिखने के लिए ताड़पत्र का प्रयोग होता था। उसकी जीवनी से ज्ञात होता है कि एक परम्परा के अनुसार बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् प्रथम संगीति में ताड़पत्रों पर आगम लिपिबद्ध किये गये। संघभद्र की विनय की 'विन्दुङ्कित हस्तलिखित पोथी' ताड़पत्रों पर लिखी गयी थी। इससे अनुमान लगाया जाता है कि बुद्ध की मृत्यु के बहुत पहले से ताड़पत्रों पर लिखने का प्रचलन था।[१] प्रोफेसर डिरिन्जर के अतिरिक्त अन्य लेखकों ने भारत में लेखन कला की प्राचीनता को ई० पू० १००० से पूर्व आँका है।[२] अलबेरूनी ने इसका आरम्भ ई० पू० ३१०१ माना है।[३]

लेखन का क्रम तृतीय संगीति तक चलता रहा। क्योंकि इसमें परिवर्त्तन और परिवर्द्धन होने के संकेत मिलते हैं। महाराज अशोक के समय तो भारत में एक सर्वमान्य सुपरिनिष्ठित लिपि का प्रचलन था। इसे 'अशोक के धर्मलेख' कहते हैं। सम्भवतः यह ब्राह्मी लिपि का सुविकसित स्वरूप था। भारत के पुरालिपिक शास्त्रियों का विचार है कि ब्राह्मीलिपि का जन्म एवं विकास भारत में हुआ। ललित विस्तर में ६४ लिपियों की चर्चा है जिसमें ब्राह्मी लिपि को प्रथम स्थान माना गया है। कतिपय योरोपीय विद्वानों ने भी इसका समर्थन किया है। ६०८ ई० के रचित चीनी विश्वकोष फन-वन-सु-लिन में लिपियों की सूची में प्रथम स्थान इसी ब्राह्मी लिपि को माना है। इसके बाद खरोष्टी का स्थान है। इन दोनों को भारत की लिपि बताया गया है। भुर्ज पत्र पर लिखी सबसे प्राचीन कृति खोतान में मिली है जिसमें खरोष्ठी लिपि में लिखे धम्मपद के कुछ अंश मिले हैं, जो संभवतः दूसरी तथा तीसरी शताब्दी ईसा के है। जायसवाल ने डॉसन के विचारों का समर्थन करते हुए लिखा है कि ब्राह्मी लिपि का आविष्कार ऋग्वेद के समय हुआ था। "डा० चन्द्रिका सिंह उपासक ब्राह्मी की पुरालिपि का अध्ययन करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ब्राह्मी में बुनियादी अथवा मूल स्वर और आठ विकसित अथवा गृहीत अक्षर हैं एवं व्यञ्जन में इक्कीस मूल तथा तेरह विकसित अथवा गृहीत अक्षर हैं। उनका विचार है कि ब्राह्मी अक्षरों के रूप संभवतः हरप्पा अथवा सेमेटिक लिपि अथवा दोनों के मिश्रित विकास के प्रतिफल हैं, जो अशोक के समय तक ध्वनि एवं रूप में विकसित हो चुकी थी।[४]

अतः यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि पालित्रिपिटक उसकी अट्ठकथाएँ आचार्यवाद एवं अन्य परम्पराओं का विशाल साहित्य अपने संशोधित और परिवर्तित

---

१. भारत के प्राचीन अभिलेख—प्रभातकुमार मजुमदार पृ० १४।
२. भारत के प्राचीन अभिलेख—प्रभातकुमार मजुमदार पृ० २।
३. भारत के प्राचीन अभिलेख—प्रभातकुमार मजुमदार पृ० ३।
४. देखें भूमिका भारत के प्राचीव अभिलेख—प्रभातकुमार मजुमदार।

रूप में अशोक के समय तक उस काल की सर्वमान्य और पुरिनिष्टित लिपि में लेखबद्ध हो चुका था। इन्हें महेन्द्र और उनके साथी मौखिक रूप से लंका ले गये हों, इसमें विश्वास का कोई कारण नहीं दीखता है।

महाराज बट्टगामिनी अभय (प्रथम शताब्दी ई० पूर्व) के समय श्रीलंका में प्रथमबार त्रिपिटक के लेखबद्ध होने का जो उल्लेख मिलता है, इसका आधार चाहे जो हो, इस पर एकदम विश्वास नहीं किया जा सकता है। सासनवंस, बुद्धघोस्सोपत्ति, सद्धमसंगहो, गंधवंस, चूल्लवंस आदि बहुत बाद के ग्रंथ हैं, कुछ सतरहवीं तो कुछ १९वीं शताब्दी के ग्रंथ है। इन पर विश्वास कैसे किया जा सकता है। लेकिन यह घटना हुई है, इसे भी नकारा नहीं जा सकता है। बट्टगामिनी के समय तक आते-आते महेन्द्र द्वारा अनुदित और लिखित साहित्य बहुत पुराना पड़ गया होगा। इस समय देश की अपनी कोई सुनिष्ठित और सर्वमान्य भाषा और लिपि का बिकास हो गया होगा और देशवासियों ने इसी भाषा और इसी लिपि में सम्पूर्ण त्रिपिटक साहित्य को फिर से लिख लिया होगा। इसी की प्रति लंका संघ द्वारा संचालित बोधगया के विहारवासियों ने मंगाया होगा या इन लोगों ने अपने भिक्षुओं के लिए भेज दिया होगा, जिसमें संभवतः सभी साहित्य नहीं पहुँच सके होंगे। लंका में लिखित होने के कारण बाद में भ्रमवश इसे सर्वप्रथक लंका का लिखित मानने लगे होंगे जो आज तक यह परम्परा बनी हुई हैं।

"सकाय निरूत्तिया अपने में एक और विशेष अर्थ रखता है। यहाँ हमें मात्र निरूत्ति से तात्पर्य है। निरूत्ति का अर्थ भाषा से है। ऐसा प्रसंग दो स्थलों पर आया है। "हम लोग अपनी निरूक्ति में बुद्धवचन प्राप्त करें" और बुद्धघोष को लक्ष्य कर जो कहा गया कि 'मागधी निरूक्ति में अट्ठकथा का परिवर्त्तन करें"। प्रसंग दोनों का दो है किन्तु अर्थ और लक्ष्य में साम्य है। निरूत्ति का यहाँ निरूक्त से मतलब है मात्र भाषा विशेष से ही नहीं। भारत में अति प्राचीन काल से ही 'निरूक्त' के अस्तित्व की चर्चा है। कहा जाता है कि महर्षि यास्क के पूर्व चौदह निरूक्तकार हो चुके हैं। इनमें औदुम्बरायण, औपमन्वय, और्णवाभ, कात्थक्य, कौत्स, क्रौष्टुकी, वार्ष्यायणि, शाकटायन, शाकपूणि, शाकल्य, स्थौलाष्ठीवि आदि आचार्यों को निरूक्ताचार्यों के रूप में यास्क से पूर्व ही अत्यधिक प्रसिद्धि हो चुकी थी। व्याकरण के आठ प्रयास माने जाते हैं, जिनका पूर्ण विकास पाणिनि के अष्टाध्यायी में मिलता है, किन्तु निरूक्त के चौवह प्रयास हुए थे जिनमें आज केवल अन्तिम प्रयास यास्क के निरूक्त के रूप में हमें प्राप्त है।

पालि इंग्लिश शब्दकोश में निरूत्ति शब्द का निम्नलिखित अर्थ बताया है—

'One of the Vedangas, explaination of words, grammatical analysis, etymological interpretation pronunciation, dialect, way of speaking, expression.' मनुष्य अपने मन के अमूर्त भाव को जब बाहर सम्प्रेषण करता है, तो वह उसे शब्द के आवरण में

बैठाता है।[१] यह शब्द का आवरण भी वह कुछ समझकर कुछ उपपत्ति होने पर ही काम में लाता है। उसी समझ या उपपत्ति को ढुँढ़ने का नाम है निर्वचन और उसका विकसित वैज्ञानिक सिद्धान्तों का निश्चय करने पर जो रूप निखर-उभर कर सामने आता है, उसे निरूक्तशास्त्र की संज्ञा प्रदान करते हैं। निर्वचन और निरुक्त शब्द निर्+√वच् से व्युत्पन्न है। परोक्षवृत्ति या अतिपरोक्षवृत्ति शब्द मे छुपे हुए अर्थ को निकाल करके अर्थात् शब्द के सब अवयवों को अलग-अलग करके कहना निर्वचन कहलाता है।[२] भाषा शास्त्र के अध्ययन में निरूक्त की महत्वपूर्ण उपयोगिता है। दर्शनशास्त्र में जो स्थान न्यायशास्त्र का है, वही स्थान भाषाशास्त्र में निरूक्त को है। अर्थज्ञान के दो साधन शास्त्र है—एक व्याकरण और दूसरा निरूक्त। व्याकरण में शब्द की रचना पर अर्थात् प्रकृति, प्रत्यय यानी शब्द सिद्धि पर ध्यान दिया जाता है। किन्तु जहाँ तक अर्थ का सम्बन्ध है, व्याकरग भी निरूक्त पर ही निर्भर है। वस्तुतः निरूक्त का क्षेत्र ही अर्थ निर्वचन का है। अतः अर्थ को जाने बिना शब्द की रचना उसके अक्षरों में संस्कार आदि का कार्य एकदम जाना ही नही जा सकता है।[३] निरूक्तशास्त्र के बिना व्याकरण अधूरा है। किन्तु निरूक्त को व्याकरण शास्त्र की अपेक्षा नहीं है।[४] निरूक्तकार ने इसे स्पष्ट करते हुए बताया है—

"तद्येषु पदेषु स्वर संस्कारौ समर्थौ प्रादेशिकेन गुणेनान्वितौ स्याताम्, तथा तानि निब्रूयात्। अथान्वितेऽर्थेऽप्रादेशिके विकारेऽर्थ नित्यः परीक्षेत केनचिद् वृत्तिसामान्येन अविद्यमाने सामान्येऽप्यक्षरवर्णसामान्यान्नि ब्रूयात। न त्वेव न निब्रूयात् न संस्कारमाद्रियेत। विशयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति। यथाऽर्थ विभक्ति सन्नमयेत—निरूक्त—२-१। अतः यह कहा जा सकता है कि व्याकरण अर्थनिर्वचन के विना अपना कार्य नहीं कर सकता, किन्तु निरूक्त को निर्वचन के लिए व्याकरण के नियमों से बंधने की आवश्यकता नहीं है। वह स्वर संस्कार की उपेक्षा कर सकता है। निरूक्तशास्त्र का आरम्भ भाषाशास्त्रीय अध्ययन के द्वारा वैदिक देवताओं का स्वरूप स्पष्ट करनेवाली देव विद्या के रूप में हुआ होगा। अर्थात् भाषाशास्त्र (Etymology) और देव विद्या (Theology) ये दोनों ही निरूक्त के विषय रहे होंगे। पालिसाहित्य में 'निरुति' पर एक बहुत ही उच्चकोटि की व्याख्या मिलती है। भगवान् बुद्ध ने 'पटिसंविद ज्ञान' को अत्यन्त उच्चकोटि का ज्ञान बताया है। यहाँ तक पहुँचने के चार सोपान हैं - अत्थ, धम्म, निरुक्ति और पटिभान। इनके समन्वित योग का नाम पटिसंविदा है। अत्थपटिसंविदा अर्थात् शब्दगत अर्थ के

---

१. न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते। वा० प० १/१२३॥

२. अपिहितस्य अर्थस्य परोक्षवृत्तौ अतिपरोक्षवृत्तौ वा शब्देनक्रुष्य निगृह्य वचनं निर्वचनम्।
—निरूक्तवृत्ति—श्रीमद्दुर्ग सिंह २/१।

३. अर्थमप्रतियतोनात्यन्तं स्वरसंस्कारोद्देशः—निरूक्त १/१५।

४. यदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकं च—निरूक्त १/१५।

परिचित का ज्ञान ।[१] धम्मपटिसंविदा से तात्पर्य है किसी वस्तु या शब्द के स्वभावगत अर्थात् धर्मगत प्रकृत स्वरूप की जानकारी की प्राप्ति ।[२] अत्थपटिसंविदा के अन्तर्गत शब्द के प्रारम्भिक प्रकृत स्वरूप की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है किन्तु शब्द के प्रयोग और ग्रन्थ के सन्दर्भ के अनुसार उनके अर्थज्ञान को धम्मपटिसंविदा कहते हैं ।

पटिभान पटिसंविदा अर्थात् शब्द के उच्चारण के प्रति आत्मविश्वास, चतुरता, विलक्षण बुद्धि सम्पन्न एवं प्रत्युपन्न गति से युक्त व्यक्ति का ज्ञान । रीज डेविड्स ने कुछ ऐसा ही अर्थ बताया है ।[३]

इस तरह हम देखते हैं कि भाषा सम्बन्धी ज्ञान की चरम पराकाष्ठा का ही दूसरा नाम पटिसंविद ज्ञान है। अतः जहाँ 'सकाय निरूत्तिया' और 'मागधाय निरूत्तिया' कहा गया वहाँ भाषा के साथ-साथ 'निर्वचन' से भी अभिप्रेत है। बिना निरूत्ति के, बिना निर्वचन के पालि के प्राविधिक शब्दों के अर्थ को जानना सरल नहीं है । इससे यहाँ यह भी पता चलता है कि पालि साहित्य ने भी कई निरुक्तकार उत्पन्न किये थे । 'सकाय निरूत्तिया' बुद्ध के वचन हैं । उनके प्रधान शिष्य महाकच्चान ने महानिरूत्ति और चूलनिरूत्ति जैसे दो निरूक्त ग्रंथों की रचना की थी। इससे बहुत बाद 'निरूत्तिभेद संग्रह पाठ' और 'निरूत्तिसारमञ्जुसा टीका' जैसे निरूक्त के ग्रंथ लिखे गये । स्वयं बुद्धघोष एक बहुत बड़े विरुक्तकार थे । सुमङ्गलविलासिनी में इस पर चर्चा करते हुए बुद्धघोष ने बताया हैं कि 'उपमूपदेससम्पहंसनगरहण वचन सम्पटिग्गहाकार निदस्सनावधारणादि अनेकत्थप्पभेदो'[४] । उपमा, उपदेश, सम्प्रहर्षण, ग्रहण, आकार, निदर्शन एवं अवधारण की दृष्टि से विभिन्न अर्थ का प्रकाशन किया गया है। आचार्य ने इस दृष्टि से 'एवं' शब्द का निर्वचन किया है। प्रस्तुत ग्रंथ के 'सरणत्तयवण्णना' में बुद्ध शब्द का 'निर्वचन' दर्शनीय है। "बुद्धो ति केनट्ठेन बुद्धो, बुज्झिता सच्चानी ति बुद्धो बोधेता पजाया ति बुद्धो, सब्बञ्ञुताय बुद्धो, सब्बदस्साविताय बुद्धो, अनञ्ञानेय्यताय बुद्धो, विकसिताय बुद्धो, खीणासव सङ्खातेन बुद्धो, निरूपक्किलेसङ्खातेन बुद्धो, एकन्तवीतरागो ति बुद्धो, एकन्तवीतदोसो ति बुद्धो, एकन्तवीतमोहो ति बुद्धो, एकन्तनिक्किलेसो ति बुद्धो, एकायनमग्गं गतो ति बुद्धो, एको

---

१. Knowledge of the meaning of words, Analysis of meaning.
—Pali English Dictionary.

२. Atha refers to the primary and natural meaning of the word, while dhamma relates to the interpreted meaning of the text.
—Pali English Dictionary, Rhys Davids.

३. Understanding, illusmination, intelligence, readiness or confidence of speech, promptitute, wit.

४. सु० वि० १-३५—डा० महेश तिवारी ।

अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति बुद्धो, अबुद्धिविहतत्ता बुद्धि पटिलाभा बुद्धो। ऊपर के जैसे अनेक सन्दर्भ हैं जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि आचार्य बुद्धघोष ने मात्र भाषानुवाद ही नहीं किया वल्कि 'मागधी निरुक्ति' के अनुसार गूढ़तम शब्दों का निर्वचन भी प्रस्तुत किया है। अगर अट्ठकथाओं से ऐसे सन्दर्भों को एकत्रित किया जाय तब यह निःसन्देह 'मागधी निरुत्ति' को नया आयाम दे सके। मगध विश्वविद्यालय के प्राध्यापक द्वय डा० ब्रजमोहन पाण्डेय नलिन और डा० राय अश्विनीकुमार सिन्हा, इस दिशा में कुछ करने को सोच रहे हैं। इस विषय पर दोनों का अधिकार है। यह एक शुभ लक्षण है।

आचार्य बुद्धघोष : पालि साहित्य में आचार्य बुद्धघोष का स्थान एक महान अट्ठकथाकार के रूप में आता है। वैदिक साहित्य में जो स्थान सायनाचार्य का है, पालि साहित्य में बुद्धघोष को वही स्थान प्राप्त है, शायद इससे भी कुछ अधिक। किन्तु अपने तक पहुंचने के लिए बुद्धघोष ने कोई सूत्र छोड़ा ही नहीं है, जिससे उनके जीवन के निकट पहुंचा जा सके। १३वीं शताब्दी के विद्वान्, सिंहली भिक्षु धम्मकीर्ति स्वामी ने बुद्धघोसोप्पत्ति लिखकर पहली बार बुद्धघोष को प्रकाश में लाया है। महावंश में भी बुद्धघोष के जीवन का उल्लेख मिलता है। बुद्धगया के बोधिमण्डप के समीप घोसग्राम के कसि नामक ब्राह्मण के घर बुद्धघोष का जन्म हुआ। इनकी माता का नाम केसिया था[१]। अल्पकाल में ही बुद्धघोष तीनों वेद, इतिहास आदि विषयों में विख्यात हो गये। रेवत स्थविर का शिष्यत्व ग्रहण कर बुद्धघोष ने त्रिपिटकों का अध्ययन कर लिया। आचार्य रेवत स्थविर ने बुद्धघोष की विद्वता एवं कर्मठता को समझ कर उन्हें लंका द्वीप जाकर वहाँ से अट्ठकथाओं, आचार्यवाद और इसके अतिरिक्त बुद्धधर्म से सम्बन्धित अन्य साहित्य को सीहली भाषा से मागधी भाषा में परिवर्तन कर पुनः भारत लाकर प्रतिष्ठित करने का आदेश दिया। क्योंकि उस समय जम्बुद्वीप में मात्र त्रिपिटक ही उपलब्ध था। उसकी अट्ठकथाएँ और आचार्यवाद नहीं थे। आचार्यवाद अगर था भी तो भिन्न रूप में, उसमें एकरूपता का कहीं तारतम्य नहीं था[२]।

यहाँ कुछ विभेद सा दीखता है। किसी ग्रंथ में यह उल्लेख है कि "त्वं गन्त्वा मागधभासक्खरेन लिखाही"।[३]अर्थात् तो कहीं 'त्वं पि तत्थ गन्त्वा सब्बं उपपरिक्खित्वा मागधाय निरुत्तिया परिवत्तेहि'[४] और कहीं 'बुद्धघोसो नाम थेरो सीहल द्वीपं गन्त्वा

---

१. बोधिरुक्खसमीपे घोसगामे केसस्स नाम ब्राह्मणस्स केसिया नाम ब्राह्मणिया कुच्छिम्हि पटिसन्धिं गण्हापेसुं।—बुद्धघोसुप्पत्ति

२. जम्बुदीपे पन, आवुसो, पालिमत्तं एव अत्थि, अट्ठकथा पन नत्थि। आचरियवादो च भिन्नो हुत्वा अत्थि।—सासनवंस—२६

३. सासनवंस—२६

४. सद्धम्मसङ्गहो—पृ० ३१, डा० महेश तिवारी।

सीहलभासाय लिखिते अट्ठकथा गन्थे मागधभासाय परिवत्तित्वा लिखि'[1] लिखा है। इससे यह सोचने को वाध्य होना पड़ता है कि बुद्धघोष ने लिप्यान्तर का काम किया या अनुवाद का। बुद्धघोष की अट्ठकथाओं के सन्दर्भ में हम इस पर विचार करेंगे।

आचार्य रेवत स्थविर की आज्ञा से लंकाधिपति महानाम के शासनकाल में आचार्य बुद्धघोष लंका पधारे। अनुराधपुर के महाविहार के महापधान नामक भवन में रहकर उन्होंने संघपाल स्थविर से सिंहली अट्ठकथाओं और स्थविरवाद की परम्परा को सुना। महाविहारवासी भिक्षुओं ने बुद्धघोष की योग्यता की परख के लिए उनके सामने संयुत्तनिकाय की दो गाथाएँ रखीं, जिसके उत्तर के विसर्जन स्वरूप उन्होंने 'विसुद्धिमग्ग' जैसे बौद्धदर्शन की व्याख्यास्वरूप एक अत्यन्त प्रौढ़ ग्रंथ की रचना कर डाली। इससे लंकावासी सभी भिक्षु इतने प्रभावित हुए कि अनुराधपुर महाविहार के ग्रंथकार विहार का द्वार इनके अध्ययन के लिए पूर्णरूप से खोल दिया गया। इसी विहार में रहकर आचार्य बुद्धघोष ने सिंहली अट्ठकथाओं का मागधी रूपान्तरण किया।[2]

बुद्धघोष के जीवन का सुव्यवस्थित रूप हमें नहीं मिलता है। स्वयं आचार्य के ग्रंथों के अन्तर्साक्ष्य से भी परिस्थिति और उलझ जाती है। अधिकारपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता है कि बुद्धघोष का जन्म बोधगया में ही हुआ था। विसुद्धिमग्ग के निगमन का यह अंश भी इस सन्देह का कारण माना जा सकता है। "बुद्धघोसो ति गरूहि गहित नामधेय्येन थेरेन मोरण्डखेटक बतब्बेन कतो विसुद्धिमग्गो नाम।" फिर इसमें भी सन्देह ही बना हुआ है कि क्या आचार्य बुद्धघोष लंका में ही रहकर सभी अट्ठकथाओं को लिख पाये थे? मज्झिमनिकाय की अट्ठकथा में स्वयं बुद्धघोष ने कहा—

"आयाचितो सुमतिना थेरेन भदन्त बुद्धमित्तेन।
पुब्बे मयूरसुत्त पट्टनम्हि सद्धिं वसन्तेन।
यमहं पपञ्चसूदनियंट्ठकथं कातुमारद्धो।।

अङ्गुत्तरनिकाय की अट्ठकथा में भी कुछ इसी तरह का उल्लेख है—

"सुमतिना थेरेन भदन्त - ज्योतिपालेन।
काञ्चीपुरादिसु मया पुब्बे सद्धिंवसन्तेन।
अट्ठकथं अंगुत्तरमहानिकायस्स कातुमारद्धो।।

यहाँ 'मोरण्डखेटक' 'मयूरसुत्तपट्टन' और 'काञ्चीपुरं' आदि स्थानों की भौगोलिकता पर विचार होना ही चाहिए। क्या ये सभी स्थान लंका में ही थे?

---

१. सासनवंसो—पृ० २६, डा० चन्द्रिका सिंह उपासक।

२. गन्थकारे वसन्तो सो विहारे दूर संकरे।
परिवत्तेसि सब्बा पि सीहलट्ठकथा सदा।।

अगर नहीं तब इस कथन के सम्बन्ध में क्या कहा जा सकता है। "गन्थकारे वसन्तो सो विहारे दूर संकरे, परिवत्तेसि सब्बा पि सीहलट्ठकथा तदा"। ये सब शोध के विषय हैं, जिन पर विचार होना आवश्यक है।

आचार्य बुद्धघोष की रचनाएँ :—

जैसा ऊपर हमने उल्लेख किया है, बुद्धघोष की कृतियों को मात्र लिप्यान्तर का कार्य नहीं कहा जा सकता है। बुद्धघोष की अट्ठकथाओं से भी पता चलता है कि उस समय सिंहल में विभिन्न अट्ठकथाएँ थीं। यथा : (१) महाअट्ठकथा (२) महापच्चरीय (३) कुरुन्दीय (४) अन्धट्ठकथा (५) संखेप अट्ठकथा (६) आगम अट्ठकथा और (७) आचरियानं समानट्ठकथा। दीघ, मज्झिम, संयुत्त और अंगुत्तर इन चारों निकायों की अट्ठकथाओं के अन्त में लिखा है "इन्हे मैंने महाअट्ठकथा के सार को लेकर पूरा किया है।[1] इससे हमें ऐसा विश्वास होता है कि बुद्धघोष ने मात्र लिप्यान्तर न करके बल्कि विस्तृत अट्ठकथाओं को संक्षेप में स्वतन्त्र रूप से लिखा है। जगह-जगह पर 'तेनाहु पोराणा', 'वुत्तम्हि तत्था', 'यथाहु पोराणा', 'तेनेव पोराणकत्थेरा' के उल्लेख से पता चलता है कि 'महाअट्ठकथा' के अतिरिक्त अन्य स्थानों से 'पुराने भिक्षुओं' के उद्धरणों को अपनी अट्ठकथाओं में उपस्थित कर बुद्धघोष ने अपनी विषयवस्तु को अत्यन्त ही समृद्ध और महत्वपूर्ण बना दिया है। इन उद्धरणों से तो मात्र लिप्यान्तरण की बात की असंगति ही प्रतीत होती है। यहाँ यह भी कह देना समीचीन होगा कि यदि इन 'पोराणक थेरों' के उद्धरणों को विषयवस्तु की दृष्टि से एक जगह संग्रह कर दिया जाय तो इसे पालि साहित्य की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। इससे 'आचार्यवाद' और 'पोराण साहित्य' के नव निर्माण में बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है।

आचार्य बुद्धघोष को एक स्वतंत्र लेखक भी नहीं माना जा सकता है, क्योंकि अगर ऐसी बात होती तब विसुद्धिमग्ग की भाषा और समन्तपासादिकादि अट्ठकथाओं की भाषा एक जैसी होती, उनमें एक संबद्धता और एकरूपता होती। आचार्य बुद्धघोष को एक ऐसे सम्पादक की संज्ञा दी जा सकती है जो मूल अट्ठकथा को बीच में रखकर उसे चारों ओर से अनेक मान्य प्रचलित अट्ठकथाओं, आचार्यवाद और पोराणकभिक्षुओं के उपयुक्त उद्धरणों से अपनी बहुमुखी प्रतिभा और अनोखी कला से सुसज्जित और समृद्ध कर एक नया आयाम दे देता हो। वस्तुतः आचार्य बुद्धघोष इससे भी कुछ अधिक थे। गन्धवंस में आचार्य बुद्धघोष को अट्ठकथाकार नहीं कह कर ग्रन्थकार की संज्ञा से विभूषित किया गया है। 'महाबुद्धघोसादयो अनेकाचरिया गन्धकारकाचरिया नाम'।[2] इससे पता चलता है कि वर्मा में बुद्धघोष की कृतियों को अट्ठकथा न मानकर इन्हें उनकी मूल रचना ही माना है। क्योंकि ग्रन्थकारकाचार्य से तो यही अर्थ अभिप्रेत है।

---

१. 'सा हि महाअट्ठकथाय सारमादाय निट्ठिता एसा'।

२. सद्धम्मसङ्गहो—महेश तिवारी—५६।

'महाअट्ठकथा' के उल्लेख से पता चलता है कि इसके अन्तर्गत दीघनिकाय[१], मज्झिमनिकाय[२], संयुत्तनिकाय[३] और अंगुत्तरनिकाय[४] की ही अट्ठकथाएँ थीं, खुद्दक-निकाय की नहीं। महाअट्ठकथा को पूर्णतः भारत की रचना माना जा सकता है। संभवतः इसे ही अपने साथ महेन्द्र लंका ले गये थे। इस दृष्टि से सद्धम्मसङ्गहो का यह कथन सटीक बैठता है—

"महाअट्ठकथा नाम पठममहासङ्गीतिमारूळ्हा महाकस्सप पमुखेही थेरेहि कता, महामहिन्देन आनेत्वा सीहल भासाय कता, महाअट्ठकथा नाम जाता"।[५]

कुरून्दट्ठकथा विनयपिटक की अट्ठकथा थी। कुरून्दवेलु विहार के अन्तर्गत इस अट्ठकथा का होना ही इसके नामकरण का कारण माना जा सकता है। संभवतः यह विनयवादियों का अपना अलग विहार रहा होगा। इसी के आधार पर बुद्धघोष ने विनयपिटक की अट्ठकथा समन्तपासादिका की रचना की।[६]

महापच्चरियअट्ठकथा को अभिधम्मपिटक की अट्ठकथा माना गया है। इसी को मूलरूप में ग्रहण कर बुद्धघोष ने अट्ठसालिनी नामक धम्मसङ्गणिअट्ठकथा तथा सम्मोह विनोदनी नामक विभङ्गप्पकरण अट्ठकथा की रचना की।[७]

इस प्रकार पूर्वाचरियों (भिक्षु-भिक्षुणियों) की परम्परा अर्थात् सम्पूर्ण थेरवाद, जिसे आचार्यवाद भी कहा जा सकता है, से सम्बन्धित सभी सिद्धान्तों को अपनी अट्ठ-कथाओं में निरूपित कर आचार्य बुद्धघोष ने एक अद्भुत कार्य का सम्पादन किया।[८] कहा जाता है कि इस कार्य में उन्हें पूरा एक वर्ष लग गया।[९]

सद्धम्मसङ्गहो के अनुसार कङ्खावितरणि[१०] नामक पातिमोक्खट्ठकथा और धम्मपदट्ठ-कथा भी[११] आचार्य बुद्धघोष रचित बताये जाते हैं। गन्धवंस में निम्नलिखित १३ ग्रंथ आचार्य बुद्धघोष रचित बताये गये हैं—

---

१. सुमङ्गलविलासिनी। २. पपञ्चसूदनी। ३. सारत्थपकासिनी। ४. मनोरथपूरणी।

५. सद्धम्मसङ्गहो, पृ० ३४, डा० महेश तिवारी।

६. आयस्मा बुद्धघोसो कुरून्दट्ठकथं सीहलभासं परिवत्तेत्वा मूलभासाय मागधिकाय निरूत्तिया समन्त-पासादिका नाम विनयट्ठकथा अकासि—सद्धम्मसङ्गहो पृ० ३४, डा० महेश तिवारी।

७. अभिधम्मपिटके महापच्चरियट्ठकथा सीहलभासं परिवत्तेत्वा मूलभासाय मागधिकाय निरूत्तिया अट्ठसालिनी नाम धम्मसङ्गणिअट्ठकथं च ठपेसि। तथा सम्मोहविनोदनी नाम विभङ्गप्पकरणट्ठकथं च ठपेसि।—सद्धम्मसङ्गहो, पृ० ३५।

८. पुब्बे थेरिकाचरियादीहि पालि नयं गहेत्वा कतं थेरवादं नाम सब्बेसम्पि मागधिकाय निरूत्तिया अट्ठकथं अकासि। सा पिटकट्ठकथा सब्बदेसन्तरवासीनं हितावहा अहोसि।

—सद्धम्मसङ्गहो, डा० महेश तिवारी, पृ० ३५।

९. अयं पिटकट्ठकथा करीयमाना एक सम्वच्छरेनेव निट्ठिता।

—सद्धम्मसङ्गहो, डा० महेश तिवारी, पृ० ३५।

१०. पातिमोक्खट्ठकथा च, बुद्धघोसेन धीमता। थेरेन रचिता एसा, कङ्खावितरणिसुभा।—स० सं० ४१।

११. थेरेन बुद्धघोसेन, धीमता रचिता इमा। धम्मपदट्ठकथा च, सोदत्तभिनिदानका॥ स० सं० ४३॥

(१) विसुद्धिमग्गो (२) सुमङ्गलविलासिनी (३) पपञ्चसूदनी (४) सारत्थ-पकासिनी (५) मनोरथपूरणी (६) समन्तपासादिका (७) परमत्थकथा (अभि-धम्मपिटक की अट्ठकथा) (८) कंखावितरणी (९) धम्मपद अट्ठकथा (१०) जातक अट्ठकथा (११) खुद्दकपाठ अट्ठकथा (१२) अपदान अट्ठकथा[1]। विसुद्धिमग्ग इनकी मौलिक रचना है। ज्ञानोदय तथा परित्तट्ठकथा के सम्बन्ध में कुछ अधिक नहीं कहा जा सकता है। पिटकत्तय लक्खणगन्ध एवं पद्यचूड़ामणि भी बुद्धघोष रचित बताये जाते हैं।

निम्नलिखित तीन महाअट्ठकथाओं के आधार पर रचित अट्ठकथाएँ निर्विवाद रूप से आचार्य बुद्धघोष की रचनाएँ मानी जा सकती हैं।

महाअट्ठकथा पर आधारित सुत्तपिटक की अट्ठकथाएँ

(१) सुमङ्गलविलासिनी	—	दीघनिकाय
(२) पपञ्चसूदनी	—	मज्झिमनिकाय
(३) सारत्थप्पकासिनी	—	संयुत्तनिकाय
(४) मनोरथपूरणी	—	अंगुत्तरनिकाय

कुरुन्दट्ठकथा पर आधारित विनयपिटक की अट्ठकथाएँ

(५) समन्तपासादिका	—	विनयपिटक की अट्ठकथा

महापच्चरियट्ठकथा पर आधारित अभिधम्मपिटक की अट्ठकथाएँ

(६) अट्ठसालिनी	—	धम्मसङ्गणि
(७) सम्मोहविनोदनी	—	विभङ्गप्पकरणट्ठकथा

(८) धम्मपदट्ठकथा[2] एवं (९) कंखावितरणी[3] का बुद्धघोष की रचना के रूप में सद्धम्मसंगहो में अलग से उल्लेख हुआ है। (१०) पञ्चप्पकरणट्ठकथा, कथावत्थु पुग्गलपञ्ञत्ति, धातुकथा, यमक और पट्ठान की अट्ठकथाएँ हैं। इसे भी आचार्य बुद्धघोष रचित बताया है[4]। परमत्थजोतिका (११) खुद्दकपाठट्ठकथा (१२) परमत्थजोतिका (सुत्तनिपात) तथा (१३) जातक अट्ठकथा भी आचार्य बुद्धघोष के ही ग्रंथ बताये जाते हैं।

---

१. महाबुद्धघोसोनामाचरियो विसुद्धिमग्गो दीघनिकायस्स सुमङ्गलविलासिनी नाम अट्ठकथा मज्झिम-निकायस्स पपञ्चसूदनी नाम अट्ठकथा संयुत्तनिकायस्स सारत्थपकासनी नाम अट्ठकथा अंगुत्तर-निकायस्स मनोरथपूरणी नाम अट्ठकथा सत्तअभिधम्म गन्धानं परमत्थकथा नाम अट्ठकथा धम्मपदस्स-अट्ठकथा जातकस्स अट्ठकथा खुद्दकपाठस्स अट्ठकथा अपदानस्स अट्ठकथा ति इमे तेरस गन्धे अकासि।—गंधवंसो, ५९।

२. थेरेन बुद्धघोसेन, धीमता रचिता इमा। धम्मपदट्ठकथा च, सोदत्तभिनिदानका॥

—सद्धमसंगहो, डा० महेश तिवारी, पृ० ४२।

३. पाति मोक्खट्ठकथा च, बुद्धघोसेन धीमता। थेरेन रचिता एसा, कंखावितरणी॥

४. The Life and Work of Buddhaghosa—B. C. Law, p. 83-84.

खुद्दकपाठट्ठकथा, सुत्तनिपातट्ठकथा, धम्मपदट्ठकथा और जातकट्ठकथा खुद्दकनिकाय की अट्ठकथाएँ हैं। जिस तरह खुद्दकनिकाय विवादास्पद ग्रंथ है ठीक उसी तरह ये उपर्युक्त चारों अट्ठकथाएँ भी विवादास्पद हैं। वस्तुतः ये अट्ठकथाएं न होकर 'अत्थवण्णना' हैं। लंका में महाराज पराक्रमबाहु के राज्यकाल में लंकावासी महाकाश्यप स्थविर की अध्यक्षता में त्रिपिटक की अट्ठकथाओं पर 'अत्थवण्णना' के लेखन कार्य को सम्पन्न किया[१]। यहाँ भी यह ध्यान देने की बात है कि इस 'अत्थवण्णना' के निर्माण क्रम में भी खुद्दकनिकाय के किसी ग्रंथ के 'अत्थवण्णना' का कोई उल्लेख नहीं है। यद्यपि खुद्दकानं करिस्सामि, केसञ्चि अत्थवण्णनं। तस्स सुत्तनिपातस्स, करिस्सामत्थवण्णनं। तस्स विज्जोतयन्तस्स जातकस्सत्थवण्णनं। परम्परागतस्स, निपुणा अत्थवण्णा के उल्लेख से यह सुस्पष्ट है कि ये चारों ग्रंथ अत्थवण्णा के अन्तर्गत आते हैं। इन रचनाओं को बुद्धघोष कृत माना ही नहीं जा सकता है, क्योंकि भाषा, शैली और अर्थ निस्पादन की दृष्टि से ये अट्ठकथाओं से एकदम भिन्न दीख पड़ते हैं[२]। सद्धम्मसङ्गहो से पता चलता है कि सिंहल में अत्थवण्णा की भी स्थिति थी, जिसे 'पोराणों' की रचना कहा गया है। किन्तु यह सिंहली और मागधी भाषा का मिश्रित रूप था। इसीलिए महाकाश्यप ने इन्हें मूलभाषा मागधी में लिखकर सुव्यवस्थित किया[३]। लेकिन यहाँ भी खुद्दकनिकाय के ग्रंथों की अर्थकथा का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। जातकट्ठकथा के अन्तर्साक्ष्य से प्रतीत होता है कि महिंशासक परम्परा में दीक्षित भिक्षु बुद्धमित्र की याचना पर इस ग्रंथ की रचना बुद्धघोष ने की थी। यह बुद्धघोष जैसे महाविहारवासी परम्परा के पोषक के लिए संभव प्रतीत नहीं होता है। पुनः परमत्थजोतिका के दोनों ग्रंथ खुद्दकपाठट्ठकथा और सुत्तनिपातट्ठकथा के निगमन पर भी यह सहसा विश्वास नहीं होता है कि आचार्य बुद्धघोष जैसे व्यक्ति अपने सम्बन्ध में इतने विशेषणों का प्रयोग किया होगा।[४]

---

१. एवं महाकस्सपथेरो रञ्ञा परक्कमबाहुना अज्झिट्ठो अनेकसहस्सेहि थेरेहि सद्धिं उस्साहं जनेत्वा धम्मविनय सङ्गायितसदिसमेव पिटकट्ठकथाय अत्थवण्णनं कत्वा सनिन्नट्ठापेसि।

—सद्धम्मसंगहो, पृ० ३६, डा० महेश तिवारी।

२. Introduction, p. 17.

३. यं च, आवुसो, पिटकत्तयट्ठकथाय लीनत्थप्पकासनत्थं अत्थवण्णं पोराणेहि कहं तं सब्बं देसन्तर-वासीनं भिक्खूनं अत्थं न साधेति। कत्थचि अनेकेसु गण्ठिपदेसु सीहलभासाय निरूत्तिया लिखितं च, कत्थचि मूलभासाय मागधिकाय भासन्तरेन समिस्सं आकुलं चकत्वालिखितं, मयं भासन्तरं अपनेत्वा परिपुण्णं अनाकुलं अत्थवण्णनं करेय्यामा' ति।—सद्धम्मसंगहो, डा० महेश तिवारी, पृ० ३८।

४. परमविसुद्ध सद्धाबुद्धि वीरिय गुणप्पटिमण्डितेन सीलाचारज्जवमद्दवादि गुणसमुदय समुदितेन सकसमयन्तरगहनज्झो गाहण समत्थेन पञ्ञा वेय्यत्तियसमन्नागतेन तिपिटकपरियत्ति धम्मप्पभेदे साट्ठकथे सत्थुसासने अप्पटिहत ञाणप्पभावेन महावेय्याकरणेन करणसम्पत्तिजनित सुख विनिग्गत-मधुरोदार वचन लावण्णयुत्तेन युत्तयुत्तवादिनावादीवरेन महाकविना छन्ठभिञ्ञा पटिसम्भिदादिप्पभेद गुणप्पटिमण्डिते उत्तरि मनुस्सधम्मे सुप्पतिहितबुद्धीनं थेरवंसप्पदीपानं महाविहारवासीनं बंसालङ्कार भूतेन बिपुल विसुद्ध वुद्धिना बुद्धघोसो ति गरूहि गहितनाम धेय्येन थेरेन कता अयं परमत्थजोतिका नाम खुद्दकपाठ वण्णना।

—परमत्थजोतिका-खुद्दकपाठट्ठकथा, पृ० ३०२, देखें निगमन सुत्तनिपातट्ठकथा।

हो सकता है बुद्धघोष की अत्यन्त प्रसिद्धि के कारण इन ग्रंथों को भी बुद्धघोष रचित मान लिया गया हो। अपने ग्रंथ गंधवंस में नन्द पञ्हा ने चुल्ल बुद्धघोष का भी उल्लेख किया है। इस संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। परम्परा तो इन्हें बुद्धघोष की ही रचना मानती है।

(घ) परमत्थजोतिका खुद्दकपाठट्ठकथा : खुद्दकपाठ अत्थवण्णना

लघुग्रंथ खुद्दकपाठ के अन्तर्गत ऊपर कथित ९ सुत्त हैं। प्रस्तुत ग्रंथ इन्हीं नव सुत्तों की अट्ठकथा या अत्थवण्णना है। अत्थवण्णनाकार ने स्थान-स्थान पर व्याख्या के अन्तर्गत कई नई बातों का उद्‌घाटन किया है। ग्रंथारम्भ अर्थात् अपने ग्रंथ की भूमिका में ही अत्थवण्णनाकार ने खुद्दकनिकाय आदि पंच निकायों को प्रथम संगायन के समय में ही संग्रहीत बताया है। दीघनिकाय के अन्तर्गत ३४ सुत्त, मज्झिनिकाय के अन्तर्गत १५२ सुत्त, संयुत्तनिकाय के अन्तर्गत तथा खुद्दकनिकाय के १५ ग्रंथों का उल्लेख करते हुए चार निकायों को छोड़कर, विनय और अभिधम्म के सभी ग्रंथों के साथ इनकी गणना खुद्दकनिकाय के अन्तर्गत की गई है।

खुद्दकपाठ के नवसुत्तों की गणना आचरिय परम्परा के आधार पर की गई है, न कि भगवान बुद्ध के निर्देश पर।

सरणत्तय की अत्थवण्णना के क्रम में बुद्ध, धम्म और संघ की एक अच्छी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। बुद्ध को पूर्ण चन्द्र मानकर चन्द्रकिरण से धम्म की तुलना की गई है। यहाँ उपमा उपमेय की एक लम्बी सूची ही प्रस्तुत कर दी गई है। प्राकृतिक उपादानों से बुद्ध, धर्म और संघ की उपमाओं के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

सिक्खापदवण्णना के अन्तर्गत अधिशील शिक्षा, अधिचित्त शिक्षा और अधिप्रज्ञा शिक्षा—शिक्षा के तीन स्तरों को बताया गया है। अधिशील शिक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति के मानवोचित शीलाचरण की शिक्षा पर जोर दिया गया है। अधिचित्त के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश मिलता है और अधिप्रज्ञा शिक्षा द्वारा व्यक्ति को समाधि की कोटि की शिक्षा का निर्देश किया गया है। इसमें शनैः शनैः व्यक्ति को निर्वाण के मार्ग पर पहुंचाने का उपक्रम किया गया है। अधिशील शिक्षा के अन्तर्गत सुत्तपिटक एवं अधिप्रज्ञा शिक्षा के अन्तर्गत अभिधम्मपिटक को रखा गया है। इस छोटे से सुत्त में मानो सम्पूर्ण त्रिपिटक को रखने का प्रयत्न किया गया है।

अत्थवण्णनाकार बौद्धधर्म ने इतिहास से पूर्ण रूपेण परिचित है। इसका अच्छा ज्ञान हमें मङ्गलसुत्त में वर्णित पठममहासङ्गीति कथा से होता है। भगवान बुद्ध का परिनिर्वाण वैशाख पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल में बताया गया है। सुभद्र कांड की चर्चा ज्यों की त्यों है। राजगृह पहुंचने के पूर्व ही पाँच सौ भिक्षुओं का चयन किया गया। आनन्द को न लेने पर भिक्षुओं ने आनन्द का बड़ा समर्थन किया। उनके तर्क को महाकाश्यप को स्वीकार करना पड़ा और ५०० भिक्षुओं के अन्तर्गत आनन्द को भी रखा। सभी भिक्षु संगायन के लिए राजगृह की ओर प्रस्थान करते हैं। तीन भिक्षुओं

की टोली अलग-अलग निकली। महाकाश्यप अपनी मंडली के साथ एक मार्ग से गये तो अनुरुद्ध दूसरे मार्ग से गये। आनन्द भगवान का पात्र चीवर लेकर श्रावस्ती के मार्ग से राजगृह पधारे।

×

परमत्थजोतिका से ज्ञात होता है कि राजगृह में उस समय १८ महाविहार थे। संगीति के पूर्व महाराज अजातशत्रु ने कर्मकारों द्वारा इन १८ महाविहारों को मरम्मत और सुव्यवस्थित कराया। संगीति के वर्णन क्रम में खुद्दकनिकाय के संगायन की कथा के साथ मङ्गलसुत्त को प्रस्तुत किया जाता है। यह महामङ्गलसुत्त की अट्ठकथा सुत्तनिपात अट्ठकथा के अन्तर्गत भी आया है। वहाँ प्रथम संगीति के सम्बन्ध में अट्ठकथा मौन है। प्रस्तुत अट्ठकथा में पृ० १०६ से पृष्ठ १३८ में जो वर्णन है वह सुत्तनिपातट्ठकथा में उपलब्ध नहीं है। इसके बाद विषयवस्तु की जो अट्ठकथा है वह दोनों में समान रूप से है। इससे यह परिज्ञात होता है खुद्दकपाठअत्थवण्णना सुत्तनिपात से अपेक्षाकृत बहुत बाद का है। रतनसुत्तवण्णना में अत्थवण्णनाकार यह स्पष्ट कर देता है कि रतनसुत्त की प्रारम्भिक पाँच गाथाएँ भगवान बुद्ध द्वारा उपदेशित हैं, शेष गाथाएँ परित्तपाठ के अवसर पर आनन्द द्वारा उपदिष्ट हैं।[1] सुत्तनिपात की अट्ठकथा में इसका उल्लेख नहीं है। निक्खेपप्पयोजनं में भी दोनों में भिन्नताएँ हैं। शेष दोनों में एक जैसा है। सुत्तनिपात में भी खुद्दकपाठ जैसा ही त्रिपिटक के ग्रन्थों से चुने हुए सुत्तों का संग्रह है। खग्गविषाणसुत्त अपदान में है, सेल और वासेट्ठसुत्त मज्झिमनिकाय में है, सुन्दरिक भारद्वाज सुत्त, आलवकसुत्त, कसिभारद्वाजसुत्त तथा सुभासित सुत्त संयुत्तनिकाय के हैं। कोकालियसुत्त अंगुत्तरनिकाय के सुत्त हैं। इन सुत्तों का तुलनात्मक अध्ययन उपेक्षित हैं। एक और महत्वपूर्ण बात सामने आती है। निद्देस त्रिपिटक के अन्तर्गत रखे गये हैं, किन्तु वस्तुतः यह सुत्तनिपात की अट्ठकथा है। इसके दो भेद हैं—महानिद्देस और चूल्लनिद्देस। महानिद्देस सुत्तनिपात के अट्ठकवग्ग और चूलनिद्देस पारायणवर्ग की अट्ठकथा है। त्रिपिटक के अन्तर्गत इसकी गणना के पीछे इसके महत्व पर प्रकाश पड़ता है। इसे सारिपुत्र की रचना बताया गया है। इससे इस बात को बल मिलता है कि बुद्ध के समय में ही त्रिपिटक पर भारत में ही स्थविरों द्वारा अट्ठकथाएँ लिखी गयीं। इससे सुत्तनिपात और खुद्दकपाठ जैसे ग्रंथों के महत्व का परिबोध होता है। सुत्तनिपात के शेष सुत्तों पर भी इस तरह की अट्ठकथाओं के होने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। महानिद्देस के अध्ययन से पांचवीं छट्ठी शताब्दी पूर्व के उन व्यापारिक स्थानों, सामुद्रिक रास्तों तथा अन्य मार्गों का पता चलता है, जिन देशों से उस समय भारत के व्यापारिक सम्बन्ध थे। अतः इन अट्ठकथाओं का अपना महत्व है। भाषा की दृष्टि से भी यह सुत्तनिपात और खुद्दकपाठ की अट्ठकथा से अत्यन्त प्राचीन है। इस दृष्टि से निद्देस, (महानिद्देस और चूल्लनिद्देस) सुत्तनिपात अट्ठकथा,

---

१. आदितो पञ्चेव गाथा भगवता वुत्ता, सेसा परित्तकरण समये आनन्दत्थेरेना ति।

—परमत्थजोतिका, पृ० १६५।

इस संग्रह के सुत्तों के अन्य उपलब्ध अट्ठकथाएँ हैं तथा खुद्दकपाठ अट्ठकथा आदि की तुलनात्मक अध्ययन की अपेक्षा है।

× × ×

अत्थवण्णनाकार ने सावत्थी (श्रावस्ती) एवं वैशाली जैसे प्राचीन नगरी का बड़ा ही मनोमुग्धकारी दृश्य उपस्थित किया हैं। लिच्छवियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी एक अच्छी व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सावत्थी शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुए अत्थवण्णनाकार ने कहा है कि 'सभी प्रकार की सुख सुविधा के उपकरणों एवं वैभवों से सम्पन्न होने के कारण इस स्थान का नाम सावत्थी या श्रावस्ती पड़ा। इसे सब्बत्थ नामक ऋषि का निवास भूमि भी बताया गया है।

वैशाली और वज्जी :—

'रतनसुत्तवण्णना का अपना एक अलग महत्व है। इस सुत्त से कई बातों का पता चलता है। बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में महाराज अशोक ने जो भूमिका निभायी थी, इस सुत्त से हमें उसका ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होता है। सम्पूर्ण जम्बुदीप में अशोक ने ८४ हजार विहारों का निर्माण करवाया था[1]। वैशाली और राजगृह की दूरी के उल्लेख के क्रम में राजगृह से गंगातट की दूरी ५ योजन बतायी गयी है[2]। गंगातट से वैशाली तीन योजन दूर थी[3]। बुद्ध राजगृह से चलकर गंगातट ५ दिनों में पहुँचे थे, मार्ग में एक-एक योजन पर ५ विहार अवस्थित थे जहाँ उनके क्रमशः पाँच रात्रि विश्रामों का उल्लेख है[4]। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय राजगृह से पाटलिपुत्र का सीधा मार्ग था। यद्यपि उस समय तक पाटलिपुत्र का निर्माण नहीं हुआ था, किन्तु पटना सिटी और फतुहा के बीच का वह स्थान रहा होगा जहाँ से वैशाली के लिए गंगानदी पार करते होंगे। गंगातट से बुद्ध तीन दिनों में वैशाली पधारे थे। उस समय वैशाली भीषण अकाल और तद्जनित महामारी से आक्रान्त थी। भगवान के पधारते ही सभी रोग दूर हो गये। महावृष्टि हुई और अकाल से त्राण मिला।

वैशाली के लिच्छवियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी यहाँ एक बड़ा ही मनोरंजक वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में बाराणसी के राजा की प्रधान महिषी की कोख से एक बार दो मांस के लोथडे, जो एक दूसरे से जुड़े हुए थे और लाख के या वन्धूक के

---

१. परिनिब्बुतं, पि भगवन्तं उद्दिस्स छन्नवुति कोटिधनं विस्सज्जेत्वा असोकमहाराजा सकल जम्बुदीपे चतुरासीति विहार सहस्सानि पतिट्ठापेसि। — रतनसुत्तव० पृ० २०१।

२. राजगहस्स च गङ्गाय च अन्तरा पञ्चयोजनभूमिं—पृ० १६१।

३. वेसालिया च गङ्गाय च अन्तरा तियेजन भूमिं—पृ० १६२।

४. एकेकस्मिं विहारे भगवन्तं वसापेत्वा पञ्चहि दिवसेहि गङ्गातीरं नेसि—पृ० १६२।

पुष्प के समान लाल रंग के थे, उत्पन्न हुए। राजा के भय से रानियों ने उन्हें गंगा में प्रवाहित करवा दिया। एक तपस्वी की दृष्टि उस पर पड़ी और उन्होंने उसे उठा लिया। धीरे-धीरे उनमें जान आने लगी। उनमें से एक ने लड़के और दूसरे ने लड़की का रूप प्राप्त किया। इन दोनों बच्चों का शरीर स्वच्छ पारदर्शी मणि के समान था। जो कुछ भी उनके पेट में जाता था बाहर से स्पष्ट दिखाई पड़ता था। उनके खाल तो थी ही नहीं, इसलिए वे 'निच्छवि' कहलाने लगे। चूँकि वे दोनों बच्चे एक दूसरे से छवि या चमड़ी के द्वारा जुड़े हुए थे, इसलिए उन्हें लिच्छवि कहकर पुकारा जाने लगा। तपस्वी ने इन दोनों बच्चों को लालन-पालन के लिए पड़ोस के गड़ेरियों को सौंप दिया। परन्तु ये दोनों बच्चे गड़ेरियों के लड़कों को तंग करते थे। तब इन्हें उनसे वर्जित कर दिया गया। इसलिए वे वज्जि कहलाये। तपस्वी को इन बच्चों के कुल का पता था। उसने राजा से कहकर उनके लिए ३०० योजन भूमि प्राप्त कर ली और दोनों को एक दूसरे से विवाह कर दिया। तबसे उनके द्वारा बसाया गया प्रदेश 'वज्जि' कहलाने लगा। एक नगरी की भी राजधानी के रूप में स्थापना की गई, परन्तु उपर्युक्त दोनों तरुण-तरुणियों का परिवार तेजी से बढ़ने लगा और जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि के कारण नगरों को तीन वार विशाल किया गया (विसालिकता)। तभी से इसका नाम वैशाली पड़ा।

× × ×

खुद्दकपाठअट्ठकथाकार या अत्थवण्णनाकार को चीर-फाड़ या शरीर विज्ञान का पूर्ण ज्ञान था। इसे अशुभ भावना के निमित्त बताकर समाधि का मार्ग प्रशस्त किया गया है, किन्तु इस वर्णन से शल्य चिकित्सा के अध्येताओं को भी कम लाभ नहीं पहुँचेगा। ये बत्तीस प्रकार के हैं इसीलिए इन्हें 'द्वत्तिसाकार' कहा गया है। यथा—केसा, लोमा, नखा, दन्ता, तच, मंस, नहारू, अट्ठि, अट्ठिमिञ्जं, वक्कं, हदयं, यकनं, किलोमकं, पिहकं, पप्फासं, अन्तं, अन्तगुनं, उदरियं, करिसं, पित्तं, सेम्हं पुब्बो, मत्थलुङ्गं, लोहितं, सेदो, मेदो, अस्सु, वसा, खेळो, सिंघाणिकं, लसिका, मुत्तं।

१. केसा : केश सिर के बाल को कहते हैं। ये प्राकृत रङ्ग से काले कच्चे अरिष्ठ के फल के रंग के समान होते हैं। बनावट से लम्बे और दिशा से ऊपरी दिशा में होते है। अवकाश से दोनों पार्श्व में कनपट्टी से आगे ललाट और पीछे गर्दन के गड्ढे से अलग हुआ सिर के कटाहकावेष्ठित चर्म केशों का अवकाश है। केश सिर को वेष्ठित करनेवाले चर्म में धान की नोक के बराबर प्रवेश कर प्रतिष्ठित है। नीचे अपनी जड़ की तल, ऊपर आकाश और तिरछे एक दूसरे से परिच्छिन्न हैं। यह लोम से भिन्न है।

२. लोम : अर्थात् शरीर के केश। किन्तु केशों के समान एक दम काले नहीं होते हैं। काले तथा लाल पीले रंगों का मिश्रित रूप भूरे रंग के होते हैं। सिर से झुके ताड़ की जड़ की बनावट जैसे होते हैं। सिर को छोड़ कर ये सब जगह आच्छादित हैं।

३. नख : परिपूर्ण व्यक्ति के बीस नख होते हैं। ये सफेद रंग के होते हैं। दो नख एक में नहीं होते हैं। मछली की चोंइया जैसी बनावट[1]।

४. दन्त : परिपूर्ण व्यक्ति के ३२ दाँत होते हैं। ये सफेद रंग के होते हैं। सफेद कुसुम (चमेली) की माला की तरह सुशोभित हैं। नीचली पंक्ति के बीच ४ दाँत लौकी के बीज की बनावट जैसे दीख पड़ते हैं। दोनों पार्श्व में एक-एक दाँत एक जड़ और एक नोक वाले मुकलित चमेली की बनावट के होते हैं। उसके बाद एक-एक दाँत दो जड़ और दो नोकवाले होते हैं। तत्पश्चात् दो-दो दाँत तीन जड़ और तीन नोकवाले होते हैं। उसके बाद दो-दो दाँत चार जड़ और चार नोकवाले होते हैं। ऊपरी पंक्ति में इसी प्रकार के होते हैं।

५. तच-त्वक् : अर्थात् शरीर की चमड़ी को तच या त्वक् कहा गया है। सारे शरीर को वेष्ठित करके रहनेवाले चर्म का नाम त्वक् है। चर्म के ऊपर काले, पीले, सांवले रंग की छवि होती है जिसके कारण इसे नाना वर्णों का कहा गया है, किन्तु स्वभाव से ये श्वेतवर्ण के ही हैं[2]। अग्नि ज्वाला से प्रज्ज्वलित चर्म को देखने से इसके श्वेतभाव का परिबोध होता है।[3] पैर की अङ्गुलि की चमड़ी रेशम के कीड़े की थैली की बनावट जैसी होती है। पैर की पीठ की चमड़ी बूट जूते की बनावट जैसी होती है। जंघे की त्वचा भात रखने के ताड़पत्र की बनावट जैसी होती है। उरु की त्वचा की बनावट चावल से भरी लम्बी थैली की आकृति जैसी होती है। पुट्ठे का चमड़ा पानी से भरे हुए जल छक्के के कपड़े की बनावट के होते हैं आदि। फिर क्रम से किस त्वचा के बाद किस त्वचा की स्थिति है, इसका भी विश्लेषण मिलता है।

६. मंस : अर्थात् मांस। और ये नौ सौ मांस पेशियों से निर्मित हैं।[4] वर्ण से रक्तवर्ण का, ठीक पलाश के फूल जैसा। शरीर के विभिन्न अंगों के मांस विभिन्न आकार के हैं, इसका यहाँ विस्तृत विवरण मिलता है। ३०० हड्डियों को आवेष्ठित कर मांस शरीर में अवस्थित हैं।[5]

---

१. मच्छसकलिकसण्ठाना—पृ० ४८।

२. सो हि यदि छविरागरञ्जितत्ता काळकोदातादिवण्णवसेन नानावण्णो विय दिस्सति, तथापि सभागवसेन सेतो एव। पृष्ठ ५०।

३. सो पनस्स सेतभावो अग्गिजालाभिघातपहरण पदारादीहि विद्धंसिताय छविया पाकटो होति—पृ० ५०।

४. ततो परं सरीरे नवपेसितसतप्पभेदं मंसं—पृ० ५२।

५. अट्ठिसततयं अनुलित्तं—पृ० ५२।

७. **न्हारू (स्नायु)**: स्नायु की संख्या ९०० बतायी गयी हैं। रंग, इसके सफेद होते हैं और बनावट की दृष्टि से इन्हें नाना प्रकार का कहा जा सकता है[१]। गर्दन के ऊपरी भाग से लेकर पाँच महा स्नायु शरीर को बाँधती हुई आगे की ओर से उतरती हुई नीचे की ओर जाती है। पाँच पीछे की ओर से बाँधती हुई दीख पड़ती हैं। इन्हें २० महान्हारू कहते हैं। इसी प्रकार दाहिने हाथ को आगे की ओर से पाँच और पीछे की ओर से पाँच स्नायु आवेष्ठित करती हैं। इसी प्रकार १० स्नायु बायें हाथों को जकड़े रहती हैं। दाहिने और बायें दोनों पैरों को आगे और पीछे की ओर से १०-१० नसें आबद्ध करती दीख पड़ती हैं। शरीर को धारण करनेवाली ६० महास्नायु हैं जिन्हें अभिधानाप्पदीपिका में 'कण्डरातुमहासिरा' कहकर पुकारा गया है। इसे कन्दलकली की बनावट जैसा कहा गया है—"कन्दल मुकुल सदिसा दाढ़ा"। इसे ही जानकी हरण नाटक में "प्रवीकशद्दलकन्दल शोभिनी" कहकर स्मरण किया गया है। और भी नसें हैं, जो धागे से भी पतली हैं। इनकी संख्या ३०० से भी अधिक हैं।

८. **अट्ठि (अस्थि)** : दाँत की ३२ हड्डियों को छोड़कर शरीर में ३०० हड्डियाँ हैं। ६४ हाथ की हड्डियाँ, ६४ पैर की हड्डियाँ, मांस के सहारे रहनेवाली ६४ नर्म हड्डियाँ। २ एड़ी की हड्डियाँ, प्रत्येक पैर में दो-दो हड्डियाँ, २ नरहर की हड्डियाँ, १ जंघे की हड्डी, २ कमर की हड्डी, १८ पीठ के काँटों की हड्डियाँ, २४ पसली की हड्डियाँ, १४ छाती की हड्डियाँ, १ हृदय की हड्डी, २ अक्षक की हड्डी, २ पेट के भीतर की हड्डियाँ, २ बाँह की हड्डियाँ, एक नाक की हड्डी, २ आँख की हड्डी, २ कान की हड्डी, एक ललाट की हड्डी, एक गुर्दे की हड्डी, ९ सिर की खोपड़ी की हड्डियाँ आदि ३०० हड्डियों का वर्णन मिलता है। इनके रंग श्वेत तथा ये विभिन्न बनावट के पाये जाते हैं।

९. **अट्ठिमिञ्जं (हड्डी की मज्जा)** : ३०० हड्डियों की मज्जा को अट्ठिमिञ्जं कहते हैं। इसके रंग एक दम सफेद होते हैं। हड्डियों के अनुरूप ही इसके भी स्वरूप होते हैं।

१०. **वक्कं (वृक्क)** : वृक्क, एक गुच्छे में जैसे दो आम हों, उसी तरह एक में बँधी दो मांस की पिण्डियां हैं। हल्के लाल रंग के होते हैं[२]।

११. **हदय (हृदय)** : यह हृदय का मांस या कलेजा है। लाल कमल के पीठ के वर्ण जैसा ही हृदय का रङ्ग होता है। प्रज्ञावान व्यक्तियों का हृदय थोड़ा विकसित होता है, किन्तु मन्द प्रज्ञावालों का हृदय अधखिला जैसा होता है[१]। हृदय

---

१. Nahāru denotes the muscles which are nine hundred in number. All the muscles are white in clour, and are of various shapes.

—Life and work of Buddha Ghosa, B. C. Law, p. 126.

२. पञ्ञा बहुलानं थोकं विकसितं, मन्द पञ्ञानं मुकुळितमेव। पृष्ठ ६०

के भीतर पुन्नाग के बीज के प्रतिष्ठित होने भर का गड्ढा होता है, जहाँ आधे पसर भर लहू ठहरता है जिसके सहारे मनोधातु (Mind) और मनोविज्ञान धातु (Mind Consceousness) का अस्तित्व बताया गया है। हर तरह के व्यक्ति के अनुसार ही इस रक्त में भी परिवर्तन हो जाते हैं। रागचरित (Passionate beings) व्यक्ति का रक्त लाल, दोस चरित (hot temperedperson) व्यक्ति का काला, मोह चरित (fools) व्यक्ति का मांस के धोये जल के समान, वित्तर्क चरित (Persons having much disputation) व्यक्ति का कुलत्थी के जूस के रंग का, श्रद्धाचरित (Persons having faith) व्यक्ति का कर्णिका फूल के रंग का तथा प्रज्ञाचरित (Wise persons) व्यक्ति का निर्मल स्वच्छ धोये हुए हुए ज्योतिमणि के सदृश ज्योतिर्मय दीखता है। दोनों छातियों के बीच में हृदय का अस्तित्व है।

१२. यकनं (यकृत) : यह मांस का युग्म पटल है।[1] लाल कुमुद के पत्तें के पीठ की तरह लाल वर्ण का है।[2] कचनार के पत्ते जैसी ही इसकी बनावट होती है।[3] मन्द बुद्धि के व्यक्ति को एक किन्तु बड़ा यत्कृत होता है किन्तु प्रज्ञावान व्यक्तियों के छोटे-छोटे दो या तीन होते हैं। दोनों छातियों के बीच दाहिनी ओर इसकी स्थिति होती है।

१३. किलोमकं (क्लोमक) : यह दो प्रकार के होते हैं—आच्छादित और अनाच्छादित मांस। सफेद वस्त्र खण्ड जैसा इनके रङ्ग होते हैं।

१४. पिहकं (प्लीहा) : यह पेट के जीभ का मांस है। निगुण्डी नीले फूल के रंग सदृश्य इसका वर्ण होता है। यह ७ अंगुल के बराबर बन्धन रहित काले बछड़े की जीभ जैसी ही आकृतिवाला होता है। यह हृदय के बांये पार्श्व में अवस्थित रहता है। उदरपटल के सहारे यह स्थिर रहता है।

१५. पप्फासं (फुफ्फुस) : ३२ अधकटे किन्तु अविच्छिन्न टुकड़ों वाला पुप्फुस का मांस पप्फासं कहलाता है। पके गूलर के रंग के सदृश्य इसका रंग है। मोटे पूवे के टुकड़े की बनावट जैसी ही इसकी आकृति होती है।

१६. अन्तं (आँत) : लम्बाई में पुरुष की आँत ३२ हाथ की किन्तु स्त्री की २८ हाथ की होती है। यह ९१ स्थानों पर कुछ झुकी हुई चीनी और चूने की रंग जैसा सफेद वर्णवाला होता है। गर्दन से 'करिसमग्गं' तक इसकी स्थिति होती है।

---

१. यमकपिण्डं—पृ० ६१।

२. रत्तकुमुद बाहिर पत्त पिट्ठि वण्णं—पृ० ६१।

३. कोविळार पत्तसण्ठानं—पृ० ६१।

१७. **अन्तगुणं (पतली आंत)** : इसे छोटी आँत भी कहते हैं। आँतों के झुके हुए स्थानों में जो बन्धन होते हैं, वह इन्हीं पतली आँतों द्वारा लगे होते हैं। कुमुदनी की जड़ के सदृश्य इसके श्वेत वर्ण होते हैं।

१८. **उदरियं (उदरस्थवस्तुएँ)** : खाने, पीने, उपवासादि जो वस्तुएँ पेट में जमा हो जाती है, उसे ही उदरियं कहते हैं। खाये गये पदार्थों का पाँच प्रकार से पेट में उपयोग होता है। (१) एक भाग को पेट के कीड़े खाते हैं। (२) दूसरे भाग को जठराग्नि जला डालती है। (३) तीसरा भाग पेशाब में परिवर्तित हो जाता है। (४) चौथा भाग पाखाना बन जाता है और (५). पाँचवाँ भाग रस बनकर लहू मांस आदि को अभिवर्द्धित करता है।

१९. **करिसं**—पक्वाशय को नीचे की ओर नाभी और पीठ के काँटों की जड़ के बीच आँतों के अन्त में ऊँचाई में आठ अंगुल के बराबर बाँस की नली के आकार की तरह बताया गया है।

२०. **मत्थलुङ्ग** : सिर की खोपड़ी के भीतर रहनेवाली मज्जा की राशि को 'मत्थलुङ्ग' कहा गया है—एकदम श्वेतवर्ण। सिर की खोपड़ी के भीतर ४ सीयन के मार्ग के सहारे मिलकर रखे हुए चार आँटे के पिण्ड के समान एकत्र दीख पड़ते हैं। ये सिर की खोपड़ी के भीतरी भाग और मस्तिष्क के भाग से अलग-अलग हैं।

२१. **पित्त** : पित्त दो प्रकार के हैं—बद्धपित्त और अबद्धपित्त। बद्धपित्त महुआ के गाढ़े तेल के रंग के एवं अबद्धपित्त कुम्हलाई सारदी के फूल के रंग के होते हैं। अबद्धपित्त केश, लोम, दाँत, नख, मांस रहित स्थानों और कड़े सूखे चमड़े को छोड़कर पानी में तेल की बूँद के समान अवशिष्ट शरीर में फैला रहता है। इसके कूपित होने पर आंखें पीली हो जाती हैं, नाचती हैं, शरीर कांपता है तथा खुजलाहट बढ़ जाती है। बद्धपित्त हृदय और फुप्फुस के बीच यकृत के मांस के सहारे प्रतिष्ठित बड़े नेनुआ के कोष के समान पित्त के कोष में स्थित है। बद्धपित्त के कुपित होने से प्राणी पागल और बेहोश हो जाता है। सभी प्रकार की उसकी प्रज्ञा नष्ट हो जाती है।

२२. **सेम्हं (कफ)** : शरीर के भीतर एक पूर्ण पात्र भर कफ को सेम्ह कहा गया है। रंग सफेद ठीक नागवला के पत्ते के रसके सदृश्य। जैसे पानी में सेवार के बीच कंकड़ या लकड़ी डालने पर सेवार अलग हो जाता है किन्तु थोड़ी देर बाद फिर एक हो जाता है, उसी तरह शरीर में पेय, भोजन आदि पड़ने पर कफ अलग-अलग हो जाते हैं, किन्तु पुनः एक हो जाते हैं। इसके बन्द होने से फोड़े और मुर्गी के सड़े अण्डे के समान पेट अत्यन्त घिनौना और दुर्गन्धमय बन जाता है। वहाँ उठे गन्ध से ढकार भी दुर्गन्ध देता है।

२३. पुब्बो (पीव) : पुब्बो अर्थात् पीव। सड़े हुए खून से इसकी उत्पत्ति है। पीले पत्ते जैसा रंग। पीव मृत्य शरीर में सड़े घने माड़ के रंग का होता है। चोट आदि, आग से जलने, या कटे-छटे स्थान का लोहू रूक कर पक जाता है, फोड़े फुन्शी होते हैं और इस तरह पीव बन जाता है।

२४. लोहितं : अर्थात् लोहू। लोहू दो प्रकार के होते हैं—एक जमा रहने वाला और दूसरा बहते रहनेवाला। जमा हुआ लोहू यकृत के निचले भाग में अवस्थित है और एक पूर्ण पात्र भर हृदय, वृक्क, फुप्फुस के ऊपर थोड़ा थोड़ा गिरता हुआ भिगोता रहता है। ऐसा नहीं होने से प्राणी अत्यन्त पिपासा से आतुर हो उठता है। बहता लोहू शरीर की नसों में दौड़ता हुआ शक्ति प्रदान करता है। इनका संचरण मांस विरहित स्थानों में नहीं होता है।

२५. सेदो (पसीना) : शरीर के लोम के छेद से निकलनेवाला जल पसीना या स्वेद कहलाता है। तिल के तेल सदृश्य इसका रंग होता है।

२६. मेदो (मेदा) : यह गाढ़े तेल जैसा होता है। चीरी हुई हल्दी के रंग जैसा इसका भी रंग होता है।

२७. अस्सु (आँसू) : आँखों से बहनेवाले जल को आंसू या अश्रु कहते हैं।

२८. वसा : यह पतला तेल जैसा है। इसे शरीर में मिला हुआ तेल भी कहते हैं। नारियल तेल जैसा इसका भी रंग होता है। माड़ में मिलाये गये तेल जैसा इसका रंग भी देखने को मिलता है।

२९. थूक : मुख के भीतर फेन से मिला तत्व थूक कहलाता है। रंग ठीक फेन के समान सफेद दीखता है।

३०. सिंघाणिका : मस्तिष्क में बहनेवाली मैल को सिंघाणिका कहते हैं। नाक द्वारा मस्तिष्क के मैल कफ की तरह निकलते रहते हैं।

३१. लसिका : शरीर की सन्धियों के बीच चिकनी मैल को लसिका कहते है। कनइल के गोंद जैसा इसका रंग होता है। हड्डियों की सन्धियों के बीच यह अवस्थित रहता है। जिस शरीर में इसकी मन्दता होती है, उसे उठते, बैठते, चलते, सोते, फिरते हड्डियाँ कटकटाती हैं। एक दो योजन चलने पर उसकी वायु दूषित हो जाती है, गात्र दुखने लगते हैं, किन्तु इसकी अधिकता वाले शरीर के साथ ऐसी बात नहीं होती है।

३२. मुत्र : यह रंग से उरद के धोवन के पानी के सदृश्य होता है। यह शरीर के नीचले भाग में रहता है।

महावग्ग और जातकों से पता चलता है कि बौद्धयुगीन भारत शल्य चिकित्सा में कितना आगे था। राजगृह के प्रसिद्ध वैद्य जीवक ने कई सफल आपरेशन किये थे।

निधिकण्डसुत्त, जो इस ग्रन्थ का मौलिक सुत्त है, में नाना प्रकार की निधियों पर प्रकाश डाला है, किन्तु बुद्धोपदिष्ट ज्ञान रूपी निधियों की तुलना किसी से नहीं की जा सकती है।

'तिरोकुड्डसुत्त' तत्कालीन भूतप्रेतों के प्रति लोकआस्था का परिचायक है। पितरों के लिए दान देकर उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति करायी जा सकती है। बौद्धों के पुनर्जन्म एवं प्रेतयोनि के प्रति विश्वास का यह सुत्त उद्घाटन करता है।

'मेत्तसुत्त' 'मैत्रीभावना' का 'महागीता' है। आगत, अनागत और वर्त्तमान के सभी प्राणियों के प्रति मैत्री का भाव रखना, इस सुत्त का लक्ष्य है। आज के सन्तप्त विश्व के लिए इस सुत्त का अत्यधिक महत्व है। मित्रता के पाठ का ऐसा सन्देश सदैव भारत ही देता रहा है।

अन्त में हम यह पुनः कह सकते हैं कि इस खुद्दकपाठ और उसकी अट्ठकथा का पालि साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। लगता है इस ग्रंथ के आदि सुत्त खुद्दकपाठ के नाम पर ही इस निकाय का नाम खुद्दक निकाय पड़ा है।

नोट : (क) प्राक्कथन पृ० १० में जिन पुस्तकों को काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थान में रखे जाने की बात कही गई है वे प्रायः अधिकांश रूप में बिहार रिसर्च सोसायटी पुस्तकालय (संग्रहालय पटना) में रखी हुई है।

(ख) भूमिका (पृ० ४०) अधिशील शिक्षा के अन्तर्गत सुत्तपिटक छप गया है, यहां विनय पिटक होना चाहिए। और सुत्तपिटक को अधिचित्त शिक्षा के अन्तर्गत होना चाहिए।

नन्दकिशोर उपाध्याय

परमत्थजोतिका
(खुद्दकपाठट्ठकथा)

विसय-सूची

परमत्थजोतिका

(खुद्दकपाठट्ठकथा)

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

परमत्थजोतिका

(खुद्दकपाठट्ठकथा)

(क) गन्थारम्भकथा

बुद्धं सरणं गच्छामि ।
धम्मं सरणं गच्छामि ।
सङ्घं सरणं गच्छामी[१] । (खु० नि० १.३) ति B.1 R.11

अयं सरणगमननिद्देसो[२] खुद्दकानं आदि ।

इमस्स[३] दानि अत्थं परमत्थजोतिकाय खुद्दकट्ठकथाय विवरितुं विभजितुं उत्तानीकातुं इदं वुच्चति—

"उत्तमं वन्दनेय्यानं, वन्दित्वा रतनत्तयं ।
खुद्दकानं करिस्सामि, केसञ्चि अत्थवण्णनं ॥
खुद्दकानं गम्भीरत्ता[४], किञ्चापि अतिदुक्करा ।
वण्णना मादिसेनेसा[५], अबोधन्तेन[६] सासनं ॥
अज्जा पि तु अब्बोच्छिन्नो[७], पुब्बाचरियनिच्छयो ।
तथेव[८] च ठितं यस्मा, नवङ्गं सत्थुसासनं ॥
तस्माहं कातुमिच्छामि, अत्थसंवण्णनं इमं ।
सासनं चेव निस्साय, पोराणं च विनिच्छयं ॥
सद्धम्मबहुमानेन, नात्तुक्कंसनकम्यता ।
नाञ्ञेसं वम्भनत्थाय, तं सुणाथ समाहिता" ति ॥

१. ०तथा दुतियं ततियं पि ति—स्या० । २. सरणागमन०—सी०; सरणत्तयनिद्देसो—स्या० ।
३. इमिस्स—स्या० ।
४. गभीरत्ता—सी० । ५. मादिसेनेव—स्या० ।
६. अपारेन्तेन—स्या० । ७. अबोच्छिन्नो—सी०; अनच्छिन्नो—स्या० ।
८. तत्थेव—स्या० ।

(ख) खुद्दकववत्थान

B. 2 तत्थ **"खुद्दकानं करिस्सामि, केसञ्चि अत्थवण्णनं"** ति वुत्तत्ता खुद्दकानि ताव ववत्थपेत्वा[१] पच्छा अत्थवण्णनं करिस्सामि। खुद्दकानि नाम खुद्दकनिकायस्स एकदेसो, खुद्दकनिकायो नाम पञ्चन्नं[२] निकायानं एकदेसो। पञ्च निकाया नाम—

दीघमज्झिमसंयुत्त[३], अङ्गुत्तरिकखुद्दका[४]।
निकाया पञ्च गम्भीरा, धम्मतो अत्थतो चिमे॥

R. 12 तत्थ ब्रह्मजालसुत्तादीनि चतुत्तिंस सुत्तानि **दीघनिकायो**[५]। मूलपरियायसुत्तादीनि[६] दियड्ढसतं[७] द्वे च सुत्तानि **मज्झिमनिकायो**। ओघतरणसुत्तादीनि सत्त सुत्तसहस्सानि सत्त च सुत्तसतानि द्वासट्ठि च[८] सुत्तानि **संयुत्तनिकायो**। चित्तपरियादानसुत्तादीनि नव सुत्तसहस्सानि पञ्च च[९] सुत्तसतानि सत्तपञ्ञासं च सुत्तानि **अङ्गुत्तरनिकायो**। खुद्दकपाठो धम्मपदं उदानं इतिवुत्तकं सुत्तनिपातो विमानवत्थु पेतवत्थु थेरगाथा थेरीगाथा जातकं निद्देसो पटिसम्भिदा अपदानं बुद्धवंसो चरियापिटकं विनयाभिधम्मपिटकानि[१०], ठपेत्वा वा[११] चत्तारो निकाये अवसेसं बुद्धवचनं **खुद्दकनिकायो**।

कस्मा पनेस[१२] खुद्दकनिकायो ति वुच्चति[१३]? बहूनं[१४] खुद्दकानं धम्मक्खन्धानं समूहतो निवासतो च। समूहनिवासा हि "निकायो"

---

१. ववट्ठपेत्वा—स्या०। २. पञ्च—सी०।
३. ०संयुत्ता—सी०, रो०। ४. अङ्गुत्तर खुद्दक—स्या०।
५. एत्थ वुत्तं च
"चतुत्तिंसेव सुत्तन्ता तिवग्गो यस्स संगहो।
येस दीघनिकायो सो पठमो अनुलोमिको"॥
इति स्या० पोत्थके अधिको पाठो दिस्सति।
६. पठवीसुत्तादीनि—स्या०। ७. दियड्ढसतसुत्तानि—स्या०।
८. चेव—स्या०। ९. रो०, सी० पोत्थकेसु नत्थि।
१०. विनयपिटकाभिधम्मपिटकानि—सी०, स्या०। ११. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१२. पनेसो—सी०।
१३. वुच्चतीति—स्या०। १४. बहुन्नं—सी०, स्या०, रो०।

ति वुच्चन्ति[१]। "नाहं भिक्खवे अञ्ञं एकनिकायं पि समनुपस्सामि एवं चित्तं, यथयिदं भिक्खवे तिरच्छानगता पाणा। पोणिकनिकायो[२] चिक्खल्लिकनिकायो" ति एवमादीनि चेत्थ साधकानि सासनतो[३] लोकतो च। अयमस्स[४] खुद्दकनिकायस्स एकदेसो। इमानि सुत्तन्तपिटकपरियापन्नानि अत्थतो विवरितुं विभजितुं उत्तानीकातुं च[५] अधिप्पेतानि खुद्दकानि, तेसं पि खुद्दकानं सरणसिक्खापदद्वत्तिंसाकारकुमारपञ्हमङ्गलसुत्तरतनसुत्ततिरोकुट्ट[६]निधिकण्डमेत्तसुत्तानं वसेन नवप्पभेदो खुद्दकपाठो आदि आचरियपरम्पराय वाचनामग्गं आरोपितवसेन न भगवता वुत्तवसेन। भगवता हि वुत्तवसेन—

"अनेकजाति संसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारं[७] गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥ R. 13
गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि। B. 3
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खतं[८]।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा"

(खु० नि० १.३२) ति,

इदं गाथाद्वयं सब्बस्सा पि बुद्धवचनस्स आदि। तं च मनसा व[९] वुत्तवसेन, न वचीभेदं कत्वा वुत्तवसेन। वचीभेदं पन कत्वा[१०] वुत्तवसेन—

"यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा,
यतो पजानाति सहेतुधम्मं"

(म० व० ३) ति,

१. वुच्चति—सी०; यथाह—सी०, रो०। २. पोणिकि०—सी०।
३. ० च—स्या०। ४. इच्चस्स—सी०; इमस्स—रो०।
५. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि। ६. ० तिरोकुड्ड ०—सी०, स्या०, रो०।
७. गहकारकं—सी०, रो०। ८. विसङ्खितं—सी०, रो०।
९. स्या० पोत्थके नत्थि। १०. स्या० पोत्थके नत्थि।

अयं गाथा आदि। तस्मा य्वायं नवप्पभेदो खुद्दकपाठो इमेसं खुद्दकानं आदि, तस्स आदितो पभुति[1] अत्थसंवण्णनं आरभिस्सामि।

(ग) निदानसोधन

तस्स चायमादि "**बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, सङ्घं सरणं गच्छामी**" ति। तस्सायं अत्थवण्णनाय मातिका[2]—

"केन कत्थ कदा कस्मा, भासितं सरणत्तयं[3]।
कस्मा चिधादितो वुत्त, मवुत्तमपि आदितो॥
निदानसोधनं कत्वा, एवमेत्थ ततो परं।
बुद्धं सरणगमनं[4], गमकं च विभावये॥
भेदाभेदं फलं चापि, गमनीयं च दीपये।
धम्मं सरणमिच्चादि, द्वयेपेस नयो मतो॥
अनुपुब्बववत्थाने, कारणं च विनिद्दिसे।
सरणत्तयमेतं च, उपमाहि पकासये" ति॥

R. 14 तत्थ पठमगाथाय ताव इदं सरणत्तयं[5] केन भासितं, कत्थ भासितं, कदा भासितं, कस्मा भासितं अवुत्तमपिचादितो[6] तथागतेन कस्मा इधादितो वुत्तं ति पञ्च पञ्हा।

B. 4 तेसं विस्सज्जना—**केन भासितं** ति भगवता भासितं, न सावकेहि, न इसीहि, न देवताहि। **कत्था** ति बाराणसियं इसिपतने मिगदाये। **कदा** ति आयस्मन्ते यसे सद्धिं सहायकेहि अरहत्तं पत्ते एकसट्ठिया अरहन्तेसु बहुजनहिताय[7] लोके धम्मदेसनं करोन्तेसु। **कस्मा** ति पब्बज्जत्थं च उपसम्पदत्थं च। यथाह—

"एवं च पन भिक्खवे पब्बाजेतब्बो उपसम्पादेतब्बो। पठमं केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादापेत्वा[8] एकंसं

१-१. आदितोप्पभुति—स्या०। २. नयमातिका—सी०, रो०।
३. रतनत्तयं—स्या०। ४. सरणागमनं—सी०।
५. सरणगमनत्तयं—स्या०। ६. अवुत्तम्पिचादितो—सी०, रो०।
७. ० सुखाय—स्या०। ८. अच्छादेत्वा—सी०, रो०।

उत्तरासङ्गं कारापेत्वा भिक्खूनं पादे वन्दापेत्वा उक्कुटिकं निसीदापेत्वा अञ्जलिं पग्गण्हापेत्वा[1] 'एवं वदेही' ति वत्तब्बो 'बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, सङ्घं सरणं गच्छामी' ति"।

कस्मा चिधादितो[2] वुत्तं ति इदं च नवङ्गं सत्थुसासनं तीहि पिटकेहि सङ्गण्हित्वा वाचनामग्गं आरोपेन्तेहि पुब्बाचरियेहि यस्मा इमिना मग्गेन देवमनुस्सा उपासकभावेन वा पब्बजितभावेन वा सासनं ओतरन्ति, तस्मा सासनोतारस्स मग्गभूतत्ता इध खुद्दकपाठे आदितो वुत्तं ति ञातब्बं।

कतं[3] निदानसोधनं।

१. पग्गेण्हापेत्वा—स्या०। २. पिधादितो—स्या०।
३. कथं—सी०; कतमं—स्या०।

१. सरणत्तयवण्णना

बुद्धविभावना

इदानि यं वुत्तं "बुद्धं[१] सरणगमनं[२], गमकं च विभावये" ति, तत्थ सब्बधम्मेसु अप्पटिहतञाणनिमित्तानुत्तर-विमोक्खाधिगमपरिभावितं खन्धसन्तानमुपादाय, पञ्ञत्तितो सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानं वा सच्चाभिसम्बोधिमुपादाय[३] पञ्ञत्तितो[४] सत्तविसेसो बुद्धो[५]। यथाह—

B. 5 "बुद्धो ति यो सो भगवा सयम्भू अनाचरियको पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु सामं सच्चानि अभिसम्बुज्झि, तत्थ च सब्बञ्ञुतं पत्तो, बलेसु च वसीभावं" ति। अयं ताव अत्थतो बुद्धविभावना।

ब्यञ्जनतो पन "बुज्झिता ति बुद्धो, बोधेता ति बुद्धो" ति एवमादिना नयेन वेदितब्बो। वुत्तं चेतं—

"बुद्धो ति केनट्ठेन बुद्धो, बुज्झिता सच्चानी ति बुद्धो, बोधेता पजाया ति बुद्धो, सब्बञ्ञुताय बुद्धो, सब्बदस्साविताय बुद्धो, अनञ्ञनेय्यताय
R. 15 बुद्धो, विकसिताय[६] बुद्धो, खीणासवसङ्खातेन बुद्धो, निरुपक्किलेससङ्खातेन बुद्धो, एकन्तवीतरागो ति बुद्धो, एकन्तवीतदोसो ति बुद्धो, एकन्तवीतमोहो ति बुद्धो, एकन्तनिक्किलेसो ति बुद्धो, एकायनमग्गं गतो ति बुद्धो, एको अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति[७] बुद्धो[७], अबुद्धिविहतत्ता बुद्धिपटिलाभा[८] बुद्धो। बुद्धो ति नेतं नामं मातरा

१. ० च—स्या०। २. सरणागमनं—सी०।
३. सच्चाभिसमयमुपादाय—सी०, रो०; सम्बोधनमुपादाय—स्या०। ४. पञ्ञत्तिको—सी०, स्या०, रो०।
५. ० ति—स्या०। ६. विसविताय—सी०, रो०।
७-७. नपरेहि बुद्धता बुद्धो—स्या०। ८. ० ति—सी०।

कतं, न पितरा कतं, न भातरा कतं, न भगिनिया कतं, न मित्तामच्चेहि कतं[1], न ञातिसालोहितेहि कतं, न समणब्राह्मणेहि कतं, न देवताहि कतं[1], विमोक्खन्तिकमेतं बुद्धानं भगवन्तानं बोधिया मूले सह सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पटिलाभा सच्छिका पञ्ञत्ति यदिदं बुद्धो" ति ।

एत्थ च यथा लोके अवगन्ता अवगतो ति वुच्चति, एवं **बुज्झिता सच्चानी** ति बुद्धो । यथा पण्णसोसा वाता पण्णसुसा ति वुच्चन्ति, एवं **बोधेता पजाया** ति बुद्धो । **सब्बञ्ञुताय बुद्धो** ति सब्बधम्मबुज्झनसमत्थाय बुद्धिया बुद्धो ति वुत्तं होति । **सब्बदस्साविताय बुद्धो** ति सब्बधम्मबोधनसमत्थाय बुद्धिया बुद्धो ति वुत्तं होति । **अनञ्ञनेय्यताय बुद्धो** ति अञ्ञेन अबोधितो सयमेव बुद्धत्ता बुद्धो ति वुत्तं होति । **विकसिताय[2] बुद्धो** ति नानागुणविकसनतो[3] पदुममिव विकसनट्ठेन बुद्धो ति वुत्तं होति । **खीणासवसङ्खातेन बुद्धो** ति एवमादीहि चित्तसङ्कोचकरधम्मपहानतो[4] निद्दाक्खयविबुद्धो[5] पुरिसो B. 6 विय सब्बकिलेसनिद्दाक्खयविबुद्धत्ता[6] बुद्धो ति वुत्तं होति । **एकायनमग्गं गतो ति बुद्धो** ति बुद्धियत्थानं गमनत्थपरियायतो यथा मग्गं गतो पि[7] पुरिसो गतो ति वुच्चति, एवं एकायनमग्गं गतत्ता पि बुद्धो ति वुच्चती ति दस्सेतुं वुत्तं । **एको अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति बुद्धो** ति न परेहि बुद्धत्ता बुद्धो, किन्तु[8] सयमेव अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धत्ता बुद्धो ति वुत्तं होति । R. 16 **अबुद्धिविहतत्ता बुद्धिपटिलाभा बुद्धो** ति बुद्धि बुद्धं बोधो[9] ति परियायवचनमेतं । तत्थ यथा नीलरत्तगुणयोगतो "नीलो पटो, रत्तो

१-१. रो० नत्थि ।
२. विसविताय—रो०, सी० ।
३. ० विसवनतो—सी०, रो० ।
४. चित्तसङ्कोचकरणप्पहानतो—सी०, रो० ।
५. निद्दुक्खयविबुद्धो—रो० ।
६. ० निद्दुक्खयविबुद्धता—रो० ।
७. स्या० पोत्थके नत्थि ।
८. स्या० पोत्थके नत्थि ।
९. बोधी—स्या० ।

पटो" ति वुच्चति, एवं बुद्धिगुणयोगतो बुद्धो ति ञापेतुं वुत्तं होति। ततो परं बुद्धो ति नेतं नामं ति एवमादि अत्थमनुगता अयं पञ्ञत्ती ति बोधनत्थं वुत्तं ति[1] एवरूपेन नयेन सब्बेसं पदानं बुद्धसद्दस्स साधनसमत्थो अत्थो वेदितब्बो।

अयं ब्यञ्जनतोपि बुद्धविभावना।

(क) सरणगमनगमकविभावना

इदानि **सरणगमनादीसु**[2] हिंसती ति सरणं, सरणगतानं तेनेव सरणगमनेन भयं सन्तासं दुक्खं दुग्गतिं परिक्किलेसं हिंसति विधमति नीहरति निरोधेती ति अत्थो। अथ वा हिते पवत्तनेन अहिता च निवत्तनेन सत्तानं भयं हिंसती ति बुद्धो*, भवकन्तारा[3] उत्तरणेन अस्सासदानेन च धम्मो, अप्पकानं पि[4] कारानं[5] विपुलफलपटिलाभकरणेन सङ्घो। तस्मा इमिना पि परियायेन तं रतनत्तयं सरणं। तप्पसादतग्गरुताहि[6] विहतविद्धंसितकिलेसो तप्परायणताकारप्पवत्तो[7] अपरप्पच्चयो वा चित्तुप्पादो सरणगमनं। तंसमङ्गी सत्तो तं सरणं गच्छति, वुत्तप्पकारेन चित्तुप्पादेन "एस मे सरणं, एस मे परायणं" ति एवमेतं उपेती ति अत्थो। उपेन्तो च "एते मयं भन्ते भगवन्तं सरणं गच्छाम धम्मं च, उपासके नो भगवा धारेतू" (म० व० ६) B. 7 ति तपुस्सभल्लिकादयो[8] विय समादानेन वा, "सत्था मे भन्ते भगवा, सावकोहमस्मी" ति महाकस्सपादयो विय सिस्सभावूपगमनेन वा, "एवं वुत्ते ब्रह्मायु ब्राह्मणो उट्ठायासना एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा तिक्खत्तुं उदानं उदानेसि 'नमो

१-१. स्या० पोत्थके नत्थि।
*. सरणं०—स्या०।
२. सरणागमनादीसु—सी०; एवमुपरिपि सरणादीसु—स्या०; गमनादीसु—रो०।
३. भवकन्तारतो—सी०, रो०; भवकन्तार—स्या०।
४. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
५. ० दानपूजनवसेन उपनीतसक्कारानं—सी०, रो०; सक्कारानं—स्या०।
६. तप्पसादतग्गरुकोहि—सी०।
७. ० वा—स्या०।
८. तपस्सु०—सी०, रो०।

तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। नमो तस्स...पे०... सम्मासम्बुद्धस्सा[१]' (म० नि० २.३८९) ति" ब्रह्मायुआदयो विय R. 17
तप्पोणत्तेन वा, कम्मट्ठानानुयोगिनो विय अत्तसन्निय्यातनेन[२] वा, अरियपुग्गला[३] विय सरणगमनुपक्किलेससमुच्छेदेन वा ति[४] अनेकप्पकारं विसयतो किच्चतो च उपेति।

अयं सरणगमनस्स गमकस्स च विभावना।

(ख) भेदाभेदफलदीपना

इदानि "**भेदाभेदं फलं चापि, गमनीयं च दीपये**" ति वुत्तानं भेदादीनं अयं दीपना—एवं सरणगतस्स पुग्गलस्स दुविधो[५] सरणगमनभेदो[६] सावज्जो च[७] अनवज्जो च। अनवज्जो कालकिरियाय, सावज्जो अञ्ञसत्थरि वुत्तप्पकारप्पवत्तिया*, तस्मिं च वुत्तप्पकारविपरीतप्पवत्तिया[८]। सो दुविधो पि पुथुज्जनानमेव। बुद्धगुणेसु अञ्ञाणसंसयमिच्छाञाणप्पवत्तिया अनादरादिप्पवत्तिया च तेसं[९] सरणं सङ्किलिट्ठं होति। अरियपुग्गला पन अभिन्नसरणा चेव[१०] असङ्किलिट्ठसरणा च होन्ति। यथाह "अट्ठानमेतं भिक्खवे अनवकासो, यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो अञ्ञं सत्थारं उद्दिसेय्या" ति। पुथुज्जना तु यावदेव[११] सरणभेदं न पापुणन्ति, तावदेव अभिन्नसरणा[१२]। सावज्जो व[१३] नेसं[१३] सरणभेदो, सङ्किलेसो च अनिट्ठफलदो होति। अनवज्जो अविपाकत्ता अफलो, अभेदो पन फलतो इट्ठमेव फलं देति।

१. बुद्धस्सा—स्या०, रो०।
२. अत्तसन्नीयातनेन—सी०।
३. ०अरियपुग्गलो—रो०।
४. स्या० पोत्थके नत्थि।
५. दुब्बिधो—स्या०, एवमुपरिपि।
६. सरणागमन०—सी०, एवमुपरिपि।
७. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
*. वुत्तप्पकाराय पवत्तिया—स्या०।
८. ०विपरीतपवत्तिया—सी०; ० विरीताय पवत्तिया—स्या०।
९. नेसं—रो०।
१०. एव—रो०; ० स्या० पोत्थके नत्थि।
११. याव—सी०, स्या०, रो०।
१२. ० च—सी०।
१३-१३. नेसं—सी०; च नेसं—रो०।

B. 8 यथाह—

"ये केचि बुद्धं सरणं गतासे,
न ते गमिस्सन्ति अपायभूमिं[1] ।
पहाय मानुसं देहं,
देवकायं परिपूरेस्सन्ती"
(दी० नि० २.१९०) ति ॥

तत्र च ये सरणगमनुपक्किलेससमुच्छेदेन सरणं[2] गता[2], ते अपायं न गमिस्सन्ति । इतरे पन सरणगमनेन न गमिस्सन्ती ति एवं गाथाय[3] अधिप्पायो वेदितब्बो ।

अयं ताव भेदाभेदफलदीपना ।

(ग) गमनीयदीपना

गमनीयदीपनायं चोदको आह—"बुद्धं सरणं गच्छामी" ति एत्थ यो बुद्धं सरणं गच्छति, एस बुद्धं वा गच्छेय्य सरणं वा, उभयथा पि च एकस्स वचनं निरत्थकं । कस्मा ? गमनकिरियाय कम्मद्वयाभावतो । न हेत्थ "अजं गामं नेती" ति आदीसु[4] विय द्विकम्मकत्तं अक्खरचिन्तका इच्छन्ति ।

R. 18 "गच्छतेव पुब्बं दिसं, गच्छति पच्छिमं दिसं" ति आदीसु विय सात्थकमेवा[5] ति[5] चे । न, बुद्धसरणानं समानाधिकरणभावस्सानधिप्पेततो । एतेसं हि समानाधिकरणभावे अधिप्पेते पटिहतचित्तो पि बुद्धं उपसङ्कमन्तो बुद्धं सरणं गतो सिया । यं हि तं बुद्धो ति विसेसितं सरणं, तमेवेस गतो ति । "एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं"

१. अपायं—सी०, रो० ।
२-२. सरणगता—सी० ।
३. गाथायं—सी० ।
४. आदिसु—सी०, रो०; एवमुपरि पि ।
५-५. सात्थकमेवेति—सी०; समानाधिकरणभावोति—स्या० ।

(खुद्द० नि० १,३५) ति वचनतो समानाधिकरणत्तमेवा[१] ति चे। न, तत्थेव तब्भावतो*। तत्थेव हि[२] गाथापदे एतं बुद्धादिरतनत्तयं सरणगतानं भयहरणत्तसङ्खाते सरणभावे अब्यभिचरणतो* "खेममुत्तमं च सरणं" ति अयं समानाधिकरणभावो अधिप्पेतो, अञ्ञत्थ तु गमिसम्बन्धे सति सरणगमनस्स[३] अप्पसिद्धितो अनधिप्पेतो ति असाधकमेतं[४]। "एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चती" B .9
(खुद्द० नि० १.३५) ति एत्थ गमिसम्बन्धे पि[५] सरणगमनपसिद्धितो[६] समानाधिकरणत्तमेवा ति चे। न पुब्बे वुत्तदोसप्पसङ्गतो। तत्रा पि हि[७] समानाधिकरणभावे सति एतं बुद्धधम्मसङ्घसरणं पटिहतचित्तो पि आगम्म सब्बदुक्खा पमुच्चेय्या ति एवं पुब्बे वुत्तदोसप्पसङ्गो एव सिया, न च नो दोसेन अत्थि अत्थो ति असाधकमेतं[८]। यथा[९] "ममं हि[१०] आनन्द कल्याणमित्तं आगम्म जातिधम्मा सत्ता जातिया परिमुच्चन्ती" ति एत्थ भगवतो कल्याणमित्तस्स आनुभावेन परिमुच्चमाना सत्ता "कल्याणमित्तं आगम्म परिमुच्चन्ती" ति वुत्ता[११], एवमिधा पि बुद्धधम्मसङ्घस्स[१२] सरणस्सानुभावेन[१२] मुच्चमानो "एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चती" ति वुत्तो ति एवमेत्थ अधिप्पायो वेदितब्बो।

एवं[१३] सब्बथा पि न बुद्धस्स गमनीयत्तं युज्जति, न सरणस्स, न उभयेसं, इच्छितब्बं[१४] च गच्छामी ति निद्दिट्ठस्स गमकस्स गमनीयं, ततो[१५] वत्तब्बा एत्थ युत्ती ति। वुच्चते—

१. ० करणत्तमेवे—सी०, रो०।
२ सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
३. सरणागमनस्स—सी०, एवमुपरिपि।
५. सी० पोत्थके नत्थि; पसिद्धे—स्या०; ० पि—रो० पोत्थके नत्थि।
७. स्या० पोत्थके नत्थि।
९. ० एतस्स—स्या०।
*. ब्यभिचारभावतो—स्या०।
*. अब्यभिचारणतो—स्या०।
४. असाधितमेतं—सी०, स्या०, रो०।
६. सरणागमनासिद्धितो—सी०; सरणगमनसिद्धितो—रो०।
८. न साधितमेतं—सी०, रो०; असाधिकमेतं—स्या०।
१०. ० तु—स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
११. वुत्तं—सी०।
१२-१२. ०सङ्घसरणानुभावेन—सी०, रो०।
१३. सचे एवं—स्या०।
१४. इच्छितं—सी०, रो०।
१५. स्या० पोत्थके नत्थि।

बुद्धायेवेत्थ गमनीयो, गमनाकारदस्सनत्थं तु तं[१] सरणवचनं,
बुद्धं सरणं ति गच्छामि, एस मे सरणं, एस मे परायणं, अघस्स
R. 19 ताता[२], हितस्स च विधाता ति इमिना अधिप्पायेन एतं गच्छामि
भजामि सेवामि पयिरुपासामि[३], एवं वा जानामि बुज्झामी ति। येसं
हि धातूनं गति अत्थो बुद्धि पि तेसं अत्थो ति। इति-सद्दस्स
अप्पयोगा अयुत्तमिति चे। तं न। तत्थ सिया—यदि चेत्थ एवमत्थो
भवेय्य, ततो[४] "अनिच्चं रूपं अनिच्चं[५] रूपं[५] ति यथाभूतं पजानाती"
(सं० नि० २.२८६) ति एवमादीसु विय इति-सद्दो पयुत्तो सिया, न
च पयुत्तो, तस्मा अयुत्तमेतं[६] ति[६]। तं च[७] न[७], कस्मा? तदत्थ-
सम्भवा। "यो च बुद्धं च धम्मं च, सङ्घं च सरणं गतो"
(खुद्द० नि० १.३५) ति एवमादीसु विय इधा पि इति-सद्दस्स अत्थो
सम्भवति, न च विज्जमानत्थसम्भवा[८] इति-सद्दा सब्बत्थ पयुज्जन्ति,
अप्पयुत्तस्सापेत्थ[९] पयुत्तस्स विय इति-सद्दस्स अत्थो विञ्ञातब्बो
अञ्ञेसु च एवंजातिकेसु, तस्सा अदोसो एव सो ति। "अनुजानामि
भिक्खवे तीहि[१०] सरणगमनेहि पब्बज्जं" (म० व० २४) ति आदीसु
सरणस्सेव गमनीयतो यं वुत्तं "गमनाकारदस्सनत्थं तु सरणवचनं"
B. 10 ति, तं न युत्तमिति चे। तं[११] नायुत्तं। कस्मा? तदत्थसम्भवा[१२]
एव[१२]। तत्रा पि हि तस्स अत्थो सम्भवति, यतो पुब्बसदिसमेव
अप्पयुत्तो पि पयुत्तो विय वेदितब्बो। इतरथा हि पुब्बे वुत्तदोसप्पसङ्गो
एव सिया, तस्मा यथानुसिट्ठमेव गहेतब्बं।

अयं गमनीयदीपना।

१. स्या० पोत्थके नत्थि।
२. धाता—सी०, रो०; विघाता—स्या०।
३. पयिरूपासामीति—सी०, रो०।
४. ० सो—स्या०।
५-५. स्या० पोत्थके नत्थि।
६-६. ० वुच्चतीति—स्या०।
७-७. वचनं—सी०, रो०।
८. संविज्ज—सी०, रो०, स्या०।
९. ० चेत्थ—स्या०; अप्पयुत्तस्स०—रो०।
१०. इमेहितीहि—स्या०, रो०।
११. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१२-१२. ०सम्भवाव—सी०, रो०।

(घ) धम्मसङ्घसरणविभावना

इदानि यं वुत्तं "धम्मं सरणमिच्चादि, द्वयेपेस नयो मतो ति एत्थ वुच्चते–य्वायं "बुद्धं सरणं गच्छामी" ति एत्थ अत्थवण्णनानयो[1] वुत्तो, "धम्मं सरणं गच्छामि, सङ्घं सरणं गच्छामी" ति एतस्मिं पि पदद्वये एसो व वेदितब्बो[2]। तत्रा[3] पि[3] हि धम्मसङ्घानं अत्थतो ब्यञ्जनतो च विभावनमत्तमेव असदिसं, सेसं वुत्तसदिसमेव। यतो यदेवेत्थ[4] असदिसं, तं वुच्चते—मग्गफलनिब्बानानि धम्मो ति एके। भावितमग्गानं सच्छिकतनिब्बानानं च अपायेसु अपतनभावेन धारणतो परमस्सासविधानतो च मग्गविरागा एव इमस्मिं अत्थे धम्मो ति अम्हाकं खन्ति, अग्गप्पसादसुत्तं[5] चेव[6] साधकं। वुत्तं चेत्थ[7] "यावता भिक्खवे धम्मा सङ्खता, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो तेसं अग्गमक्खायती" (अं० नि० २.३७) ति एवमादि। R. 20

चतुब्बिधअरियमग्गसमङ्गीनं[8] चतुसामञ्ञफलसमधिवासित[9]-खन्धसन्तानानं च[10] पुग्गलानं समूहो दिट्ठिसीलसङ्घातेन संहतत्ता[11] सङ्घो। वुत्तं चेतं भगवता—

"तं किं मञ्ञसि आनन्द, ये वो[12] मया धम्मा अभिञ्ञा देसिता, सेय्यथिदं[13], चत्तारो सतिपट्ठाना, चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, पस्ससि नो त्वं आनन्द इमेसु धम्मेसु द्वे पि भिक्खू नानावादे" ति।

अयं हि परमत्थसङ्घो सरणं ति गमनीयो। सुत्ते[14] च "आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा" B. 11

१. वण्णनानयो—रो०।
२. अत्थो०—सी०; नयो०—स्या०।
३-३. तत्र—सी०, स्या०, रो०।
४. यदिवेत्थ—सी०।
५. अग्गपसादसुत्तं—रो०।
६. चेत्थ—सी०, स्या०, रो०।
७. हेतं—सी०, स्या०, रो०।
८. चतुअरियमग्ग०—स्या०।
९. ०समाधिवासित०—स्या०, रो०।
१०. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
११. सङ्घातत्ता—सी०, स्या०।
१२. ते—स्या०।
१३. सेय्यथीदं—सी०, रो०।
१४. सुत्तेसु—सी०, स्या०, रो०।

(अं० नि० १.१९३) ति वुत्तो। एतं पन सरणं गतस्स अञ्ञस्मिं पि[१] भिक्खुसङ्घे वा भिक्खुनिसङ्घे[२] वा बुद्धप्पमुखे[३] वा सङ्घे सम्मुतिसङ्घे वा चतुवग्गादिभेदे[४] एकपुग्गले पि वा भगवन्तं उद्दिस्स पब्बजिते वन्दनादिकिरियाय सरणगमनं नेव भिज्जति न सङ्किलिस्सति, अयमेत्थ विसेसो। वुत्तावसेसन्तु इमस्स दुतियस्स च सरणगमनस्स[५] भेदाभेदादिविधानं पुब्बे वुत्तनयेनेव[६] वेदितब्बं। अयं ताव "धम्मं सरणमिच्चादि, द्वयेपेस नयो मतो" ति एतस्स वण्णना।

(ङ) अनुपुब्बववत्थानकारणनिद्देस

इदानि **अनुपुब्बववत्थाने, कारणं च विनिद्दिसे** ति एत्थ एतेसु च[७] तीसु सरणवचनेसु सब्बसत्तानं अग्गो ति कत्वा पठमं बुद्धो, तप्पभवतो तदुपदेसिततो च अनन्तरं धम्मो, तस्स धम्मस्स आधारकतो[८] तदासेवनतो च अन्ते सङ्घो। सब्बसत्तानं वा हिते नियोजको[९] ति कत्वा पठमं बुद्धो, तप्पभावतो[१०] सब्बसत्तहितत्ता[११] अनन्तरं धम्मो, हिताधिगमाय पटिपन्नो अधिगतहितो चा[१२] ति कत्वा अन्ते सङ्घो सरणभावेन ववत्थपेत्वा पकासितो ति एवं अनुपुब्बववत्थाने कारणं च विनिद्दिसे[१३]।

(च) उपमापकासना

R. 21 इदानि यं[१४] पि[१४] वुत्तं "**सरणत्तयमेतं**[१५] **च, उपमाहि पकासये**" ति, तं[१६] पि[१६] वुच्चते एत्थ पन[१७] पुण्णचन्दो विय बुद्धो, चन्दकिरणनिकरो

१. रो० पोत्थके नत्थि।
२. भिक्खुनीसङ्घे—सी०, स्या० रो०।
३. बुद्धपमुखे—सी०, रो०।
४. ०वा—स्या०।
५. सरणागमनस्स—सी०।
६. पुब्बनयेनेव—स्या०।
७. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
८. अधारणतो—स्या०।
९. विनियोजको—सी०, रो०; विय्योजके—स्या०।
१०. ०तदुपसेवितो च—स्या०।
११. सब्बसत्तानंहितत्ता—स्या०।
१२. वा ति—स्या०।
१३. ०ति—सी०, रो०।
१४-१४. यस्मा—स्या०।
१५. रतनत्तय—स्या०।
१६-१६. तस्मा—स्या०।
१७. च पन—स्या०।

विय तेन देसितो धम्मो, पुण्णचन्दकिरणसमुप्पादितपीणितो[1] लोको विय सङ्घो। बालसूरियो[2] विय बुद्धो, तस्स रस्मिजालमिव वुत्तप्पकारो धम्मो, तेन विहतन्धकारो लोको विय सङ्घो। वनदाहकपुरिसो विय बुद्धो, वनदहनग्गि विय किलेसवनदहनो धम्मो, दड्ढवनत्ता खेत्तभूतो विय भूमिभागो दड्ढकिलेसत्ता पुञ्ञक्खेत्तभूतो सङ्घो। महामेघो विय बुद्धो, सलिलवुट्ठि विय धम्मो, वुट्ठिनिपातूपसमितरेणु विय जनपदो उपसमितकिलेसरेणु सङ्घो। सुसारथि विय B. 12 बुद्धो, अस्साजानीयविनयूपायो[3] विय धम्मो[4], सुविनीतस्साजानीयसमूहो विय सङ्घो। सब्बदिट्ठिसल्लुद्धरणतो सल्लकत्तो[5] विय बुद्धो, सल्लुद्धरणूपायो विय धम्मो, समुद्धटसल्लो विय जनो समुद्धटदिट्ठिसल्लो सङ्घो। मोहपटलसमुप्पाटनतो[6] वा सालाकियो[7] विय बुद्धो, पटलसमुप्पाटनुपायो विय धम्मो, समुप्पाटितपटलो विप्पसन्नलोचनो विय जनो समुप्पाटितमोहपटलो विप्पसन्नञाणलोचनो[8] सङ्घो। सानुसयकिलेसब्याधिहरणसमत्थताय वा कुसलो वेज्जो विय बुद्धो, सम्मा पयुत्तभेसज्जमिव धम्मो, भेसज्जपयोगेन समुपसन्तब्याधि[9] विय जनसमुदायो[10] समुपसन्तकिलेसब्याधानुसयो[11] सङ्घो।

अथ वा सुदेसको[12] विय बुद्धो, सुमग्गो[13], विय खेमन्तभूमि[14] विय[15] च धम्मो, मग्गप्पटिपन्नो[16] खेमन्तभूमिप्पत्तो विय[17] सङ्घो।

१. ०पीनिको—सी०; पीतिको—रो०; ०परिबाहो—स्या०।
२. ०सुरियो—सी०, स्या०, रो०।
३. ०विनयनूपायो—सी०।
४. सधम्मो—रो०।
५. सल्लको—स्या०।
६. ०समुप्पातनतो—सी०, स्या०।
७. सलाकियो—सी०, रो०; सल्लको—स्या०।
८. ०च—स्या०।
९. सुवूपसन्तब्याधि—रो०।
१०. जनसमूहो—स्या०।
११. सुवूपसन्तकिलेसब्याधानुसयो—रो०।
१२. सुदेसिको—रो०।
१३. समग्गो—स्या०।
१४. खेमन्तभूमिया—सी०, रो०।
१५. रो० पोत्थके नत्थि।
१६. मग्गपटिपन्नो—सी०, रो०; तमग्गपटिपन्नो—स्या०।
१७. ०च जनसमूहो—स्या०।

सुनाविको विय बुद्धो, नावा विय धम्मो, पारप्पत्तो[१] सम्पत्तिको विय जनो[१] सङ्घो। हिमवा विय बुद्धो, तप्पभवोसधमिव धम्मो, ओसधूपभोगेन निरामयो विय जनो सङ्घो। धनदो विय बुद्धो, धनं[२] विय[२] धम्मो, यथाधिप्पायं लद्धधनो विय[३] जनो[३] सम्मालद्धअरियधनो
R. 22 सङ्घो। निधिदस्सनको[४] विय बुद्धो, निधि विय धम्मो, निधिप्पत्तो विय[३] जनो[३] सङ्घो।

अपि च अभयदो विय वीरपुरिसो[५] बुद्धो, अभयमिव धम्मो, सम्पत्ताभयो विय जनो अच्चन्तसब्बभयो[६] सङ्घो। अस्सासको विय बुद्धो, अस्सासो विय धम्मो, अस्सत्थजनो विय सङ्घो। सुमित्तो विय बुद्धो, हितूपदेसो विय धम्मो, हितूपयोगेन[७] पत्तसदत्थो[८] विय जनो सङ्घो। धनाकरो[९] विय बुद्धो, धनसारो[१०] विय धम्मो, धनसारूपभोगो[११] विय जनो सङ्घो। राजकुमारन्हापको[१२] विय बुद्धो, सीसन्हानसलिलं[१३] विय धम्मो, सुन्हातराजकुमारवग्गो[१४] विय सद्धम्मसलिलसुन्हातो[१५] सङ्घो। अलङ्कारकारको विय बुद्धो, अलङ्कारो विय धम्मो, अलङ्कतराजपुत्तगणो विय सद्धम्मालङ्कतो सङ्घो। चन्दनरुक्खो विय बुद्धो, तप्पभवगन्धो[१६] विय[१६] धम्मो, चन्दनुपभोगेन सन्तपरिळाहो[१७] विय जनो सद्धम्मूपभोगेन सन्तपरिळाहो[१८] सङ्घो। दायज्जसम्पदानको[१९]

१-१ पारप्पत्तसम्पत्तिको- सी०, रो०; तायपारप्पत्तो विय सम्पत्तिकजनो- स्या०।
२-२. धनमिव-सी०, स्या०।
३-३. जनो विय-सी०।
४. ०दस्सको-सी०, स्या०।
५. धीरपुरिसो-सी०, रो०; धीरपुरिसोविय-स्या०।
६. ०सब्बाभयो-सी०; अच्चन्तपत्ताभयो-स्या०।
७. हितानुयोगेन-स्या०; हितूप (देस) योगेन-रो०।
८. पत्तसब्बत्थो-सी०, रो०।
९. रतनाकरो, एवमुपरिपि।
१०. रतनसारो-स्या०।
११. रतनसारूपभोगी-स्या०।
१२. ०नहापको-सी०, स्या०, रो०।
१३. सुनहानसलिलं-स्या०, रो०।
१४. सुनहातराजकुमारवग्गो-रो०।
१५. ०सलिलसिनातो-सी०, रो०।
१६-१६. तप्पभवचन्दनमिव-स्या०।
१७ वूपसन्तपरिळाहो-स्या०।
१८. अच्चन्तवूपसन्त परिळाहो-स्या०।
१९. धम्मदायज्ज०-सी०, स्या०, रो०।

विय पिता[1] बुद्धो, दायज्जं विय धम्मो[2], दायज्जहरो[3] पुत्तवग्गो विय सद्धम्मदायज्जहरो सङ्घो। विकसितपदुमं विय बुद्धो, तप्पभवमधु B. 13
विय धम्मो, तदुपभोगीभमरगणो विय सङ्घो। एवं सरणत्तयमेत्तं[4] च, उपमाहि पकासये[5]।

एत्तावता च[6] या[6] पुब्बे "केन कत्थ कदा कस्मा, भासितं सरणत्तयं" ति आदीहि चतूहि गाथाहि अत्थवण्णनाय मातिका[7] निक्खित्ता, सा अत्थतो पकासिता होती ति।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय
सरणत्तयवण्णना निट्ठिता।



१. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
२. सधम्मो—रो०।
३. दायज्जरहो—स्या०; दायज्जदायादो—रो०।
४. रतनत्तयं—स्या०।
५. ति—सी०, स्या०, रो०।
६-६. या मया—सी०।
७. नयमातिका—सी०, रो०।

२. सिक्खापदवण्णना

(क) सिक्खापदपाठमातिका

एवं सरणगमनेहि सासनोतारं दस्सेत्वा सासनं[1] ओतिण्णेन उपासकेन वा पब्बजितेन वा येसु सिक्खापदेसु पठमं सिक्खितब्बं, तानि दस्सेतुं निक्खित्तस्स सिक्खापदपाठस्स इदानि वण्णनत्थं अयं मातिका—

R. 23 "येन यत्थ यदा यस्मा, वुत्तानेतानि तं नयं ।
वत्वा कत्वा ववत्थानं, साधारणविसेसतो ॥
पकतिया च यं वज्जं, वज्जं पण्णत्तिया च यं ।
ववत्थपेत्वा तं कत्वा, पदानं ब्यञ्जनत्थतो ॥
साधारणानं सब्बेसं, साधारणविभावनं ।
अथ पञ्चसु पुब्बेसु, विसेसत्थप्पकासतो[2] ॥
पाणातिपातप्पभुति[3] — हेकतानानतादितो[3] ।
आरम्मणादानभेदा[4], महासावज्जतो तथा ॥
पयोगङ्गसमुट्ठाना[5], वेदनामूलकम्मतो ।
विरमतो च फलतो, विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ॥
B. 14 योजेतब्बं ततो युत्तं, पच्छिमेस्वपि पञ्चसु ।
आवेणिकं च वत्तब्बं, ञेय्या हीनादितापि चा" ति ॥

तत्थ एतानि पाणातिपातावेरमणीतिआदीनि[6] दस सिक्खापदानि भगवता एव वुत्तानि, न सावकादीहि । तानि च सावत्थियं वुत्तानि

१. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि ।
२. विसेसत्थप्पकासनो—रो० ।
३-३. पाणादि पाणातिपातप्पभुती-हेकतादितो—सी०; पाणातिपातातिपातप्पभुती हेकतादितो—रो० ।
४. ० भेद—सी०, रो०; दानं भेदा—स्या० ।
५. ०समुट्ठान—सी०, रो० ।
६. ० वेरमणी आदीनि—सी० ।

जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे आयस्मन्तं राहुलं पब्बाजेत्वा कपिलवत्थुतो सावत्थिं अनुप्पत्तेन सामणेरानं सिक्खापदववत्था-पनत्थं। वुत्तं हेतं—

अथ खो भगवा कपिलवत्थुस्मिं यथाभिरन्तं विहरित्वा येन सावत्थि तेन चारिकं पक्कामि, अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन सावत्थि तदवसरि, तत्र सुदं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन ...पे०... अथ खो सामणेरानं एतदहोसि "कति नु खो अम्हाकं सिक्खापदानि, कत्थ च अम्हेहि सिक्खितब्बं" ति। भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं "अनुजानामि भिक्खवे सामणेरानं दस सिक्खापदानि, तेसु च सामणेरेहि सिक्खितुं, पाणातिपातावेरमणी ...पे०... जातरूपरजतपटिग्गहणा R. 24
वेरमणी" ति।

तानेतानि "समादाय सिक्खति सिक्खापदेसू" (दी० नि १.५५) ति सुत्तानुसारेन सरणगमनेसु[1] च दस्सितपाठानुसारेन "पाणातिपाता वेरमणिसिक्खापदं समादियामी" ति एवं वाचनामग्गं आरोपितानी ति वेदितब्बानि। एवं ताव "येन यत्थ यदा यस्मा, वुत्तानेतानि तं नयं[2] वत्वा" ति सो नयो दट्ठब्बो[2]।

(ख) साधारणविसेसववत्थान

एत्थ च आदितो द्वे चतुत्थपञ्चमानि[3] उपासकानं सामणेरानं च साधारणानि निच्चसीलवसेन। उपोसथसीलवसेन पन उपासकानं सत्तमट्ठमं चेकं अङ्गं कत्वा सब्बपच्छिमवज्जानि सब्बानि पि सामणेरेहि साधारणानि, पच्छिमं पन सामणेरानमेव विसेसभूतं ति एवं साधारणविसेसतो ववत्थानं कातब्बं। पुरिमानि[4] चेत्थ पञ्च

१. सरणागमनेसु—सी०।
२-२. नयं ति—सी०; सो नयो ति—रो०।
३. ० च—रो०।
४. पठमा—सी०, रो०।

एकन्तअकुसलचित्तसमुट्ठानत्ता पाणातिपातादीनं पकतिवज्जतो[1] वेरमणिया[1], सेसानि[2] पण्णत्तिवज्जतो ति एवं पकतिया च यं वज्जं,
B. 15 वज्जं पण्णत्तिया च यं, तं ववत्थपेतब्बं।

(ग) साधारणविभावना

यस्मा चेत्थ "वेरमणिसिक्खापदं[3] समादियामी" ति एतानि सब्बसाधारणानि पदानि, तस्मा एतेसं पदानं ब्यञ्जनतो च अत्थतो च अयं साधारणविभावना वेदितब्बा—

तत्थ[4] ब्यञ्जनतो ताव वेरं मणती ति[5] वेरमणी, वेरं पजहति, विनोदेति, ब्यन्तीकरोति, अनभावं गमेती ति अत्थो। विरमति वा एताय करणभूताय वेरम्हा पुग्गलो ति विकारस्स वेकारं कत्वा वेरमणी। तेनेव चेत्थ "वेरमणिसिक्खापदं विरमणिसिक्खापदं" ति द्विधा सज्झायं करोन्ति। सिक्खितब्बा ति सिक्खा, पज्जते अनेना ति पदं। सिक्खाय पदं सिक्खापदं, सिक्खाय[6] अधिगमूपायो ति अत्थो। अथ वा मूलं निस्सयो पतिट्ठा ति वुत्तं होति। वेरमणी एव सिक्खापदं वेरमणिसिक्खापदं, विरमणिसिक्खापदं वा दुतियेन नयेन। सम्माआदियामि समादियामि, अवीतिक्कमनाधिप्पायेन अखण्डकारिताय[7] अच्छिद्दकारिताय[8] असबलकारिताय च[9] आदियामी ति वुत्तं होति।

अत्थतो पन वेरमणी ति कामावचरकुसलचित्तसम्पयुत्ता विरति,
R. 25 सा[10] पाणातिपाता विरमन्तस्स "या तस्मिं समये पाणातिपाता आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति

१-१. पकतिवज्जवेरमणियो—सी०, रो०। २. सेसा—सी०, स्या०, रो०।
३. वेरमणी०—रो०। ४. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
५. मणातीति—रो०। ६. सिक्खा—रो०।
७. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि। ८ ०च—स्या०।
९. ०अकम्मासकारिताय च—स्या०। १०. या—रो०।

वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो" (विभङ्ग २४२) ति एवमादिना नयेन विभङ्गे वुत्ता। कामं चेसा वेरमणी नाम लोकुत्तरा पि अत्थि, इध पन[1] समादियामी ति वुत्तत्ता समादानवसेन पवत्तारहा[2], तस्मा सा[2] न होती ति कामावचरकुसलचित्तसम्पयुत्ता विरती ति वुत्ता।

सिक्खा ति तिस्सो सिक्खा अधिसीलसिक्खा अधिचित्तसिक्खा अधिपञ्ञासिक्खा ति, इमस्मिं पनत्थे सम्पत्तविरतिसीलं लोकिका विपस्सना रूपारूपज्झानानि[3] अरियमग्गो च सिक्खा ति अधिप्पेता। यथाह—

कतमे धम्मा सिक्खा, यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं ...पे०... तस्मिं समये B. 16 फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति, इमे धम्मा सिक्खा[4]।

कतमे धम्मा सिक्खा, यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति[5] ...पे०... अविक्खेपो होति, इमे धम्मा सिक्खा[6]।

कतमे धम्मा सिक्खा, यस्मिं समये अरूपपत्तिया ...पे०... नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसहगतं ...पे०... अविक्खेपो होति, इमे धम्मा सिक्खा।

कतमे धम्मा सिक्खा, यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं[7] ...पे०... अविक्खेपो होति, इमे धम्मा सिक्खा (विभङ्ग० ३४७-३४८) ति।

१. तु—स्या०।
२-२. पवत्तारहसा—सी०; पवत्तारहा सा—रो०; पवत्तिरहासा—स्या०।
३. ०रूपज्झानानि—सी०, स्या०।
४. ०...पे...—सी०, रो०।
५. ०तस्मिं समये फस्सो होति—स्या०।
६. ०...पे...—सी०।
७. ०अपचयगामि—...पे०... तस्मिं समये फस्सो होति—स्या०।

एतासु सिक्खासु याय[१] कायचि[१] सिक्खाय पदं अधिगमूपायो, अथ वा मूलं निस्सयो पतिट्ठाति सिक्खापदं। वुत्तं हेतं "सीलं निस्साय सीले पतिट्ठाय सत्त बोज्झङ्गे भावेन्तो बहुलीकरोन्तो" ति एवमादि। एवमेत्थ साधारणानं पदानं साधारणा[२] ब्यञ्जनतो अत्थतो च विभावना[३] कातब्बा।

(घ) पुरिमपञ्चसिक्खापदवण्णना

इदानि यं वुत्तं "**अथ पञ्चसु पुब्बेसु, विसेसत्थप्पकासतो**[४]
R. 26 **...पे०... विञ्ञातब्बो विनिच्छयो**" ति, तत्थेतं[५] वुच्चति **पाणातिपातो** (खु० नि० १.३) ति एत्थ ताव **पाणो** ति जीवितिन्द्रियप्पटिबद्धा[६] खन्धसन्तति, तं[७] वा[७] उपादाय पञ्ञत्तो[८] सत्तो। तस्मिं पन पाणे पाणसञ्ञिनो तस्स पाणस्स[९] जीवितिन्द्रियुपच्छेदकउपक्कमसमुट्ठापिका कायवचीद्वारानं अञ्ञतरद्वारप्पवत्ता वधकचेतना पाणातिपातो। **अदिन्नादानं**[१०] (खु०नि० १.३) ति एत्थ अदिन्नं[११] ति परपरिग्गहितं[१२], यत्थ परो यथाकामकारितं आपज्जन्तो अदण्डारहो अनुपवज्जो च[१३] होति, तस्मिं[१४] परपरिग्गहिते[१५] परपरिग्गहितसञ्ञिनो तदादायकउपक्कमसमुट्ठापिका कायवचीद्वारानं अञ्ञतरद्वारप्पवत्ता एव थेय्यचेतनाअदिन्नादानं। **अब्रह्मचरियं** (खु० नि० १.३) ति असेट्ठचरियं, द्वयंद्वयसमापत्तिमेथुनप्पटिसेवना[१६] कायद्वारप्पवत्ता
B. 17 असद्धम्मप्पटिसेवनट्ठानवीतिक्कमचेतना अब्रह्मचरियं[१७]। **मुसावादो**

१-१. यस्सा कस्साचि—सी०, रो०।
२. स्या० पोत्थके नत्थि।
३. साधारणविभावना—स्या०।
४. ०कासनो पाणातिपाता—रो०; पाणादिपाणातिपात—सी०।
५. तत्थेदं—सी०, रो०।
६. जीवितिन्द्रियपटिबद्धा—सी०, स्या०, रो०।
७-७. तं तं—स्या०।
८. ०वा—स्या०।
९. सी०, रो० नत्थि।
१०. अदिन्नादानन—रो०।
११. अदिन्नन—रो०।
१२. परपरिग्गहीतं—रो०।
१३. सी०, रो० नत्थि।
१४. ०पन—सी०, स्या०, रो०।
१५. परपरिग्गहीते—सी०,स्या०, रो०; एवमुपरि वा।
१६. द्वय द्वय०—स्या०; मेथुनपटिसेवना—रो०।
१७. सी०, रो० नत्थि।

(खु० नि० १.३) ति एत्थ **मुसा** ति विसंवादनपुरेक्खारस्स अत्थभञ्जनको वचीपयोगो कायपयोगो वा, विसंवादनाधिप्पायेन पनस्स[1] परविसंवादककायवचीपयोगसमुट्ठापिका कायवचीद्वारानमेव अञ्ञतरद्वारप्पवत्ता मिच्छाचेतना मुसावादो। **सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं**[2] (खु० नि० १.३) ति एत्थ पन **सुरा** ति पञ्च सुरा—पिट्ठसुरा पूवसुरा ओदनसुरा किण्णपक्खित्ता सम्भारसंयुत्ता[3] चा ति। **मेरयं** पि[4] पुप्फासवो फलासवो गुळासवो मध्वासवो सम्भारसंयुत्तो (पा० चि० १५१) चा[5] ति पञ्चविधं। **मज्जं** ति तदुभयमेव[6] मदनियट्ठेन मज्जं, यं वा पनञ्ञं पि किञ्चि अत्थि मदनियं, येन पीतेन मत्तो होति पमत्तो, इदं वुच्चति मज्जं। **पमादट्ठानं** ति याय चेतनाय तं पिवति अज्झोहरति, सा चेतना मदप्पमादहेतुतो पमादट्ठानं ति वुच्चति, यतो[7] अज्झोहरणाधिप्पायेन कायद्वारप्पवत्ता सुरामेरयमज्जानं अज्झोहरणचेतना "सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं" ति वेदितब्बा। R. 27
एवं तावेत्थ पाणातिपातप्पभुतीहि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

(ङ) एकतानानतादिविनिच्छय

एकतानानतादितो[8] ति एत्थ आह—किं पन वज्झवधकप्पयोगचेतनादीनं एकताय पाणातिपातस्स अञ्ञस्स वा अदिन्नादानादिनो एकत्तं, नानताय[9] नानत्तं होति, उदाहु नो ति। कस्मा पनेतं वुच्चति[10], यदि ताव एकताय एकत्तं[11], अथ यदा एकं वज्झं बहू[12]

१. पन—सी०, स्या०, रो०।
२. ० पमादट्ठाना—स्या०; पमादट्ठानन—रो०।
३. सम्भारपक्खित्ता—सी०।
४. ति—स्या०।
५. ति—रो०।
६. तदुभयं पि—सी०; तञ्ञायमेव—रो०।
७. ततो—सी०।
८. एकतादितो—सी०, रो०।
९. ०च—स्या०।
१०. वुच्चतीति—सी०, रो०।
११. ०होति—स्या०।
१२. वहु—सी०।

वधका वधेन्ति, एको वा वधको बहुके[1] वज्झे वधेति, एकेन वा साहत्थिकादिना पयोगेन बहू वज्झा वधीयन्ति, एका वा[2] चेतना बहूनं वज्झानं जीवितिन्द्रियुपच्छेदकपयोगं[3] समुट्ठापेति, तदा एकेन पाणातिपातेन भवितब्बं। यदि पन नानताय नानत्तं, अथ यदा एको वधको एकस्सत्थाय एकं पयोगं करोन्तो बहू वज्झे वधेति, बहू[4] वा[5] वधका देवदत्तयञ्ञदत्तसोमदत्तादीनं बहूनमत्थाय बहू पयोगे करोन्ता एकमेव देवदत्तं[6] यञ्ञदत्तं[6] सोमदत्तं वा वधेन्ति,[7] बहूहि वा साहत्थिकादीहि पयोगेहि एको वज्झो वधीयति। बहू[8] वा चेतना एकस्सेव[9] वज्झस्स जीवितिन्द्रियुपच्छेदकपयोगं[10] समुट्ठापेन्ति, तदा बहूहि पाणातिपातेहि भवितब्बं। उभयं पि चेतमयुत्तं। अथ नेव एतेसं वज्झादीनं एकताय एकत्तं, नानताय नानत्तं, अञ्ञथेव[11] तु एकत्तं[12] नानत्तं च होति, तं वत्तब्बं[13] पाणातिपातस्स, एवं सेसानं पी ति।

B 18 वुच्चते—तत्थ[14] ताव पाणातिपातस्स न[15] वज्झवधकादीनं पच्चेकमेकताय एकता, नानताय नानता, किन्तु वज्झवधकादीनं युगनन्धमेकताय एकता, द्विन्नं पि तु तेसं, ततो अञ्ञतरस्स वा नानताय नानता। तथा हि बहूसु वधकेसु बहूहि सरक्खेपादीहि[16] एकेन वा ओपातखणनादिना पयोगेन बहू वज्झे वधेन्तेसु पि बहू पाणातिपाता होन्ति। एकस्मिं वधके एकेन[17], बहूहि वा पयोगेहि

१. ०वा—सी०।
२. व—स्या०।
३. जीवितिन्द्रियूपच्छेकं पयोगं—सी०, स्या०; जीवितिन्द्रियपच्छेदकं पयोगं—रो०। एवमेव।
४. बहुका—सी०।
५. स्या० नत्थि।
६-६. ०वा—स्या०।
७. वज्झं०—स्या०।
८. बहुका—स्या०।
९. एकस्स—सी०।
१०. ०जीवितिन्द्रियूपच्छेदकं पयोगं—रो०।
११. यथेव—रो०।
१२. ०च—स्या०।
१३. सब्बं यथा च—स्या०।
१४. न—स्या०।
१५. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१६. सरसत्थादीहि—सी०, रो०।
१७. ०वा—स्या०।

तप्पयोगसमुट्ठापिकाय च[1] एकाय[2], बहूहि वा चेतनाहि बहू वज्झे वधेन्ते पि बहू पाणातिपाता होन्ति, बहूसु च[3] वधकेसु यथावुत्तप्पकारेहि बहूहि, एकेन वा पयोगेन एकं वज्झं वधेन्तेसु पि बहू पाणातिपाता होन्ति। एस नयो अदिन्नादानादीसु पी ति। एवमेत्थ एकतानानतादितो[4] पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

आरम्मणतो ति पाणातिपातो चेत्थ जीवितिन्द्रियारम्मणो। R. 28
अदिन्नादानअब्रह्मचरियसुरामेरयमज्जपमादट्ठानानि रूपधम्मेसु रूपायतनादिअञ्ञतरसङ्खारारम्मणानि। मुसावादो यस्स मुसा भणति, तमारभित्वा पवत्तनतो सत्तारम्मणो। अब्रह्मचरियं पि[5] सत्तारम्मणं ति एके। अदिन्नादानं च यदा सत्तो हरितब्बो होति, तदा सत्तारम्मणं ति। अपि चेत्थ सङ्खारवसेनेव सत्तारम्मणं[6], न पण्णत्तिवसेना ति। एवमेत्थ आरम्मणतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

आदानतो ति पाणातिपातावेरमणिसिक्खापदादीनि[7] चेतानि सामणेरेन भिक्खुसन्तिके समादिन्नानेव समादिन्नानि होन्ति, उपासकेन पन अत्तना समादियन्तेना पि समादिन्नानि होन्ति, परस्स सन्तिके समादियन्तेना पि। एकज्झं समादिन्नानि पि समादिन्नानि होन्ति, पच्चेकं समादिन्नानि पि। किन्तु नानं[8] एकज्झं समादियतो एकायेव विरति एका व चेतना होति, किच्चवसेन पनेतासं पञ्चविधत्तं[9] विञ्ञायति[9]। पच्चेकं समादियतो पन पञ्चेव विरतियो पञ्च[10] च[10] चेतना होन्ती ति वेदितब्बा। एवमेत्थ आदानतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

१. स्या० पोत्थके नत्थि।
२. ०वा—सी०, रो०।
३. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
४. एकतादितो—सी०, रो०।
५. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
६. सत्ते आरभन्ति—सी०, रो०।
७. पाणातिपातादितो वेरमणीसिक्खापदानि—स्या०।
८. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
९-९. पच्चत्तं पञ्ञापीयति—सी०; पञ्ञात्तं पञ्ञापियति—स्या०; पञ्ञात्तं पञ्ञापीयति—रो०।
१०-१०. पञ्चेव—स्या०, रो०।

B. 19 **भेदतो** ति[1] सामणेरानं चेत्थ[2] एकस्मिं भिन्ने सब्बानि पि भिन्नानि होन्ति। पाराजिकट्ठानियानि[3] हि[4] तानि[4] तेसं, यं तं[5] वीतिक्कन्तं होति, तेनेव कम्मबद्धो। गहट्ठानं पन एकस्मिं भिन्ने एकमेव भिन्नं होति, यतो तेसं तंसमादानेनेव पुन पञ्चङ्गिकत्तं सीलस्स सम्पज्जति। अपरे पनाहु "विसुं विसुं समादिन्नेसु एकस्मिं भिन्ने एकमेव भिन्नं होति, 'पञ्चङ्गसमन्नागतं सीलं समादियामी' ति एवं पन एकतो समादिन्नेसु एकस्मिं भिन्ने[6] सेसानि पि सब्बानि भिन्नानि होन्ति, कस्मा? समादिन्नस्स[7] अभिन्नत्ता[7], यं तं वीतिक्कन्तं, तेनेव कम्मबद्धो" ति। एवमेत्थ भेदतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

महासावज्जतो ति गुणविरहितेसु तिरच्छानगतादीसु पाणेसु खुद्दके[8] पाणे[8] पाणातिपातो अप्पसावज्जो, महासरीरे महासावज्जो। कस्मा? पयोगमहन्तताय। पयोगसमत्ते पि वत्थुमहन्तताय। गुणवन्तेसु पन मनुस्सादीसु अप्पगुणे[9] पाणातिपातो अप्पसावज्जो, R. 29 महागुणे महासावज्जो। सरीरगुणानं तु समभावे[10] सति किलेसानं उपक्कमानं च मुदुताय अप्पसावज्जता, तिब्बताय महासावज्जता च वेदितब्बा। एस नयो सेसेसु पि। अपि चेत्थ सुरामेरयमज्जपमादट्ठानमेव महासावज्जं, न तथा पाणातिपातादयो। कस्मा? मनुस्सभूतस्सा पि उम्मत्तकभावसंवत्तनेन अरियधम्मन्तरायकरणतो ति। एवमेत्थ महासावज्जतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

पयोगतो ति एत्थ च[11] पाणातिपातस्स साहत्थिको आणत्तिको निस्सग्गियो थावरो विज्जामयो इद्धिमयो ति छप्पयोगा। तत्थ कायेन

१. भेदतोचेत्थ—रो०।
२. हेत्थ—सी०।
३. पाराजिकट्ठानानि—सी०।
४-४. यानिहितानि—सी०।
५. तु—सी०, रो०।
६. ०तेसम्पि—सी०।
७-७. समादानस्स भिन्नत्तता—सी०; समादानस्साभिन्नत्ता—स्या०, रो०।
८-८. खुद्दकपाणे—सी०।
९. ०पाणे—स्या०।
१०. समानभागे—स्या०।
११. सी० पोत्थके नत्थि।

वा कायप्पटिबद्धेन[1] वा पहरणं साहत्थिको पयोगो, सो उद्दिस्सानुद्दिस्सभेदतो दुविधो[2] होति। तत्थ उद्दिस्सके[3] यं उद्दिस्स पहरति, तस्सेव मरणेन कम्मुना[4] बज्झति। "यो कोचि मरतू" ति एवं अनुद्दिस्सके पहारपच्चया यस्स कस्सचि मरणेन। उभयथा पि च पहरितमत्ते वा मरतु, पच्छा वा तेनेव रोगेन, पहरितक्खणे एव कम्मुना[5] बज्झति। मरणाधिप्पायेन[6] च[6] पहारं दत्वा तेन अमतस्स पुन अञ्ञेन चित्तेन पहारे दिन्ने पच्छा पि यदि पठमपहारेनेव मरति, तदा एव कम्मुना बद्धो[7] होति। अथ दुतियपहारेन, नत्थि पाणातिपातो। उभयेहि मते पि पठमपहारेनेव कम्मुना बद्धो, उभयेहि पि अमते नेवत्थि पाणातिपातो। एस नयो बहुकेहि पि एकस्स पहारे B. 20
दिन्ने। तत्रा पि हि यस्स पहारेन मरति, तस्सेव कम्मबद्धो[8] होति।

अधिट्ठहित्वा पन आणापनं आणत्तिको पयोगो। तत्थ[9] पि साहत्थिके पयोगे वुत्तनयेनेव कम्मबद्धो[10] अनुस्सरितब्बो। छब्बिधो चेत्थ नियमो वेदितब्बो—

"वत्थु कालो च ओकासो, आवुधं इरियापथो।
किरियाविसेसो ति इमे, छ आणत्तिनियामका" ति॥

तत्थ **वत्थू** ति मारेतब्बो पाणो। **कालो** ति पुब्बण्हसायन्हादि- R. 30
कालो[11] च योब्बनथावरियादिकालो[12] च। **ओकासो** ति गामो वा निगमो वा वनं वा रच्छा[13] वा सिङ्घाटकं वा ति एवमादि। **आवुधं** ति असि वा उसु[14] वा सत्ति वा ति एवमादि। **इरियापथो** ति मारेतब्बस्स मारकस्स च ठानं वा निसज्जा वा ति एवमादि।

१. कायपटि०—सी०, स्या०, रो०।
२. दुब्बिधो—स्या०, एवमेव।
३. उद्दिसिके—सी०; उद्दिसिके—स्या०; उद्दिसके—रो०।
४. कम्मना—रो०।
५. कम्मना—रो०, एवमेव।
६-६. मरणाधिप्पायेनेव—स्या०।
७. बन्धो—स्या०, एवमेव।
८. कम्मबन्धो—रो०।
९. तत्था—सी०।
१०. कम्मबन्धो—रो०।
११. ०अपरण्हादिकालो—सी०, रो०।
१२. योब्बनत्थविरियादिकालो—सी०; योब्बनथामविरियादिकालो—स्या०; योब्बनट्ठानियादिकालो—रो०।
१३. अरञ्ञं—सी०, रो०।
१४. फरसु वा०—स्या०।

किरियाविसेसो ति विज्झनं वा छेदनं वा भेदनं वा सङ्खमुण्डिकं वा ति एवमादि। यदि हि वत्थुं विसंवादेत्वा "यं मारेही" ति आणत्तो, ततो अञ्ञं मारेति, आणापकस्स नत्थि कम्मबद्धो[१]। अथ वत्थुं अविसंवादेत्वा मारेति, आणापकस्स आणत्तिक्खणे आणत्तस्स मारक्खणे[२] ति उभयेसं पि कम्मबद्धो। एस नयो कालादीसु पि।

मारणत्थं तु कायेन वा कायप्पटिबद्धेन वा पहरणनिस्सज्जनं[३] निस्सग्गियो[४] पयोगो, सो पि उद्दिस्सानुद्दिस्सभेदतो दुविधो एव[५], कम्मबद्धो चेत्थ पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

मारणत्थमेव ओपातखणनं अपस्सेनउपनिक्खिपनं भेसज्जविसयन्तादिप्पयोजनं[६] वा थावरो पयोगो, सो पि उद्दिस्सानुद्दिस्सभेदतो दुविधो, यतो[७] तत्थ पि पुब्बे वुत्तनयेनेव कम्मबद्धो[८] वेदितब्बो। अयं तु विसेसोमूलट्ठेन ओपातादीसु परेसं मूलेन वा मुधा वा दिन्नेसु पि यदि तप्पच्चया[९] कोचि[९] मरति, मूलट्ठस्सेव कम्मबद्धो। यदि पि च तेन अञ्ञेन वा तत्थ ओपाते विनासेत्वा भूमिसमे कते पि पंसुधोवका वा पंसुं गण्हन्ता[१०], मूलखणका वा मूलानि खणन्ता आवट्टं[११] करोन्ति, देवे वा वस्सन्ते कद्दमो जायति, तत्थ च कोचि ओतरित्वा वा लग्गित्वा वा मरति, मूलट्ठस्सेव कम्मबद्धो[१२]। यदि पन येन लद्धं, सो अञ्ञो वा तं[१३] वित्थटतरं[१४] गम्भीरतरं वा करोति, तप्पच्चया व[१५] कोचि मरति, उभयेसं पि कम्मबद्धो[१६]। यथा तु मूलानि मूलेहि संसन्दन्ति, तथा तत्र थले कते मुच्चति। एवं अपस्सेनादीसु पि याव तेसं पवत्ति, ताव यथासम्भवं कम्मबद्धो वेदितब्बो।

B. 21

१. कम्मबन्धो—रो०, एवमेव।
२. मरणक्खणे—स्या०।
३. ० निस्सजनं—सी०।
४. निस्सग्गिको—सी०, स्या०, रो०।
५. एवं—सी०।
६. ०विसयन्तादियोजनं—सी०।
७. ततो—सी०।
८. कम्मबन्धो—रो०, एवमेव।
९-९. तप्पच्चयतो—सी०, रो०।
१०. गण्हन्ति—सी०, रो०।
११. आवाटं—सी०, स्या०, रो०।
१२. कम्मबन्धो—रो०।
१३. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१४. ०वा—स्या०।
१५. च—सी०।
१६. कम्मबन्धो—रो०, एवमेव।

मारणत्थं पन विज्जापरिजप्पनं विज्जामयो[1] पयोगो। दाठावुधादीनं[2] दाठाकोटनादिमिव[2] मारणत्थं कम्मविपाकजिद्धिविकारकरणं इद्धिमयो पयोगो ति। अदिन्नादानस्स तु थेय्यपसय्हपटिच्छन्नपरिकप्पकुसावहारवसप्पवत्ता साहत्थिकाणत्तिकादयो पयोगा, तेसं पि R. 31 वुत्तानुसारेनेव पभेदो वेदितब्बो। अब्रह्मचरियादीनं[3] तिण्णं पि साहत्थिको एव पयोगो लब्भती[4] ति। एवमेत्थ पयोगतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

अङ्गतो ति एत्थ च पाणातिपातस्स[5] पञ्च अङ्गानि भवन्ति[5]—पाणो च होति, पाणसञ्ञी च, वधकचित्तं च पच्चुपट्ठितं होति, वायमति, तेन च मरती ति। अदिन्नादानस्सा[6] पि पञ्चेव—परपरिग्गहितं[7] च होति, परपरिग्गहितसञ्ञी च, थेय्यचित्तं च पच्चुपट्ठितं होति, वायमति, तेन च आदातब्बं आदानं गच्छती ति। अब्रह्मचरियस्स पन चत्तारि अङ्गानि भवन्ति—अज्झाचरियवत्थु[8] च होति, तत्थ च सेवनचित्तं पच्चुपट्ठितं होति, सेवनपच्चया[9] पयोगं च समापज्जति, सादियति चा ति, तथा परेसं द्विन्नं पि। तत्थ मुसावादस्स ताव मुसा च होति तं वत्थु, विसंवादनचित्तं च पच्चुपट्ठितं होति, तज्जो च वायामो, परविसंवादनं च विञ्ञापयमाना[10] विञ्ञत्ति पवत्तती ति चत्तारि अङ्गानि वेदितब्बानि। सुरामेरयमज्जपमादट्ठानस्स पन सुरादीनं च अञ्ञतरं होति मदनीयपातुकम्यताचित्तं च पच्चुपट्ठितं होति, तज्जं च वायामं आपज्जति, पीते च पविसती ति इमानि चत्तारि[11] अङ्गानी ति[11]। एवमेत्थ अङ्गतो पि[12] विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

१. ०नाम—स्या०।
२-२. आवुधादीनं धाराकोटनादि इव—सी०, रो०।
३. ०पन—स्या०।
४. स्या० पोत्थके नत्थि।
५-५. पाणाति—स्या०।
६. ०दानस्स—सी०, स्या०।
७. परपरिग्गहीतं—सी०, स्या०; एवमुपरिपि।
८. ०वत्थुं—सी०, रो०; अज्झाचारणीयवत्थुं—स्या०।
९. सेवनापच्चया—स्या०।
१०. विञ्ञायमाना—रो०; ञापय—सी०।
११-११. चत्तारी ति—सी०, रो०।
१२. सी० पोत्थके नत्थि।

समुट्ठानतो ति पाणातिपातअदिन्नादानमुसावादा चेत्थ कायचित्ततो[१], वाचाचित्ततो[१], कायवाचाचित्ततो चा ति तिसमुट्ठाना होन्ति। अब्रह्मचरियं कायचित्तवसेन एकसमुट्ठानमेव। सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं कायतो च, कायचित्ततो[२] चा ति द्विसमुट्ठानं ति। एवमेत्थ समुट्ठानतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

B. 22 **वेदनातो** ति एत्थ च पाणातिपातो दुक्खवेदनासम्पयुत्तो व। अदिन्नादानं तीसु वेदनासु अञ्ञतरवेदनासम्पयुत्तं, तथा मुसावादो। इतरानि द्वे सुखाय वा अदुक्खमसुखाय वा वेदनाय सम्पयुत्तानी ति। एवमेत्थ वेदनातो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

R. 32 **मूलतो** ति पाणातिपातो चेत्थ दोसमोहमूलो। अदिन्नादानमुसावादा लोभमोहमूला वा[३] दोसमोहमूला वा। इतरानि द्वे लोभमोहमूलानी ति। एवमेत्थ मूलतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

कम्मतो ति पाणातिपातअदिन्नादानअब्रह्मचरियानि चेत्थ कायकम्ममेव कम्मपथप्पत्तानेव च[४], मुसावादो वचीकम्ममेव। यो पन अत्थभञ्जको, सो कम्मपथप्पत्तो। इतरो कम्ममेव। सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं कायकम्ममेवा ति। एवमेत्थ कम्मतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

विरमतो ति एत्थ आह[५] "पाणातिपातादीहि विरमन्तो कुतो विरमती" ति ? वुच्चते—समादानवसेन ताव विरमन्तो अत्तनो वा परेसं वा पाणातिपातादिअकुसलतो विरमति। किमारभित्वा ? यतो विरमति, तदेव। सम्पत्तवसेना पि विरमन्तो वुत्तप्पकाराकुसलतो व। किमारभित्वा पाणातिपातादीनं वुत्तारम्मणानेव। केचि पन भणन्ति "सुरामेरयमज्जसङ्खाते[६] सङ्खारे[६] आरभित्वा सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना

१. ०च—स्या०। २. चित्ततो—रो०।
३. रो०पोत्थके नत्थि। ४. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
५. सी० पोत्थके नत्थि। ६-६. ०सङ्खारे—रो०।

विरमति, सत्तसङ्खारेसु यं पन[1] अवहरितब्बं[1] भञ्जितब्बं च, तं आरभित्वा अदिन्नादाना मुसावादा च, सत्तेयेवारभित्वा पाणातिपातो[2] अब्रह्मचरिया चा" ति। तदञ्ञे[3] "एवं सन्ते 'अञ्ञं चिन्तेन्तो अञ्ञं करेय्य, यं च पजहति, तं[4] न जानेय्या' ति एवंदिट्ठिका हुत्वा अनिच्छमाना यदेव[5] पजहति, तं अत्तनो पाणातिपातादिअकुसलमेवारभित्वा विरमती" ति वदन्ति। तदयुत्तं[6]। कस्मा? तस्स पच्चुप्पन्नाभावतो बहिद्धाभावतो च, सिक्खापदानं हि विभङ्गपाठे "पञ्चन्नं सिक्खापदानं कति कुसला ...पे०... कति अरणा[7]" (विभङ्ग० ३४८) ति पुच्छित्वा "कुसलायेव, सिया सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता" ति एवं पवत्तमाने[8] विस्सज्जने "पच्चुप्पनारम्मणा" ति च "बहिद्धारम्मणा" (विभङ्ग० ३४८) ति च एवं पच्चुप्पन्नबहिद्धारम्मणत्तं वुत्तं, तं अत्तनो पाणातिपातादिअकुसलं आरभित्वा विरमन्तस्स न युज्जति। यं पन वुत्तं "अञ्ञं चिन्तेन्तो अञ्ञं करेय्य, B. 23
यं च पजहति, तं[9] न जानेय्या" ति, तत्थ वुच्चते—न किच्चसाधनवसेन पवत्तेन्तो अञ्ञं चिन्तेन्तो अञ्ञं करोती ति वा, यं च पजहति, R. 33
तं न जानाती ति वा[10] वुच्चति।

आरभित्वान अमतं, जहन्तो सब्बपापके।
निदस्सनं चेत्थ भवे, मग्गट्ठोरियपुग्गलो ति॥

एवमेत्थ विरमतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

फलतो ति सब्बे एव चेते पाणातिपातादयो दुग्गतिफलनिब्बत्तका[11] होन्ति, सुगतियं च अनिट्ठाकन्तामनापविपाकनिब्बत्तका होन्ति[12], सम्पराये दिट्ठधम्मे एव[13] च अवेसारज्जादिफलनिब्बत्तका। अपि च

१-१. पहरितब्बं—सी०, रो०; ०हरितब्बं च—स्या०।
२. पाणातिपाता—सी०, स्या०, रो०।
३. ०पन—स्या०।
४. ०च स्या०।
५. यदेस—रो०।
६. तं च न युत्तं—स्या०।
७. आरम्मणा—स्या०।
८. पवत्तमानानं—स्या०।
९. तञ्च—स्या०।
१०. सी० नत्थि।
११. दुग्गतियं फल०—स्या०।
१२. स्या० पोत्थके नत्थि।
१३. सी० पोत्थके नत्थि।

"यो सब्बलहुसो पाणातिपातस्स विपाको[१] मनुस्सभूतस्स अप्पायुकसंवत्तनिको होती (अङ्गु० नि० ३.३४५)" ति एवमादिना[२] नयेनेत्थ फलतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

अपि चेत्थ पाणातिपातादिवेरमणीनं पि समुट्ठानवेदनामूलकम्मफलतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो। तत्थायं विञ्ञापना—सब्बा एव चेता[३] वेरमणियो चतूहि समुट्ठहन्ति कायतो कायचित्ततो वाचाचित्ततो कायवाचाचित्ततो चा[४] ति। सब्बा एव च सुखवेदनासम्पयुत्ता[५] वा अदुक्खमसुखवेदनासम्पयुत्ता[६] वा, अलोभादोसमूला[७] वा अलोभादोसामोहमूला वा[७]। चतस्सो पि चेत्थ कायकम्मं, मुसावादावेरमणी वचीकम्मं, मग्गक्खणे च चित्ततो व[८] समुट्ठहन्ति[९], सब्बा पि मनोकम्मं।

पाणातिपाता वेरमणिया चेत्थ अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नता आरोहपरिणाहसम्पत्तिता[१०] जवसम्पत्तिता[१०] सुप्पतिट्ठितपादता चारुता मुदुता सुचिता सूरता महब्बलता विस्सत्थवचनता लोकपियता नेलता[११] अभेज्जपरिसता अच्छम्भिता दुप्पधंसिता[१२] परूपक्कमेव[१३] अमरणता अनन्तपरिवारता सुरूपता सुसण्ठानता अप्पाबाधता असोकिता पियेहि मनापेहि सद्धिं अविप्पयोगता दीघायुकता ति एवमादीनि फलानि।

अदिन्नादाना वेरमणिया महद्धनता पहूतधनधञ्ञता अनन्तभोगता अनुप्पन्नभोगुप्पत्तिता उप्पन्नभोगथावरता इच्छितानं भोगानं P. 24 R. 34 खिप्पपटिलाभिता राजचोरुदकग्गिअप्पियदायादेहि[१४] असाधारणभोगता

१. ०सो—स्या०।

२. ०पि—सी०, स्या०, रो०।

३. ता—सी०।

४. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।

५. सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता—सी०; सुखा०—रो०।

६. अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता—सी०।

७-७. तथा अलोभादोसामोहमूला वा अलोभादोसमूला वा—स्या०।

८. च—सी०, रो०।

९. समुट्ठहन्ता—स्या०।

१०-१०. ०सम्पत्ति जवसम्पत्तिता—स्या०; आरोहपरिणाहसम्पत्ति जवसम्पत्ति—रो०।

११. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।

१२. अप्पधंसिता—रो०।

१३. परूपक्कमेन—सी०, स्या०।

१४. ०अप्पियदायादादीहि—स्या०।

असाधारणधनप्पटिलाभिता[1] लोकुत्तमता[2] नत्थिकभावस्स अजाननता सुखविहारिता ति एवमादीनि।

अब्रह्मचरिया वेरमणिया विगतपच्चत्थिकता सब्बजनपियता[3] अन्नपानवत्थसयनादीनं लाभिता[4] सुखसयनता सुखप्पटिबुज्झनता[5] अपायभयविनिमुत्तता[6] इत्थिभावप्पटिलाभस्स[7] वा नपुंसकभावप्पटिलाभस्स[8] वा अभब्बता अक्कोधनता पच्चक्खकारिता अपतितक्खन्धता अनधोमुखता इत्थिपुरिसानं अञ्ञमञ्ञपियता परिपुण्णिन्द्रियता परिपुण्णलक्खणता निरासङ्कता अप्पोस्सुक्कता सुखविहारिता अकुतोभयता पियविप्पयोगाभावता ति एवमादीनि।

मुसावादा वेरमणिया विप्पसन्निन्द्रियता विस्सट्ठमधुरभाणिता समसितसुद्धदन्तता नातिथूलता नातिकिसता नातिरस्सता नातिदीघता सुखसम्फस्सता उप्पलगन्धमुखता सुस्सूसकपरिजनता आदेय्यवचनता कमलुप्पलसदिसमुदुलोहिततनुजिह्वता[9] अनुद्धतता अचपलता ति एवमादीनि।

सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना वेरमणिया अतीतानागतपच्चुप्पन्नेसु सब्बकिच्चकरणीयेसु[10] खिप्पं पटिजाननता[11] सदा उपट्ठितसतिता अनुम्मत्तकता ञाणवन्तता अनलसता[12] अजळता अनेलमूगता[13] अमत्तता[13] अप्पमत्तता असम्मोहता अच्छम्भिता असारम्भिता अनुस्सङ्किता[14] सच्चवादिता[15] अपिसुणाफरुसासम्फपलापवादिता[16]

१. ०लाभो—रो०।
२. लोकुत्तर जनपटिलाभता—स्या०।
३. सब्बजनस्सपियता—स्या०।
४. पटिलाभिता—स्या०।
५. सुखपटि०—सी०, स्या०, रो०।
६. ०म्मुत्तता—सी०, रो०।
७. ०भावपटि०—सी० एवमुपरिपि, रो०।
८. नपुंसकत्तभावपटि०—सी०, रो०।
९. कमलुप्पलदलसदिस०—स्या०, रो०।
१०. किच्चकरणीयेसु—सी०, स्या०, रो०।
११. पटिविजाननता—स्या०।
१२. अनेळता—स्या०।
१३-१३. अमूगता अमदता—स्या०।
१४. अनिस्सुकिता—सी०, स्या०, रो०।
१५. अप्पोस्सुकता सुखितता अभिसम्मतता०—स्या०।
१६. अपिसुणता अफरूसता असम्फप्पलाप० वादिता—स्या०, रो०।

रत्तिन्दिवमतन्दितता कतञ्ञुता कतवेदिता अमच्छरिता[1] चागवन्तता सीलवन्तता उजुता[2] अक्कोधनता हिरिमनता ओत्तप्पिता[3] उजुदिट्ठिकता[4] महापञ्ञता मेधाविता पण्डितता अत्थानत्थकुसलता ति एवमादीनि फलानि । एवमेत्थ पाणातिपातादिवेरमणीनं[5] समुट्ठानवेदनामूलकम्मफलतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

(च) पच्छिमपञ्चसिक्खापदवण्णना

इदानि यं वुत्तं—

"योजेतब्बं ततो युत्तं, पच्छिमेस्व पि पञ्चसु ।
आवेणिकं च वत्तब्बं, ञेय्या हीनादिता पि चा" ति ।।

B.25 R.35 तस्सायं अत्थवण्णना—एतिस्सा पुरिमपञ्चसिक्खापदवण्णनाय यं युज्जति, तं ततो गहेत्वा पच्छिमेस्व पि पञ्चसु सिक्खापदेसु योजेतब्बं । तत्थायं योजनायथेव हि पुरिमसिक्खापदेसु **आरम्मणतो** च[6] सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं रूपायतनादिअञ्ञतरसङ्खारारम्मणं, तथा इध विकालभोजनं[7] । एतेन नयेन सब्बेसं आरम्मणभेदो वेदितब्बो । **आदानतो** च यथा पुरिमानि सामणेरेन वा उपासकेन वा समादियन्तेन समादिन्नानि होन्ति, तथा एतानि पि । **अङ्गतो** पि यथा तत्थ पाणातिपातादीनं अङ्गभेदो वुत्तो, एवमिधा पि विकालभोजनस्स चत्तारि अङ्गानि—विकालो, यावकालिकं, अज्झोहरणं, अनुम्मत्तकता ति । एतेनानुसारेन सेसानं पि अङ्गविभागो वेदितब्बो । यथा च तत्थ **समुट्ठानतो** सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं कायतो च कायचित्ततो चा ति द्विसमुट्ठानं, एवमिध[8] विकालभोजनं । एतेन नयेन सब्बेसं समुट्ठानं वेदितब्बं । यथा च तत्थ **वेदनातो**

१. अमच्छरियता—स्या० ।
२. उजुकता—स्या० ।
३. ओत्तापिता—रो० ।
४. उजुदिट्ठिता—स्या० ।
५. पाणातिपाता वेरमणीनं—स्या०, रो० ।
६. स्या० पोत्थके नत्थि ।
७. ० पी ति—स्या० ।
८. एवमिधा पि—स्या० ।

अदिन्नादानं तीसु वेदनासु अञ्ञतरवेदनासम्पयुत्तं, तथा इध[१] विकालभोजनं। एतेन नयेन सब्बेसं[२] वेदनासम्पयोगो वेदितब्बो। यथा च तत्थ अब्रह्मचरियं लोभमोहमूलं, एवमिध विकालभोजनं। अपरानि च द्वे एतेन[३] नयेन सब्बेसं[४] मूलभेदो वेदितब्बो। यथा च तत्थ पाणातिपातादयो कायकम्मं, एवमिधा पि विकालभोजनादीनि। जातरूपरजतप्पटिग्गहणं पन कायकम्मं वा सिया वचीकम्मं वा[५] कायद्वारादीहि पवत्तिसब्भावपरियायेन[६], न कम्मपथवसेन। **विरमतो** ति[७] यथा च तत्थ विरमन्तो अत्तनो वा[८] परेसं वा पाणातिपातादि-अकुसलतो विरमति, एवमिधा पि विकालभोजनादिअकुसलतो[९], कुसलतो पि वा एकतो। यथा च पुरिमा पञ्च वेरमणियो चतुसमुट्ठाना कायतो, कायचित्ततो, वाचाचित्ततो[१०], कायवाचाचित्ततो चा[११] ति, सब्बा[१२] सुखवेदनासम्पयुत्ता वा अदुक्खमसुखवेदनासम्पयुत्ता वा, अलोभादोसमूला[१३] वा अलोभादोसामोहमूला[१३] वा, सब्बा च[१४] नानप्पकारइट्ठफलनिब्बत्तका[१५], तथा इधा पी[१६] ति[१६]।

"योजेतब्बं ततो युत्तं, पच्छिमेस्व पि पञ्चसु।
आवेणिकं च वत्तब्बं, ञेय्या हीनादिता पि चा" ति॥

एत्थ पन **विकालभोजनं** ति मज्झन्हिकवीतिक्कमे[१७] भोजनं। R. 36
एतञ्हि अनुञ्ञातकाले वीतिक्कन्ते भोजनं, तस्मा "विकालभोजनं" ति वुच्चति, ततो विकालभोजना। **नच्चगीतवादितविसूकदस्सनं**[१८] B. 26

१. इधापि—स्या०।
२. ०पि—स्या०।
३. एतेनेव—स्या०।
४. ०पि—स्या०।
५. ०मनोकम्मं वा—स्या०।
६. पवत्तिसभावपरियायेन—स्या०।
७. रो० पोत्थके नत्थि।
८. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
९. ०वा—स्या०।
१०. स्या० पोत्थके नत्थि।
११. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१२. ०पि—स्या०।
१३-१३. अलोभादोसामोहमूला वा अलोभामोहमूला—स्या०।
१४. व—स्या०।
१५. ०निब्बत्तिका—सी०, रो०।
१६-१६. पि—सी०, रो०।
१७. मज्झन्तिक०—स्या०।
१८. ०विसूकदस्सना—स्या०।

ति एत्थ नच्चं नाम यं किञ्चि नच्चं, गीतं ति यं किञ्चि गीतं, वादितं ति यं किञ्चि वादितं। विसूकदस्सनं ति किलेसुप्पत्तिपच्चयतो कुसलपक्खभिन्दनेन विसूकानं दस्सनं[१], विसूकभूतं वा दस्सनं विसूकदस्सनं[२]। नच्चा* च गीता च वादिता च विसूकदस्सना च नच्चगीतवादितविसूकदस्सना*। विसूकदस्सनं चेत्थ ब्रह्मजाले वुत्तनयेनेव गहेतब्बं। वुत्तं हि तत्थ—

"यथा वा पनेके भोन्तो समणब्राह्मणा सद्धादेय्यानि भोजनानि भुञ्जित्वा ते एवरूपं विसूकदस्सनमनुयुत्ता विहरन्ति, सेय्यथिदं, नच्चं गीतं वादितं पेक्खं अक्खानं पाणिस्सरं वेतालं कुम्भथूणं[३] सोभनकं[४] चण्डालं वंसं धोवनं[५] हत्थियुद्धं अस्सयुद्धं महिंसयुद्धं[६] उसभयुद्धं अजयुद्धं मेण्डयुद्धं[७] कुक्कुटयुद्धं वट्टकयुद्धं[८] दण्डयुद्धं[९] मुट्ठियुद्धं निब्बुद्धं उय्योधिकं बलग्गं सेनाब्यूहं अनीकदस्सनं[१०] इति वा, इति एवरूपा विसूकदस्सना पटिविरतो समणो गोतमो (दी० नि० १.७-८) ति।

अथ वा यथावुत्तेनत्थेन नच्चगीतवादितानि एव विसूकानि नच्चगीतवादितविसूकानि, तेसं दस्सनं नच्चगीतवादितविसूकदस्सनं, तस्मा नच्चगीतवादितविसूकदस्सना। "दस्सनसवना[११]" ति[१२] वत्तब्बे यथा "सो च होति मिच्छादिट्ठिको विपरीतदस्सनो(अं०नि० ३.३२९)" ति एवमादीसु अचक्खुद्वारप्पवत्तं पि विसयग्गहणं[१३] "दस्सनं" ति

१. स्या० पोत्थके नत्थि।

-. नच्चं च गीतं च वादितं च विसूकदस्सनं च नच्चगीतवादित विसूकदस्सनं, तस्मानच्चगीत वादित—विसूकदस्सना—स्या०।

२. एत्थ 'सासनस्स अननुलोमत्ता पटानिभूतानं वा दस्सनं विसूकदस्सनं' ति स्या० पोत्थके अधिको पाठो दिस्सति।

३. ०थूनं—सी०, स्या०।

४. सोभनकरकं—सी०; सोभनकरकं—स्या०; सोभनकरनं—रो०।

५. धोपनं—रो०।

६. महिस०—सी०, स्या० रो०।

७. मेण्डक०—सी०, स्या०, रो०।

८. ०कुक्कुरयुद्धं—सी०, रो०।

९. दण्डकयुद्धं—सी०; ०कुक्कुरयुद्धं—स्या०।

१०. अणीक०—सी०।

११. ०सवणा—सी०।

१२. ०च—स्या०।

१३. विसयगहणं—स्या०।

वुच्चति, एवं सवनं[1] पि "दस्सनं" त्वेव वुत्तं। दस्सनकम्यताय
उपसङ्कमित्वा पस्सतो एव चेत्थ[2] वीतिक्कमो होति। ठितनिसिन्न-
सयनोकासे पन आगतं गच्छन्तस्स वा आपाथगतं पस्सतो सिया
सङ्किलेसो, न वीतिक्कमो। धम्मूपसंहितं पि[3] चेत्थ गीतं न वट्टति,
गीतूपसंहितो पन धम्मो वट्टती ति वेदितब्बो। R. 37

मालादीनि धारणादीहि यथासङ्ख्यं योजेतब्बानि। तत्थ **माला**
ति यं किञ्चि पुप्फजातं। **विलेपनं** ति यं किञ्चि विलेपनत्थं
पिसित्वा[4] पटियत्तं। अवसेसं सब्बं पि वासचुण्णधूपनादिकं[5] गन्धजातं
गन्धो। तं सब्बं पि मण्डनविभूसनत्थं न वट्टति, भेसज्जत्थं तु[6],
वट्टति, पूजनत्थं च अभिहटं सादियतो[7] न केनचि परियायेन न[8]
वट्टति। **उच्चासयनं** ति पमाणातिक्कन्तं वुच्चति। **महासयनं** ति
अकप्पियसयनं अकप्पियत्थरणं च। तदुभयं पि सादियतो[9] न केनचि B. 27
परियायेन वट्टति। **जातरूपं** ति सुवण्णं। **रजतं** ति कहापणो,
लोहमासकदारुमासकजतुमासकादि यं[10] यं तत्थ तत्थ[10] वोहारं
गच्छति[11], तदुभयं पि जातरूपरजतं। तस्स[12] येन केनचि पकारेन
सादियनं[13] पटिग्गहो नाम, सो न[14] येन केनचि परियायेन वट्टती[15]
ति एवं आवेणिकं[16] वत्तब्बं।

दस पि चेतानि सिक्खापदानि हीनेन छन्देन चित्तवीरिय-
वीमंसाहि[17] वा समादिन्नानि हीनानि, मज्झिमेहि मज्झिमानि,

१. सवणं—सी०।
२. मेत्थ—सी०, रो०।
३. वा पि—स्या०।
४. पिंसित्वा—स्या०, रो०।
५. ०धूपादिकं—रो०।
६. पन—स्या०।
७. असादियितुं—सी०; अस्सादियतो—स्या०; असादियतो—रो०।
८. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
९. सादियितुं—सी०।
१०. यं तत्थ—सी०; यं यत्थ—स्या०, रो०।
११. तं सब्बं पि इध रजतं ति वुत्तं—स्या०।
१२. ०गहणगाहापन सम्पटिच्छन्तेसु—स्या०।
१३. सादियना—स्या०।
१४. स्या० पोत्थके नत्थि।
१५. न वट्टती—स्या०।
१६. आवेनिकं—सी०, रो०; आवेनिकं च—स्या०।
१७. ०विरिय०—सी०, स्या०, रो०।

पणीतेहि पणीतानि। तण्हादिट्ठिमानेहि वा उपक्किलिट्ठानि हीनानि, अनुपक्किलिट्ठानि मज्झिमानि, तत्थ तत्थ पञ्ञाय अनुग्गहितानि पणीतानि। ञाणविप्पयुत्तेन वा[1] कुसलचित्तेन समादिन्नानि हीनानि, ससङ्खारिकञाणसम्पयुत्तेन[2] मज्झिमानि, असङ्खारिकेन पणीतानी ति एवं ञेय्या हीनादिता पि चा ति।

एत्तावता च या[3] पुब्बे **"येन यत्थ यदा यस्मा"** ति आदीहि छहि गाथाहि सिक्खापदपाठस्स वण्णनत्थं मातिका निक्खित्ता, सा अत्थतो पकासिता होती ति।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय
सिक्खापदवण्णना निट्ठिता।



१. रो० पोत्थके नत्थि।
२. ससङ्खारिकेन ञाण०—स्या०।
३. या मया—सी०।

३. द्वत्तिंसाकारवण्णना

(क) पदसम्बन्धवण्णना

इदानि यदिदं एवं दसहि[1] सिक्खापदेहि परिसुद्धपयोगस्स सीले पतिट्ठितस्स कुलपुत्तस्स आसयपरिसुद्धत्थं चित्तभावनत्थं च अञ्ञत्र R. 38 बुद्धुप्पादा अप्पवत्तपुब्बं[2] सब्बतित्थियानं अविसयभूतं तेसु तेसु सुत्तन्तेसु—

"एकधम्मो भिक्खवे भावितो बहुलीकतो महतो संवेगाय संवत्तति। महतो अत्थाय संवत्तति। महतो योगक्खेमाय संवत्तति। महतो सतिसम्पजञ्ञाय संवत्तति। ञाणदस्सनप्पटिलाभाय[3] संवत्तति। दिट्ठधम्मसुखविहाराय संवत्तति। विज्जाविमुत्तिफलसच्छिकिरियाय संवत्तति। कतमो एकधम्मो, कायगता सति। अमतं ते B. 28 भिक्खवे न परिभुञ्जन्ति, ये कायगतासतिं न परिभुञ्जन्ति। अमतं ते भिक्खवे परिभुञ्जन्ति, ये कायगतासतिं परिभुञ्जन्ति। अमतं तेसं भिक्खवे, अपरिभुत्तं[4] परिभुत्तं, परिहीनं अपरिहीनं, विरद्धं आरद्धं[4], येसं कायगता सति आरद्धा (अं० नि० १.४३-४५)" ति—

एवं भगवता अनेकाकारेन[5] पसंसित्वा—

१. दस सी०।
२. अप्पवत्ति पुब्बं—स्या०।
३. ०दस्सनपटि०—सी०,स्या०,रो०।
४-४. परिभुत्तं अपरिभुत्तं येसं कायगतासति अपरियुत्ता परिहीनं परिहीना विरद्धं विरूद्धा आरद्धं—स्या०।
५. अनेकारत्तोकारं—स्या०।

*"कथं भाविता भिक्खवे कायगतासति कथं बहुलीकता महब्बला होति महानिसंसा। इध[1] भिक्खवे भिक्खु अरञ्ञगतो वा" ति—

आदिना नयेन आनापानपब्बं इरियापथपब्बं चतुसम्पजञ्ञपब्बं पटिकूलमनसिकारपब्बं धातुमनसिकारपब्बं नव सिवथिकपब्बानी ति इमेसं चुद्दसन्नं पब्बानं वसेन कायगतासतिकम्मट्ठानं निद्दिट्ठं। तस्स भावनानिद्देसो अनुप्पत्तो। तत्थ यस्मा इरियापथपब्बं चतुसम्पजञ्ञपब्बं धातुमनसिकारपब्बं ति इमानि तीणि विपस्सनावसेन वुत्तानि। नव सिवथिकपब्बानि विपस्सनाञाणेसुयेव आदीनवानुपस्सनावसेन वुत्तानि। या पि चेत्थ उद्धुमातकादीसु समाधिभावना इच्छेय्य, सा विसुद्धिमग्गे वित्थारतो असुभभावनानिद्देसे पकासिता एव। आनापानपब्बं पन पटिकूलमनसिकारपब्बं चे ति इमानेत्थ द्वे समाधिवसेन वुत्तानि। तेसु आनापानपब्बं आनापानस्सतिवसेन विसुं कम्मट्ठानं येव। यं पनेतं*—

"पुन च परं भिक्खवे भिक्खु इममेव कायं उद्धं पादतला अधोकेसमत्थका तचपरियन्तं पूरं नानप्पकारस्स असुचिनो पच्चवेक्खति 'अत्थि इमस्मिं काये केसा, लोमा...पे०...मुत्तं (म० नि० ३.१५३)" ति।

एवं तत्थ तत्थ मत्थलुङ्गं अट्ठिमिञ्जेन सङ्गहेत्वा देसितं[2] कायगतासतिकोट्ठासभावनापरियायं द्वत्तिंसाकारकम्मट्ठानं आरद्धं, तस्सायं अत्थवण्णना—

तत्थ अत्थी ति संविज्जन्ति। **इमस्मि** ति य्वायं उद्धं पादतला अधो केसमत्थका तचपरियन्तो पूरो नानप्पकारस्स असुचिनो ति
B. 29 वुच्चति, तस्मिं। **काये** ति सरीरे। सरीरं हि असुचिसञ्चयतो,

-. कथं च भिक्खवे भिक्खु कायगतासतिं भावेति—सी०, रो०।
१. ०पन—स्या०।
२. देसितं—स्या०।

कुच्छितानं वा केसादीनं चेव[1] चक्खुरोगादीनं च रोगसतानं[1] आयभूतत्तो कायो ति वुच्चति। केसा...पे०...मुत्तं[2] ति एते केसादयो द्वत्तिसाकारा, तत्थ "अत्थि इमस्मिं काये केसा अत्थि[3] लोमा" ति एवं सम्बन्धो वेदितब्बो। तेन किं कथितं होति? इमस्मिं R. 39 पादतला[4] पट्ठाय उपरि, केसमत्थका[5] पट्ठाय हेट्ठा, तचतो पट्ठाय परितो ति एत्तके ब्याममत्ते कळेवरे[6] सब्बाकारेना[7] पि विचिनन्तो न कोचि किञ्चि मुत्तं वा मणिं वा वेळुरियं[8] वा अगरुं वा चन्दनं वा कुङ्कुमं वा कप्पूरं वा वासचुण्णादिं वा अणुमत्तं पि सुचिभावं[9] पस्सति, अथ खो परमदुग्गन्धजेगुच्छं अस्सिरिकदस्सनं नानप्पकारं केसलोमादिभेदं असुचिमेव पस्सती ति।

अयं तावेत्थ पदसम्बन्धतो वण्णना।

(ख) असुभभावना

असुभभावनावसेन[10] पनस्स एवं वण्णना वेदितब्बा—एवमेतस्मिं पाणातिपातावेरमणिसिक्खापदादिभेदे सीले पतिट्ठितेन पयोगसुद्धेन आदिकम्मिकेन कुलपुत्तेन आसयसुद्धिया अधिगमनत्थं द्वत्तिसाकारकम्मट्ठानभावनानुयोगमनुयुञ्जितुकामेन पठमं तावस्स आवासकुललाभगणकम्मद्धानञातिगन्थरोगइद्धिपलिबोधेन[11] कित्तिपलिबोधेन वा सह दस पलिबोधा होन्ति, अथानेन आवासकुललाभगणञातिकित्तीसु सङ्गप्पहानेन, कम्मद्धानगन्थेसु[12] अब्यापारेन, रोगस्स तिकिच्छाया ति एवं ते दस[13] पलिबोधा उपच्छिन्दितब्बा, अथानेन उपच्छिन्नपलिबोधेन अनुपच्छिन्ननेक्खम्माभिलासेन कोटिप्पत्तसल्लेखवुत्तितं[14]

१-१. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
२. मत्थलुङ्गं—सी०, स्या०, रो०।
३. अत्थि इमस्मिं काये—स्या०।
४. पादतलतो—स्या०।
५. केसमत्थकतो—स्या०।
६. कळेबरे—सी०, रो०।
७. आदरेन—सी०, रो०; सब्बादरेन—स्या०।
८. वेत्थरियं—सी०।
९. ० न—सी०।
१०. भावनावसेन—स्या०।
११. ० वा—सी०, रो०।
१२. कम्मअद्धान०—सी०, स्या०, रो०।
१३. स्या० पोत्थके नत्थि।
१४. कोटिप्पत्तं सल्लेख०—सी०, रो०।

परिग्गहेत्वा खुद्दानुखुद्दकं पि विनयाचारं अप्पजहन्तेन आगमाधिगम-
समन्नागतो ततो अञ्ञतरङ्गसमन्नागतो वा कम्मट्ठानदायको
आचरियो विनयानुरूपेन विधिना उपगन्तब्बो, वत्तसम्पदाय च
आराधितचित्तस्स तस्स[1] अत्तनो अधिप्पायो निवेदेतब्बो[2]। तेन
तस्स निमित्तज्झासयचरियाधिमुत्तिभेदं ञत्वा यदि एतं कम्मट्ठान-
B. 30 मनुरूपं, अथ यस्मिं विहारे अत्तना वसति, यदि तस्मिं येव सो पि
R. 40 वसितुकामो होति, ततो सङ्खेपतो कम्मट्ठानं दातब्बं। अथ अञ्ञत्र
वसितुकामो होति, ततो पहातब्बपरिग्गहेतब्बादिकथनवसेन सपुरेक्खारं
रागचरितानुकुलादिकथनवसेन सप्पभेदं वित्थारेन कथेतब्बं। तेन तं
सपुरेक्खारं सप्पभेदं कम्मट्ठानं[3] उग्गहेत्वा आचरियं आपुच्छित्वा
यानि तानि—

"महावासं नवावासं, जरावासं च पन्थनिं।
सोण्डिं पण्णं च पुप्फं च, फलं पत्थितमेव च॥
नगरं दारुना खेत्तं, विसभागेन पट्टनं।
पच्चन्तसीमासप्पायं, यत्थ मित्तो न लब्भति॥
अट्ठारसेतानि ठानानि, इति विञ्ञाय पण्डितो।
आरका परिवज्जेय्य, मग्गं सप्पटिभयं[4] यथा" ति॥

एवं अट्ठारस सेनासनानि परिवज्जेतब्बानी ति वुच्चन्ति, तानि वज्जेत्वा, यं तं—

कथं च भिक्खवे सेनासनं पञ्चङ्गसमन्नागतं होति, इध भिक्खवे सेनासनं[5] नातिदूरं होति नच्चासन्नं गमनागमनसम्पन्नं दिवा अप्पाकिण्णं[6] रत्तिं अप्पसद्दं अप्पनिग्घोसं अप्पडंसमकसवातातपसरीसपसम्फस्सं[7], तस्मिं खो पन सेनासने विहरन्तस्स अप्पकसिरेन

१. रो० पोत्थके नत्थि।
२. निवेदितब्बो—सी०, रो०।
३. कम्मट्ठानकथं—स्या०।
४. पटिभयं—रो०।
५. ०गामतो—सी०, स्या०, रो०।
६. अप्पकिण्णं—सी०, स्या०; अब्बोकिण्णं—रो०।
७. ०सिरिंसप० खो पन होति—सी०, रो०।

उप्पज्जन्ति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारा, तस्मिं खो पन सेनासने थेरा भिक्खू विहरन्ति बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा, ते कालेन कालं उपसङ्कमित्वा परिपुच्छति परिपञ्हति 'इदं भन्ते कथं इमस्स को अत्थो' ति। तस्स ते आयस्मन्तो अविवटं[1] चेव विवरन्ति, अनुत्तानीकतं च उत्तानिं[2] करोन्ति, अनेकविहितेसु च कङ्खाठानियेसु धम्मेसु कङ्खं पटिविनोदेन्ति। एवं खो भिक्खवे सेनासनं पञ्चङ्गसमन्नागतं होती'' ति—

एवं पञ्चङ्गसमन्नागतं सेनासनं वुत्तं, तथारूपं सेनासनं उपगम्म कतसब्बकिच्चेन कामेसु आदीनवं, नेक्खम्मे च आनिसंसं पच्चवेक्खित्वा बुद्धसुबुद्धताय धम्मसुधम्मताय सङ्घसुप्पटिपन्नताय च B.31 R.41 अनुस्सरणेन चित्तं पसादेत्वा यं तं—

"वचसा मनसा चेव, वण्णसण्ठानतो दिसा।
ओकासतो परिच्छेदा, सत्तधुग्गहणं विदू'' ति—

एवं सत्तविधं उग्गहकोसल्लं, अनुपुब्बतो नातिसीघतो नातिसणिकतो[3] विक्खेपप्पटिबाहनतो[4] पण्णत्तिसमतिक्कमतो अनुपुब्बमुञ्चनतो अप्पनातो[5] तयो च सुत्तन्ता ति एवं दसविधं[6] मनसिकारकोसल्लं च वुत्तं, तं अपरिच्चजन्तेन द्वत्तिंसाकारभावना आरभितब्बा। एवं हि आरभतो सब्बाकारेन द्वत्तिंसाकारभावना सम्पज्जति नो अञ्ञथा।

तत्थ आदितो व तचपञ्चकं ताव गहेत्वा अपि तेपिटकेन "केसा लोमा'' ति आदिना नयेन अनुलोमतो, तस्मिं पगुणीभूते "तचो दन्ता'' ति एवमादिना नयेन पटिलोमतो, तस्मिं[7] पि पगुणीभूते तदुभयनयेनेव अनुलोमप्पटिलोमतो[7] बहि विसटवितक्कविच्छेदनत्थं[8] पाळिपगुणीभावत्थं[9] च वचसा कोट्ठाससभावपरिग्गहत्थं मनसा च

१. अविवरं—स्या०। २. उत्तानी—सी०, स्या०; उत्तानि—रो०।
३. ०सनिकतो—सी०। ४. विक्खेपपटि०—सी०, रो०।
५. ०लक्खणतो—स्या०। ६. सत्तविधं—रो०।
७-७. सी० पोत्थके नत्थि। ८. ०विच्छेदत्थं—सी०।
९. पालि०—सी०।

अद्धमासं भावेतब्बं। वचसा हिस्स भावना बहि विसटवितक्के
विच्छिन्दित्वा मनसा भावनाय पाळिपगुणताय च पच्चयो होति,
मनसा भावना असुभवण्णलक्खणानं अञ्ञतरवसेन परिग्गहस्स अथ
तेनेव नयेन वक्कपञ्चकं अद्धमासं, ततो तदुभयमद्धमासं ततो
पप्फासपञ्चकमद्धमासं, ततो तं पञ्चकत्तयं पि अद्धमासं, अथ अन्ते
अवुत्तं पि मत्थलुङ्गं पथवीधातुआकारेहि[1] सद्धिं एकतो भावनत्थं इध
पक्खिपित्वा मत्थलुङ्गपञ्चकं अद्धमासं, ततो पञ्चकचतुक्कं पि
अद्धमासं, अथ[2] मेदछक्कमद्धमासं[3], ततो मेदछक्केन सह[4] पञ्चक-
चतुक्कं पि अद्धमासं, अथ मुत्तछक्कमद्धमासं, ततो सब्बमेव
द्वत्तिंसाकारमद्धमासं ति एवं छ मासे वण्णसण्ठानदिसोकासपरिच्छे-
R. 42 दतो ववत्थपेन्तेन भावेतब्बं। एतं[5] मज्झिमपञ्ञं[6] पुग्गलं[6] सन्धाय
वुत्तं। मन्दपञ्ञेन तु यावजीवं भावेतब्बं तिक्खपञ्ञस्स न चिरेनेव[7]
भावना सम्पज्जती ति।

B. 32 एत्थाह "कथं पनायमिमं द्वत्तिंसाकारं वण्णादितो ववत्थपेती"
ति? अयञ्हि[8] "अत्थि इमस्मिं काये केसा" ति एवमादिना नयेन
तचपञ्चकादिविभागतो द्वत्तिंसाकारं भावेन्तो केसा[9] ताव वण्णतो
काळका[10] ति ववत्थपेति, यादिसका वानेन दिट्ठा होन्ति। सण्ठानतो
दीघवट्टलिका[11] तुलादण्डमिवा ति[12] ववत्थपेति। दिसतो पन यस्मा
इमस्मिं काये नाभितो उद्धं उपरिमा दिसा अधो हेट्ठिमा ति वुच्चति,
तस्मा इमस्स कायस्स उपरिमाय दिसाय जाता ति ववत्थपेति।
ओकासतो नलाटन्तकण्णचूळिकगलवाटकपरिच्छिन्ने सीसचम्मे जाता

१. पठवी०—सी०, स्या०; पठवि०—रो०।
२. ततो—स्या०।
३. मेदछक्कं०—सी०, स्या०।
४. ० तं—स्या०।
५. रो० पोत्थके नत्थि।
६-६. ०पञ्ञापुग्गलं—सी०, स्या०, रो०।
७. चिरेन—सी०, रो०।
८. वुच्चते०—स्या०।
९. केसे—सी०, स्या०, रो०।
१०. कालका—सी०।
११. ०वट्टुलका—सी०, रो०; दीघवट्टका—स्या०।
१२. तुलादण्डकामिवाति—रो०।

ति। तत्थ यथा वम्मिकमत्थके जातानि कुण्ठतिणानि[१] न जानन्ति "मयं वम्मिकमत्थके जातानी" ति, न पि[२] वम्मिकमत्थको जानाति "मयि कुण्ठतिणानि जातानी" ति, एवमेव न केसा जानन्ति "मयं सीसचम्मे जाता" ति, न पि सीसचम्मं जानाति "मयि केसा जाता" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा अचेतना अब्याकता सुञ्ञा परमदुग्गन्धजेगुच्छप्पटिकूला[३], न सत्तो न पुग्गलो ति ववत्थपेति। परिच्छेदतो ति दुविधो परिच्छेदो सभागविसभाग-वसेन। तत्थ केसा हेट्ठा पतिट्ठितचम्मतलेन तत्थ वीहग्गमत्तं पविसित्वा पतिट्ठितेन अत्तनो मूलतलेन च[४] उपरि आकासेन तिरियं अञ्ञमञ्ञेन परिच्छिन्ना ति एवं सभागपरिच्छेदतो, केसा न अवसेसएकतिंसाकारा, अवसेसा[५] एकतिंसा न केसा ति एवं विसभागपरिच्छेदतो च ववत्थपेति। एवं ताव केसे वण्णादितो ववत्थपेति।

अवसेसेसु **लोमा** वण्णतो येभुय्येननीलवण्णा ति ववत्थपेति, यादिसका वा तेन[६] दिट्ठा होन्ति। सण्ठानतो ओणतचापसण्ठाना, उपरि वङ्कतालहीरसण्ठाना वा[७], दिसतो द्वीसु दिसासु जाता[८], ओकासतो हत्थतलपादतले ठपेत्वा येभुय्येन अवसेससरीरचम्मे जाता ति।

तत्थ यथा पुराणगामट्ठाने जातानि दब्बतिणानि[९] न जानन्ति R. 43 "मयं पुराणगामट्ठाने जातानी" ति, न च पुराणगामट्ठानं जानाति "मयि दब्बतिणानि[९] जातानी" ति, एवमेव न लोमा जानन्ति "मयं

१. कुन्ततिणानि—सी०, रो०। २. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
३. जेगुच्छपटि०—सी०, स्या०, रो०। ४. वा—स्या०।
५. अवसेस—सी०, स्या०, रो०। ६. वा तेन—स्या०, रो०।
७. वा ति—स्या०। ८. ० ति—स्या०।
९-९. दब्बतिणकानि—सी०, स्या०, रो०।

सरीरचम्मे जाता" ति, न पि[1] सरीरचम्मं जानाति "मयि लोमा जाता" ति। आभोग पच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा अचेतना B. 33 अब्याकता सुञ्ञा परमदुग्गन्धजेगुच्छपटिकूला[2], न सत्तो न पुग्गलो ति ववत्थपेति। परिच्छेदतो हेट्ठा पतिट्ठितचम्मतलेन तत्थ लिक्खामत्तं पविसित्वा पतिट्ठितेन अत्तनो मूलेन[3] च[4] उपरि आकासेन तिरियं अञ्ञमञ्ञेन परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति। अयमेतेसं सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं लोमे वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं **नखा** यस्स परिपुण्णा, तस्स वीसति[5]। ते सब्बे पि वण्णतो मंसविनिमुत्तोकासे[6] सेता, मंससम्बन्धे तम्बवण्णा ति ववत्थपेति। सण्ठानतो यथासकपतिट्ठितोकाससण्ठाना[7], येभुय्येन[8] मधुकफलट्ठिकसण्ठाना[9], मच्छसकलिकसण्ठाना वा ति ववत्थपेति। दिसतो द्वीसु दिसासु जाता, ओकासतो अङ्गुलीनं अग्गेसु पतिट्ठिता ति[10]।

तत्थ यथा नाम[11] गामदारकेहि दण्डकग्गेसु मधुकफलट्ठिका ठपिता न जानन्ति "मयं दण्डकग्गेसु ठपिता" ति, न पि दण्डका जानन्ति "अम्हेसु मधुकफलट्ठिका ठपिता" ति, एवमेव नखा न जानन्ति "मयं अङ्गुलीनं अग्गेसु पतिट्ठिता" ति, न पि अङ्गुलियो जानन्ति "अम्हाकं अग्गेसु नखा पतिट्ठिता" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा अचेतना ...पे०... न पुग्गलो ति ववत्थपेति। परिच्छेदतो हेट्ठा मूले च अङ्गुलिमंसेन, तत्थ[12] पतिट्ठिततलेन वा[12] उपरि अग्गे च आकासेन, उभतोपस्सेसु अङ्गुलीनं

१. च—स्या०। २. ०पटिक्कुला—सी०, स्या०।
३. मूलतलेन—सी०, स्या०, रो०। ४. वा—स्या०।
५. ० व—स्या०। ६. ०विनिम्मुत्तो०—सी०, रो०।
७. यथासकं पति०—सी०, रो०। ८. ० वा—स्या०, रो०।
९. ०फलट्ठिसण्ठाना—स्या०। १०. सी० पोत्थके नत्थि।
११. स्या० पोत्थके नत्थि। १२-१२. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।

उभतोकोटिचम्मेन परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति । अयमेतेसं सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं नखे वण्णादितो ववत्थपेति ।

ततो परं दन्ता यस्स परिपुण्णा, तस्स द्वत्तिस[1] । ते सब्बे पि वण्णतो सेतवण्णा[2] ति ववत्थपेति । यस्स समसण्ठिता होन्ति, तस्स खरपत्तच्छिन्नसङ्खपटलमिव समगन्थितसेतकुसुममकुळमाला[3] विय च खायन्ति । यस्स विसमसण्ठिता, तस्स जिण्णआसनसालापीठकपटि- R. 44
पाटि[4] विय नानासण्ठाना ति सण्ठानतो ववत्थपेति । तेसं हि[5] उभयदन्तपन्तिपरियोसानेसु हेट्ठतो उपरितो[6] च द्वे द्वे कत्वा अट्ठ दन्ता चतुकोटिका चतुमूलिका आसन्दिकसण्ठाना, तेसं ओरतो तेनेव B. 34
कमेन सन्निविट्ठा अट्ठ दन्ता तिकोटिका तिमूलिका सिङ्घाटकसण्ठाना । तेसं पि ओरतो तेनेव कमेन हेट्ठतो[7] उपरितो च एकमेकं कत्वा चत्तारो दन्ता द्विकोटिका द्विमूलिका यानकूपत्थम्भिनीसण्ठाना[8] । तेसं पि ओरतो तेनेव कमेन सन्निविट्ठा चत्तारो दाठादन्ता एककोटिका एकमूलिका मल्लिकामकुळसण्ठाना[9] । ततो उभयदन्तपन्तिवेमज्झे हेट्ठा चत्तारो[10] उपरि चत्तारो[10] कत्वा अट्ठ दन्ता एककोटिका एकमूलिका तुम्बबीजसण्ठाना[11] । दिसतो उपरिमाय दिसाय जाता[12] । ओकासतो उपरिमा उपरिमहनुकट्ठिके अधोकोटिका, हेट्ठिमा हेट्ठिमहनुकट्ठिके उद्धंकोटिका हुत्वा पतिट्ठिता ति ।

तत्थ यथा नवकम्मिकपुरिसेन हेट्ठा सिलातले पतिट्ठापिता उपरिमतले पवेसिता थम्भा न जानन्ति "मयं हेट्ठासिलातले पतिट्ठापिता, उपरिमतले पवेसिता" ति, न हेट्ठासिलातलं जानाति

१. द्वत्तिसा—सी०, रो० ।
२. सेता—स्या० ।
३. ०मकुलमाला—सी०, रो० ।
४. ०पीठपटिपाटि—रो० ।
५. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि ।
६. उपरि—सी०, स्या० ।
७. ० च—स्या० ।
८. यानकूपथम्भसण्ठाना—सी०, स्या० ।
९. ०मकुल०—सी०, स्या०, रो० ।
१०-१०. चत्तरि—स्या० ।
११. ० ति—सी०, स्या०, रो० ।
१२. ० ति—सी०, स्या०, रो० ।

"मयि थम्भा पतिट्ठापिता[1]" ति, न[2] उपरिमतलं[3] जानाति "मयि थम्भा पविट्ठा" ति, एवमेव दन्ता[4] न[4] जानन्ति "मयं हेट्ठाहनुकट्ठिके पतिट्ठिता, उपरिमहनुकट्ठिके पविट्ठा" ति, ना पि हेट्ठाहनुकट्ठिकं[5] जानाति "मयि दन्ता पतिट्ठिता" ति, न उपरिमहनुकट्ठिकं[6] जानाति "मयि दन्ता पविट्ठा" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा...पे०...न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो हेट्ठा हनुकट्ठिकूपेन हनुकट्ठिकं पविसित्वा पतिट्ठितेन अत्तनो मूलतलेन च उपरि आकासेन तिरियं अञ्ञमञ्ञेन परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति। अयमेतेसं सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं
R. 45 दन्ते वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं अन्तोसरीरे नानाकुणपसञ्चयप्पटिच्छादकं[7] तचो[8] वण्णतो सेतो ति ववत्थपेति। सो हि यदि पि छविरागरञ्जितत्ता[9] काळकोदातादिवण्णवसेन नानावण्णो विय दिस्सति, तथा पि[10] सभागवण्णेन सेतो एव। सो पनस्स सेतभावो अग्गिजालाभिघात-पहरणपहारादीहि विद्धंसिताय छविया पाकटो होति। सण्ठानतो सङ्खेपेन कञ्चुकसण्ठानो, वित्थारेन नानासण्ठानो ति। तथा हि
B. 35 पादङ्गुलित्तचो कोसकारककोससण्ठानो, पिट्ठिपादत्तचो पुटबद्धूपाहन-सण्ठानो, जङ्घत्तचो भत्तपुटकतालपण्णसण्ठानो, ऊरुत्तचो तण्डुल-भरितदीघत्थविकसण्ठानो, आनिसदत्तचो उदकपूरितपटपरिस्सावन-सण्ठानो, पिट्ठित्तचो फलकोनद्धचम्मसण्ठानो, कुच्छित्तचो वीणा-दोणिकोनद्धचम्मसण्ठानो, उरत्तचो येभुय्येन चतुरस्ससण्ठानो, द्विबाहुत्तचो[11] तूणीरोनद्धचम्मसण्ठानो, पिट्ठिहत्थत्तचो खुरकोससण्ठानो फणकत्थविकसण्ठानो वा, हत्थङ्गुलित्तचो[12] कुञ्चिकाकोससण्ठानो,

१. पतिट्ठिता ति—रो०। २. न च—रो०।
३. उपरिमसिलातलं—सी०, रो०। ४-४. न दन्ता—सी०, स्या०, रो०।
५. हेट्ठाहनुकट्ठि—सी०। ६. ०कट्ठि—सी०।
७. ०सञ्चयपटिच्छादकं०—सी०, रो०। ८. तचं—सी०, रो०; तचं पि—स्या०।
९. छविरागसञ्चितत्ता—स्या०। १०. पिस्स—स्या०।
११. द्वेबाहुत्तचो—स्या०, रो०। १२. द्विहत्थ०—सी०।

गीवत्तचो गलकञ्चुकसण्ठानो, मुखत्तचो छिद्दावछिद्दकिमिकुलावकसण्ठानो, सीसत्तचो पत्तत्थविकसण्ठानो ति ।

तचपरिग्गण्हकेन[१] च योगावचरेन उत्तरोट्ठतो पट्ठाय तचस्स मंसस्स च अन्तरेन चित्तं पेसेन्तेन पठमं ताव मुखत्तचो ववत्थपेतब्बो, ततो सीसत्तचो, अथ बहिगीवत्तचो, ततो अनुलोमेन पटिलोमेन च दक्खिणहत्थत्तचो । अथ तेनेव कमेन वामहत्थत्तचो, ततो पिट्ठित्तचो, अथ झानिसदत्तचो, ततो[२] अनुलोमेन पटिलोमेन च दक्खिणपादत्तचो, अथ[३] वामपादत्तचो[३], ततो वत्थिउदरहदयअब्भन्तरगीवत्तचो, ततो हेट्ठिमहनुकत्तचो, अथ[४] अधरोट्ठत्तचो । एवं याव पुन उपरि अट्ठत्तचो ति[४] । दिसतो द्वीसु दिसासु जातो[५] । ओकासतो सकल- R. 46
सरीरं परियोनन्धित्वा[६] ठितो ति ।

तत्थ यथा अल्लचम्मपरियोनद्धाय पेळाय न अल्लचम्मं जानाति "मया पेळा परियोनद्धा" ति, न पि पेळा जानाति "अहं अल्लचम्मेन परियोनद्धा" ति, एवमेव[७] न तचो जानाति "मया इदं चातुमहाभूतिकं सरीरं ओनद्धं" ति, न पि इदं चातुमहाभूतिकं सरीरं जानाति "अहं तचेन ओनद्धं" ति । आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति । केवलं तु—

अल्लचम्मपटिच्छन्नो, नवद्वारो महावणो ।
समन्ततो पग्घरति, असुचिपूतिगन्धियो[८] ति ॥

परिच्छेदतो हेट्ठा मंसेन तत्थ पतिट्ठिततलेन वा[९] उपरि छविया परिच्छिन्नो ति ववत्थपेति । अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं तचं वण्णादितो ववत्थपेति ।

१. तचपरिग्गण्हनकेन—सी०; तचपरिगण्हनकेन—रो० ।
२. ० पि—स्या० ।
३-३. अथ तेनेव कम्मेन वामपादत्तचो—रो० ।
४-४. एवंयाव पुन अधरोट्ठत्तचो ति—सी०; एवंयावपुन उपरिओट्ठत्तचो ति—स्या०, रो० ।
५. ० ति—सी०, स्या०, रो० ।
६. परिनन्धित्वा—रो० ।
७. एवमेवं—सी०, रो० ।
८. असुची०—सी०; असुचि०—रो० ।
९. घ—स्या० ।

B. 36 ततो परं सरीरे नवपेसिसतप्पभेदं मंसं वण्णतो रत्तं पालिभद्दकपुप्फसन्निभं[1] ति ववत्थपेति। सण्ठानतो नानासण्ठानं ति। तथा हि तत्थ जङ्घमंसं[2] तालपत्त[3]पुटभत्तसण्ठानं, अविकसितकेतकीमकुळसण्ठानं[4] ति पि केचि। उरुमंसं सुधापिसननिसदपोतकसण्ठानं[5], आनिसदमंसं उद्धनकोटिसण्ठानं, पिट्ठिमंसं तालगुळपटलसण्ठानं, फासुकद्वयमंसं वंसमयकोट्ठकुच्छिपदेसम्हि[6] तनुमत्तिकालेपसण्ठानं, थनमंसं वट्टेत्वा[7] अवक्खित्तद्धमत्तिकापिण्डसण्ठानं[8], द्वेबाहुमंसं नङ्गुट्ठसीसपादे छेत्वा निच्चम्मं कत्वा ठपितमहामूसिकसण्ठानं, मंससूनकसण्ठानं ति पि एके। गण्डमंसं गण्डप्पदेसे[9] ठपितकरञ्जबीजसण्ठानं, मण्डूकसण्ठानं ति पि एके। जिह्वामंसं नुहीपत्तसण्ठानं, नासामंसं ओमुखनिक्खित्तपण्णकोससण्ठानं, अक्खिकूपमंसं अद्धपक्कउदुम्बर-
R. 47 सण्ठानं, सीसमंसं पत्तपचनकटाहतनुलेपसण्ठानं ति[10]। मंसपरिग्गण्हकेन च योगावचरेन एतानेव ओळारिकमंसानि सण्ठानतो ववत्थपेतब्बानि। एवं हि ववत्थापयतो सुखुमानि मंसानि ञाणस्स आपाथं आगच्छन्ती ति। दिसतो द्वीसु दिसासु जातं[11]। ओकासतो साधिकानि तीणि अट्ठिसतानि अनुलिम्पित्वा[12] ठितं ति।

तत्थ यथा थूलमत्तिकानुलित्ताय भित्तिया न थूलमत्तिका जानाति "मया भित्ति अनुलित्ता" ति, न[13] पि भित्ति जानाति "अहं थूलमत्तिकाय अनुलित्ता" ति, एवमेवं न नवपेसिसतप्पभेदं मंसं जानाति "मया अट्ठिसतत्तयं[14] अनुलित्तं[15]" ति, न पि अट्ठिसतत्तयं

१. पालि० — सी०।
२. जङ्घामंसं — सी०।
३. तालपत्तन्तो — स्या०।
४. ०केतक० — स्या०।
५. ०पिसन० पोतसण्ठानं — सी०; ०पिसन० पुत्त सण्ठानं — रो०।
६. ०कुच्छिप्पदेसे ठपित — सी०; ०कुच्छिपदेसे ठपित — रो०।
७. ठत्वा — सी०, रो०।
८. अपविट्ठ अल्लमत्तिका पिण्डसण्ठानं — सी०; अप्पविद्ध अल्लमत्तिक पिण्डसण्ठानं — रो०।
९. गण्डप्पभेदं — रो०।
१०. स्या० पोत्थके नत्थि।
११. ० ति — स्या०, रो०।
१२. आलिम्पित्वा — रो०।
१३. वा — सी०।
१४. अट्ठिसतत्तयमया भित्ति — स्या०।
१५ अनुलित्ता — स्या०; एवमेव।

जानाति "अहं नवपेसिसतप्पभेदेन मंसेन अनुलित्तं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। केवलं तु—

नवपेसिसता मंसा, अनुलित्ता कळेवरं[1]।
नानाकिमिकुलाकिण्णं, मीळ्हट्ठानं व पूतिकं ति॥

परिच्छेदतो हेट्ठा अट्ठिसङ्घाटेन तत्थ पतिट्ठिततलेन वा[2] उपरि तचेन तिरियं अञ्ञमञ्ञेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं मंसं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे नवसतप्पभेदा[3] न्हारू[4] वण्णतो सेता ति ववत्थपेति, मधुवण्णा ति पि एके। सण्ठानतो नानासण्ठाना ति। तत्था हि तत्थ महन्ता महन्ता न्हारू कन्दलमकुळसण्ठाना, ततो B. 37
सुखुमतरा सूकरवागुररज्जुसण्ठाना[5], ततो अणुकतरा पूतिलतासण्ठाना, ततो अणुकतरा सीहळमहावीणातन्तिसण्ठाना[6], ततो अणुकतरा थूलसुत्तकसण्ठाना, हत्थपिट्ठिपादपिट्ठीसु न्हारू सकुणपादसण्ठाना, सीसे न्हारू गामदारकानं सीसे ठपितविरळतरदुकूलसण्ठाना[7], R. 48
पिट्ठिया[8] न्हारू तेमेत्वा आतपे पसारितमच्छजालसण्ठाना, अवसेसा इमस्मिं सरीरे तंतंअङ्गपच्चङ्गानुगता न्हारू सरीरे पटिमुक्कजालकञ्चुकसण्ठाना ति। दिसतो द्वीसु दिसासु जाता[9]। तेसु च दक्खिणकण्णचूळिकतो पट्ठाय पञ्च कण्डरनामका महान्हारू पुरतो च पच्छतो च विनन्धमाना वामपस्सं गता, वामकण्णचूळिकतो पट्ठाय पञ्च पुरतो च पच्छतो च विनन्धमाना दक्खिणपस्सं गता, दक्खिणगलवाटकतो पट्ठाय पञ्च पुरतो च पच्छतो च विनन्धमाना

१. कलेबरं—सी०, रो०। २. च—स्या०।
३. ० भेदे—सी०, स्या०, रो०। ४. नहारू—सी०, रो०।
५. सूकरवागुरा०—स्या०। ६. सीहलानं०—सी०, स्या०।
७. ०विरलतर०—सी०, रो०। ८. पिट्ठियं—स्या०।
९. ति—सी०, स्या०, रो०।

वामपस्सं गता, वामगलवाटकतो पट्ठाय पञ्च पुरतो च पच्छतो च विनन्धमाना दक्खिणपस्सं गता, दक्खिणहत्थं[1] विनन्धमाना पुरतो च पच्छतो च पञ्च पञ्चा ति दस कण्डरनामका एव[2] महान्हारू आरुळ्हा। तथा वामहत्थं, दक्खिणपादं, वामपादं चा ति एवमेते सट्ठि महान्हारू सरीरधारका सरीरनियामका ति पि ववत्थपेति। ओकासतो सकलसरीरे सट्ठिचम्मानं अट्ठिमंसानं च अन्तरे अट्ठीनि आबन्धमाना ठिता ति।

तत्थ यथा वल्लिसन्तानबद्धेसु कुट्टदारूसु[3] न वल्लिसन्ताना जानन्ति "अम्हेहि कुट्टदारूनि आबद्धानी" ति, न पि कुट्टदारूनि जानन्ति "मयं वल्लिसन्तानेहि आबद्धानी" ति, एवमेव[4] न न्हारू जानन्ति "अम्हेहि तीणि अट्ठिसतानि आबद्धानी" ति, न पि तीणि अट्ठिसतानि जानन्ति "मयं न्हारूहि आबद्धानी" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। केवलं तु—

नवन्हारुसता होन्ति, ब्याममत्ते कळेवरे[5]।
बन्धन्ति अट्ठिसङ्घाटं, अगारमिव वल्लियो ति ॥

परिच्छेदतो हेट्ठा तीहि अट्ठिसतेहि तत्थ पतिट्ठिततलेहि वा[6] उपरि तचमंसेहि तिरियं अञ्ञमञ्ञेन परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति। अयमेतेसं सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा
R. 49 ति एवं न्हारू वण्णादितो ववत्थपेति।

B. 38 ततो परं सरीरे द्वत्तिसदन्तट्ठिकानं विसुं गहितत्ता सेसानि चतुसट्ठि हत्थट्ठिकानि चतुसट्ठि पादट्ठिकानि चतुसट्ठि मुदुकट्ठिकानि मंसनिस्सितानि द्वे पण्हिकट्ठीनि[7] एकेकस्मिं पादे द्वे द्वे[8] गोप्फकट्ठिकानि

१. ० गता—रो०। २. एवं—सी०, स्या०।
३. कुड्ड०—सी०; कुड्ड०—रो०। ४. एवमेवं—सी०, रो०।
५. कलेबरे—सी०, रो०। ६. च—स्या०।
७. पण्हिकट्ठिकानि—स्या०। ८. स्या० पोत्थके नत्थि।

द्वे[1] जङ्घट्ठिकानि एकं जण्णुकट्ठि एकं ऊरुट्ठि[2] द्वे कटिट्ठीनि[3] अट्ठारस पिट्ठिकण्टकट्ठीनि चतुवीसति फासुकट्ठीनि चुद्दस उरट्ठीनि एकं हदयट्ठि द्वे अक्खकट्ठीनि द्वे पिट्ठिबाहट्ठीनि द्वे बाहट्ठीनि द्वे[4] द्वे[4] अग्गबाहट्ठीनि सत्त गीवट्ठीनि द्वे हनुकट्ठीनि एकं नासिकट्ठि (द्वे[5] अक्खिट्ठीनि द्वे कण्णट्ठीनि[5]) एकं नलाटट्ठि (एकं[6] मुद्धट्ठि[6]) नव सीसकपालट्ठीनी ति एवमादिना नयेन वुत्तप्पभेदानि अट्ठीनि सब्बानेव वण्णतो सेतानी ति ववत्थपेति।

सण्ठानतो नानासण्ठानानि। तथा हि तत्थ अग्गपादङ्गुलियट्ठीनि कतकबीजसण्ठानानि[7], तदनन्तरानि अङ्गुलीनं मज्झपब्बट्ठीनि अपरिपुण्णपनसट्ठिसण्ठानानि, मूलपब्बट्ठीनि पणवसण्ठानानि, मोरसकलिसण्ठानानी[8] ति पि एके। पिट्ठिपादट्ठीनि कोट्टितकन्दलकन्दरासिसण्ठानानि[9] पण्हिकट्ठीनि एकट्ठितालफलबीजसण्ठानानि, गोप्फकट्ठीनि एकतोबद्धकीळागोळकसण्ठानानि[10], जङ्घट्ठिकेसु खुद्दकं[11] धनुदण्डसण्ठानं, महन्तं खुप्पिपासामिलातधमनिपिट्ठिसण्ठानं[12], जङ्घट्ठिकस्स[13] गोप्फकट्ठिकेसु[14] पतिट्ठितट्ठानं अपनीततचरवज्जूरीकळीरसण्ठानं, जङ्घट्ठिकस्स जण्णुकट्ठिके पतिट्ठितट्ठानं मुदिङ्गमत्थकसण्ठानं[15] जण्णुकट्ठि एकपस्सतो घट्टितफेणसण्ठानं, ऊरुट्ठीनि[16] दुत्तच्छितवासिफरसुदण्डसण्ठानानि,

१. द्वे द्वे—सी०।
२. ऊरट्ठि—सी०, रो०।
३. कटट्ठीनि—सी०, रो०।
४-४. द्वे—रो०।
५-५. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
६-६. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
७. कक्टबीज०—स्या०।
८. मुदिङ्गसण्ठानानी—सी०; मोदसकलिक०—स्या०।
९. कोट्टितकन्दलमिञ्जरासि०—सी०।
१०. ० गुळक०—स्या०।
११. खुद्दकट्ठि—स्या०।
१२. ०धम्मनिपिट्ठि०—सी०, स्या०, रो०।
१३. जङ्घट्ठीनं—सी०।
१४. ०कट्ठीसु—सी०, रो०।
१५. मुतिङ्ग०—सी०, रो०।
१६. ऊरट्ठीनि—सी०।

R. 50 ऊरुट्ठिकस्स[१] कटट्ठिके पतिट्ठितट्ठानं सुवण्णकारानं अग्गिजालनक-
सलाकाबुन्दिसण्ठानं[२], तप्पतिट्ठितोकासो अग्गिच्छिन्नपुन्नागफल-
सण्ठानो[३], कटिट्ठीनि[४] द्वे पि एकाबद्धानि हुत्वा कुम्भकारेहि[५]
कतचुल्लिसण्ठानानि, तापसभिसिकासण्ठानानी[६] ति पि एके।
आनिसदट्ठीनि हेट्ठामुखठपितसप्पफणसण्ठानानि, सत्तट्ठट्ठानेसु[७] छिद्दाव-
छिद्दानि अट्ठारस पिट्ठिकण्टकट्ठीनि अब्भन्तरतो उपरूपरि ठपितसीसक-
पट्टवेठक[८]-सण्ठानानि, बाहिरतो वट्टनावलिसण्ठानानि[९], तेसं
अन्तरन्तरा ककचदन्तसदिसानि द्वे तीणि कण्टकानि होन्ति[१०],
B. 39 चतुवीसतिया फासुकट्ठीसु परिपुण्णानि परिपुण्णसीहळदात्तसण्ठानानि[११],
अपरिपुण्णानि अपरिपुण्णसीहळदात्तसण्ठानानि, सब्बानेव ओदात-
कुक्कुटस्स पसारितपक्खद्वयसण्ठानानी ति पि एके। चुद्दस उरट्ठीनि
जिण्णसन्दमानिकफलकपन्तिसण्ठानानि, हदयट्ठि[१२] दब्बिफणसण्ठानं,
अक्खकट्ठीनि खुद्दकलोहवासिदण्डसण्ठानानि, तेसं हेट्ठा अट्ठि अद्धचन्द-
सण्ठानं, पिट्ठिबाहट्ठीनि फरसुफणसण्ठानानि[१३], उपड्ढच्छिन्नसीहळ-
कुदालसण्ठानानी[१४] ति पि एके। बाहट्ठीनि आदासदण्डसण्ठानानि,
महावासिदण्डसण्ठानानी ति पि एके। अग्गबाहट्ठीनि यमकतालकन्द-
सण्ठानानि, मणिबन्धट्ठीनि एकतो अल्लियापेत्वा ठपितसीसकपट्टवेठक-
सण्ठानानि, पिट्ठिहत्थट्ठीनि कोट्टितकन्दलकन्दरासिसण्ठानानि,
हत्थङ्गुलिमूलपब्बट्ठीनि पणवसण्ठानानि, मज्झपब्बट्ठीनि अपरिपुण्ण
पनसट्ठिसण्ठानानि, अग्गपब्बट्ठीनि कतकबीजसण्ठानानि, सत्त

१. ऊरट्ठिकस्स—सी०।
२. अग्गिजालनसलाका०—सी०, रो०।
३. अग्गच्छिन्न०—सी०, स्या०, रो०।
४. कटट्ठीनि—सी०, स्या०, रो०।
५. कुम्भकारकेहि—सी०।
६. तापसभिसिसण्ठानानि—स्या०, रो०।
७. सत्तट्ठानेसु—सी०, स्या०।
८. ०वेठन०—सी०।
९. वट्टनालिसण्ठानानि—रो०।
१०. स्या० पोत्थके नत्थि।
११. ०सीहल०—सी०; ०सीहळद्दात्त०—रो०।
१२. पादट्ठि—रो०।
१३. फरसुफल०—सी०।
१४. ०कुद्दाल०—सी०, रो०; ०उपच्छिन्न०कुद्दाल०—स्या०।

गीवट्ठीनि दण्डे विज्झित्वा पटिपाटिया ठपितवंसकळीरखण्डसण्ठानानि, हेट्ठिमहनुकट्ठि कम्मारानं अयोकूटयोत्तकसण्ठानं, उपरिमहनुकट्ठि अवलेखनसत्थकसण्ठानं, अक्खिनासकूपट्ठीनि अपनीतमिञ्जतरुणतालट्ठिसण्ठानानि, नलाटट्ठि अधोमुखठपितभिन्न- R. 51
सङ्खकपालसण्ठानं[1], कण्णचूळिकट्ठीनि न्हापितखुरकोससण्ठानानि,[2] नलाटकण्णचूळिकानं उपरि पट्टबन्धनोकासे अट्ठिबहलघटपुण्णपटपिलोतिकखण्डसण्ठानं, मुद्धनट्ठि मुखच्छिन्नवङ्कनाळिकेरसण्ठानं[3], सीसट्ठीनि सिब्बेत्वा ठपितजज्जरालाबुकटाहसण्ठानानी[4] ति। दिसतो द्वीसु दिसासु जातानि[5]।

ओकासतो अविसेसेन सकलसरीरे ठितानि, विसेसेनं तु सीसट्ठीनि गीवट्ठिकेसु पतिट्ठितानि, गीवट्ठीनि पिट्ठिकण्टकट्ठीसु पतिट्ठितानि, पिट्ठिकण्टकट्ठीनि कटिट्ठीसु[6] पतिट्ठितानि, कटिट्ठीनि[7] ऊरुट्ठिकेसु[8] पतिट्ठितानि, उरुट्ठीनि जण्णुकट्ठिकेसु[9], जण्णुकट्ठीनि जङ्घट्ठिकेसु, जङ्घट्ठीनि गोप्फकट्ठिकेसु, गोप्फकट्ठीनि पिट्ठिपादट्ठिकेसु पतिट्ठितानि, पिट्ठिपादट्ठिकानि च गोप्फकट्ठीनि[10] उक्खिपित्वा ठितानि, गोप्फकट्ठीनि जङ्घट्ठीनि ...पे०... गीवट्ठीनि सीसट्ठीनि उक्खिपित्वा ठितानि ति एतेनानुसारेन अवसेसानि पि अट्ठीनि वेदितब्बानि।

तत्थ यथा इट्ठकगोपानसिचयादीसु[11] न उपरिमा[12] इट्ठकादयो जानन्ति "मयं हेट्ठिमेसु पतिट्ठिता" ति, न पि हेट्ठिमा जानन्ति "मयं उपरिमानि उक्खिपित्वा ठिता" ति, एवमेव[13] न सीसट्ठिकानि जानन्ति "मयं गीवट्ठिकेसु पतिट्ठितानी" ति ...पे०... न गोप्फकट्ठि- B. 40
कानि जानन्ति "मयं पिट्ठिपादट्ठिकेसु पतिट्ठितानी" ति, न[14] पि[14]

१. ओमुख०—स्या०। २. नहापित०—रो०।
३. ०नालिकेर०—सी०, रो०। ४. ०लापु०—सी०।
५. जातानी ति—सी०, स्या०, रो०। ६. कटट्ठीसु—सी०, स्या०, रो०।
७. कटट्ठीनि—रो०। ८. ऊरट्ठिकेसु—सी०, रो०।
९. जण्णुकट्ठीसु—सी०, रो०। १०. गोप्फकट्ठिकानि—स्या०, रो०।
११. इट्ठकदारुगोपानसि०—स्या०। १२. उपरिमा उपरिमा—स्या०।
१३. एवमेवं—सी०, रो०। १४-१४. न—सी०।

पिट्ठिपादट्ठिकानि जानन्ति "मयं गोप्फकट्ठीनि उक्खिपित्वा ठितानी" ति[१]। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हिं एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। केवलं तु इमानि साधिकानि तीणि अट्ठिसतानि नवहि न्हारुसतेहि[२] नवहि च मंसपेसिसतेहि आबद्धानुलित्तानि, एकघनचम्मपरियोनद्धानि[३], सत्तरसहरणीसहस्सानुगतसिनेहसिनेहितानि[४], नवनवुतिलोमकूपसहस्सपरिस्सवमानसेदजल्लिकानि असीतिकिमिकुलानि, कायोत्वेव सङ्खं गतानि, यं[५] सभावतो उपपरिक्खन्तो योगावचरो न किञ्चि गय्हूपगं पस्सति, केवलं तु न्हारुसम्बन्धं
R. 52 नानाकुणपसङ्किण्णं अट्ठिसङ्घाटमेव पस्सति। यं दिस्वा दसबलस्स पुत्तभावं उपेति। यथाह—

"पटिपाटियट्ठीनि ठितानि कोटिया,
अनेकसन्धियमितो[६] न केहिचि।
बद्धो नहारूहि जराय चोदितो,
अचेतनो कट्ठकलिङ्गरूपमो॥

* कुणपं कुणपे जातं, असुचिम्हि च पूतिनि[७]।
दुग्गन्धे चा पि दुग्गन्धं, भेदनम्हि च वयधम्मं॥
अट्ठिपुटे अट्ठिपुटो, निब्बत्तो पूतिनि[८] पूतिकायम्हि।
तम्हि च विनेथ छन्दं, हेस्सथ पुत्ता दसबलस्सा"
ति च[९]॥

१. ० पे० न पि गिवट्ठिकानि जानन्ति मयं गिवट्ठिकानि उक्खिपित्वा ठितानि ति—अयं स्या० पोत्थके एत्थ अधिको पाठो दिस्सति।

२. नहारू०—रो०।

३. च चम्मपरियोनद्धानि—स्या०; एकसतचम्म०—रो०।

४. सत्तरसहरणीसतानुगत०—सी०, रो०।

५. एवं कायं—स्या०।

६. अनेकसन्धी समितो—सी०।

-. कुणपं कुणपे जातं, असुचिअसुम्हि च।
पूतिकायम्हि पूतीनि, दुग्गन्धेन दुग्गन्धनं॥
भेदनधम्मेहिखयधम्मं, अट्ठिपुटे अट्ठिपुटो।
निब्बत्तो पूतिकायम्हि, तम्हि च विनेथच्छन्दं।
हेस्सथ पुत्ता दसबलस्सा ति च॥—स्या०।

७. पूतियं—सी०।

८. पूतीनि—सी०।

९. सी० नत्थि।

परिच्छेदतो अन्तो अट्ठिमिञ्जेन उपरितो[1] मंसेन अग्गे मूले च अञ्ञमञ्ञेन परिच्छिन्नानी ति ववत्थपेति। अयमेतेसं सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं अट्ठीनि वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे यथावुत्तप्पभेदानं अट्ठीनं अब्भन्तरगतं **अट्ठिमिञ्जं** वण्णतो सेतं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो अत्तनो ओकाससण्ठानं ति। सेय्यथिदं ? महन्तमहन्तानं अट्ठीनं अब्भन्तरगतं सेदेत्वा वट्टेत्वा महन्तेसु वंसनळकपब्बेसु पक्खित्तमहावेत्तङ्कुरसण्ठानं, खुद्दानुखुद्दकानं अब्भन्तरगतं सेदेत्वा वट्टेत्वा खुद्दानुखुद्दकेसु वंसनळकपब्बेसु पक्खित्ततनुवेत्तङ्कुरसण्ठानं ति। दिसतो द्वीसु दिसासु जातं[2]। ओकासतो अट्ठीनं अब्भन्तरे पतिट्ठितं ति। B. 41

तत्थ यथा वेळुनळकादीनं[3] अन्तोगतानि दधिफाणितानि न जानन्ति "मयं वेळुनळकादीनं अन्तोगतानी" ति, न पि वेळुनळकादयो जानन्ति "दधिफाणितानि अम्हाकं अन्तोगतानी" ति, एवमेव[4] न अट्ठिमिञ्जं जानाति "अहं अट्ठीनं अन्तोगतं" ति, न पि अट्ठीनि जानन्ति "अट्ठिमिञ्जं अम्हाकं अन्तोगतं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो अट्ठीनं अब्भन्तरतलेहि अट्ठिमिञ्जभागेन च परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। R. 53 अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं अट्ठिमिञ्जं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरस्स अब्भन्तरे द्विगोळकप्पभेदं[5] **वक्कं** वण्णतो मन्दरत्तं पाळिभद्दकट्ठिवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो गामदारकानं सुत्तावुतकीळागोळकसण्ठानं[6], एकवण्टसहकारद्वयसण्ठानं ति पि एके।

१. उपरि—स्या०। २. जातं ति—सी०, स्या०, रो०।
३. वेलु०—सी०; वेळुनलकादीनं—रो०। ४. एवमेवं—सी०, रो०।
५. द्विगोल०—सी०; ०पि—स्या०। ६. ० ति—सी०, स्या०, रो०।

दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[१]। ओकासतो गलवाटका विनिक्खन्तेन एकमूलेन थोकं गन्त्वा द्विधा भिन्नेन थूलन्हारुना[२] विनिबद्धं[३] हुत्वा हदयमंसं परिक्खिपित्वा ठितं ति।

तत्थ यथा वण्टूपनिबद्धं सहकारद्वयं न जानाति "अहं वण्टेन उपनिबद्धं" ति, न पि वण्टं जानाति "मया सहकारद्वयं उपनिबद्धं" ति, एवमेव[४] न वक्कं जानाति "अहं थूलन्हारुना उपनिबद्धं" ति, न पि[५] थूलन्हारु जानाति "मया वक्कं उपनिबद्धं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा...पे०...न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो वक्कं वक्कभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं वक्कं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरस्स अब्भन्तरे **हदयं** वण्णतो रत्तं[६] रत्तपदुमपत्तपिट्ठिवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो बाहिरपत्तानि अपनेत्वा अधोमुखठपितपदुममकुळसण्ठानं[७], तं च अग्गच्छिन्नपुन्नागफलमिव विवटेकपस्सं[८] बहि मट्ठं अन्तो कोसातकीफलस्स अब्भन्तरसदिसं।
B. 42 पञ्ञाबहुलानं थोकं विकसितं, मन्दपञ्ञानं मकुळितमेव[९]। यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च पवत्तन्ति, तं अपनेत्वा
R. 54 अवसेसमंसपिण्डसङ्खातहदयब्भन्तरे[१०] अड्ढपसतमत्तं लोहितं सण्ठाति, तं[११] रागचरितस्स रत्तं, दोसचरितस्स काळकं[१२], मोहचरितस्स मंसधोवनोदकसदिसं, वितक्कचरितस्स कुलत्थयूसवण्णं, सद्धाचरितस्स कणिकारपुप्फवण्णं[१३], पञ्ञाचरितस्स अच्छं विप्पसन्नमनाविलं,

१. जातं ति—सी०, स्या०, रो०।
२. ०नहारूना—सी०, रो०; ०पि—स्या०।
३. उपनिबद्धं—स्या०।
४. एवमेवं—सी०, रो०।
५. सी० पोत्थके नत्थि।
६. स्या० पोत्थके नत्थि।
७. ०सण्ठानं ति—सी०, स्या०; ०पदुममकुलसण्ठानं ति—रो०।
८. विवकम्पस्सं—रो०।
९. मुकुलितमेव—सी०, रो०।
१०. अवसेसं मंसपिण्डसङ्खातं यस्स अब्भन्तरे—सी०, रो०।
११. यं—स्या०, रो०।
१२. कालकं—सी०।
१३. कण्णिकार०—स्या०।

निद्धोतजातिमणि[1] विय जुतिमन्तं खायति। दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[2]। ओकासतो सरीरब्भन्तरे द्विन्नं थनानं मज्झे पतिट्ठितं ति।

तत्थ यथा द्विन्नं वातपानकवाटकानं मज्झे ठितो अग्गळत्थम्भको न[3] जानाति "अहं द्विन्नं वातपानकवाटकानं मज्झे ठितो" ति, न पि वातपानकवाटकानि जानन्ति "अम्हाकं मज्झे अग्गळत्थम्भको ठितो" ति, एवमेवं न हदयं जानाति "अहं द्विन्नं थनानं मज्झे ठितं" ति, न पि थनानि जानन्ति "हदयं अम्हाकं मज्झे ठितं" ति। आभोग-पच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो हदयं हदयभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं हदयं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरस्स अब्भन्तरे यकनसञ्ञितं यमकमंसपिण्डं वण्णतो रत्तं[4] रत्तकुमुदबाहिरपत्तपिट्ठिवण्णं[5] ति ववत्थपेति। सण्ठानतो एकमूलं हुत्वा अग्गे यमकं कोविळारपत्तसण्ठानं, तं च दन्धानं एकंयेव होति महन्तं, पञ्ञवन्तानं द्वे वा तीणि वा खुद्दकानी ति। दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[6]। ओकासतो द्विन्नं थनानं अब्भन्तरे दक्खिणपस्सं निस्साय ठितं ति।

तत्थ यथा पिठरकपस्से[7] लग्गा[8] मंसपेसि[8] न जानाति "अहं पिठरकपस्से लग्गा" ति, न पि[9] पिठरकपस्सं जानाति "मयि मंसपेसि[10] लग्गा" ति, एवमेव[11] न यकनं जानाति "अहं द्विन्नं[12]

१. ०जातमणि—स्या०।
२. जातं ति—सी०, स्या०, रो०; एवमेव।
३. न पि—स्या०।
४. स्या० पोत्थके नत्थि।
५. रत्तपण्डकण्णातिरत्तकुमुदस्स बाहिर-पिट्ठि वण्णं—स्या०।
६. जातं ति—सी०, स्या०, रो०।
७. पिवरकपस्से—रो०।
८-८. लग्गमंसपेसी—सी०, स्या०, रो०।
९. सी० पोत्थके नत्थि।
१०. मंसपेसी—सी०।
११. एवमेवं—सी०, रो०।
१२. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।

थनानं अब्भन्तरे दक्खिणपस्सं निस्साय ठितं'' ति, न पि थनानं अब्भन्तरे दक्खिणपस्सं जानाति ''मं निस्साय यकनं ठितं'' ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो B.43 R.55 ति। परिच्छेदतो पन यकनं यकनभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं यकनं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे पटिच्छन्नापटिच्छन्नभेदतो दुविधं[1] **किलोमकं** वण्णतो सेतं दुकूलपिलोतिकवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो अत्तनो ओकाससण्ठानं[2]। दिसतो द्वीसु दिसासु जातं। ओकासतो पटिच्छन्नकिलोमकं हदयं च वक्कं च परिवारेत्वा[3] अप्पटिच्छन्नकिलोमकं[4] सकलसरीरे चम्मस्स हेट्ठतो मंसं परियोनन्धित्वा ठितं ति।

तत्थ यथा पिलोतिकाय पलिवेठिते[5] मंसे न पिलोतिका जानाति ''मया मंसं पलिवेठितं'' ति, न पि मंसं जानाति ''अहं पिलोतिकाय पलिवेठितं'' ति, एवमेव न किलोमकं जानाति ''मया हदयवक्कानि सकलसरीरे च[6] चम्मस्स[6] हेट्ठतो मंसं पलिवेठितं'' ति। न पि हदयवक्कानि[7] सकलसरीरे च मंसं जानाति ''अहं किलोमकेन पलिवेठितं'' ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो हेट्ठा मंसेन उपरि चम्मेन तिरियं किलोमकभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं किलोमकं वण्णादितो ववत्थपेति।

तरो परं सरीरस्स अब्भन्तरे **पिहकं** वण्णतो नीलं मीलात-निग्गुण्डीपुप्फवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो येभुय्येन सत्तङ्गुलप्पमाणं

१. दुब्बिधं पि—स्या०।
२. ० ति—सी० स्या० रो०।
३. पटिच्छादेत्वा ठितं—स्या०।
४. अपटि०—सी०, स्या०, रो०।
५. पळि—सी०।
६-६. चम्मस्स च—सी०; चम्मस्स—स्या०।
७. वक्कहदयानि—सी०।

अबन्धनं काळवच्छकजिव्हासण्ठानं[१]। दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[२]। ओकासतो हदयस्स वामपस्से उदरपटलस्स मत्थकपस्सं निस्साय ठितं, यम्हि पहरणपहारेन[३] बहि निक्खन्ते सत्तानं जीवितक्खयो होती[४] ति[४]।

तत्थ यथा कोट्ठकमत्थकपस्सं निस्साय ठिता न गोमयपिण्डि जानाति[५] "अहं कोट्ठकमत्थकपस्सं निस्साय ठिता" ति, न पि कोट्ठकमत्थकपस्सं जानाति "गोमयपिण्डि मं निस्साय ठिता" ति, एवमेव[६] न पिहकं जानाति "अहं उदरपटलस्स मत्थकपस्सं निस्साय ठितं" ति, न पि उदरपटलस्स मत्थकपस्सं जानाति "पिहकं मं निस्साय ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो पिहकं पिहकभागेन B.44 R.56 परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं पिहकं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरस्स अब्भन्तरे वक्कसमंसखण्डप्पभेदं[७] पप्फासं वण्णतो रत्तं[८] नातिपरिपक्कउदुम्बरवण्णं[८] ति ववत्थपेति। सण्ठानतो विसमच्छिन्नपूवसण्ठानं[९], छदनिट्ठकखण्डपुञ्जसण्ठानं ति पि एके। तदेतं अब्भन्तरे असितपीतादीनं अभावे उग्गतेन कम्मजतेजुस्मना[१०] अब्भाहतत्ता सङ्खादितपलालपिण्डमिव[११] निरसं निरोजं होति। दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[१२]। ओकासतो सरीरब्भन्तरे द्विन्नं

१. ० ति—सी०, स्या०, रो०। २. ० ति—रो०।
३. पहरणप्पहारेन—सी०, स्या०, रो०। ४-४. होति—सी०, रो०।
५. न०—रो०। ६. एवमेवं—सी०, रो०।
७. ० पि—स्या०। ८-८. रत्तपरिपक्क०—स्या०।
९. ० ति—सी०, स्या०, रो०। १०. कम्मतेजुस्माना—स्या०।
११. ० पलास०—स्या०। १२. ० ति—रो०।

थनानं अब्भन्तरे[१] हदयं च यकनं च उपरि छादेत्वा ओलम्बन्तं ठितं ति।

तत्थ यथा जिण्णकोट्ठब्भन्तरे लम्बमानो सकुणकुलावको न जानाति "अहं जिण्णकोट्ठब्भन्तरे लम्बमानो ठितो" ति, न पि जिण्णकोट्ठब्भन्तरं जानाति "सकुणकुलावको मयि लम्बमानो ठितो" ति एवमेव[२] न पप्फासं जानाति "अहं सरीरब्भन्तरे द्विन्नं थनानं अन्तरे[३] लम्बमानं ठितं" ति, न पि सरीरब्भन्तरे द्विन्नं थनानं अन्तरं[४] जानाति "मयि पप्फासं लम्बमानं ठितं" ति। आभोग-पच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो पप्फासं पप्फासभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं पप्फासं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं अन्तोसरीरे पुरिसस्स द्वत्तिंसहत्थं इत्थिया अट्ठवीसति-हत्थं एकवीसतिया ठानेसु ओभग्गं अन्तं वण्णतो सेतं सक्खरसुधावण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो सीसं छिन्दित्वा लोहितदोणियं[५] संवेल्लेत्वा ठपितधम्मनिसण्ठानं[६]। दिसतो द्वीसु दिसासु जातं। ओकासतो उपरि गलवाटके हेट्ठा च करीसमग्गे विनिबन्धत्ता गलवाटककरीसमग्ग-
R. 57 परियन्ते सरीब्भन्तरे—ठितं ति।

तत्थ यथा लोहितदोणियं ठपितं[७] छिन्नसीसं[७] धम्मनिकळेवरं न जानाति "अहं लोहितदोणियं ठितं" ति, न पि लोहितदोणि जानाति "मयि छिन्नसीसं धम्मनिकळेवरं ठितं" ति, एवमेव[८] न अन्तं जानाति "अहं सरीरब्भन्तरे ठितं" ति, न पि सरीरब्भन्तरं
B. 45 जानाति "मयि अन्तं ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि

१. अन्तरे—स्या०, रो०। २. एवमेवं—सी०, रो०।
३. अब्भन्तरे—स्या०। ४. अब्भन्तरं—स्या०।
५. ०दोणिया—स्या०। ६. ० ति—सी०, रो०।
७-७. ठपितसीसच्छिन्नं—स्या०, एवमेव। ८. एवमेवं—सी०, रो०।

एते धम्मा...पे०...न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो अन्तं अन्तभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं अन्तं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं अन्तोसरीरे अन्तन्तरे[1] **अन्तगुणं** वण्णतो सेतं[2] दकसीतलिकमूलवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो दकसीतलिकमूल सण्ठानमेवा ति, गोमुत्तसण्ठानं ति पि एके। दिसतो द्वीसु दिसासु जातं[3]। ओकासतो कुदालफरसुकम्मादीनि[4] करोन्तानं यन्ताकड्ढनकाले यन्तसुत्तकमिव यन्तफलकानि अन्तभोगे[5] एकतो अग्गळन्ते[6] आबन्धित्वा पादपुञ्छनरज्जुमण्डलकस्स अन्तरा तं[7] सिब्बित्वा[8] ठितरज्जुका विय एकवीसतिया अन्तभोगानं[9] अन्तरा ठितं ति।

तत्थ यथा पादपुञ्छनरज्जुमण्डलकं सिब्बित्वा ठितरज्जुका न जानाति "मया पादपुञ्छनरज्जुमण्डलकं सिब्बितं[10]" ति, न पि पादपुञ्छनरज्जुमण्डलकं जानाति "रज्जुका मं सिब्बित्वा ठिता" ति, एवमेव[11] अन्तगुणं[12] न[12] जानाति "अहं अन्तं एकवीसतिभोगब्भन्तरे[13] आबन्धित्वा ठितं" ति, न पि अन्तं जानाति "अन्तगुणं मं आबन्धित्वा ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा...पे०...न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो अन्तगुणं अन्तगुणभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं अन्तगुणं वण्णादितो ववत्थपेति।

१. अन्तरन्तरे—स्या०, रो०।
२. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
३. ० ति—रो०।
४. कुद्दाल०—सी०, स्या०, रो०।
५. अन्ताभोगे—सी०।
६. अग्गलन्ते—सी०, स्या०; अगळन्ते—रो०।
७. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
८. संसिब्बित्वा—स्या०।
९. अन्ताभोगानं—सी०।
१०. संसिब्बित्वाठितं—स्या०।
११. एवमेवं—रो०।
१२-१२. न अन्तगुणं—सी०, स्या०, रो०।
१३. ० भोगन्तरे—सी०, रो०।

ततो परं अन्तोसरीरे **उदरियं** वण्णतो अज्झोहटाहारवण्णं ति
ववत्थपेति। सण्ठानतो परिस्सावने सिथिलबद्धतण्डुलसण्ठानं[1]।
R. 58 दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[2]। ओकासतो उदरे ठितं ति।
उदरं नाम उभतो[3] निप्पीळियमानस्स अल्लसाटकस्स मज्झे
सञ्जातफोटकसदिसं अन्तपटलं[4], बहि मट्ठं, अन्तो मंसकसम्बुपलि-
वेठितं[5], किलिट्ठपावारपुप्फसदिसं, कुथितपनसफलस्स अब्भन्तरसदिसं
ति पि एके। तत्थ तक्कोलका[6] गण्डुप्पादकातालहीरका सूचिमुखका-
पटतन्तुसुत्तका ति एवमादिद्वत्तिंसकुलप्पभेदा किमयो आकुलब्याकुला
सण्डसण्डचारिनो हुत्वा निवसन्ति, ये[7] पानभोजनादिम्हि अविज्जमाने
B. 46 उल्लङ्घित्वा विरवन्ता हदयमंसं अभितुदन्ति पानभोजनादीनि[8]
अज्झोहरणवेलायं च उद्धंमुखा[9] हुत्वा पठमज्झोहटे द्वे तयो आलोपे
तुरिततुरिता[10] विलुम्पन्ति, यं एतेसं किमीनं पसूतिघरं वच्चकुटि
गिलानसाला सुसानं च होति, यत्थ सेय्यथापि नाम चण्डालगामद्वारे
चन्दनिकाय सरदसमये थूलफुसितके[11] देवे वस्सन्ते उदकेन आवूळ्हं
मुत्तकरीसचम्मट्ठिन्हारुखण्डखेळसिङ्घाणिका[12]लोहितप्पभुतिनानाकुणप-
जातं निपतित्वा कद्दमोदकालुळितं[13] सञ्जातकिमिकुलाकुलं हुत्वा
द्वीहतीहच्चयेन सूरियातपसन्तापवेगकुथितं उपरि[14] फेणपुप्फुळके
मुञ्चन्तं अभिनीलवण्णं परमदुग्गन्धजेगुच्छं उपगन्तुं वा दट्ठुं वा
अनरहरूपतं आपज्जित्वा तिट्ठति, पगेव घायितुं वा सायितुं वा,
एवमेव[15] नानप्पकारपानभोजनादि दन्तमुसलसंचुण्णितं[16] जिव्हाहत्थ-
सम्परिवत्तितं खेळलालापलिबुद्धं[17] तङ्खणविगतवण्णगन्धरसादिसम्पदं[18]

१. ०ति—सी०, स्या०, रो०।
२. ०ति—रो०।
३. ०पि—रो०।
४. अन्तट्ठानं—सी०, स्या०, रो०।
५. ०पळिवेठितं—सी०।
६. तवकोटका—सी०, स्या०; कक्कोटका—रो०।
७. ये वा—स्या०।
८. पानभोजनादि—सी०, रो०।
९. उद्धमुखा—सी०।
१०. तुरिततुरितं—रो०।
११. थुल्ल०—सी०; ०फुस्सितके—स्या०।
१२. ०सिङ्घाणिका०—सी०।
१३. लुलितं—सी०, स्या०, रो०।
१४. उपरूपरि—स्या०।
१५. एवमेवं—सी०, रो०।
१६. दन्तमुसलचुण्णितं—सी०, रो०।
१७. खेळपलिबुद्धं—रो०; खेळपळिबुद्धं—सी०।
१८. तंखणं०—सी०।

कोलियखलिसुवानवमथुसदिसं[1] निपतित्वा पित्तसेम्हवातपलिवेठितं[2] हुत्वा उदरग्गिसन्तापवेगकुथितं किमिकुलाकुलं उपरूपरि फेणपुप्फुळकानि[3] मुञ्चन्तं परमकसम्बुदुग्गन्धजेगुच्छभावमापज्जित्वा तिट्ठति। यं सुत्वा पि[4] पानभोजनादीसु अमनुञ्ञता सण्ठाति, पगेव पञ्ञाचक्खुना ओलोकेत्वा। यत्थ च पतितं पानभोजनादि पञ्चधा विवेकं[5] गच्छति, एकं[6] भागं[6] पाणका खादन्ति, एकं[6] भागं[6] उदरग्गि झापेति, एको भागो मुत्तं होति, एको भागो करीसं होति, एको भागो रसभावं आपज्जित्वा सोणितमंसादीनि उपब्रूहयती ति[7]। R. 59

तत्थ यथा परमजेगुच्छाय सुवानदोणिया[8] ठितो सुवानवमथु[9] न जानाति "अहं सुवानदोणिया[10] ठितो" ति, न पि सुवानदोणि जानाति "मयि सुवानवमथु ठितो" ति, एवमेव[11] न उदरियं जानाति "अहं इमस्मिं परमदुग्गन्धजेगुच्छे उदरे ठितं" ति। न पि उदरं जानाति "मयि उदरियं ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ... पे० ... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो उदरियं उदरियभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति[12]। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं उदरियं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं अन्तोसरीरे करीसं वण्णतो येभुय्येन अज्झोहटाहारवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठानं[13]। दिसतो हेट्ठिमाय दिसाय जातं[14]। ओकासतो पक्कासये ठितं ति। पक्कासयो नाम B. 47

१. कोलेय्यखलिसुपाणवमथुसदिसं—सी०; कोलिय कुलेसुपाणवमथुसदिसं—रो०।
२. ०पळिवेठितं—सी०।
३. ०पुप्फुलकानि—सी०; ०बुब्बुलकानि—रो०।
४. हुत्वापि—रो०।
५. विकटिकं—रो०।
६-६. एकभागं—सी०, रो०।
७. सी० पोत्थके नत्थि।
८. सुपाण०—सी०, रो०।
९. सापाण—रो०।
१०. सापान०—रो०।
११. एवमेवं—स्या०, रो०।
१२. सी० पोत्थके नत्थि।
१३. ० ति—सी०, स्या०, रो०।
१४. ० ति—रो०।

हेट्ठा नाभिपिट्ठिकण्टकमूलानं अन्तरे अन्तावसाने उब्बेधेन अट्ठङ्गुलमत्तो वंसनळकब्भन्तरसदिसो[१] पदेसो[२], यत्थ सेय्यथापि नाम उपरिभूमिभागे पतितं वस्सोदकं ओगळित्वा[३] हेट्ठाभूमिभागं पूरेत्वा तिट्ठति, एवमेव यं किञ्चि आमासये पतितं पानभोजनादिकं उदरग्गिना फेणुद्देहकं पक्कं[४] पक्कं[४] सण्हकरणिया पिट्ठमिव सण्हभावं आपज्जित्वा अन्तबिलेन ओगळित्वा[५] ओमद्दित्वा वंसनळके[६] पक्खित्तपण्डुमत्तिका[७] विय सन्निचितं हुत्वा तिट्ठति ।

तत्थ यथा वंसनळके ओमद्दित्वा पक्खित्तपण्डुमत्तिका न जानाति "अहं वंसनळके ठिता" ति, न पि वंसनळको जानाति "मयि R. 60 पण्डुमत्तिका ठिता" ति, एवमेव न करीसं जानाति "अहं पक्कासये ठितं" ति, न पि पक्कासयो जानाति "मयि करीसं ठितं" ति । आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति । परिच्छेदतो करीसं करीसभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति । अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं करीसं वण्णादितो ववत्थपेति ।

ततो परं सरीरे सीसकटाहब्भन्तरे **मत्थलुङ्गं** वण्णतो सेतं अहिछत्तकपिण्डवण्णं ति ववत्थपेति । पक्कुथितदुद्धवण्णं ति पि एके । सण्ठानतो ओकाससण्ठानं[८] । दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[९] । ओकासतो सीसकटाहस्स अब्भन्तरे चत्तारो सिब्बिनिमग्गे[१०] निस्साय समोधाय ठपिता चत्तारो पिट्ठपिण्डिका विय समोहितं चतुमत्थलुङ्गपिण्डप्पभेदं हुत्वा ठितं[११] ति ।

१. वंसनलक्ख०—रो० ।
२. स्या० पोत्थके नत्थि ।
३. ओगलित्वा—सी०; ओतरित्वा—स्या० ।
४-४. पक्कपक्कं—सी० ।
५. ओगलित्वा—रो० ।
६. वंसनलके—रो० ।
७. पक्खिप्पमानपण्डु०—सी०, स्या०, रो० ।
८. ० ति—रो० ।
९. ० ति—रो० ।
१०. सिब्बनिमग्गे—सी०, रो० ।
११. जातं—स्या० ।

तत्थ यथा पुराणलाबुकटाहे पक्खित्तपिट्ठपिण्डि[1] पक्कुथितदुद्धं[2] वा न जानाति "अहं पुराणलाबुकटाहे ठितं" ति, न पि पुराणलाबुकटाहं जानाति "मयि पिट्ठपिण्डि पक्कुथितदुद्धं[2] वा ठितं" ति, एवमेव न[3] मत्थलुङ्गं[3] जानाति "अहं सीसकटाहब्भन्तरे ठितं" ति, न पि सीसकटाहब्भन्तरं जानाति "मयि मत्थलुङ्गं ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे॰... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो मत्थलुङ्गं मत्थलुङ्गभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं मत्थलुङ्गं वण्णादितो ववत्थपेति। B. 48

ततो परं सरीरे बद्धाबद्धभेदतो दुविधं पि पित्तं वण्णतो बहलमधुकतेलवण्णं ति ववत्थपेति। अबद्धपित्तं मिलातबकुलपुप्फवण्णं[4] ति पि[5] एके। सण्ठानतो ओकाससण्ठानं। दिसतो द्वीसु दिसासु जातं[6]। ओकासतो अबद्धपित्तं केसलोमनखदन्तानं मंसविनिमुत्तट्ठानं[7] थद्धसुक्खचम्मं च वज्जेत्वा उदकमिव तेलबिन्दु अवसेससरीरं ब्यापेत्वा ठितं[8], यम्हि[9] कुपिते अक्खीनि पीतकानि होन्ति भमन्ति, गत्तं कम्पति कण्डूयति। बद्धपित्तं हदयपप्फासानमन्तरे यकनमंसं निस्साय पतिट्ठिते महाकोसातकिकोसकसदिसे[10] पित्तकोसके ठितं[11], यम्हि कुपिते सत्ता उम्मत्तका होन्ति, विपल्लत्थचित्ता हिरोत्तप्पं छड्डेत्वा अकत्तब्बं करोन्ति, अभासितब्बं भासन्ति, अचिन्तितब्बं[12] चिन्तेति। R. 61

तत्थ यथा उदकं ब्यापेत्वा ठितं तेलं न जानाति "अहं उदकं ब्यापेत्वा ठितं" ति, न पि उदकं जानाति "तेलं मं ब्यापेत्वा ठितं"

१. पक्खित्ता पिट्ठपिण्डि—सी॰, स्या॰, रो॰।
२-२. विक्कुथित॰—सी॰, रो॰।
३-३. मत्थलुङ्गं न—सी॰, रो॰।
४. मिलातआकुली॰—सी॰, रो॰।
५. पि—सी॰, रो॰ पोत्थकेसु नत्थि।
६. ति—रो॰।
७. ॰विनिम्मुत्तट्ठानं—सी॰, रो॰।
८. ति—रो॰।
९. यम्हि—स्या॰, रो॰।
१०. कोसाटकीकोससदिसे—स्या॰; रत्तकोसातकीकोसकसदिसे—रो॰।
११. ॰ ति—सी॰, रो॰।
१२. अचिन्तेतब्बं—सी॰, स्या॰।

ति, एवमेव[1] न अबद्धपित्तं जानाति "अहं सरीरं ब्यापेत्वा ठितं" ति, न पि सरीरं जानाति "अबद्धपित्तं मं ब्यापेत्वा ठितं" ति। यथा च कोसातकिकोसके[2] ठितं वस्सोदकं न जानाति "अहं कोसातकिकोसके[3] ठितं" ति, न पि कोसातकिकोसको[4] जानाति "मयि वस्सोदकं ठितं" ति, एवमेव[5] न बद्धपित्तं जानाति "अहं पित्तकोसके ठितं" ति, न पि पित्तकोसको जानाति "मयि बद्धपित्तं ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खण-विरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो पित्तं पित्तभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स समागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं पित्तं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरब्भन्तरे एकपत्तपूरप्पमाणं **सेम्हं** वण्णतो सेतं कच्छकपण्णरसवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठानं[6]। दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[7]। ओकासतो उदरपटले ठितं ति।
B. 49 यं पानभोजनादिअज्झोहरणकाले सेय्यथापि नाम उदके सेवालपणकं[8] कट्ठे वा कथले[9] वा पतन्ते छिज्जित्वा द्विधा हुत्वा पुन अज्झोत्थरित्वा तिट्ठति, एवमेव[10] पानभोजनादिम्हि निपतन्ते छिज्जित्वा द्विधा हुत्वा पुन अज्झोत्थरित्वा तिट्ठति, यम्हि च मन्तीभूते पक्कमिव गण्डं पूतिकमिव कुक्कुटण्डं उदरपटलं परमजेगुच्छकुणपगन्धं[11] होति। ततो उग्गतेन[12] च[12] गन्धेन उग्गारो पि मुखं पि दुग्गन्धं पूतिकुणपसदिसं होति, सो च पुरिसो "अपेहि दुग्गन्धं वायसी" ति वत्तब्बतं
R. 62 आपज्जति, यं च अभिवड्ढितं बहलत्तमापन्नं पटिकुज्जनफलकमिव वच्चकुटिया उदरपटलब्भन्तरे एव कुणपगन्धं सन्निरुम्भित्वा तिट्ठति।

१. एवमेवं—सी०, रो०।
२. कोसातकी०—सी०, रो०।
३. कोसातकीकोसे—सी०; कोसातकीकोसके—रो०।
४. कोसातकीकोसको—रो०।
५. एवमेवं—सी०, रो०।
६. ० ति—रो०।
७. ० ति—रो०।
८. सेवालफलकं—सी०; ०पण्णकं—स्या०, रो०।
९. कठले—रो०।
१०. एवमेवं—रो०।
११. परमदुग्गन्धजेगुच्छ०—स्या०।
१२-१२. उग्गतेनेव—स्या०।

तत्थ यथा चन्दनिकाय उपरिफेणपटलं न जानाति "अहं चन्दनिकाय ठितं" ति, न पि चन्दनिका जानाति "मयि फेणपटलं ठितं" ति, एवमेव[१] न सेम्हं जानाति "अहं उदरपटले ठितं" ति, न पि उदरपटलं जानाति "मयि सेम्हं ठितं[२] ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो सेम्हं सेम्हभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं सेम्हं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे **पुब्बो**[३] वण्णतो पण्डुपलासवण्णो ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठानो[४]। दिसतो द्वीसु दिसासु जातो[५]। ओकासतो पुब्बस्स ओकासो[६] नाम निबद्धो[७] नत्थि। यत्थ पुब्बो सन्निचितो तिट्ठेय्य, यत्र यत्र[८] खाणुकण्टकप्पहरणग्गिजालादीहि[९] अभिहते सरीरप्पदेसे लोहितं सण्ठहित्वा पच्चति, गण्डपिळकादयो वा उप्पज्जन्ति, तत्र तत्र तिट्ठति।

तत्थ यथा रुक्खस्स तत्थ तत्थ फरसुधारादीहि पहतप्पदेसे[१०] अवगळित्वा[११] ठितो निय्यासो[१२] न जानाति "अहं रुक्खस्स पहतप्पदेसे ठितो" ति, न पि रुक्खस्स पहतप्पदेसो जानाति "मयि निय्यासो[१२] ठितो" ति, एवमेव[१३] न पुब्बो जानाति "अहं सरीरस्स तत्थ तत्थ खाणुकण्टकादीहि अभिहतप्पदेसे गण्डपिळकादीनं[१४] उद्धुतप्पदेसे वा ठितो" ति, न पि सरीरप्पदेसो जानाति "मयि पुब्बो ठितो" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो B. 50

१. एवमेवं—सी०, रो०।
२. पतिट्ठितं—स्या०।
३. पुब्बं—रो०।
४. ०ति—रो०; सण्ठानं ति—सी०, स्या०।
५. ०ति—रो०; जातं ति—सी०, स्या०।
६. निबद्धाकासो—सी०।
७. सी० पोत्थके नत्थि।
८. ० पन—स्या०।
९. ०कण्टकपहरण०—सी०, रो०।
१०. पहटप्पदेसे—सी०, स्या०, रो०।
११. ओगलित्वा—सी०; आगलित्वा—रो०।
१२. नियासो—सी०, रो०।
१३. एवमेवं—सी०, रो०।
१४. ० पिलकादीनं—सी०।

ति। परिच्छेदतो पुब्बो पुब्बभागेन परिच्छिन्नो ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं पुब्बं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे सन्निचितलोहितं संसरणलोहितं ति एवं दुविधे R. 63 **लोहिते** सन्निचितलोहितं ताव वण्णतो बहलकुथितलाखारसवण्णं ति ववत्थपेति, संसरणलोहितं अच्छलाखारसवण्णं ति। सण्ठानतो सब्बं पि अत्तनो ओकाससण्ठानं[1]। दिसतो सन्निचितलोहितं उपरिमाय दिसाय जातं, संसरणलोहितं द्वीसु[2] पी ति। ओकासतो संसरणलोहितं केसलोमनखदन्तानं मंसविनिमुत्तट्ठानं[3] चेव[4] थद्धसुक्खचम्मं च वज्जेत्वा धमनिजालानुसारेन सब्बं उपादिन्नकसरीरं[5] फरित्वा ठितं। सन्निचितलोहितं यकनस्स हेट्ठाभागं पूरेत्वा एकपत्तपूरणमत्तं वक्कहदयपप्फासानं[6] उपरि थोकं थोकं बिन्दुं पातेन्तं वक्कहदययकनपप्फासे तेमेन्तं ठितं, यम्हि वक्कहदयादीनि अतेमेन्ते सत्ता पिपासिता होन्ति।

तत्थ यथा जज्जरकपाले ठितं उदकं हेट्ठा लेड्डुखण्डादीनि तेमेन्तं न जानाति "अहं जज्जरकपाले ठितं हेट्ठा लेड्डुखण्डादीनि तेमेमी" ति, न पि जज्जरकपालं हेट्ठा लेड्डुखण्डादीनि वा जानन्ति "मयि उदकं ठितं, अम्हे वा तेमेन्तं ठितं" ति, एवमेव[7] न लोहितं जानाति "अहं यकनस्स हेट्ठाभागे वक्कहदयादीनि तेमेन्तं ठितं" ति, न पि यकनस्स हेट्ठाभागट्ठानं[8] वक्कहदयादीनि वा जानन्ति "मयि लोहितं ठितं[9], अम्हे वा तेमेन्तं ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ... पे० ... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो लोहितं

१. ० ति—सी०, रो०।
२. ० दिसासु—स्या०।
३. ० विनिम्मुतट्ठानं—सी०, रो०।
४. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
५. उपादिन्नकं सरीरं—सी०; उपादिण्णक०—रो०।
६. हदयं वक्क०—रो०।
७. एवमेवं—सी०, रो०।
८. हेट्ठाभागे ठानं—रो०।
९. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।

लोहितभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं लोहितं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे **सेदो**[१] वण्णतो पसन्नतिलतेलवण्णो[२] ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठानो[३]। दिसतो द्वीसु दिसासु जातो[४]। ओकासतो सेदस्स[५] ओकासो नाम निबद्धो नत्थि, यत्थ सेदो लोहितं विय सदा तिट्ठेय्य। यस्मा वा[६] यदा अग्गिसन्तापसूरिय- B. 51 सन्तापउतुविकारादीहि[७] सरीरं सन्तपति, अथ उदकतो अब्बुळ्हमत्तविसमच्छिन्नभिसमुळालकुमुदनाल[८]कलापउदकमिव सब्बकेसलोमकूपविवरेहि पग्घरति। तस्मा तेसं केसलोमकूपविवरानं वसेन तं R. 64 सण्ठानतो ववत्थपेति। सेदपरिग्गण्हकेन च योगावचरेन केसलोमकूपविवरे पूरेत्वा ठितवसेनेव सेदो मनसिकातब्बो" ति वुत्तं पुब्बाचरियेहि।

तत्थ यथा भिसमुळालकुमुदनाल[९]कलापविवरेहि पग्घरन्तं उदकं न जानाति "अहं भिसमुळालकुमुदनालकलापविवरेहि पग्घरामी" ति, न पि भिसमुळालकुमुदनालकलापविवरा जानन्ति "अम्हेहि उदकं पग्घरती" ति, एवमेव[१०] न सेदो जानाति "अहं केसलोमकूपविवरेहि पग्घरामी" ति, न पि केसलोमकूपविवरा जानन्ति "अम्हेहि सेदो पग्घरती" ति, आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०...न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो सेदो सेदभागेन परिच्छिन्नो ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं सेदं वण्णादितो ववत्थपेति।

१. सेदं—सी०, स्या०, रो०। २. ० वण्णं—सी०।
३. ०सण्ठानं ति—सी०; ०ति—रो०। ४. जातं ति—सी०; ०ति—रो०।
५. ० व—सी०; सेदस्सेव—रो०। ६. तु—सी०, स्या०, रो०।
७. ० सुरिय—सी०, रो०। ८. ०नाळ—सी०।
९. ० नाळ०—सी०। १०. एवमेवं—सी०, रो०।

ततो परं सरीरे चम्ममंसन्तरे मेदो[1] वण्णतो फालितहलिद्दिवण्णो ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठानो[2]। तथा हि सुखिनो थूलसरीरस्स चम्ममंसन्तरे फरित्वा ठितो हलिद्दिरत्तदुकूलपिलोतिकसण्ठानो[3], किससरीरस्स जङ्घमंसऊरुमंसपिट्ठिकण्टकनिस्सितपिट्ठिमंसउदरपटलमंसानि[4] निस्साय संवेल्लित्वा ठपितहलिद्दिरत्तदुकूलपिलोतिकखण्डसण्ठानो[5]। दिसतो द्वीसु दिसासु जातो[6]। ओकासतो थूलसरीरस्स सकलसरीरं फरित्वा किसस्स जङ्घामंसादीनि[7] निस्साय ठितो, यो सिनेहसङ्खातो पि हुत्वा परमजेगुच्छत्ता न मत्थकतेलत्थं न गण्डूसतेलत्थं न दीपजालनत्थं सङ्गय्हति।

तत्थ यथा मंसपुञ्जं निस्साय ठिता हलिद्दिरत्तदुकूलपिलोतिका न जानाति "अहं मंसपुञ्जं निस्साय ठिता" ति, न पि मंसपुञ्जो जानाति[8] "हलिद्दिरत्तदुकूलपिलोतिका मं निस्साय ठिता" ति, एवमेव[9] न मेदो जानाति "अहं सकलसरीरं जङ्घादीसु[10] वा मंसं निस्साय ठितो" ति, न पि सकलसरीरं जानाति[11] जङ्घादीसु वा मंसं[12] "मेदो[13] मं[13] निस्साय ठितो" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा...पे०...न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो मेदो[14] हेट्ठा मंसेन,
B. 52 उपरि चम्मेन, समन्ततो मेदभागेन परिच्छिन्नो ति ववत्थपेति।
R. 65 अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं मेदं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे अस्सु वण्णतो पसन्नतिलतेलवण्णं ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठानं[15]। दिसतो उपरिमाय दिसाय जातं[16]।

१. मेदं—स्या०, रो०।
२. ० ति—रो०।
३. हळिद्दि०—सी०; ०होति—स्या०।
४. जङ्घा०—सी०।
५. ० ति—सी०, रो०।
६. ० ति—सी०, रो०।
७. जङ्घ०—रो०।
८. ० मयि—स्या०।
९. एवमेवं—सी०, रो०।
१०. ० दिसु—सी०, रो०।
११. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१२. ०जानाति—रो०।
१३-१३. मं मेदो—रो०।
१४. स्या० पोत्थके नत्थि।
१५. ० ति—सी०, रो०।
१६. ० ति—सी०, रो०।

ओकासतो अक्खिकूपकेसु[1] ठितं ति। न चेतं पित्तकोसके पित्तमिव अक्खिकूपकेसु सदा सन्निचितं हुत्वा तिट्ठति, किन्तु यदा सोमनस्सजाता सत्ता महाहसितं हसन्ति, दोमनस्सजाता रोदन्ति परिदेवन्ति, तथारूपं विसमाहारं वा हरन्ति[2], यदा च तेसं[3] अक्खीनि धूमरजपंसुकादीहि अभिहञ्ञन्ति, तदा एतेहि सोमनस्सदोमनस्सविसमाहारादीहि समुट्ठहित्वा अस्सु अक्खिकूपकेसु[4] पूरेत्वा तिट्ठति[5] पग्घरति च। "अस्सुपरिग्गण्हकेन च योगावचरेन अक्खिकूपके पूरेत्वा ठितवसेनेव तं मनसिकातब्बं" ति पुब्बाचरिया वण्णयन्ति।

तत्थ यथा मत्थकच्छिन्नतरुणताललट्ठिकूपकेसु ठितं उदकं न जानाति "अहं मत्थकच्छिन्नतरुणताललट्ठिकूपकेसु ठितं" ति, न पि मत्थकच्छिन्नतरुणताललट्ठिकूपका जानन्ति "अम्हेसु उदकं ठितं" ति, एवमेव[6] न अस्सु जानाति "अहं अक्खिकूपकेसु ठितं" ति, न पि अक्खिकूपका जानन्ति "अम्हेसु अस्सु ठितं" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो अस्सु अस्सुभागेन परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं अस्सुं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे विलीनसिनेहसङ्खाता[7] वसा[8] वण्णतो आचामे आसित्ततेलवण्णा ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठाना[9]। दिसतो द्वीसु दिसासु जाता[10]। ओकासतो हत्थतलहत्थपिट्ठिपादतलपादपिट्ठिनासापुटनलाटअंसकूटेसु[11] ठिता ति। न चेसा एतेसु ओकासेसु

१. अक्खिकूपेसु—सी०। २. आहरन्ति—स्या०।
३. नेसं—रो०। ४. ० कूपके—सी०, स्या०।
५. ० च—स्या०। ६. एवमेवं—रो०; एवं—सी०।
७. ० सङ्खातं—रो०। ८. वसं—स्या०, रो०।
९. ० ति—सी०, रो०। १०. ० ति—सी०, रो०।
११. ० नळाट०— सी०।

सदा विलीना एव हुत्वा तिट्ठति, किन्तु यदा अग्गिसन्तापसूरियसन्तापउतुविसभागधातुविसभागेहि ते पदेसा उस्माजाता होन्ति, तदा तत्थ विलीना व हुत्वा पसन्नसलिलासु उदकसोण्डिकासु नीहारो विय सरति ।

B. 53 R. 66 तत्थ यथा उदकसोण्डियो अज्झोत्थरित्वा ठितो नीहारो न जानाति "अहं उदकसोण्डियो अज्झोत्थरित्वा ठितो" ति, न पि उदकसोण्डियो जानन्ति "नीहारो अम्हे अज्झोत्थरित्वा ठितो" ति, एवमेव[1] न वसा जानाति "अहं हत्थतलादीनि अज्झोत्थरित्वा ठिता" ति, न पि हत्थतलादीनि जानन्ति "वसा अम्हे अज्झोत्थरित्वा ठिता" ति । आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति । परिच्छेदतो वसा वसाभागेन परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति । अयमेतिस्सा सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं वसं वण्णादितो ववत्थपेति ।

ततो परं सरीरे मुखस्सब्भन्तरे[2] खेळो[3] वण्णतो सेतो[4] फेणवण्णो[4] ति ववत्थपेति । सण्ठानतो ओकाससण्ठानो ति, समुद्दफेणसण्ठानो ति पि एके । दिसतो उपरिमाय दिसाय जातो[5] । ओकासतो उभोहि कपोलपस्सेहि ओरोहित्वा जिव्हाय ठितो ति । न चेसो एत्थ सदा सन्निचितो हुत्वा तिट्ठति, किन्तु यदा सत्ता तथारूपं आहारं पस्सन्ति वा सरन्ति वा, उण्हतित्तकटुकलोणम्बिलानं[6] वा किञ्चि मुखे ठपेन्ति । यदा च तेसं[7] हदयं आगिलायति, किस्मिञ्चिदेव[8] वा जिगुच्छा उप्पज्जति, तदा खेळो उप्पज्जित्वा उभोहि कपोलपस्सेहि ओरोहित्वा जिव्हाय सण्ठाति । अग्गजिव्हाय चेस[9] खेळो तनुको होति, मूलजिव्हाय बहलो, मुखे पक्खित्तं च पुथुकं वा तण्डुलं वा अञ्ञं वा

१. एवमेवं—सी०, रो० ।
२. मुखब्भन्तरे—सी०, रो० ।
३. खेळं—सी०, स्या०, रो० ।
४-४. सेतफेणुवण्णो—स्या० ।
५. ० ति—सी०, रो० ।
६. ०अञ्ञातरं—स्या० ।
७. नेसं—रो० ।
८. किस्मिचिदेव—सी०, रो० ।
९. चेसो—सी०, रो० ।

किञ्चि खादनीयं नदिपुलिने[१] खतकूपसलिलमिव परिक्खयमगच्छन्तो व सदा तेमनसमत्थो होति।

तत्थ यथा नदिपुलिने खतकूपतले सण्ठितं उदकं न जानाति "अहं कूपतले सण्ठितं"[२] ति, न पि कूपतलं जानाति "मयि उदकं ठितं" ति, एवमेव[३] न खेळो जानाति "अहं उभोहि कपोलपस्सेहि ओरोहित्वा जिव्हातले सण्ठितो" ति, न पि जिव्हातलं जानाति "मयि उभोहि कपोलपस्सेहि ओरोहित्वा खेळो सण्ठितो" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ... पे० ... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो खेळो खेळभागेन परिच्छिन्नो ति ववत्थपेति। अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं खेळं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं सरीरे **सिङ्घाणिका**[४] वण्णतो सेता तरुणतालमिञ्ज- B. 54 R. 67
वण्णा ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठाना, सेदेत्वा सेदेत्वा नासापुटे निरन्तरं पक्खित्तवेत्तङ्कुरसण्ठाना ति पि एके। दिसतो उपरिमाय दिसाय जाता[५]। ओकासतो नासापुटे पूरेत्वा ठिता ति। न चेसा एत्थ सदा सन्निचिता हुत्वा तिट्ठति, किन्तु सेय्यथापि नाम पुरिसो पदुमिनिपत्ते दधिं बन्धित्वा हेट्ठा पदुमिनिपत्तं कण्टकेन विज्झेय्य, अथ तेन छिद्देन दधिपिण्डं गळित्वा[६] बहि पपतेय्य, एवमेव[७] यदा सत्ता रोदन्ति, विसभागाहारउतुवसेन वा सञ्जातधातुक्खोभा होन्ति, तदा[८] अन्तोसीसतो पूतिसेम्हभावं आपन्नं मत्थलुङ्गं गळित्वा[९] तालुमत्थकविवरेन ओतरित्वा नासापुटे पूरेत्वा तिट्ठति।

तत्थ यथा सिप्पिकाय[१०] पक्खित्तं पूतिदधि न जानाति "अहं सिप्पिकाय[१०] ठितं" ति, न पि सिप्पिका जानाति "मयि पूतिकं दधि

१. नदी०—सी०, स्या०, रो०। २. ठितं—रो०।
३. एवमेवं—सी०, रो०। ४. सिङ्घाणिकं—सी०, स्या०, रो०।
५. ० ति—सी०, रो०। ६. गलित्वा—सी०, स्या०, रो०।
७. एवमेवं—सी०, रो०। ८. ततो—सी०, स्या०।
९. गलित्वा—सी०, स्या०, रो०। १०. सुत्तिकाय—स्या०।

ठितं" ति, एवमेव[1] न सिङ्घाणिका जानाति "अहं नासापुटेसु ठिता"[2] ति, न पि नासापुटा जानन्ति "अम्हेसु सिङ्घाणिका ठिता" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा ...पे०... न पुग्गलो ति। परिच्छेदतो सिङ्घाणिका सिङ्घाणिकभागेन परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति। अयमेतिस्सा सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं सिङ्घाणिकं वण्णादितो ववत्थपेति।

ततो परं अन्तोसरीरे **लसिका**[3] ति[3] सरीरसन्धीनं अब्भन्तरे पिच्छिलकुणपं, सा वण्णतो कणिकारनिय्यासवण्णा ति ववत्थपेति। सण्ठानतो ओकाससण्ठाना[4]। दिसतो द्वीसु दिसासु जाता[5]। ओकासतो अट्ठिसन्धीनं अब्भञ्जनकिच्चं साधयमाना असीतिसतसन्धीनं अब्भन्तरे ठिता ति। यस्स चेसा मन्दा होति, तस्स उट्ठहन्तस्स निसीदन्तस्स अभिक्कमन्तस्स पटिक्कमन्तस्स समिञ्जन्तस्स पसारेन्तस्स अट्ठिकानि[6] कटकटायन्ति, अच्छरिकासद्दं करोन्तो
R. 68 विय विचरति, एकयोजनद्वियोजनमत्तं पि अद्धानं गतस्स वायोधातु कुप्पति, गत्तानि दुक्खन्ति यस्स पन[7] चेसा बहुका होति, तस्स उट्ठाननिसज्जादीसु न अट्ठीनि कटकटायन्ति, दीघं पि अद्धानं गतस्स न वायो धातु कुप्पति, न गत्तानि दुक्खन्ति।

B. 55 तत्थ यथा अब्भञ्जनतेलं न जानाति "अहं अक्खं अब्भञ्जित्वा ठितं" ति, न पि अक्खो जानाति "मं तेलं अब्भञ्जित्वा ठितं" ति, एवमेव[8] न लसिका जानाति "अहं असीतिसतसन्धियो अब्भञ्जित्वा ठिता" ति, न पि असीतिसतसन्धियो जानन्ति "लसिका अम्हे अब्भञ्जित्वा ठिता" ति। आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा

१. एवमेवं—सी०, रो०। २. सण्ठिता—स्या०।
३-३. लसिकं—स्या०। ४. ० ति—रो०।
५. ० ति—रो०। ६. अट्ठिनि—स्या०।
७. स्या० पोत्थके नत्थि। ८. एवमेवं—रो०।

...पे०... न पुग्गलो ति । परिच्छेदतो लसिका लसिकभागेन[१] परिच्छिन्ना ति ववत्थपेति । अयमेतिस्सा[२] सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवा ति एवं लसिकं वण्णादितो ववत्थपेति ।

ततो परं अन्तोसरीरे मुत्तं वण्णतो मासखारोदकवण्णं ति ववत्थपेति । सण्ठानतो उदकं पूरेत्वा अधोमुखठपितउदककुम्भ-अन्तरगतउदकसण्ठानं[३] । दिसतो हेट्ठिमाय दिसाय जातं[४] । ओकासतो वत्थिस्सब्भन्तरे ठितं ति । वत्थि नाम वत्थिपुटो वुच्चति, यत्थ सेय्यथापि नाम चन्दनिकाय पक्खित्ते अमुखे पेळाघटे[५] चन्दनिकारसो पविसति, न चस्स पविसनमग्गो पञ्ञायति, एवमेव[६] सरीरतो मुत्तं पविसति, न चस्स पविसनमग्गो पञ्ञायति निक्खमनमग्गो एव तु पाकटो होति, यम्हि च मुत्तस्स[७] भरिते[७] "पस्सावं करोमा" ति सत्तानं आयूहनं होति । तत्थ यथा चन्दनिकाय पक्खित्ते अमुखे[८] पेळाघटे ठितो चन्दनिकारसो न जानाति "अहं अमुखे पेळाघटे ठितो" ति, न पि पेळाघटो[९] जानाति "मयि चन्दनिकारसो ठितो" ति एवमेव[१०] मुत्तं[११] न[११] जानाति "अहं वत्थिम्हि ठितं ति" ति, न पि वत्थि जानाति "मयि मुत्तं ठितं" ति । आभोगपच्चवेक्खणविरहिता हि एते धम्मा...पे०... न पुग्गलो ति । परिच्छेदतो वत्थिअब्भन्तरेन[१२] चेव मुत्तभागेन च[१२] परिच्छिन्नं ति ववत्थपेति । अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन R. 69
केससदिसो एवा ति एवं मुत्तं वण्णादितो ववत्थपेति । एवमयं इमं द्वत्तिंसाकारं वण्णादितो ववत्थपेति ।

१. लसिकाभागेन—सी०, रो० ।
२. अयमेतिस्स—स्या० ।
३. ० ति—रो० ।
४. ० ति—रो० ।
५. पेळाघटके—सी०, रो०; पेलाघटके—स्या० ।
६ एवमेवं—सी०, रो० ।
७-७. मुत्तभारिते—सी०; स्या०, रो० ।
८. अधोसुखे—सी०, स्या० ।
९. अधोमुखो पेलाघटको—स्या० ।
१०. एवमेवं—रो० ।
११-११. न मुत्तं—रो० ।
१२-१२. मुत्तं मुत्तभागेन—स्या० ।

तस्सेवं इमं द्वत्तिंसाकारं वण्णादिवसेन ववत्थपेन्तस्स तं तं[1] भावनानुयोगं आगम्म केसादयो पगुणा होन्ति, कोट्ठासभावेन उपट्ठहन्ति। ततो[2] पभुति[2] सेय्यथापि नाम चक्खुमतो पुरिसस्स द्वत्तिंसवण्णानं पुप्फानं एकसुत्तगन्थितं[3] मालं ओलोकेन्तस्स सब्बपुप्फानि अपुब्बापरियमिव पाकटानि होन्ति, एवमेव "अत्थि इमस्मिं
B. 56 काये केसा" ति इमं कायं सतिया ओलोकेन्तस्स सब्बे ते धम्मा अपुब्बापरियमिव[4] पाकटा होन्ति। केसेसु आवज्जितेसु असण्ठहमाना[5] व[5] सति याव मुत्तं, ताव पवत्तति। ततो[6] पभुति[6] तस्स आहिण्डन्ता मनुस्सतिरच्छानादयो[7] च सत्ताकारं विजहित्वा कोट्ठासरासिवसेनेव उपट्ठहन्ति, तेहि च अज्झोहरियमानं पानभोजनादि कोट्ठासरासिम्हि पक्खिप्पमानमिव उपट्ठाती ति[8]।

एत्थाह[9] "अथानेन ततो परं किं कातब्बं" ति? वुच्चते—तदेव निमित्तं आसेवितब्बं भावेतब्बं बहुलीकातब्बं सुववत्थितं ववत्थपेतब्बं। कथं[10] पनायं[10] तं[11] निमित्तं आसेवति भावेति बहुलीकरोति सुववत्थितं ववत्थपेती ति? अयं हि तं केसादीनं कोट्ठासभावेन उपट्ठाननिमित्तं आसेवति, सतिया अल्लियति[12] भजति उपगच्छति, सतिगब्भं[13] गण्हापेति। तत्थ लद्धं वा सतिं वड्ढेन्तो तं भावेती ति वुच्चति। बहुलीकरोती ति पुनप्पुनं[14] सतिसम्पयुत्तं वितक्कविचारब्भाहतं करोति। सुववत्थितं ववत्थपेती ति यथा सुट्ठु ववत्थितं

१. स्या० पोत्थके नत्थि।
२-२. ततोप्पभुति—सी०; यतो चस्स ते पगुणा होन्ति०—स्या०।
३. एकसुत्तक०—सी०; एकसुत्तकसन्दितं—रो०।
४. अपुब्बापरिय—रो०।
५-५. तन्तूसंनाहमानावा—सी०; संकुसंण्हमानाव—रो०।
६-६. ततोप्पभुति—सी०।
७. मनुस्सा०—सी०, स्या०, रो०।
८. ०आह—स्या०।
९. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि।
१०-१०. कथमयं—सी०, रो०; कथं—स्या०।
११. यं तं—स्या०।
१२. अल्लीयति - रो०।
१३. सतिगब्भं—सी०; ०भावेती ति—स्या०।
१४. पुनप्पुन - सी०, रो०।

होति, न पुन अन्तरधानं गच्छति, तथा तं सतिया ववत्थपेति, उपधारेति उपनिबन्धति।

अथ वा यं पुब्बे अनुपुब्बतो नातिसीघतो नातिसणिकतो[1] R. 70
विक्खेपप्पहानतो[2] पण्णत्तिसमतिक्कमनतो अनुपुब्बमुञ्चनतो लक्खणतो तयो च सुत्तन्ता ति एवं दसविधं मनसिकारकोसल्लं वुत्तं, तत्थ अनुपुब्बतो मनसिकरोन्तो आसेवति, नातिसीघतो नातिसणिकतो च मनसिकरोन्तो भावेति, विक्खेपप्पहानतो मनसिकरोन्तो बहुलीकरोति, पण्णत्तिसमतिक्कमनादितो मनसिकरोन्तो सुववत्थितं ववत्थपेती ति वेदितब्बो।

एत्थाह "कथं पनायं अनुपुब्बादिवसेन एते धम्मे मनसि[3] करोती[3]" ति? वुच्चते—अयं हि केसे मनसि करित्वा तदनन्तरं लोमे मनसि करोति, न नखे। तथा लोमे मनसि करित्वा तदनन्तरं नखे मनसि करोति, न दन्ते। एस नयो सब्बत्थ। कस्मा? उप्पटिपाटिया हि मनसिकरोन्तो सेय्यथापि नाम अकुसलो पुरिसो द्वत्तिसपदं निस्सेणिं[4] उप्पटिपाटिया आरोहन्तो किलन्तकायो ततो निस्सेणितो पपतति[5], न आरोहनं सम्पादेति, एवमेव भावनासम्पत्ति- B. 57
वसेन अधिगन्तब्बस्स अस्सादस्स अनधिगमनतो किलन्तचित्तो द्वत्तिसाकारभावनातो पपतति, न भावनं सम्पादेती ति।

अनुपुब्बतो मनसिकरोन्तो पि च केसा लोमा ति नातिसीघतो पि[6] मनसि करोति। अतिसीघतो हि मनसिकरोन्तो सेय्यथापि नाम अद्धानं गच्छन्तो पुरिसो समविसमरुक्खथलनिन्नद्वेधापथादीनि मग्गनिमित्तानि उपलक्खेतुं न सक्कोति, ततो न मग्गकुसलो होति,

१. ०सनिकतो—सी०। २. ० हाणतो—सी०।
३-३. मनसिकरोति—सी०, रो०। ४. निस्सेनि—सी०।
५. पतति—स्या०। ६. स्या० पोत्थके नत्थि।

अद्धानं च परिक्खयं नेति, एवमेव[1] वण्णसण्ठानादीनि द्वत्तिसाकारनिमित्तानि उपलक्खेतुं न सक्कोति, ततो न द्वत्तिसाकारे कुसलो होति, कम्मट्ठानं च परिक्खयं नेति।

यथा च नातिसीघतो, एवं **नातिसणिकतो** पि मनसि करोति। अतिसणिकतो हि मनसिकरोन्तो सेय्यथापि नाम पुरिसो अद्धानमग्गं पटिपन्नो अन्तरामग्गे रुक्खपब्बततळाकादीसु विलम्बमानो इच्छितप्पदेसं[2] अपापुणन्तो अन्तरामग्गेयेव सीहब्यग्घादीहि अनयब्यसनं
R. 71 पापुणाति, एवमेव द्वत्तिसाकारभावनासम्पदं अपापुणन्तो भावनाविच्छेदेन अन्तरायेन कामवितक्कादीहि अनयब्यसनं पापुणाति।

नातिसणिकतो[3] मनसिकरोन्तो पि च **विक्खेपप्पहानतो** पि मनसि करोति। विक्खेपप्पहानतो नाम[4] यथा अञ्ञेसु नवकम्मादीसु चित्तं न विक्खिपति, तथा मनसि करोति। बहिद्धा विक्खेपमानचित्तो[5] हि केसादीस्वेव असमाहितचेतोवितक्को भावनासम्पदं अपापुणित्वा अन्तरा व अनयब्यसनं आपज्जति तक्कसिलागमने बोधिसत्तस्स सहायका विय। अविक्खिपमानचित्तो[6] पन केसादीस्वेव समाहितचेतोवितक्को भावनासम्पदं पापुणाति बोधिसत्तो विय तक्कसिलरज्जसम्पदं ति। तस्सेवं विक्खेपप्पहानतो[7] मनसिकरोतो अधिकारचरियाधिमुत्तीनं वसेन ते धम्मा असुभतो वा वण्णतो वा सुञ्ञतो वा उपट्ठहन्ति।

अथ पण्णत्तिसमतिक्कमनतो ते धम्मे मनसि करोति। पण्णत्तिसमतिक्कमनतो ति केसा लोमा ति एवमादिवोहारं समतिक्कमित्वा विस्सज्जेत्वा यथूपट्ठितानं असुभादीनं येव वसेन मनसि

१. एवमेवं—सी०, रो०।
२. इच्छितपदेसं—सी०, रो०।
३. सनिकतो—सी०।
४. हि—स्या०।
५. विक्खिपमानचित्तो—रो०; विक्खिप्पमान०—सी०, स्या०।
६. अविक्खिप्पमानचित्तो—सी०, स्या०।
७. ० तं—स्या०।

करोति। कथं ? यथा अरञ्ञनिवासूपगता मनुस्सा अपरिचितभूमि- B. 58 भागत्ता उदकट्ठानसञ्जाननत्थं साखाभङ्गादिनिमित्तं[1] कत्वा तदनुसारेन गन्त्वा[2] उदकं परिभुञ्जन्ति, यदा पन परिचितभूमिभागा होन्ति, अथ तं निमित्तं विस्सज्जेत्वा अमनसिकत्वा व उदकट्ठानं उपसङ्कमित्वा उदकं परिभुञ्जन्ति, एवमेवायं[3] केसा लोमा ति आदिना तं तं वोहारस्स वसेन पठमं ते धम्मे मनसाकासि, तेसु धम्मेसु असुभादीनं अञ्ञतरवसेन उपट्ठहन्तेसु तं[4] वोहारं समतिक्कमित्वा विस्सज्जेत्वा असुभादितो व मनसि करोति।

एत्थाह "कथं पनस्स एते धम्मा असुभादितो उपट्ठहन्ति, कथं वण्णतो, कथं सुञ्ञतो वा[5], कथं चायमेते असुभतो मनसि करोति, कथं वण्णतो, कथं सुञ्ञतो वा[5]" ति ? केसा तावस्स[6] वण्णसण्ठानगन्धासयोकासवसेन पञ्चधा असुभतो उपट्ठहन्ति, पञ्चधा एव अयमेते[7] असुभतो मनसि करोति। सेय्यथिदं ? केसा नामेते वण्णतो असुभा परमप्पटिकूलजेगुच्छा[8]। R. 72 तथा हि मनुस्सा दिवा पानभोजने पतितं केसवण्णं वाकं[9] वा सुत्तं वा दिस्वा केससञ्ञाय मनोरमं पि पानभोजनं छड्डेन्ति वा जिगुच्छन्ति वा। सण्ठानतो पि असुभा। तथा हि रत्तिं पानभोजने पतितं केससण्ठानं वाकं वा सुत्तं वा फुसित्वा केससञ्ञाय मनोरमं पि पानभोजनं छड्डेन्ति वा जिगुच्छन्ति वा। गन्धतो पि असुभा। तथा हि तेलमक्खनपुप्फधूमादिसङ्खारेहि[10] विरहितानं केसानं गन्धो परमजेगुच्छो होति, अग्गीसु[11] पक्खित्तस्स

१. साखाभङ्गादीहि निमित्तं—स्या०। २. आगन्त्वा—स्या०।
३. एवमेव—स्या०; एवमेवं यस्स—रो०। ४. तं तं—स्या०।
५-५. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि। ६. चस्स—सी०, रो०।
७. चायमेते—स्या०। ८. परमपटिक्कुल०—सी०, स्या०; परमपटिक्कूल०—रो०।
९. वाक्कं—स्या० एवमेव। १०. ० धूपादि—सी०।
११. अग्गिम्हि—सी०, स्या०; अग्गिपक्खित्तस्स—रो०।

केसस्स गन्धं घायित्वा सत्ता नासिकं पिधेन्ति, मुखं पि[१] विकुज्जेन्ति[२]। आसयतो पि असुभा। तथा हि नानाविधेन[३] मनुस्सासुचिनिस्सन्देन सङ्कारट्ठाने तण्डुलेय्यकादीनि विय पित्तसेम्हपुब्बलोहितनिस्सन्देन ते आचिता वुद्धिं विरूळिंह वेपुल्लं गमिता ति। ओकासतो पि असुभा। तथा हि सङ्कारट्ठाने विय तण्डुलेय्यकादीनि परमजेगुच्छे लोमादि-एकतिसकुणपरासिमत्थके[४] मनुस्सानं सीसपलिवेठके[५] अल्लचम्मे जाता ति। एस नयो लोमादीसु। एवं ताव अयमेते धम्मे असुभतो उपट्ठहन्ते असुभतो मनसि करोति।

यदि पनस्स वण्णतो उपट्ठहन्ति, अथकेसा[६] नीलकसिणवसेन उपट्ठहन्ति[६]। तथा लोमा[७] दन्ता ओदातकसिणवसेना ति। एस नयो
B. 59 सब्बत्थ। तं तं कसिणवसेनेव अयमेते[८] मनसि करोति, एवं वण्णतो उपट्ठहन्ते वण्णतो मनसि करोति। यदि पनस्स सुञ्ञतो उपट्ठहन्ति, अथ केसा घनविनिब्भोगववत्थानेन ओजट्ठमकसमूहवसेन उपट्ठहन्ति। तथा लोमादयो, यथा उपट्ठहन्ति। अयमेते[९] तथेव मनसि करोति। एवं सुञ्ञतो उपट्ठहन्ते सुञ्ञतो मनसि करोति।

एवं मनसिकरोन्तो अयमेते धम्मे अनुपुब्बमुञ्चनतो मनसि करोति। **अनुपुब्बमुञ्चनतो** ति[१०] असुभादीनं अञ्ञतरवसेन उपट्ठिते केसे मुञ्चित्वा लोमे मनसिकरोन्तो सेय्यथापि नाम जलूका नङ्गुट्ठेन गहितप्पदेसे[११] सापेक्खा व हुत्वा तुण्डेन अञ्ञं[१२] पदेसं[१२] गण्हाति, गहिते च तस्मिं इतरं मुञ्चति, एवमेव केसेसु सापेक्खो व हुत्वा
R. 73 लोमे मनसि करोति, लोमेसु च पतिट्ठिते मनसिकारे[१३] केसे मुञ्चति।

१. च—सी०, रो०। २. जिगुच्छन्ति—रो०।
३. नानाविधे—स्या०। ४. ० रासिम्हि—सी०, रो०।
५. ०पळिवेठके—सी०; ०पलिवेठिते—रो०। ६-६. असुभतो मनसि करोति—रो०।
७. ० दन्ता—स्या०। ८. चायमेते—सी०; एव चायं—रो०।
९. चायमेते—रो०। १०. हि—स्या०।
११. गहितपदेसे—सी०, रो०। १२-१२. अञ्ञापदेसं—सी०, रो०।
१३. ० ति—स्या०।

एस नयो सब्बत्थ। एवं हिस्स अनुपुब्बमुञ्चनतो मनसिकरोतो असुभादीसु अञ्ञतरवसेन ते धम्मा उपट्ठहन्ता अनवसेसतो उपट्ठहन्ति, पाकटतरूपट्ठाना च होन्ति।

अथ[1] यस्स ते धम्मा **असुभतो** उपट्ठहन्ति, पाकटतरूपट्ठाना च होन्ति[1], तस्स सेय्यथापि नाम मक्कटो द्वत्तिंसतालके तालवने ब्याधेन[2] परिधातियमानो एकरुक्खे पि असण्ठहन्तो परिधावित्वा यदा निवत्तो होति किलन्तो, अथ एकमेव घनतालपण्णपरिवेठितं तालसुचिं निस्साय तिट्ठति, एवमेव चित्तमक्कटो द्वत्तिंसकोट्ठासके इमस्मिं काये तेनेव योगिना परिपातियमानो एककोट्ठासके पि असण्ठहन्तो परिधावित्वा यदा अनेकारम्मणविधावने अभिलासाभावेन निवत्तो होति किलन्तो। अथ य्वास्स केसादीसु धम्मो पगुणतरो चरितानुरूपतरो वा, यत्थ वा पुब्बे कताधिकारो होति, तं निस्साय उपचारवसेन तिट्ठति। अथ तमेव निमित्तं पुनप्पुनं[3] तक्काहतं वितक्काहतं करित्वा यथाक्कमं पठमं[4] झानं[4] उप्पादेति, तत्थ पतिट्ठाय विपस्सनमारभित्वा अरियभूमिं पापुणाति।

यस्स पन ते धम्मा **वण्णतो** उपट्ठहन्ति, तस्सा पि सेय्यथापि नाम मक्कटो ... पे० ... अथ य्वास्स केसादीसु धम्मो पगुणतरो चरितानुरूपतरो वा, यत्थ वा पुब्बे कताधिकारो होति, तं निस्साय B. 60 उपचारवसेन तिट्ठति। अथ तमेव निमित्तं पुनप्पुनं तक्काहतं वितक्काहतं करित्वा यथाक्कमं नीलकसिणवसेन[5] पीतकसिणवसेन वा पञ्चपि रूपावचरज्झानानि उप्पादेति, तेसं च यत्थ कत्थचि पतिट्ठाय विपस्सनं आरभित्वा अरियभूमिं पापुणाति।

यस्स पन ते धम्मा **सुञ्ञतो** उपट्ठहन्ति, सो लक्खणतो मनसि करोति, लक्खणतो मनसिकरोन्तो[6] तत्थ चतुधातुववत्थानवसेन

१-१. सी०, रो० पोत्थकेसु नत्थि। २. ब्याधेन—सी०, रो०।
३. पुनप्पुन—सी०। ४-४. पठमज्झानं—सी०, स्या०, रो०।
५. ० वा—स्या०। ६. मनसिकरोतो—स्या०।

उपचारज्झानं पापुणाति। अथ मनसिकरोन्तो ते धम्मे अनिच्च-
R. 74 दुक्खानत्तसुत्तत्तयवसेन मनसि करोति। अयमस्स विपस्सनानयो।
सो इमं विपस्सनं आरभित्वा यथाक्कमं च पटिपज्जित्वा अरियभूमिं पापुणाती ति।

एत्तावता च यं वुत्तं "कथं पनायं अनुपुब्बादिवसेन एते धम्मे मनसि करोती" ति, तं ब्याकतं होति। यं चा पि वुत्तं "भावनावसेन पनस्स एवं वण्णना वेदितब्बा" ति, तस्सत्थो पकासितो होती ति।

(ग) पकिण्णकनय

इदानि इमस्मिं येव द्वत्तिंसाकारे वण्णनापरिचयपाटवत्थं अयं **पकिण्णकनयो** वेदितब्बो—

"निमित्ततो लक्खणतो, धातुतो सुञ्ञतो पि च।
खन्धादितो च विञ्ञेय्यो, द्वत्तिंसाकारनिच्छयो" ति॥

तत्थ **निमित्ततो** ति एवं वुत्तप्पकारे इमस्मिं द्वत्तिंसाकारे सट्ठिसतं निमित्तानि होन्ति, येसं वसेन योगावचरो द्वत्तिंसाकारं कोट्ठासतो परिग्गण्हाति। सेय्यथिदं[1]? केसस्स वण्णनिमित्तं सण्ठाननिमित्तं दिसानिमित्तं ओकासनिमित्तं परिच्छेदनिमित्तं ति पञ्च निमित्तानि होन्ति। एवं लोमादीसु।

लक्खणतो ति द्वत्तिंसाकारे अट्ठवीसतिसतं लक्खणानि होन्ति,
B. 61 येसं वसेन योगावचरो द्वत्तिंसाकारं लक्खणतो मनसि करोति।
सेय्यथिदं? केसस्स[2] थद्धलक्खणं आबन्धनलक्खणं उण्हत्तलक्खणं समुदीरणलक्खणं ति चत्तारि लक्खणानि होन्ति। एवं लोमादीसु।

धातुतो ति द्वत्तिंसाकारे "छधातुरो[3] भिक्खवे अयं पुरिसपुग्गलो (म० नि० ३.३२३)" ति एत्थ[4] वुत्तासु धातूसु अट्ठवीसतिसतं

१. सेय्यथीदं—सी०, स्या०, रो०। २. केसेसु—स्या०।
३. छद्धातुको—सी०; चतुधातुरो—स्या०। ४. तत्थ—सी०, रो०।

धातुयो होन्ति, यासं वसेन योगावचरो द्वत्तिंसाकारं धातुतो[1] परिग्गण्हाति। सेय्यथिदं? या केसे थद्धता, सा पथवीधातु[2]। या आबन्धनता, सा आपोधातु। या परिपाचनता, सा तेजोधातु। या वित्थम्भनता, सा वायोधातू ति चतस्सो धातुयो होन्ति। एवं लोमादीसु।

सुञ्ञतो ति द्वत्तिंसाकारे अट्ठवीसतिसतं सुञ्ञता होन्ति, यासं वसेन योगावचरो द्वत्तिंसाकारं सुञ्ञतो विपस्सति। सेय्यथिदं? केसे[3] ताव पथवीधातु आपोधात्वादीहि सुञ्ञा[4], तथा आपोधात्वादयो पथवीधात्वादीही ति चतस्सो सुञ्ञता होन्ति। एवं लोमादीसु। R. 75

खन्धादितो ति द्वत्तिंसाकारे केसादीसु खन्धादिवसेन सङ्गय्हमानेसु "केसा[5] कति खन्धा होन्ति, कति आयतनानि, कति धातुयो, कति सच्चानि, कति सतिपट्ठानानी" ति एवमादिना नयेन विनिच्छयो वेदितब्बो। एवं चस्स विजानतो तिणकट्ठसमूहो विय कायो खायति। यथाह—

"नत्थि सत्तो नरो पोसो, पुग्गलो नूपलब्भति।
सुञ्ञभूतो अयं कायो, तिणकट्ठसमूपमो" ति॥

अथस्स या सा—

"सुञ्ञागारं पविट्ठस्स, सन्तचित्तस्स तादिनो[6]।
अमानुसी रति होति, सम्मा धम्मं विपस्सतो
(खुद्द० नि० १.५३)" ति—

एवं अमानुसी रति वुत्ता, सा अदूरतरा होति, ततो यं तं—

१. धातुसो—सी०। २. पठवी०—सी०, रो०।
३. केसेसु—स्या०, एवमेव। ४. सुञ्ञाता—स्या०।
५. केसादीसु—स्या०। ६. भिक्खुनो—स्या०।

"यतो यतो सम्मसति, खन्धानं उदयब्बयं[१]।
लभती[२] पीतिपामोज्जं, अमतं तं विजानतं
(खुद्द० नि० १.५३)" ति—

B. 62 एवं विपस्सनामयं पीतिपामोज्जामत्तं वुत्तं, तं अनुभवन्तो न चिरेनेव अरियजनसेवितं अजरामरं[३] निब्बानामतं[३] सच्छिकरोती ति ।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय
द्वत्तिंसाकारवण्णना निट्ठिता ।

१. उदयब्ययं—सी०, रो० । २. लभते—रो० ।
३-३. अजरामर निब्बाणामतं—सी०; अजरामरणं०—स्या० ।

४. कुमारपञ्हवण्णना

(क) अट्ठुप्पत्ति

इदानि एकं नाम किं (खु० नि० १.४) ति एवमादीनं कुमारपञ्हानं अत्थवण्णनाक्कमो अनुप्पत्तो। तेसं अट्ठुप्पत्तिं इध निक्खेपप्पयोजनं च वत्वा वण्णनं[1] करिस्साम—

अट्ठुप्पत्ति ताव नेसं[2] सोपाको नाम भगवतो महासावको अहोसि। तेनायस्मता जातिया सत्तवस्सेनेव अञ्ञा आराधिता, तस्स भगवा पञ्हब्याकरणेन उपसम्पदं अनुञ्ञातुकामो अत्तना अधिप्पेतत्थानं पञ्हानं ब्याकरणसमत्थतं[3] पस्सन्तो "एकं नाम किं" ति R. 76
एवमादिना पञ्हे पुच्छि। सो ब्याकासि, तेन च ब्याकरणेन भगवतो चित्तं आराधेसि[4]। सा व[5] तस्सायस्मतो उपसम्पदा अहोसि।

अयं तेसं अट्ठुप्पत्ति।

(ख) निक्खेपप्पयोजनं

यस्मा पन सरणगमनेहि बुद्धधम्मसङ्घानुस्सतिवसेन चित्तभावना, सिक्खापदेहि सीलभावना, द्वत्तिंसाकारेन च कायभावना पकासिता, तस्मा इदानि नानप्पकारतो पञ्ञाभावनामुखदस्सनत्थं इमे पञ्हब्याकरणा[6] इध निक्खित्ता। यस्मा वा सीलपदट्ठानो समाधि, समाधिपदट्ठाना च पञ्ञा। यथाह "सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो, चित्तं पञ्ञं च भावयं (सं० नि० १.१४)" ति, तस्मा सिक्खापदेहि B. 63

१. अत्थवण्णनं—स्या०।
२. तेसं—स्या०, रो०।
३. ब्याकरण०—सी०, रो०।
४. आराधितं—सी०।
५. च—स्या०, रो०।
६. पञ्हा०—स्या०; पञ्हब्याकरणे—रो०।

सीलं वुत्तिसाकारेन तंगोचरं समाधिं च[1] दस्सेत्वा समाहितचित्तस्स नानाधम्मपरिक्खाराय पञ्ञाय पभेददस्सनत्थं इध निक्खित्ता ति पि[2] विञ्ञातब्बा ।

इदं तेसं इध निक्खेपप्पयोजनं ।

(ग) पञ्हवण्णना

एकं नाम किं ति पञ्हवण्णना

इदानि तेसं अत्थवण्णना होति—**एकं नाम किं** (खु० नि० १.४) ति भगवा यस्मिं एकधम्मस्मिं भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तकरो होति, यस्मिं चायमायस्मा[3] निब्बिन्दमानो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तमकासि, तं धम्मं सन्धाय पञ्हं पुच्छति । "**सब्बे सत्ता आहारट्ठितिका**" ति थेरो पुग्गलाधिट्ठानाय देसनाय विस्सज्जेति । "कतमा च भिक्खवे सम्मासति, इध भिक्खवे भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरती (दी० नि० २.२३४)" ति एवमादीनि चेत्थ सुत्तानि एवं विस्सज्जनयुत्तिसम्भवे साधकानि । एत्थ[4] येनाहारेन सब्बे सत्ता "आहारट्ठितिका" ति वुच्चन्ति, सो आहारो तं वा नेसं आहारट्ठितिकत्तं "एकं नाम किं" ति पुट्ठेन थेरेन निद्दिट्ठन्ति वेदितब्बं । तं हि भगवता इध एकं ति अधिप्पेतं, न तु सासने लोके वा अञ्ञं एकं
R. 77 नाम नत्थी ति ञापेतुं वुत्तं । वुत्तञ्हेतं[5] भगवता—

"एकधम्मे भिक्खवे भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो सम्मा विरज्जमानो सम्मा विमुच्चमानो सम्मा परियन्तदस्सावी, सम्मत्तं अभिसमेच्च दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो होति । कतमस्मिं एकधम्मे, सब्बे सत्ता आहारट्ठितिका । इमस्मिं खो भिक्खवे एकधम्मे भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ... पे० ... दुक्खस्सन्तकरो होति । 'एको पञ्हो

१. स्या०, रो० पोत्थकेसु नत्थि ।　२. सी०, स्या० नत्थि; ति—रो० ।
३. चायस्मा—सी०; वा यस्मा—रो० ।　४. यतो एत्थ—स्या० ।
५. वुत्तञ्चेतं—सी०, स्या०, रो० ।

एको उद्देसो एकं वेय्याकरणं' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति।

आहारट्ठितिका ति चेत्थ यथा "अत्थि भिक्खवे सुभनिमित्तं, तत्थ अयोनिसो मनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स उप्पादाया (सं० नि० ४.६२)" ति एवमादीसु पच्चयो आहारो ति वुच्चति, एवं पच्चयं आहारसद्देन गहेत्वा पच्चयट्ठितिका "आहारट्ठितिका" ति वुत्ता। चत्तारो पन आहारे सन्धाय "आहारट्ठितिका" ति वुच्चमाने "असञ्ञसत्ता[1] देवा अहेतुका अनाहारा अफस्सका अवेदनका[2]" ति वचनतो "सब्बे" ति वचनमयुत्तं भवेय्य। B. 64

तत्थ सिया—एवं पि वुच्चमाने "कतमे धम्मा सपच्चया[3]। पञ्चक्खन्धा रूपक्खन्धो ...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो" ति वचनतो खन्धानं येव पच्चयट्ठितिकत्तं युत्तं, सत्तानं तु अयुत्तमेवेतं वचनं भवेय्या ति। न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं। कस्मा? सत्तेसु खन्धोपचारसिद्धितो। सत्तेसु हि[4] खन्धोपचारो सिद्धो। कस्मा? खन्धे उपादाय पञ्ञापेतब्बतो। कथं? गेहे गामोपचारो विय। सेय्यथापि[5] हि[6] गेहानि उपादाय पञ्ञापेतब्बत्ता गामस्स एकस्मिं पि द्वीसु तीसु पि वा गेहेसु दड्ढेसु "गामो दड्ढो" ति एवं गेहे गामोपचारो[7] सिद्धो, एवमेव[8] खन्धेसु पच्चयट्ठेन आहारट्ठितिकेसु "सत्ता आहारट्ठितिका" ति अयं उपचारो सिद्धो ति वेदितब्बो। परमत्थतो च खन्धेसु जायमानेसु जीयमानेसु मीयमानेसु च "खणे खणे त्वं भिक्खु जायसे च जीयसे च मीयसे चा" ति वदता भगवता तेसु सत्तेसु खन्धोपचारो सिद्धो ति दस्सितो एवा ति वेदितब्बो। यतो येन पच्चयाख्येन R. 78

१. असञ्ञीसत्ता—स्या०। २. अवेदनिका—स्या०, रो०।
३. सप्पच्चया—स्या, रो०। ४. हि च—सी०।
५. यथा—स्या०; सेसानि—रो०। ६. सी०, रो० नत्थि।
७. गामूपचारो—स्या०, रो०। ८. एवं—रो०।

आहारेन सब्बे[1] सत्ता[1] तिट्ठन्ति, सो आहारो तं वा नेसं[2] आहारट्ठितिकत्तं एकं ति वेदितब्बं। आहारो हि आहारट्ठितिकत्तं वा अनिच्चताकारणतो[3] निब्बिदाट्ठानं[4] होति। अथ तेसु सब्बसत्तसञ्ञितेसु सङ्खारेसु अनिच्चतादस्सनेन निब्बिन्दमानो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तकरो होति, परमत्थविसुद्धि पापुणाति। यथाह—

"सब्बे सङ्खारा अनिच्चा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया"
(खु० नि० १.४३) ति॥

एत्थ च "एकं नाम किं" ति च "किहा" ति च[5] दुविधो पाठो, तत्थ सीहळानं किहा ति पाठो। ते हि "किं" ति वत्तब्बे "किहा ति वदन्ति। केचि भणन्ति "ह-इति निपातो, थेरियानं[6] पि अयमेव पाठो" ति उभयथा पि पन एको व अत्थो। यथा रुच्चति, तथा पठितब्बं। यथा पन "सुखेन फुट्ठो[7] अथ वा दुखेन, (खु० नि० १.२५)
B. 65 दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेती" (म० नि० १.३८३) ति एवमादीसु कत्थचि दुखं ति च कत्थचि दुक्खं ति च वुच्चति, एवं कत्थचि एकं ति, कत्थचि एक्कं[8] ति वुच्चति। इध पन एकं नामा ति अयमेव पाठो।

द्वे नाम किं ति पञ्हवण्णना

एवं इमिना पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था पुरिमनयेनेव उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **द्वे नाम किं** (खु० नि० १.४) ति। थेरो **द्वे** ति पच्चनुभासित्वा **"नामं च रूपं चा"** ति धम्माधिट्ठानाय देसनाय

१-१. सब्बसत्ता—रो०। २. तेसं—स्या०।
३. ० कारतो—स्या०। ४. निब्बिदाय पदट्ठानं—स्या०।
५. स्या० नत्थि। ६. तेन आचरियानं—स्या०।
७. फुट्ठा—सी०, स्या०, रो०। ८ एका—सी०।

विस्सज्जेति। तत्थ आरम्मणाभिमुखं नमनतो, चित्तस्स च नतिहेतुतो[1] सब्बं पि अरूपं "नामं" ति वुच्चति। इध पन निब्बिदाहेतुत्ता R. 79 सासवधम्ममेव[2] अधिप्पेतं रुप्पनट्ठेन चत्तारो च महाभूता, सब्बं च तदुपादाय पवत्तमानं रूपं "रूपं" ति वुच्चति, तं सब्बं पि इधाधिप्पेतं। अधिप्पायवसेनेव चेत्थ "द्वे नाम[3] नामं च रूपं चा" ति वुत्तं, न अञ्ञेसं द्विन्नमभावतो। यथाह—

"द्वीसु भिक्खवे धम्मेसु भिक्खु निब्बिन्दमानो[4] ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। कतमेसु द्वीसु, नामे च रूपे च। इमेसु खो भिक्खवे द्वीसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। 'द्वे पञ्हा द्वे उद्देसा द्वे वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं (अं० नि० ३.१९२)" ति।

एत्थ च नामरूपमत्तदस्सनेन अत्तदिट्ठिं पहाय अनत्तानुपस्सना-मुखेनेव निब्बिन्दमानो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तकरो होति, परमत्थ-विसुद्धिं पापुणाती ति वेदितब्बो। यथाह—

"सब्बे धम्मा अनत्ता ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया"
(खु० नि० १.४३) ति॥

तीणि नाम किं ति पञ्हवण्णना

इदानि इमिना पि पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था पुरिम-नयेनेव उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **तीणि नाम किं** (खु० नि० १.४) ति। थेरो **तीणी** ति पच्चनुभासित्वा पुन ब्याकरितब्बस्स अत्थस्स लिङ्गानु-रूपं सङ्ख्यं दस्सेन्तो "**तिस्सो वेदना**" ति विस्सज्जेति। अथ वा

१. नमनहेतुतो—स्या०।
२. सासवमेव—स्या०।
३. स्या० नत्थि।
४. सम्मा०—स्या०, रो०।

B. 66 "या भगवता 'तिस्सो वेदना' ति वुत्ता, इमासमत्थमहं[1] तीणी ति पच्चेमी" ति दस्सेन्तो आहा ति एवम्पेत्थ[2] अत्थो वेदितब्बो[3]। अनेकमुखा हि देसना पटिसम्भिदापभेदेन[4] देसनाविलासप्पत्तानं। केचि पनाहु "तीणी ति अधिकपदमिदं" ति। पुरिमनयेनेव चेत्थ "तिस्सो वेदना" ति वुत्तं, न अञ्ञेसं तिण्णमभावतो। यथाह—

"तीसु भिक्खवे धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। कतमेसु तीसु, तीसु वेदनासु। इमेसु खो भिक्खवे तीसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। 'तयो पञ्हा तयो उद्देसा तीणि वेय्याकरणानी' R.80 ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं (अं० नि० ३.१९२)" ति।

एत्थ च "यं किञ्चि वेदयितं, सब्बं तं दुक्खस्मिं (सं०नि० २.४६) ति वदामी" ति वुत्तसुत्तानुसारेन वा—

"यो सुखं दुक्खतो[5] अद्द[5], दुक्खमद्दक्खि सल्लतो।
अदुक्खमसुखं सन्तं, अद्दक्खि नं अनिच्चतो"
(सं० नि० ३.१८५) ति॥

एवं दुक्खदुक्खताविपरिणामदुक्खतासङ्खारदुक्खतानुसारेन वा तिस्सन्नं वेदनानं दुक्खभावदस्सनेन सुखसञ्ञं पहाय दुक्खानुपस्सनामुखेन निब्बिन्दमानो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तकरो होति, परमत्थविसुद्धिं पापुणाती ति वेदितब्बो। यथाह—

"सब्बे सङ्खारा दुक्खा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति[6] दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया"
(खु० नि० १.४३) ति॥

१. इमं अत्थमहं—सी०, रो०। २. एवमेत्थ—स्या०।
३. दट्ठब्बो—स्या०। ४. ०सम्भिदाप्पभेदेन—सी०, रो०।
५-५. दुक्खतोद्दक्खि—सी०, स्या०; ० अद्दा—रो०। ६. निब्बिन्दती—सी०, रो०।

चत्तारि नाम किं ति पञ्हवण्णना

एवं इमिना पि पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था पुरिमनयेनेव उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **चत्तारि नाम** किं (खु० नि० १.४) ति। तत्थ इमस्स पञ्हस्स ब्याकरणपक्खे[1] कत्थचि पुरिमनयेनेव[2] चत्तारो आहारो अधिप्पेता। यथाह—

"चतूसु[3] भिक्खवे धम्मेसु[4] भिक्खु[4] सम्मा निब्बिन्दमानो B. 67 ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। कतमेसु चतूसु, चतूसु आहारेसु। इमेसु खो भिक्खवे चतूसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। 'चत्तारो पञ्हा चत्तारो उद्देसा चत्तारि वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं (अं० नि० ३.१९२)" ति।

कत्थचि येसु[5] सुभावितचित्तो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तकरो होति, तानि चत्तारि सतिपट्ठानानि। यथाह कजङ्गला भिक्खुनी—

"चतूसु आवुसो धम्मेसु भिक्खु सम्मा सुभावितचित्तो सम्मा परियन्तदस्सावी सम्मत्तं अभिसमेच्च दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो R. 81 होति। कतमेसु चतूसु, चतूसु सतिपट्ठानेसु। इमेसु खो आवुसो चतूसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा सुभावितचित्तो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। 'चत्तारो पञ्हा चत्तारो उद्देसा चत्तारि वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं भगवता[6], इदमेतं पटिच्च वुत्तं (अं० नि० ३.१९)" ति।

इध पन येसं चतुन्नं अनुबोधप्पटिवेधतो[7] भवतण्हाछेदो[8] होति, यस्मा तानि चत्तारि अरियसच्चानि अधिप्पेतानि। यस्मा वा

१. वेय्याकरणपक्खे—स्या०। २. स्या० नत्थि।
३. चतुसु—सी०, रो०। ४-४. भिक्खु धम्मेसु—सी०।
५. ० भिक्खु—स्या०। ६. सी०, स्या० नत्थि।
७. ० पटि ०—सी०, स्या०, रो०। ८. भवतण्हूपच्छेदो—सी०, रो०।

इमिना[१] परियायेन ब्याकतं[२] सुब्याकतमेव[२] होति, तस्मा थेरो **चत्तारी** ति पच्चनुभासित्वा "**अरियसच्चानी**" ति विस्सज्जेति। तत्थ **चत्तारी** ति गणनपरिच्छेदो। **अरियसच्चानी**[३] ति अरियानि सच्चानि[३], अवितथानि[४] अविसंवादकानी ति अत्थो। यथाह—

"इमानि खो भिक्खवे चत्तारि अरियसच्चानि तथानि अवितथानि अनञ्ञथानि, तस्मा अरियसच्चानी ति वुच्चन्ती (सं० नि० ४.३७३)" ति।

यस्सा वा सदेवकेन लोकेन अरणीयतो अभिगमनीयतो ति वुत्तं होति, वायमितब्बट्ठानसञ्ञिते[५] अये वा इरियनतो[६], अनये वा न[७] इरियनतो[७], सत्ततिंसबोधिपक्खियअरियधम्मसमायोगतो वा अरियसम्मता बुद्धपच्चेकबुद्धबुद्धसावका एतानि पटिविज्झन्ति, तस्मा पि "अरियसच्चानी" ति वुच्चन्ति। यथाह—

B. 68 "चत्तारिमानि भिक्खवे अरियसच्चानि ...पे०... इमानि खो भिक्खवे चत्तारि अरियसच्चानि, अरिया इमानि पटिविज्झन्ति, तस्मा अरियसच्चानी ति वुच्चन्ती" ति।

अपि च अरियस्स[८] भगवतो सच्चानी ति पि अरियसच्चानि। यथाह—

"सदेवके भिक्खवे ... पे० ... सदेवमनुस्साय तथागतो अरियो, तस्मा अरियसच्चानी ति वुच्चन्ती (सं० नि० ४.३७३)" ति।

अथ वा एतेसं[९] अभिसम्बुद्धत्ता अरियभावसिद्धितो पि अरियसच्चानि। यथाह—

१. ० पि—स्या०।
२-२. भगवता०—स्या०; ब्याकतं ब्याकतमेव—रो०।
३-३. अरियानि सच्चानी ति अरियसच्चानि—स्या०।
४. अरियानी ति अवितथानि—स्या०।
५. वायमितब्बयुत्तट्ठान०—स्या०।
६. अरियनतो—स्या०।
७-७. अनीरियनतो—स्या०।
८. रो० पोत्थके नत्थि।
९. तेसं—रो०।

"इमेसं खो भिक्खवे चतुन्नं अरियसच्चानं यथाभूतं अभिसम्बुद्धत्ता तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो ति वुच्चती" (सं० नि० ४.३७०) ति।

अयमेतेसं पदत्थो। एतेसं पन अरियसच्चानं अनुबोधप्पटिवेधतो[१] भवतण्हाछेदो होति। यथाह— R. 82

"तयिदं भिक्खवे दुक्खं अरियसच्चं अनुबुद्धं पटिविद्धं...पे०... दुक्खनिरोधगामिनिपटिपदा[२] अरियसच्चं अनुबुद्धं पटिविद्धं, उच्छिन्ना भवतण्हा, खीणा भवनेत्ति, नत्थि दानि पुनब्भवो (सं०नि० ४.३७०)" ति।

पञ्च नाम किं ति पञ्हवण्णना

इमिना[३] पि[३] पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था पुरिमनयेनेव उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **पञ्च नाम किं** (खु० नि० १.४) ति। थेरो **पञ्चा** ति पच्चनुभासित्वा "**उपादानक्खन्धा**[४]" ति विस्सज्जेति। तत्थ **पञ्चा** ति गणनपरिच्छेदो। उपादानजनिता[५] उपादानजनका वा खन्धा उपादानक्खन्धा, यं किञ्चि रूपं वेदना सञ्ञा सङ्खारा विञ्ञाणं च सासवा उपादानिया[६], एतेसमेतं अधिवचनं। पुब्बनयेनेव चेत्थ "पञ्चुपादानक्खन्धा" ति वुत्तं, न अञ्ञेसं पञ्चन्नमभावतो। यथाह—

"पञ्चसु भिक्खवे[७] धम्मेसु सम्मा[८] निब्बिन्दमानो...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। कतमेसु पञ्चसु, पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु। इमेसु खो भिक्खवे पञ्चसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०...दुक्खस्सन्तकरो[९] होति। 'पञ्च पञ्हा पञ्च उद्देसा पञ्च वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति। B. 69

१. ० पटि ०—सी०, स्या०, रो०।
२. ० गामिनी ०—सी०, स्या०, रो०।
३-३. इमिना पि चतु—सी०, रो०।
४. पञ्चुपादानक्खन्धा—स्या०।
५. उपादानेन जनिता—सी०, रो०।
६. उपादानीया—सी०; ० च—स्या०।
७. ० भिक्खु—सी०।
८. भिक्खु०—रो०।
९. अन्तकरो—सी०, रो०।

एत्थ च पञ्चक्खन्धे उदयब्बयवसेन सम्मसन्तो विपस्सनामतं लद्धा अनुपुब्बेन निब्बानामतं सच्छिकरोति। यथाह—

"यतो यतो सम्मसति, खन्धानं उदयब्बयं।
लभती[1] पीतिपामोज्जं, अमतं तं विजानतं"
(खु० नि० १.५३) ति॥

छ नाम किं ति पञ्हवण्णना

एवं इमिना पि पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था पुरिमनयेनेव[2] उत्तरिं पञ्हं पुच्छति छ नाम किं" (खु० नि० १.४) ति। थेरो छ इति पच्चनुभासित्वा 'अज्झत्तिकानि आयतनानी' ति विस्सज्जेति। तत्थ छ इति गणनपरिच्छेदो, अज्झत्ते नियुत्तानि[3], अत्तानं वा[4] अधिकत्वा[5] पवत्तानि अज्झत्तिकानि। आयतनतो[6], आयस्स वा[7]
R. 83 तननतो, आयतस्स वा संसारदुक्खस्स नयनतो आयतनानि, चक्खुसोतघानजिव्हाकायमनानमेतं अधिवचनं। पुब्बनयेन चेत्थ "छ अज्झत्तिकानि आयतनानी" ति वुत्तं, न अञ्ञेसं छन्नमभावतो। यथाह—

"छसु भिक्खवे धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो...पे०... दुक्खस्सन्तकरो[8] होति। कतमेसु छसु, छसु अज्झत्तिकेसु आयतनेसु। इमेसु खो भिक्खवे छसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। 'छ पञ्हा छ उद्देसा छ वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति।

एत्थ च छ अज्झत्तिकानि आयतनानि, "सुञ्ञो गामो ति खो भिक्खवे छन्नेतं अज्झत्तिकानं आयतनानं अधिवचनं

१. लभते—सी०, रो०।
२. स्या० नत्थि।
३. नियुत्तानं—स्या०।
४. सी०, रो० नत्थि।
५. अधिकं कत्वा—स्या०।
६. आयतनं—रो०; आयामं—स्या०।
७. च—स्या०।
८. अन्तकरो—सी०, रो०।

(सं० नि० ३.१५८)" ति वचनतो[1] सुञ्ञतो पुब्बुळकमरीचिकादीनि[2] विय[3] अचिरट्ठितिकतो[4] तुच्छतो वञ्चनतो[5] च समनुपस्सं निब्बिन्दमानो अनुपुब्बेन दुक्खस्सन्तं कत्वा मच्चुराजस्स अदस्सनं उपेति। यथाह—

"यथा पुब्बुळकं[6] पस्से, यथा पस्से मरीचिकं। एवं लोकं B. 70
अवेक्खन्तं, मच्चुराजा न पस्सती (खु० नि० १.३३)" ति।

सत्त नाम किं ति पञ्हवण्णना

इमिना[7] पि पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **सत्त नाम किं** (खु० नि० १.४) ति। थेरो किञ्चा पि महापञ्हब्याकरणे सत्त विञ्ञाणट्ठितियो वुत्ता, अपि च खो पन येसु धम्मेसु सुभावितचित्तो भिक्खु दुक्खस्सन्तकरो[8] होति, ते दस्सेन्तो "**सत्त बोज्झङ्गा**" ति विस्सज्जेति[9]। अयं पि चत्थो भगवता अनुमतो एव। यथाह—

"पण्डिता गहपतयो कजङ्गलिका[10] भिक्खुनी, महापञ्ञा गहपतयो कजङ्गलिका भिक्खुनी, मञ्चे पि तुम्हे गहपतयो उपसङ्कमित्वा एतमत्थं पटिपुच्छेय्याथ[11], अहं पि चेतं[12] एवमेव[12] ब्याकरेय्यं, यथा तं कजङ्गलिकाय[13] भिक्खुनिया ब्याकतं" ति। R. 84

ताय च एवं ब्याकतं—

१. वुत्तता—स्या०।
२. पुब्बुळ०—रो०; बुब्बुल०—सी०।
३. च—स्या०।
४. नचिरट्ठितिकतो—रो०।
५. वञ्चनकतो—सी०, स्या०, रो०।
६. बुब्बुलकं—सी०, रो०।
७. एवं०—स्या०, रो०।
८. ...पे०...दुक्खस्सन्तकरो—स्या०।
९. विसज्जेति—स्या०।
१०. कजङ्गला—सी०, स्या०, रो०।
११. पुच्छेय्याथ—सी०, स्या०, रो०।
१२-१२. चेवमेव—सी०; एवमेव—स्या०, रो०।
१३. कजङ्गलाय—सी०, स्या०, रो०।

“सत्तसु आवुसो धम्मेसु भिक्खु सम्मा सुभावितचित्तो...पे०... दुक्खस्सन्तकरो[1] होति। कतमेसु सत्तसु, सत्तसु बोज्झङ्गेसु। इमेसु खो आवुसो सत्तसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा सुभावितचित्तो...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। ‘सत्त पञ्हा सत्त उद्देसा सत्त वेय्याकरणानी’ ति इति यं तं वुत्तं भगवता, इदमेतं पटिच्च वुत्तं” ति। एवमयमत्थो भगवता अनुमतो एवा ति वेदितब्बो।

तत्थ **सत्ता** ति ऊनाधिकनिवारणगणनपरिच्छेदो। **बोज्झङ्गा** ति सतिआदीनं धम्मानमेतं अधिवचनं। तत्रायं पदत्थो—एताय लोकियलोकुत्तरमग्गक्खणे उप्पज्जमानाय लीनुद्धच्चपतिट्ठानायूहनकामसुखत्तकिलमथानुयोग उच्छेदसस्सताभिनिवेसादि अनेकुपद्दवप्पटिपक्खभूताय सतिधम्मविचयवीरियपीतिप्पस्सद्धिसमाधुपेक्खासङ्खाताय धम्मसामग्गिया अरियसावको बुज्झती ति कत्वा बोधि, किलेससन्ताननिद्दाय उट्ठहति, चत्तारि वा अरियसच्चानि पटिविज्झति, निब्बानमेव वा सच्छिकरोती ति वुत्तं होति। यथाह “सत्त बोज्झङ्गे भावेत्वा
B. 71 अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो” ति। यथावुत्तप्पकाराय वा एताय धम्मसामग्गिया बुज्झती ति कत्वा अरियसावको पि **बोधि**। इति तस्सा धम्मसामग्गिसङ्खाताय बोधिया अङ्गभूतत्ता बोज्झङ्गा झानङ्गमग्गङ्गानि विय, तस्स वा बोधी ति लद्धवोहारस्स अरियसावकस्स अङ्गभूतत्ता पि **बोज्झङ्गा** सेनङ्गरथङ्गादयो विय।

अपि च “**बोज्झङ्गा** ति केनट्ठेन बोज्झङ्गा, बोधाय[2] संवत्तन्ती ति बोज्झङ्गा, बुज्झन्ती ति बोज्झङ्गा, अनुबुज्झन्ती ति बोज्झङ्गा, पटिबुज्झन्ती ति बोज्झङ्गा, सम्बुज्झन्ती[3] ति बोज्झङ्गा[3]” ति इमिना[4] पि पटिसम्भिदायं वुत्तेन विधिना बोज्झङ्गानं बोज्झङ्गट्ठो वेदितब्बो। एवमिमे सत्त बोज्झङ्गे भावेन्तो बहुलीकरोन्तो न चिरस्सेव एकन्तनिब्बिदादिगुणपटिलाभी होति, तेन दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो
R. 85 होती ति वुच्चति। वुत्तं चेतं भगवता—

१. दिट्ठेवधम्मे०—सी०, स्या०, रो०। २. सम्बोधाय—सी०, रो०।
३-३. सी०, रो० नत्थि। ४. इच्चादिना—स्या०।

"सत्तिमे भिक्खवे बोज्झङ्गा भाविता बहुलीकता एकन्तनिब्बिदाय विरागाय निरोधाय[१] उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तन्ती" (सं० नि० ४.७६) ति।

अट्ठ नाम किं ति पञ्हवण्णना

एवं इमिना पि पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **अट्ठ नाम किं** (खु० नि० १.४) ति। थेरो किञ्चा पि महापञ्हब्याकरणे अट्ठ लोकधम्मा वुत्ता, अपि च खो पन येसु धम्मेसु सुभावितचित्तो भिक्खु[२] दुक्खस्सन्तकरो होति, ते दस्सेन्तो "अरियानि[३] अट्ठ मग्गङ्गानी[४]" ति अवत्वा यस्मा अट्ठङ्गविनिमुत्तो[५] मग्गो नाम नत्थि, अट्ठङ्गमत्तमेव तु मग्गो, तस्मा तमत्थं साधेन्तो देसनाविलासेन **अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो** ति विस्सज्जेति। भगवता पि चायमत्थो देसनानयो च अनुमतो एव। यथाह—

"पण्डिता गहपतयो कजङ्गलिका[६] भिक्खुनी ...पे०... अहं पि एवमेव ब्याकरेय्यं, यथा तं कजङ्गलिकाय[७] भिक्खुनिया ब्याकतं" ति।

ताय च एवं ब्याकतं— B. 72

"अट्ठसु आवुसो धम्मेसु भिक्खु सम्मा सुभावितचित्तो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो[८] होति*। 'अट्ठ पञ्हा अट्ठ उद्देसा अट्ठ वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं भगवता[९], इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति।

१. सी०, रो० नत्थि।
२. ०...पे०...—स्या०।
३. अरिया—स्या०।
४. मग्गङ्गा—स्या०।
५. ०विनिमुत्तो—सी०, रो०; अरिय अट्ठङ्ग विनिमुत्तो—स्या०।
६. कजङ्गला—सी०, स्या०, रो०।
७. कजङ्गलाय—रो०।
८. दिट्ठे व धम्मे०—सी०, स्या०, रो०।
९. स्या० नत्थि।
*. एत्थ — "कतमेसु अट्ठसु?" अरिये अट्ठङ्गिके मग्गे। इमेसु खो आवुसो अट्ठसु धम्मेसु सम्मा सुभावित चित्तो ...पे०... दिट्ठे व धम्मे दुक्खस्सन्तकरो होति"— इति स्या० पोत्थके अधिको पाठो दिस्सति।

एवमयं अत्थो च देसनानयो च भगवता अनुमतो एवा ति वेदितब्बो।

तत्थ **अरियो** ति निब्बानत्थिकेहि अभिगन्तब्बो, अपि च आरका किलेसेहि वत्तनतो, अरियभावकरणतो, अरियफलपटिलाभतो चा पि अरियो ति वेदितब्बो। अट्ठ अङ्गानि अस्सा ति अट्ठङ्गिको। स्वायं चतुरङ्गिका विय सेना, पञ्चङ्गिकं विय च[1] तूरियं अङ्गविनिब्भोगेन अनुपलब्भसभावतो अङ्गमत्तमेवा ति वेदितब्बो। मग्गति इमिना निब्बानं, सयं वा मग्गति, किलेसे[2] मारेन्तो वा[2] गच्छती ति **मग्गो**।

R. 86 एवमट्ठप्पभेदं चिमं अट्ठङ्गिकं मग्गं भावेन्तो भिक्खु अविज्जं भिन्दति, विज्जं उप्पादेति, निब्बानं सच्छिकरोति, तेन दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो होती ति वुच्चति। वुत्तञ्हेतं[3]—

"सेय्यथापि भिक्खवे सालिसूकं वा यवसूकं वा सम्मा पणिहितं हत्थेन वा पादेन वा अक्कन्तं हत्थं वा पादं वा भेच्छति[4], लोहितं वा[5] उप्पादेस्सती ति ठानमेतं विज्जति। तं किस्स हेतु, सम्मा पणिहितत्ता भिक्खवे सूकस्स, एवमेव खो भिक्खवे सो वत भिक्खु सम्मा पणिहिताय दिट्ठिया सम्मा पणिहिताय मग्गभावनाय अविज्जं भेच्छति[6], विज्जं उप्पादेस्सति, निब्बानं सच्छिकरिस्सती ति ठानमेतं विज्जती" (सं० नि० ४.१०) ति।

नव नाम किं ति पञ्हवण्णना

इमिना पि पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **नव नाम किं** (खु० नि० १.४) ति। थेरो **नव** इति पच्चनुभासित्वा[7] **सत्तावासा**" ति विस्सज्जेति। तत्थ **नवा** ति गणनपरिच्छेदो। **सत्ता** ति जीवितिन्द्रियप्पटिबद्धे[8] खन्धे उपादाय

B. 73

१. स्या० नत्थि।
२-२. मारेन्तो वा किलेसे—स्या०।
३. ०भगवता—स्या०।
४. छेज्जति—सी०; छेच्छति—रो०। भिज्जति—स्या०।
५. रो० नत्थि।
६. भिन्दिस्सति—स्या०।
७. ० नव—स्या०।
८. ० पटि ०—सी०, स्या०, रो०।

पञ्ञत्ता पाणिनो पण्णत्ति[१] वा[२]। आवासा[३] ति आवसन्ति एतेसू ति आवासा, सत्तानं आवासा सत्तावासा। एस देसनामग्गो, अत्थतो पन नवविधानं सत्तानमेत्तं अधिवचनं। यथाह—

"सन्तावुसो सत्ता नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, सेय्यथापि मनुस्सा एकच्चे च देवा एकच्चे च विनिपातिका, अयं पठमो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता नानत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो, सेय्यथापि देवा ब्रह्मकायिका पठमाभिनिब्बत्ता, अयं दुतियो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता एकत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, सेय्यथापि देवा आभस्सरा, अयं ततियो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता एकत्तकाया एकत्तसञ्ञिनो, सेय्यथापि देवा सुभकिण्हा, अयं चतुत्थो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता असञ्ञिनो अप्पटिसंवेदिनो सेय्यथापि देवा असञ्ञसत्ता[४], अयं पञ्चमो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता सब्बसो रूपसञ्ञानं...पे०...आकासानञ्चायतनूपगा, अयं छट्ठो सत्तावासो। R. 87
सन्तावुसो सत्ता ...पे०[५]... विञ्ञाणञ्चायतनूपगा, अयं सत्तमो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता ...पे०[५]... आकिञ्चञ्ञायतनूपगा, अयं अट्ठमो सत्तावासो। सन्तावुसो सत्ता ...पे०[५]... नेवसञ्ञानासञ्ञायतनूपगा, अयं नवमो सत्तावासो" (दी०नि० ३.२०३) ति।

पुरिमनयेनेव चेत्थ "नव सत्तावासा" ति वुत्तं, न अञ्ञेसं नवन्नमभावतो। यथाह—

"नवसु भिक्खवे धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। कतमेसु नवसु, नवसु सत्तावासेसु। इमेसु खो भिक्खवे नवसु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति। 'नव पञ्हा नव उद्देसा नव वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेत्तं पटिच्च वुत्तं" ति।

१. पञ्ञत्ति—सी०, स्या०, रो०। २. स्या० नत्थि।
३-३. स्या०, रो० नत्थि। ४. असञ्ञीसत्ता—स्या०।
५-५. सी०, स्या०, रो० नत्थि।

B. 74 एत्थ च "नव धम्मा परिञ्ञेय्या । कतमे नव, नव सत्तावासा" (दी० नि० ३.२३३) ति वचनतो नवसु सत्तावासेसु ञातपरिञ्ञाय[1] धुवसुभसुखत्तभावदस्सनं[2] पहाय सुद्धसङ्खारपुञ्जमत्तदस्सनेन निब्बिन्दमानो तीरणपरिञ्ञाय अनिच्चानुपस्सनेन[3] विरज्जमानो दुक्खानुपस्सनेन विमुच्चमानो अनत्तानुपस्सनेन सम्मा परियन्तदस्सावी पहानपरिञ्ञाय[4] सम्मत्तमभिसमेच्च दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो होति । तेनेतं[5] वुत्तं—

"नवसु भिक्खवे धम्मेसु भिक्खु[6] सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो होति । कतमेसु नवसु, नवसु सत्तावासेसू" ति ।

दस नाम किं ति पञ्हवण्णना

एवं इमिना पि[7] पञ्हब्याकरणेन आरद्धचित्तो सत्था उत्तरिं पञ्हं पुच्छति **दस नाम किं** (खु० नि० १.४) ति । तत्थ किञ्चा पि इमस्स पञ्हस्स इतो अञ्ञत्र[8] वेय्याकरणेसु दस अकुसलकम्मपथा वुत्ता । यथाह—

"दससु भिक्खवे धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो[9] होति । कतमेसु दससु, दससु अकुसलकम्मपथेसु । इमेसु खो भिक्खवे दससु धम्मेसु भिक्खु सम्मा निब्बिन्दमानो
R. 88 ...पे०... दुक्खस्सन्तकरो होति । 'दस पञ्हा दस उद्देसा दस वेय्याकरणानी' ति इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति ।

इध पन यस्मा अयमायस्मा अत्तानं अनुपनेत्वा अञ्ञं ब्याकातुकामो, यस्मा वा इमिना परियायेन ब्याकतं[10] सुब्याकतमेव[11] होति,

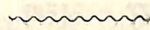
१. ञाण०—रो० ।
२. धुवसुखसुभत्तयावदस्सनत्थं—रो० ।
३. अनिच्चानुपस्सनाय—स्या० ।
४. पहाण०—सी० ।
५. तेन चेतं—स्या० ।
६. स्या० नत्थि ।
७. रो० नत्थि ।
८. अञ्ञातरं—स्या० ।
९. दिट्ठेव धम्मे०—सी०, स्या०, रो० ।
१०. ब्याकतं—सी०, रो० ।
११. अब्याकतमेव—रो० ।

तस्मा येहि दसहि अङ्गेहि समन्नागतो अरहा ति पवुच्चति[1], तेसं अधिगमं दीपेन्तो **दसहङ्गेहि समन्नागतो अरहा ति पवुच्चती** ति पुग्गलाधिट्ठानाय देसनाय विस्सज्जेति। यतो एत्थ येहि दसहि अङ्गेहि समन्नागतो अरहा ति पवुच्चति, तानि दसङ्गानि "दस नाम किं" ति पुट्ठेन थेरेन निद्दिट्ठानी ति वेदितब्बानि। तानि च दस—

असेखो[2] असेखो ति भन्ते वुच्चति, कित्तावता नु खो भन्ते भिक्खु असेखो होती ति। इध भिक्खवे भिक्खु असेखाय सम्मादिट्ठिया B. 75
समन्नागतो होति, असेखेन सम्मासङ्कप्पेन समन्नागतो होति, असेखाय सम्मावाचाय समन्नागतो होति, असेखेन सम्माकम्मन्तेन समन्नागतो होति, असेखेन सम्माआजीवेन समन्नागतो होति, असेखेन सम्मावायामेन समन्नागतो होति, असेखाय सम्मासतिया समन्नागतो होति, असेखेन सम्मासमाधिना समन्नागतो होति, असेखेन सम्माञाणेन समन्नागतो होति, असेखाय सम्माविमुत्तिया समन्नागतो होति। एवं खो भिक्खवे भिक्खु असेखो होती ति—

एवमादीसु सुत्तेसु वुत्तनयेनेव वेदितब्बानी ति।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय
कुमारपञ्हवण्णना निट्ठिता।



१ वुच्चति-सी०, स्या०। २. असेक्खो—स्या०।

५. मङ्गलसुत्तवण्णना

(क) निक्खेपप्पयोजनं

इदानि कुमारपञ्हानन्तरं निक्खित्तस्स मङ्गलसुत्तस्स अत्थवण्णनाक्कमो अनुप्पत्तो, तस्स इध निक्खेपप्पयोजनं वत्वा अत्थवण्णनं करिस्साम। सेय्यथिदं[१]? इदञ्हि सुत्तं इमिना अनुक्कमेन भगवता अवुत्तं पि
R. 89 एवायं सरणगमनेहि सासनोतारो, सिक्खापदद्वत्तिसाकारकुमारपञ्हेहि[२] च सीलसमाधिपञ्ञाप्पभेदनयो दस्सितो, सब्बोपेस परममङ्गलभूतो, यतो मङ्गलत्थिकेन एत्थेव अभियोगो कातब्बो, सो चस्स[३] मङ्गलभावो इमिना सुत्तानुसारेन वेदितब्बो ति दस्सनत्थं वुत्तं।

इदमस्स इध निक्खेपप्पयोजनं।

(ख) पठममहासङ्गीतिकथा

B. 76 एवं निक्खित्तस्स पनस्स अत्थवण्णनत्थं अयं मातिका—

"वुत्तं येन यदा यस्मा, चेतं वत्वा इमं विधिं।
एवमिच्चादिपाठस्स, अत्थं नानप्पकारतो॥

वण्णयन्तो समुट्ठानं, वत्वा यं यत्थ मङ्गलं।
ववत्थपेत्वा तं तस्स, मङ्गलत्तं विभावये" ति॥

तत्थ **"वुत्तं येन यदा यस्मा, चेतं वत्वा इमं विधिं"** ति अयं ताव अड्ढगाथा यदिदं "एवं[४] मे[४] सुतं एकं समयं भगवा ...पे०... भगवन्तं गाथाय अज्झभासी" ति, इदं वचनं सन्धाय वुत्ता। इदञ्हि

१. सेय्यथीदं—सी०, स्या०, रो०। २. ० कुमारक ०—रो०।
३. च तस्स—स्या०, रो०। ४-४. एवम्मे—सी०, स्या०।

अनुस्सववसेन वुत्तं, सो च भगवा सयम्भू अनाचरियको, तस्मा नेदं तस्स भगवतो वचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। यतो वत्तब्बमेतं "इदं वचनं केन वुत्तं, कदा, कस्मा च वुत्तं" ति। वुच्चते—आयस्मता आनन्देन वुत्तं, तं च पठममहासङ्गीतिकाले।

पठममहासङ्गीति[1] चेसा सब्बसुत्तनिदानकोसल्लत्थमादितो[2] पभुति[2] एवं वेदितब्बा। धम्मचक्कप्पवत्तनञ्हि आदिं कत्वा याव सुभद्दपरिब्बाजकविनयना कतबुद्धकिच्चे कुसिनारायं उपवत्तने मल्लानं सालवने यमकसालानमन्तरे विसाखपुण्णमदिवसे पच्चूससमये अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुते भगवति लोकनाथे भगवतो परिनिब्बाने सन्निपतितानं सत्तन्नं भिक्खुसतसहस्सानं सङ्घत्थेरो आयस्मा महाकस्सपो सत्ताहपरिनिब्बुते भगवति सुभद्देन वुड्ढपब्बजितेन R. 90 "अलं आवुसो मा सोचित्थ, मा परिदेवित्थ, सुमुत्ता मयं तेन महासमणेन, उपद्दुता च होम[3] 'इदं वो कप्पति इदं वो न कप्पती' ति, इदानि पन मयं यं इच्छिस्साम[4] तं करिस्साम, यं न इच्छिस्साम न[5] तं[5] करिस्सामा" (दी० नि० २.१२५) ति वुत्तवचनमनुस्सरन्तो "ठानं खो पनेतं विज्जति यं पापभिक्खू 'अतीतसत्थुकं पावचनं' ति मञ्ञमाना पक्खं लभित्वा नचिरस्सेव सद्धम्मं अन्तरधापेय्युं। याव च धम्मविनयो तिट्ठति, ताव अनतीतसत्थुकमेव पावचनं होति। यथाह भगवा—

यो वो आनन्द मया धम्मो च विनयो च देसितो पञ्ञत्तो, सो B. 77 वो ममच्चयेन सत्था' (दी० नि० २.११८) ति।

यन्नूनाहं धम्मं च विनयं च सङ्गायेय्यं, यथयिदं सासनं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं।

यञ्चाहं भगवता—

१. ० नाम—स्या०, रो०। २-२. ०मादितोप्पभुति—सी०।
३. मयं होम—सी०, रो०। ४. इच्छाम—रो०।
५-५. तं न—सी०, स्या०, रो०।

'धारेस्ससि पन मे त्वं कस्सप साणानि पंसुकूलानि निब्बसनानी' ति वत्वा चीवरे साधारणपरिभोगेन चेव[१]—

'अहं भिक्खवे यावदे[२] आकङ्खामि विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं[३] झानं[३] उपसम्पज्ज विहरामि, कस्सपो पि भिक्खवे यावदे आकङ्खति विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरती' ति—

एवमादिना नयेन नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञाप्पभेदे उत्तरिमनुस्सधम्मे अत्तना समसमट्ठपनेन च अनुग्गहितो, तस्स मे किमञ्ञं आणण्यं[४] भविस्सति, ननु मं भगवा राजा विय[५] सककवचइस्सरियानुप्पदानेन अत्तनो कुलवंसप्पतिट्ठापकं[६] पुत्तं 'सद्धम्मवंसप्पतिट्ठापको मे अयं भविस्सती' ति मन्त्वा इमिना असाधारणेन अनुग्गहेन
R. 91 अनुग्गहेसी" ति चिन्तयन्तो धम्मविनयसङ्गायनत्थं भिक्खूनं उस्साहं जनेसि । यथाह—

"अथ खो आयस्मा महाकस्सपो भिक्खू आमन्तेसि, एकमिदाहं आवुसो समयं पावाय कुसिनारं[७] अद्धानमग्गप्पटिपन्नो महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं पञ्चमत्तेहि भिक्खुसतेही" (चु० व० ४०६) ति सब्बं **सुभद्दकण्डं** वित्थारेतब्बं । ततो परं आह—

"हन्द मयं आवुसो धम्मं च विनयं च सङ्गायेय्याम, पुरे अधम्मो दिप्पति, धम्मो पटिबाहिय्यति[८], अविनयो दिप्पति, विनयो पटिबाहिय्यति, पुरे अधम्मवादिनो बलवन्तो होन्ति, धम्मवादिनो दुब्बला होन्ति, अविनयवादिनो बलवन्तो होन्ति, विनयवादिनो दुब्बला होन्ती" (चु० व० ४०६) ति ।

१. च—सी०, रो०; स्या० नत्थि ।
२. यावदेव—सी०, स्या०, रो० ।
३-३. पठमज्झानं—सी०, स्या०, रो० ।
४. आणन्यं—सी०; आनण्यं—रो० ।
५. ० चक्कवत्ति—स्या०, रो० ।
६. ० पति ०—सी०, रो० ।
७. कुसिनारायं—सी० ।
८. पटिबाहीयति—सी०, रो० ।

भिक्खू आहंसु "तेन हि भन्ते थेरो भिक्खू उच्चिनतू" B. 78 (चु० व० ४०६) ति । थेरो सकलनवङ्गसत्थुसासनपरियत्तिधरे पुथुज्जनसोतापन्नसकदागामिअनागामिसुक्खविपस्सकखीणासवभिक्खू अनेकसते अनेकसहस्से च वज्जेत्वा तिपिटकसब्बपरियत्तिप्पभेदधरे पटिसम्भिदाप्पत्ते महानुभावे येभुय्येन भगवता एतदग्गं आरोपिते तेविज्जादिभेदे खीणासवभिक्खू येव एकूनपञ्चसते परिग्गहेसि । ये सन्धाय इदं वुत्तं "अथ खो आयस्मा महाकस्सपो एकेनूनपञ्च-अरहन्तसतानि उच्चिनी" ति ।

किस्स पन थेरो एकेनूनमकासी ति । आयस्मतो आनन्दत्थेरस्स ओकासकरणत्थं । तेन हायस्मता[1] सहा पि विना पि न[2] सक्का धम्मसङ्गीति[2] कातुं, सो हायस्मा सेखो सकरणीयो, तस्मा सह न सक्का, यस्मा पनस्स किञ्चि दसबलदेसितं सुत्तगेय्यादिकं[3] भगवतो असम्मुखा पटिग्गहितं[4] नाम नत्थि, तस्मा विना पि[5] न सक्का । यदि एवं सेखो पि समानो धम्मसङ्गीतिया बहूकारत्ता थेरेन उच्चिनितब्बो अस्स, अथ कस्मा न उच्चिनितो ति ? परूपवाद-विवज्जनतो[6] । थेरो हि आयस्मन्ते आनन्दे अतिविय आयस्मन्ते R. 92 आनन्दे[7] अतिविय विस्सत्थो अहोसि[8] । तथा हि नं सिरस्मिं पलितेसु जातेसु पि "न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी[9]" ति कुमारकवादेन ओवदति । सक्यकुलप्पसुतो चायं आयस्मा तथागतस्स भाता चूळपितु[10] पुत्तो[10], तत्र भिक्खू छन्दागमनं विय मञ्ञमाना "बहू असेखपटिसम्भिदाप्पत्ते भिक्खू ठपेत्वा आनन्दं[11] सेखपटिसम्भिदाप्पत्तं

१. आयस्मता—सी० ।
२-२. धम्मसङ्गीति न सक्का—रो०; ० सङ्गीतिं—सी० ।
३. ० गेय्यादि—सी०; ० गेय्यादि—रो० ।
४. पटिग्गहीतं—सी०, रो० ।
५. सी०,स्या०,रो० नत्थि ।
६. ०परिवज्जनतो—रो० ।
७. ० आनन्दो—स्या० ।
८. सी० नत्थि ।
९. मत्तं अञ्ञासि—रो० ।
१०-१०. मातुच्छापुत्तो—रो०; चूल०—सी० ।
११. आनन्दं येव—रो० ।

थेरो उच्चिनी" ति उपवदेय्युं, तं परूपवादं परिविवज्जेन्तो "आनन्दं विना सङ्गीति न सक्का कातुं, भिक्खूनंयेव अनुमतिया गहेस्सामी" ति न उच्चिनि।

अथ अयमेव भिक्खू आनन्दस्सत्थाय थेरं याचिंसु। यथाह—

"भिक्खू आयस्मन्तं महाकस्सपं एतदवोचुं—'अयं भन्ते आयस्मा आनन्दो किञ्चा पि सेखो, अभब्बो छन्दा[1] दोसा मोहा भया अगतिं[1] गन्तुं, बहु चानेन[2] भगवतो सन्तिके धम्मो च
B. 79 विनयो च परियत्तो, तेन हि भन्ते थेरो आयस्मन्तं पि आनन्दं उच्चिनतू" ति। अथ खो आयस्मा महाकस्सपो आयस्मन्तं पि आनन्दं उच्चिनी" ति[3]।

एवं भिक्खूनं अनुमतिया उच्चिनितेन तेनायस्मता सद्धिं[4] पञ्चथेरसतानि अहेसुं।

अथ खो थेरानं भिक्खूनं एतदहोसि "कत्थ नु खो मयं धम्मं च विनयं च सङ्गायेय्यामा" ति। अथ खो थेरानं भिक्खूनं एतदहोसि राजगहं खो महागोचरं[5] पहूतसेनासनं[6], यन्नून मयं राजगहे वस्सं वसन्ता धम्मं च विनयं च सङ्गायेय्याम, नञ्ञे भिक्खू राजगहे वस्सं उपगच्छेय्युं" (चु० व० ४०७) ति। कस्मा पन नेसं[7] एतदहोसि?
R. 93 इदं अम्हाकं थावरकम्मं, कोचि विसभागपुग्गलो सङ्घमज्झं पविसित्वा उक्कोटेय्या ति। अथायस्मा महाकस्सपो ञत्तिदुतियेन कम्मेन सावेसि। तं **सङ्गीतिक्खन्धके**[8] वुत्तनयेनेव ञातब्बं।

अथ तथागतस्स परिनिब्बानतो सत्तसु साधुकीळनदिवसेसु सत्तसु च धातुपूजादिवसेसु वीतिवत्तेसु "अड्ढमासो[9] अतिक्कन्तो, इदानि गिम्हानं दियड्ढो[10] मासो[10] सेसो, उपकट्ठा वस्सूपनायिका" ति मन्त्वा[11]

१. छन्ददोसमोहभयागतिं—सी०। २. च तेन—रो०।
३. रो० नत्थि। ४. सह—रो०।
५. महागोचरसम्पन्नं—सी०। ६. सम्पन्नसेनासनं—स्या०, रो०।
७. एतेसं—स्या०; तेसं—रो०। ८. सङ्गीतिखन्धके—सी०, रो०।
९. अड्ढमासो—रो०। १०-१०. दियड्ढमासो—रो०।
११. वत्वा—स्या०।

महाकस्सपत्थेरो "राजगहं आवुसो गच्छामा" ति उपड्ढं भिक्खुसङ्घं गहेत्वा एकं मग्गं गतो। अनुरुद्धत्थेरो ति[1] उपड्ढं गहेत्वा एकं मग्गं गतो, आनन्दत्थेरो पन[2] भगवतो पत्तचीवरं गहेत्वा भिक्खुसङ्घपरिवुतो सावत्थिं गन्त्वा राजगहं गन्तुकामो येन सावत्थि, तेन चारिकं पक्कामि। आनन्दत्थेरेन गतगतट्ठाने महापरिदेवो अहोसि "भन्ते आनन्द कुहिं सत्थारं ठपेत्वा आगतोसी" ति। अनुपुब्बेन[3] सावत्थिं अनुप्पत्ते थेरे भगवतो परिनिब्बानसमये विय महापरिदेवो अहोसि।

तत्र सुदं आयस्मा आनन्दो अनिच्चतादिपटिसंयुत्ताय[4] धम्मिया[5] कथाय[5] तं महाजनं सञ्ञापेत्वा जेतवनं पविसित्वा दसबलेन वसितगन्धकुटिया द्वारं विवरित्वा मञ्चपीठं निहरित्वा[6] पप्फोटेत्वा गन्धकुटिं सम्मज्जित्वा मिलातमालाकचवरं[7] छड्डेत्वा मञ्चपीठं अतिहरित्वा पुन यथाठाने[8] ठपेत्वा भगवतो ठितकाले[9] करणीयं वत्तं सब्बमकासि। अथ थेरो भगवतो परिनिब्बानतो पभुति ठाननिसज्जबहुलत्ता[10] उस्सन्नधातुकं कायं समस्सासेतुं दुतियदिवसे खीरविरेचनं पिवित्वा विहारेयेव निसीदि, यं सन्धाय सुभेन माणवेन पहितं माणवकं एतदवोच— B. 80

"अकालो खो माणवक[11], अत्थि मे अज्ज भेसज्जमत्ता पीता, R. 94
अप्पेव नाम स्वे पि उपसङ्कमेय्यामा" (दी० नि० १-१६९) ति।

दुतियदिवसे चेतकत्थेरेन पच्छासमणेन गन्त्वा सुभेन माणवेन पुट्ठो दीघनिकाये सुभसुत्तं नाम दसमं सुत्तमभासि[12]।

१. स्या०, रो० नत्थि।
२. स्या०, रो० नत्थि।
३. ० पन—स्या०, रो०।
४. अनिच्चतापटि०—सी०, रो०।
५-५. धम्मकथाय—सी०।
६. नीहरित्वा—सी०, स्या०, रो०।
७. मालाकचवरं—सी०, स्या०, रो०।
८. यथाट्ठाने—सी०, रो०।
९. ०विय—स्या०।
१०. ठाननिसज्जा०—सी०।
११. माणव—सी०।
१२. ० भासी ति—सी०, रो०

अथ खो[1] थेरो जेतवने[2] विहारे[2] खण्डफुल्लप्पटिसङ्खरणं कारापेत्वा उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय राजगहं गतो। तथा महाकस्सपत्थेरो[3] अनुरुद्धत्थेरो च सब्बं भिक्खुसङ्घं गहेत्वा राजगहमेव गता[4]।

तेन खो पन समयेन राजगहे अट्ठारस महाविहारा होन्ति। ते सब्बे पि छड्डितपतितउक्लापा अहेसुं। भगवतो हि परिनिब्बाने सब्बे[5] भिक्खू अत्तनो अत्तनो पत्तचीवरं गहेत्वा विहारे च परिवेणे च छड्डेत्वा अगमंसु। तत्थ थेरा भगवतो वचनपूजनत्थं तित्थियवादपरिमोचनत्थं च "पठमं[6] मासं[6] खण्डफुल्लप्पटिसङ्खरणं[7] करोमा" ति चिन्तेसुं। तित्थिया हि वदेय्युं "समणस्स गोतमस्स सावका सत्थरि ठितेयेव विहारे परिजग्गिंसु, परिनिब्बुते छड्डेसुं" ति। तेसं वादपरिमोचनत्थं च चिन्तेसुं ति वुत्तं[8] होति[8]। वुत्तं पि चेतं—"अथ खो थेरानं भिक्खूनं एतदहोसि—भगवता खो आवुसो खण्डफुल्लप्पटिसङ्खरणं वण्णितं, हन्द मयं आवुसो पठमं मासं खण्डफुल्लप्पटिसङ्खरणं करोम, मज्झिमं मासं सन्निपतित्वा धम्मं च विनयं च सङ्गायिस्सामा" (चु० व० ४०७) ति। B. 80

ते दुतियदिवसे गन्त्वा राजद्वारे अट्ठंसु। अजातसत्तु राजा आगन्त्वा वन्दित्वा "अहं भन्ते किं करोमि, केनत्थो" ति पवारेसि, थेरा अट्ठारसमहाविहारप्पटिसङ्खरणत्थाय[9] हत्थकम्मं पटिवेदेसुं। "साधु भन्ते" ति राजा हत्थकम्मकारके मनुस्से अदासि। थेरा पठमं मासं सब्बविहारे पटिसङ्खरापेसुं। R. 94

B. 81 R. 95 अथ रञ्ञो आरोचेसुं "निट्ठितं महाराज विहारप्पटिसङ्खरणं, इदानि धम्मविनयसङ्गहं करोमा" ति। साधु भन्ते विस्सत्था करोथ,

१. रो० नत्थि। २-२. जेसवनमहाविहारे—रो०। ३. ० चे—स्या०। ४. गतो—स्या०, रो०। ५. ० पि—सी०। ६-६. पठममासं—सी०, स्या०। ७. ० पटि०—रो०, एवमेव। ८-८. सी०, नत्थि। ९. ०पटि०—रो०।

मय्हं आणाचक्कं, तुम्हाकं धम्मचक्कं होतु, आणापेथ भन्ते किं करोमी ति। धम्मसङ्गहं[१] करोन्तानं भिक्खूनं सन्निसज्जट्ठानं महाराजा ति। कत्थ करोमि भन्ते ति। वेभारपब्बतपस्से सत्तपण्णिगुहाद्वारे कातुं युत्तं महाराजा ति। "साधु भन्ते" ति खो राजा अजातसत्तु विस्सकम्मुना[२] निम्मितसदिसं सुविभत्तभित्तिथम्भसोपानं[३] नानाविधमालाकम्मलताकम्मविचित्तं महामण्डपं कारापेत्वा विविधकुसुमदामओलम्बकविनिग्गलन्तचारुवितानं रतनविचित्तमणिकोट्टिमतलमिव च नं नानापुप्फूपहारविचित्तं सुपरिनिट्ठितभूमिकम्मं ब्रह्मविमानसदिसं अलङ्करित्वा तस्मिं महामण्डपे पञ्चसतानं भिक्खूनं अनग्घानि पञ्चकप्पियपच्चत्थरणसतानि पञ्ञापेत्वा दक्खिणभागं निस्साय उत्तराभिमुखं थेरासनं, मण्डपमज्झे पुरत्थाभिमुखं बुद्धस्स भगवतो आसनारहं धम्मासनं पञ्ञापेत्वा दन्तखचितं चित्तबीजनिं[४] चेत्थ[५] ठपेत्वा भिक्खुसङ्घस्स आरोचापेसि "निट्ठितं[६] भन्ते[६] किच्चं" ति।

भिक्खू आयस्मन्तं[७] आनन्दं आहंसु "स्वे आवुसो आनन्द[८] सङ्घसन्निपाता[८], त्वं च सेखो सकरणीयो, तेन ते न युत्तं सन्निपातं गन्तुं, अप्पमत्तो होही" ति। अथ खो आयस्मा आनन्दो "स्वे[९] सन्निपातो, न खो पन मेतं पतिरूपं, य्वाहं सेखो समानो सन्निपातं गच्छेय्यं" ति बहुदेव रत्तिं कायगताय सतिया वीतिनामेत्वा रत्तिया पच्चूससमये चङ्कमा ओरोहित्वा विहारं पविसित्वा निपज्जिस्सामी" ति कायं आवज्जेसि। द्वे पादा भूमितो मुत्ता, अप्पत्तं[१०] च सीसं बिम्बोहनं, एतस्मिं अन्तरे अनुपादाय आसवेहि चित्तं विमुच्चि। अयं R. 96

१. सङ्गहं—स्या०।
२. विस्सुकम्मुना—सी०, स्या०,।
३. ० भित्तित्थम्भ—सी०, स्या०।
४. चेत्थ वीजनिं—रो०।
५. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
६-६. ० मम ०—रो०।
७. रो० नत्थि।
८-८. सन्निपातो—स्या०; सन्निपातो—रो०।
९. स्वेव—स्या०।
१०. असम्पत्तं—स्या०।

हि आयस्मा चङ्कमेन बहि वीतिनामेत्वा विसेसं निब्बत्तेतुं असक्कोन्तो चिन्तेसि "ननु मं भगवा एतदवोच 'कतपुञ्ञोसि त्वं आनन्द, पधानमनुयुञ्ज, खिप्पं होहिसि[1] अनासवो' (दी० नि० २-१११) ति। बुद्धानं च कथादोसो[2] नाम नत्थि, मम पन अच्चारद्धं वीरियं[3], तेन मे चित्तं उद्धच्चाय संवत्तति, हन्दाहं वीरियसमतं योजेमी" ति चङ्कमा ओरोहित्वा पादधोवनट्ठाने ठत्वा पादे धोवित्वा विहारं पविसित्वा मञ्चके निसीदित्वा "थोकं विस्समिस्सामी" ति कायं मञ्चके
B. 82 उपनामेसि[4]। द्वे पादा भूमितो मुत्ता, सीसं च[5] बिम्बोहनमसम्पत्तं, एतस्मिं अन्तरे अनुपादाय आसवेहि चित्तं विमुच्चि[6]। चतुइरियापथविरहितं[7] थेरस्स अरहत्तं। तेन "इमस्मिं सासने अनिसिन्नो[8] अनिपन्नो[8] अट्ठितो अचङ्कमन्तो को[9] भिक्खु अरहत्तं पत्तो" ति वुत्ते "आनन्दत्थेरो" ति वत्तुं वट्टति।

अथ थेरा भिक्खू दुतियदिवसे भत्तकिच्चं कत्वा पत्तचीवरं पटिसामेत्वा धम्मसभायं सन्निपतिता। आनन्दत्थेरो पन अत्तनो अरहत्तप्पत्तिं ञापेतुकामो भिक्खूहि सद्धिं[10] न गतो। भिक्खू यथावुड्ढं अत्तनो अत्तनो पत्तासने[11] निसीदन्ता आनन्दत्थेरस्स[12] आसनं[12] ठपेत्वा निसिन्ना। तत्थ केहिचि[13] "एतमासनं कस्सा" ति वुत्ते आनन्दस्सा ति। आनन्दो पन कुहिं गतो ति। तस्मिं समये थेरो चिन्तेसि "इदानि मय्हं गमनकालो" ति। ततो[14] अत्तनो आनुभावं दस्सेन्तो पथवियं निमुज्जित्वा अत्तनो आसनेयेव अत्तानं दस्सेसि। आकासेनागन्त्वा[15] निसीदी ति पि एके[15]।

१. होहि—सी०। २. कथाद्वे—सी०।
३. विरियं—सी०, स्या०। ४. अपनामेसि—रो०।
५. सी०, रो०—नत्थि। ६. विमुत्तं—स्या०, रो०।
७. चतुरिरिया०—रो०। ८-८. अनिपन्नो अनिसिन्नो—रो०।
९. कोहि—सी०। १०. सह—रो०, स्या०।
११. आसने—स्या०। १२-१२. आनन्दत्थेरस्सासनं—रो०।
१३. केहि चा पि—सी०, रो० नत्थि। १४. सी०, रो० नत्थि।
१५-१५. सी०, रो० नत्थि।

एवं निसिन्ने तस्मिं[१] आयस्मन्ते[२] महाकस्सपत्थेरो भिक्खू आमन्तेसि "आवुसो किं पठमं सङ्गायाम धम्मं वा विनयं वा" ति। भिक्खू[३] आहंसु[३] "भन्ते महाकस्सप **विनयो नाम बुद्धसासनस्स आयु, विनये ठिते सासनं ठितं होति**, तस्मा पठमं विनयं सङ्गायामा" ति। कं धुरं कत्वा विनयो[४] सङ्गायितब्बो[४] ति। आयस्मन्तं[५] उपालिं ति। R. 97 किं* आनन्दो नप्पहोती ति। नो नप्पहोति, अपि च खो पन सम्मासम्बुद्धो धरमानोयेव विनयपरियत्तिं निस्साय आयस्मन्तं उपालिं एतदग्गे ठपेसि "एतदग्गं भिक्खवे मम सावकानं भिक्खूनं विनयधरानं यदिदं उपाली" ति। तस्मा उपालित्थेरं पुच्छित्वा विनयं सङ्गायामा ति*। ततो थेरो विनयं पुच्छनत्थाय अत्तना व अत्तानं सम्मन्नि। उपालित्थेरो पि विस्सज्जनत्थाय सम्मन्नि। तत्रायं* पाळि अथ खो आयस्मा महाकस्सपो सङ्घं ञापेसि—"सुणातु मे आवुसो सङ्घो, यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, अहं उपालिं विनयं पुच्छेय्यं" ति।

आयस्मा पि उपालि सङ्घं ञापेसि— B.83

"सुणातु मे भन्ते सङ्घो, यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, अहं आयस्मता महाकस्सपेन विनयं पुट्ठो विस्सज्जेय्यं" ति।

एवं अत्तना व अत्तानं सम्मन्नित्वा आयस्मा उपालि उट्ठायासना एकंसं चीवरं कत्वा थेरे भिक्खू वन्दित्वा धम्मासने निसीदि दन्तखचितं बीजनिं गहेत्वा, ततो* महाकस्सपत्थेरो उपालित्थेरं

१. आनन्दे—स्या०।
२. आयस्मा—रो०।
३-३. सी० नत्थि।
४-४. स्या०, रो० नत्थि।
५. भिक्खू आहंसु०—सी०।
-. सी०, स्या०, रो० पोत्थकेसु अयं पाठो न दिस्सति।

-. 'सम्मन्नित्वा यथाक्कमं धम्मासने निसीदिंसु।
सब्बं विनयट्ठकथाय वुत्तनयेन गहेतब्बं'
इति रो०, सी० पोत्थकेसु दिस्सति।;
"सम्मन्नित्वा एकंसं चीवरं कत्था यथाक्कमं थेरे भिक्खू वन्दित्वा निसीदि।
सब्बं विनयट्ठकथायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।"—स्या०।

पठमपाराजिकं आदिं कत्वा सब्बं विनयं पुच्छि, उपालित्थेरो[1] विस्सज्जेसि[1]। सब्बे पञ्चसता भिक्खू पठमपाराजिकसिक्खापदं[2] सनिदानं कत्वा एकतो गणसज्झायमकंसु, एवं सेसानि पी ति सब्बं विनयट्ठकथाय गहेतब्बं। एतेन[3] नयेन[3] सउभतोविभङ्गं[4] सखन्धकपरिवारं[4] सकलं विनयपिटकं सङ्गायित्वा उपालित्थेरो दन्तखचितं बीजनिं निक्खिपित्वा धम्मासना ओरोहित्वा वुड्ढे[5] भिक्खू वन्दित्वा अत्तनो पत्तासने निसीदि।

विनयं सङ्गायित्वा धम्मं सङ्गायितुकामो आयस्मा महाकस्सपत्थेरो भिक्खू पुच्छि "धम्मं सङ्गायन्तेहि कं पुग्गलं धुरं कत्वा धम्मो सङ्गायितब्बो" ति। भिक्खू "आनन्दत्थेरं धुरं कत्वा" ति आहंसु।

अथ खो आयस्मा महाकस्सपो सङ्घं ञापेसि—"सुणातु मे आवुसो सङ्घो, यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, अहं आनन्दं धम्मं पुच्छेय्यं" (चु० व०–४०९) ति।

अथ खो आयस्मा आनन्दो सङ्घं ञापेसि—"सुणातु मे भन्ते सङ्घो, यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं, अहं आयस्मता महाकस्सपेन धम्मं पुट्ठो विस्सज्जेय्यं" (चु० व० ४०९) ति।

अथ खो आयस्मा आनन्दो उट्ठायासना एकंसं चीवरं कत्वा थेरे भिक्खू वन्दित्वा धम्मासने निसीदि दन्तखचितं बीजनिं गहेत्वा। अथ *महाकस्सपत्थेरो आनन्दत्थेरं धम्मं पुच्छि* "ब्रह्मजालं आवुसो आनन्द कत्थ भासितं" (चु० व० ४०९) ति? अन्तरा च भन्ते राजगहं अन्तरा च नाळन्दं[6] राजागारके अम्बलट्ठिकायं ति। कं

१-१. स्या० नत्थि।
२. ०पाराजिकं सिक्खापदं—सी०।
३-३. एतेनुपायेन - स्या०।
४-४. ०विभङ्गखन्धक परिवारं—सी०।
५. बुड्ढे—सी०, रो०।
-. महाकस्सपत्थेरो आनन्दत्थेरं पुच्छि। पुच्छाविधानं च सुत्तयेववुत्तं। यथाहं। अथ खो आयस्मा महाकस्सपो आयस्मन्तं आनन्दं एतदवोच—स्या०, रो०।
६. नालन्दं—सी०।

आरब्भा ति ? सुप्पियं च परिब्बाजकं ब्रह्मदत्तं च माणवकं ति। R. 98
अथ खो आयस्मा महाकस्सपो आयस्मन्तं आनन्दं ब्रह्मजालस्स निदानं पि पुच्छि, पुग्गलं पि पुच्छि। सामञ्ञफलं पनावुसो आनन्द कत्थ भासितं ति ? राजगहे भन्ते जीवकम्बवने ति। केन सद्धिं ति ? अजातसत्तुना वेदेहिपुत्तेन सद्धिं ति। अथ खो आयस्मा महाकस्सपो B. 84
आयस्मन्तं आनन्दं सामञ्ञफलस्स निदानं पि पुच्छि, पुग्गलं पि पुच्छि। एतेनेव उपायेन पञ्च पि[१] निकाये पुच्छि, पुट्ठो पुट्ठो आयस्मा आनन्दो विस्सज्जेसि। अयं पठममहासङ्गीति पञ्चहि थेरसतेहि[२] कता[३]—

सतेहि पञ्चहि कता, तेन पञ्चसता ति च।
थेरेहेव कतत्ता च, थेरिका ति पवुच्चती ति[४]॥

इमिस्सा पठममहासङ्गीतिया वत्तमानाय सब्बं[५] दीघनिकायं मज्झिमनिकायादिं च पुच्छित्वा अनुपुब्बेन खुद्दकनिकायं पुच्छन्तेन आयस्मता महाकस्सपेन "मङ्गलसुत्तं आवुसो आनन्द कत्थ भासितं" ति एवमादिवचनावसाने[६] "निदानं पि पुच्छि, पुग्गलं पि पुच्छी" ति एत्थ निदाने पुच्छिते तं निदानं वित्थारेत्वा यथा च भासितं, येन च सुतं, यदा च सुतं[७], येन च भासितं, यत्थ च भासितं, यस्स च भासितं, तं सब्बं कथेतुकामेन "एवं भासितं मया सुतं, एकं समयं सुतं[८], भगवता भासितं, सावत्थियं भासितं, देवताय भासितं" ति एतमत्थं दस्सेन्तेन आयस्मता आनन्देन वुत्तं "एवं मे सुतं एकं समयं

१. स्या०, रो० नत्थि।
२. अरहन्तसतेहि थेरेहि—स्या०, रो०।
३. ० या लोके—स्या०, रो०।
४. रो० नत्थि।
५. सब्बा—रो०।
६. ० वचनपरियोसाने—सी०।
७. भासितं—स्या०।
८. भासितं—स्या०।

भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे[1]
R. 99 ...पे०[1]... भगवन्तं गाथाय अज्झभासी" ति। एवमिदं आयस्मता आनन्देन वुत्तं, तं च पन पठममहासङ्गीतिकाले वुत्तं ति वेदितब्बं।

इदानि "कस्मा वुत्तं" ति एत्थ वुच्चते—यस्मा अयमायस्मा महाकस्सपत्थेरेन निदानं पुट्ठो, तस्मातेन तं* निदानं आदितो[2] पभुति[2] वित्थारेतुं* वुत्तं। यस्मा वा आनन्दं* धम्मासने निसिन्नं वसीगण-परिवुतं दिस्वा एकच्चानं देवतानं चित्तमुप्पन्नं "अयमायस्मा वेदेहमुनि पकतिया पि[3] सक्यकुलमन्वयो[4] भगवतो दायादो, भगवता पि पञ्चक्खत्तुं एतदग्गे निद्दिट्ठो, चतूहि अच्छरियअब्भुतधम्मेहि[5] समन्नागतो, चतुन्नं परिसानं पियो मनापो, इदानि मञ्ञे भगवतो धम्मरज्जदायज्जं पत्वा बुद्धो जातो" ति। तस्मा आयस्मा आनन्दो तासं देवतानं चेतसा चेतोपरिवितक्कमञ्ञाय तं अभूतगुणसम्भावनं अनधिवासेन्तो अत्तनो सावकभावमेव दीपेतुं आह "एवं मे सुतं एकं
B. 85 समयं भगवा...पे०...अज्झभासी" ति। एत्थन्तरे पञ्च अरहन्त-सतानि अनेकानि च देवतासहस्सानि "साधु साधु" ति आयस्मन्तं आनन्दं अभिनन्दिसु, महाभूमिचालो अहोसि, ननाविधकुसुमवस्सं अन्तलिक्खतो पपति, अञ्ञानि च बहूनि अच्छरियानि पातुरहेसुं, बहूनं[6] च देवतानं संवेगो उप्पज्जि "यं अम्हेहि भगवतो सम्मुखा सुतं, इदानेव[7] तं[7] परोक्खा[8] जातं" ति। एवमिदं आयस्मता आनन्देन पठममहासङ्गीतिकाले वदन्तेना पि इमिना कारणेन वुत्तं ति वेदितब्बं। एत्तावता च "वुत्तं येन यदा यस्मा, चेतं वत्वा इमं विधि" ति इमिस्सा अड्ढगाथाय अत्थो पकासितो होति।

१-१. अथ खो अञ्ञातरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेन उपसंकमि, उपसंकमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि एकमन्तं ठिता खो सा देवता०—रो०।

-. स्या०, रो० नत्थि।

२-२. आदितोप्पभुति—सी०।

*. आयस्मन्तं—स्या०, रो०।

३. सी० नत्थि।

४. सक्यकुलन्वये—सी०।

५. अच्छरियब्भुत०—सी०, स्या०, रो०।

६. बहुन्नं—स्या०, रो०।

७-७. तं इदानेव—रो०।

८. परोक्खं—सी०, स्या०, रो०।

एवमिच्चादिपाठवण्णना

इदानि "**एवमिच्चादिपाठस्स, अत्थं नानप्पकारतो**" ति एवमादिमातिकाय[1] सङ्गहितत्थप्पकासनत्थं[1] वुच्चते—**एवं** ति अयं सद्दो R. 100
उपमूपदेससम्पहंसनगरहणवचनसम्पटिग्गहाकार निदस्सनावधारणादीसु अत्थेसु दट्ठब्बो। तथा हेस "एवं जातेन मच्चेन, कत्तब्बं कुसलं बहुं" (खु० नि० १-२३) ति एवमादीसु उपमायं दिस्सति। एवं ते अभिक्कमितब्बं, एवं ते[2] पटिक्कमितब्बं (म० नि०२-१४५) "तिआदीसु[3] उपदेसे। "एवमेतं भगवा, एवमेतं सुगता" (अं० नि० १-१७८) ति एवमादीसु सम्पहंसने। "एवमेवं पनायं वसली यस्मिं वा तस्मिं वा तस्स मुण्डकस्स समणकस्स वण्णं भासती" (सं० नि० १-१६०) ति एवमादीसु गरहणे। "एवं भन्ते ति खो ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं" (म० नि० १-३) ति एवमादीसु वचनसम्पटिग्गहे[4], "एवं ब्या खो अहं भन्ते भगवता धम्मं देसितं आजानामी" (पाचि० १८६) ति एवमादीसु आकारे। एहि त्वं माणवक, येन समणो आनन्दो तेनुपसङ्कम[5], उपसङ्कमित्वा मम वचनेन समणं आनन्दं अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छ 'सुभो माणवो तोदेय्यपुत्तो भवन्तं आनन्दं[6] अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं[6] पुच्छती' ति, एवं च वदेहि साधु किर भवं आनन्दो येन सुभस्स माणवस्स तोदेय्यपुत्तस्स निवेसनं, तेनुपसङ्कमतु अनुकम्पं उपादाया" (दी० नि० १-१६६) ति एवमादीसु निदस्सने। "तं किं मञ्ञथ कालामा, इमे धम्मा कुसला वा अकुसला वा ति। अकुसला भन्ते। सावज्जा वा अनवज्जा वा ति। सावज्जा भन्ते। विञ्ञुगरहिता वा विञ्ञुप्पसत्था वा ति। B. 86

१-१. एवमादिमातिकापदसङ्गहितत्थप्पकासनत्थं—स्या० ।
२. सी०, स्या० नत्थि ।
३. एवमादीसु—स्या०, रो० ।
४. ० सम्पटिच्छने—सी० ।
५. तेनुपसङ्कमि—स्या० ।
६-६. ० पे ०—रो० ।

विञ्ञुगरहिता भन्ते। समत्ता समादिन्ना अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति नो वा, कथं वो[1] एत्थ होती ति। समत्ता भन्ते समादिन्ना अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति, एवं नो एत्थ होती" (अं० नि १-१७५) ति एवमादीसु अवधारणें। इध पन आकारनिदस्सनावधारणेसु दट्ठब्बो।

R. 101 तत्थ आकारत्थेन **एवं**—सद्देन एतमत्थं दीपेति—नानानयनिपुण-मनेकज्झासयसमुट्ठानं अत्थब्यञ्जनसम्पन्नं विविधपाटिहारियं धम्मत्थदेसनापटिवेधगम्भीरं सब्बसत्तानं सकसकभासानुरूपतो[2] सोतपथमागच्छन्तं तस्स भगवतो वचनं सब्बप्पकारेन को समत्थो विञ्ञातुं, सब्बथामेन[3] पन सोतुकामतं जनेत्वा पि[3] एवं मे सुतं, मया पि एकेनाकारेन सुतं ति।

निदस्सनत्थेन "नाहं सयम्भू, न मया इदं सच्छिकतं" ति अत्तानं परिमोचेन्तो "एवं मे सुतं, मया पि[4] एवं सुतं" ति इदानि वत्तब्बं सकलसुत्तं[5] निदस्सेति।

अवधारणत्थेन "एतदग्गं भिक्खवे मम सावकानं भिक्खूनं बहुस्सुतानं यदिदं आनन्दो, गतिमन्तानं, सतिमन्तानं, धितिमन्तानं, उपट्ठाकानं यदिदं आनन्दो" (अं० नि० १.२५) ति एवं भगवता पसत्थभावानुरूपं अत्तनो धारणबलं दस्सेन्तो सत्तानं सोतुकम्यतं जनेति "एवं मे सुतं, तं च खो[6] अत्थतो वा ब्यञ्जनतो वा अनून-मनधिकं, एवमेव, न अञ्ञथा दट्ठब्बं" ति।

मे सद्दो तीसु अत्थेसु दिस्सति। तथा हिस्स "गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं[7]" (खु० नि० १.२८२) ति एवमादीसु मया ति अत्थो। "साधु मे भन्ते भगवा सङ्खित्तेन धम्मं देसेतू" ति एवमादीसु मय्हं ति अत्थो। "धम्मदायादा मे भिक्खवे भवथा" (म० नि० १-८) ति

१. वा—स्या०।
२. ०भासानुरूपं—सी०, रो०।
३-३. किं पन—सी०, स्या०, रो०।
४. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
५. सकलं सुत्तं—सी०।
६. रो० नत्थि।
७, अभोजनीयं- सी०।

एवमादीसु ममा ति अत्थो। इध पन "मया सुतं" ति[1] च[1] "मम
सुतं" ति च अत्थद्वये युज्जति[2]।

सुतं ति अयं सुतसद्दो सउपसग्गो अनुपसग्गो च गमनख्यात[3]-
रागाभिभूतूपचितानुयोगसोतविञ्ञेय्यसोतद्वारविञ्ञातादिअनेकत्थप्प-
भेदो। तथा हिस्स "सेनाय पसुतो" ति एवमादीसु गच्छन्तो ति B. 87
अत्थो। "सुतधम्मस्स पस्सतो" (म० व० ५) ति एवमादीसु
ख्यातधम्मस्सा ति अत्थो। "अवस्सुता[4] अवस्सुतस्सा[4]"
(पाचि० २८६, ३११) ति एवमादीसु रागाभिभूता[5] रागाभिभूतस्सा
ति अत्थो। "तुम्हेहि पुञ्ञं पसुतं अनप्पकं" ति एवमादीसु[6] उपचितं
ति अत्थो। "ये झानप्पसुता[7] धीरा" (खु० नि० १-३४) ति R. 102
एवमादीसु झानानुयुत्ता ति अत्थो। "दिट्ठं सुतं मुतं"
(अं० नि० २-२६) ति एवमादीसु सोतविञ्ञेय्यं ति अत्थो।
"सुतधरो सुतसन्निचयो" (अं० नि० २-२५) ति एवमादीसु
सोतद्वारानुसारविञ्ञातधरो[8] ति अत्थो। इध पन सुतं ति सोत-
विञ्ञाणपुब्बङ्गमाय[9] विञ्ञाणवीथिया[9] उपधारितं ति वा उपधारणं
ति वा ति अत्थो। तत्थ यदा मे-सद्दस्स मया ति अत्थो, तदा "एवं
मया सुतं, सोतविञ्ञाणपुब्बङ्गमाय विञ्ञाणवीथिया उपधारितं"
ति युज्जति। यदा मे-सद्दस्स ममा ति अत्थो, तदा "एवं मम[10] सुतं
सोतविञ्ञाणपुब्बङ्गमाय विञ्ञाणवीथिया उपधारणं" ति युज्जति।

एवमेतेसु तीसु पदेसु एवं ति सोतविञ्ञाणकिच्चनिदस्सनं[11]।
मे ति वुत्तविञ्ञाणसमङ्गीपुग्गलनिदस्सनं। सुतं ति अस्सवन-
भावप्पटिक्खेपतो[12] अनूनानधिकाविपरीतग्गहणनिदस्सनं। तथा एवं

१-१. स्या०, रो० नत्थि। २. वत्तति—सी०, स्या०, रो०।
३. ०ख्याति०—सी०, स्या०, रो०। ४-४. अवस्सुतावस्सुतस्सा—सी०।
५. सी०, स्या०, रो० नत्थि। ६. आदिसु—सी०।
७. झानपसुता—सी०, स्या०, रो०। ८. सोतद्वाराविञ्ञातधरो—रो०।
९-९. सोतविञ्ञाणवीथिया—सी०। १०. मे—सी०।
११. सोतविञ्ञाणादिविञ्ञाणकिच्चनिदस्सनं—स्या०, रो०। १२. सी० नत्थि।

ति सवनादिचित्तानं नानप्पकारेन आरम्मणे पवत्तभावनिदस्सनं। मे ति अत्तनिदस्सनं। सुतं ति धम्मनिदस्सनं।

तथा एवं ति निद्दिसितब्बधम्मनिदस्सनं[1]। मे ति पुग्गलनिदस्सनं। सुतं ति पुग्गलकिच्चनिदस्सनं।

तथा एवं ति वीथिचित्तानं[2] आकारपञ्ञत्तिवसेन[3] नानप्पकारनिद्देसो[4]। मे ति कत्तारनिद्देसो। सुतं ति विसयनिद्देसो।

तथा एवं ति पुग्गलकिच्चनिद्देसो। सुतं ति विञ्ञाणकिच्चनिद्देसो। मे ति उभयकिच्चयुत्तपुग्गलनिद्देसो।

तथा एवं ति भावनिद्देसो। मे ति पुग्गलनिद्देसो। सुतं ति तस्स किच्चनिद्देसो[5]।

तत्थ एवं ति च मे ति च सच्चिकट्ठपरमत्थवसेन अविज्जमानपञ्ञत्ति। सुतं ति विज्जमानपञ्ञत्ति। तथा एवं ति च मे ति च
B. 88 तं तं उपादाय वत्तब्बतो उपादापञ्ञत्ति[6]। सुतं ति दिट्ठादीनि
R. 103 उपनिधाय वत्तब्बतो उपनिधापञ्ञत्ति[7]।

एत्थ च एवं ति वचनेन असम्मोहं दीपेति, सुतं ति वचनेन सुतस्स असम्मोसं। तथा एवं ति वचनेन योनिसोमनसिकारं दीपेति अयोनिसो मनसिकरोतो नानप्पकारप्पटिवेधाभावतो। सुतं ति वचनेन अविक्खेपं दीपेति[8] विक्खित्तचित्तस्स[9] सवनाभावतो। तथा हि विक्खित्तचित्तो[10] पुग्गलो सब्बसम्पत्तिया वुच्चमानो पि "न मया सुतं, पुन भणथा"[11] ति भणति[12]। योनिसो मनसिकारेन चेत्थ अत्तसम्मापणिधिं पुब्बे कतपुञ्ञतं च[13] साधेति, अविक्खेपेन सद्धम्मस्सवनं सप्पुरिसूपनिस्सयं[14] च। एवं ति च इमिना भद्दकेन

१. निद्दिसितब्बनिदस्सनं—सी०, स्या०, रो०।
२. चित्तानं—सी०।
३. ० पण्णत्ति ०—सी०।
४. नानाकारनिद्देसो—रो०।
५. विञ्ञाणकिच्चनिद्देसो—स्या०।
६. उपादाय पञ्ञत्ति—सी०, स्या०, रो०।
७. उपनिधायपञ्ञत्ति—सी०, रो०।
८. रो० नत्थि।
९. विक्खित्तस्स—रो०।
१०. विक्खित्तो—स्या०।
११. भणितब्बं—सी०, स्या०, रो०।
१२. वदति—रो०।
१३. रो० नत्थि।
१४. सप्पुरिसूपस्सयं—सी०, रो०।

आकारेन पच्छिमचक्कद्वयसम्पत्ति अत्तनो दीपेति, सुतं ति सवनयोगेन पुरिमचक्कद्वयसम्पत्ति। तथा आसयसुद्धि पयोगसुद्धि च, ताय च आसयसुद्धिया अधिगमब्यत्ति[1], पयोगसुद्धिया आगमब्यत्ति।

एवं ति च इमिना नानप्पकारपटिवेधदीपकेन वचनेन अत्तनो अत्थपटिभानपटिसम्भिदासम्पदं दीपेति। सुतं ति इमिना सोतब्बभेदपटिवेधदीपकेन धम्मनिरुत्तिपटिसम्भिदासम्पदं दीपेति[2]। एवं ति च इदं योनिसो मनसिकारदीपकं वचनं भणन्तो "एते मया धम्मा मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा" ति ञापेति। सुतं ति इदं सवनयोगदीपकवचनं[3] भणन्तो "बहू मया धम्मा सुता धाता[4] वचसा परिचिता" ति ञापेति। तदुभयेन पि[5] अत्थब्यञ्जनपारिपूरिं दीपेन्तो सवने आदरं जनेति।

एवं मे सुतं ति इमिना पन सकलेन पि वचनेन आयस्मा आनन्दो तथागतप्पवेदितं धम्मं अत्तनो अदहन्तो असप्पुरिसभूमिं, अतिक्कमति, सावकत्तं पटिजानन्तो सप्पुरिसभूमिं ओक्कमति। तथा असद्धम्मा चित्तं वुट्ठापेति[6], सद्धम्मे चित्तं पतिट्ठापेति। "केवलं सुतमेवेतं[7] मया, तस्सेव तु[8] भगवतो वचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्सा" R. 104
ति च दीपेन्तो अत्तानं परिमोचेति, सत्थारं अपदिसति[9], जिनवचनं अप्पेति, धम्मनेत्तिं पतिट्ठापेति।

अपि च "एवं मे सुतं" ति अत्तना उप्पादितभावं अप्पटिजानन्तो पुरिमस्सवनं[10] विवरन्तो सम्मुखा पटिग्गहितमिदं मया तस्स भगवतो

१. ०ब्यत्ति—रो०, एवमेव।
२. स्या०, रो० नत्थि।
३. ० दीपकं वचनं—रो०।
४. धता—सी०, स्या०, रो०।
५. सी०, रो० नत्थि।
६. उट्ठा ०—सी०।
७. सुतमेव तं—सी०, रो०।
८. पन—सी०, स्या०, रो०।
९. अपदिस्सति—सी०, स्या०।
१०. पुरिमसवणं—सी०, स्या०; पुरिमसवनं—रो०।

B. 89 चतुवेसारज्जविसारदस्स दसबलधरस्स आसभट्ठानट्ठायिनो[1] सीहनाद-नादिनो[2] सब्बसत्तुत्तमस्स धम्मिस्सरस्स धम्मराजस्स धम्माधिपतिनो धम्मदीपस्स धम्मप्पटिसरणस्स[3] सद्धम्मवरचक्कवत्तिनो सम्मा-सम्बुद्धस्स, न एत्थ सत्थे वा धम्मे वा पदे वा ब्यञ्जने वा कङ्खा वा विमति वा कातब्बा" ति सब्बदेवमनुस्सानं इमस्मिं धम्मे अस्सद्धियं विनासेति, सद्धासम्पदं उप्पादेती[4] ति[4] वेदितब्बो[5]। होति चेत्थ—

"विनासयति अस्सद्धं, सद्धं वड्ढेति सासने।
एवं मे सुतमिच्चेवं, वदं गोतमसावको" ति॥

एकं ति गणनपरिच्छेदनिद्देसो। **समयं** ति परिच्छिन्ननिद्देसो। **एकं समयं** ति अनियमितपरिदीपनं। तत्थ समयसद्दो—

समवाये खणे काले, समूहे हेतुदिट्ठिसु।
पटिलाभे पहाने च, पटिवेधे च दिस्सति[6]॥

तथा हिस्स "अप्पेव नाम स्वे ति उपसङ्कमेय्याम कालं च समयं च उपादाया" (दी० नि० १-१६९) ति एवमादीसु समवायो अत्थो। "एको व[7] खो भिक्खवे खणो च समयो च ब्रह्मचरियवासाया" (अं० नि० ३-४२९) ति एवमादीसु खणो। "उण्हसमयो परिळाहसमयो" ति एवमादीसु कालो। महासमयो पवनस्मिं" (दी० नि० २-१८९) ति एवमादीसु समूहो। "समयो पि खो ते भद्दालि अप्पटिविद्धो अहोसि, भगवा[8] खो सावत्थियं विहरति, सो
R.105 पि मं जानिस्सति 'भद्दालि नाम भिक्खु सत्थुसासने सिक्खाय अपरिपूरकारी' ति, अयं पि खो ते भद्दालि समयो अप्पटिविद्धो अहोसी" (म० नि० २-१२१) ति एवमादीसु हेतु। "तेन खो पन समयेन उग्गाहमानो परिब्बाजको समणमुण्डिकापुत्तो समयप्पवादके

१. आसभणठानट्ठायिनो—रो०। २. सीहनादं नदिनो—स्या०, रो०।
३. धम्मसरणस्स—सी०, स्या०, रो०। ४-४. उप्पादेति—सी०।
५. सी०, रो० नत्थि। ६. दिस्सतीति—सी०।
७. च—स्या०। ८. पि—स्या०।

तिन्दुकाचीरे एकसालके मल्लिकाय आरामे पटिवसती" (म० नि० २-२४७) ति एवमादीसु दिट्ठि ।

"दिट्ठे[1] धम्मे च[2] यो अत्थो, यो चत्थो सम्परायिको ।
अत्थभिसमया धीरो, पण्डितो ति पवुच्चती"
(सं० नि० १-८६) ति—

एवमादीसु पटिलाभो । "सम्मा मानाभिसमया अन्तमकासि दुक्खस्सा" (अं० नि० १-१२४) ति एवमादीसु पहानं । "दुक्खस्स पीळनट्ठो सङ्खतट्ठो सन्तापट्ठो विपरिणामट्ठो अभिसमयट्ठो" B. 90 (पटि० म० ३५१) ति एवमादीसु पटिवेधो । इध पनस्स कालो अत्थो । तेन एकं समयं ति संवच्छरउतुमासअड्ढ[3]मासरत्तिदिव[4]-पुब्बण्ह[5]मज्झन्हिकसायन्हपठममज्झिमपच्छिमयाममुहुत्तादीसु[5] काल-ख्येसु[6] समयेसु एकं समयं ति[7] दीपेति[7] ।

ये वा[8] इमे गब्भोक्कन्तिसमयो जातिसमयो संवेगसमयो अभिनिक्खमनसमयो दुक्करकारिकसमयो मारविजयसमयो अभिसम्बोधिसमयो दिट्ठधम्मसुखविहारसमयो देसनासमयो परिनिब्बानसमयो ति एवमादयो भगवतो देवमनुस्सेसु अतिविय पकासा अनेककालख्या[9] एव समया, तेसु समयेसु देसनासमयसङ्खातं एकं समयं ति वुत्तं होति । यो चायं ञाणकरुणाकिच्चसमयेसु करुणाकिच्चसमयो, अत्तहितपरहितप्पटिपत्तिसमयेसु[10] परहितप्पटिपत्तिसमयो, सन्निपतितानं करणीयद्वयसमयेसु धम्मीकथासमयो, देसनापटिपत्तिसमयेसु देसनासमयो, तेसु पि समयेसु यं किञ्चि सन्धाय "एकं समयं" ति वुत्तं होति ।

१. दिट्ठेव—सी०, रो० ।
२. सी०, रो० नत्थि ।
३. ०अद्ध०—सी०, रो० ।
४. ०रत्तिन्दिव०—सी० स्या०, रो० ।
५-५. ०अपरण्हपठम मज्झिमपच्छिमयाममुहुत्तादिसु—रो० ।
६. कालाख्येसु—सी०, स्या०, रो० ।
७-७. स्या०, रो० नत्थि ।
८. च—स्या० ।
९. अनेके कालाख्या—सी०; कालाक्खया—स्या० ।
१०. ०पटि०—रो०, एवमेव ।

R. 106 एत्थाह—अथ कस्मा यथा अभिधम्मे "यस्मिं समये कामावचरं" ति च इतो अञ्ञेसु सुत्तपदेसु "यस्मिं समये भिक्खवे भिक्खु विविच्चेव कामेही" (अं० नि० २-२२७) ति च भुम्मवचनेन निद्देसो कतो, विनये च "तेन समयेन बुद्धो भगवा" (पारा० ३) ति करणवचनेन, तथा अकत्वा इध "एकं समयं" ति उपयोगवचननिद्देसो कतो ति । तत्थ[1] तथा, इध च अञ्ञथा अत्थसम्भवतो । तत्थ हि अभिधम्मे इतो अञ्ञेसु सुत्तपदेसु च अधिकरणत्थो भावेनभावलक्खणत्थो च सम्भवति । अधिकरणञ्हि कालत्थो[2] समूहत्थो[2] च समयो, तत्थ वुत्तानं फस्सादिधम्मानं खणसमवायहेतुसङ्खातस्स च समयस्स भावेन तेसं भावो लक्खीयति, तस्मा तदत्थजोतनत्थं तत्थ भुम्मवचननिद्देसो कतो ।

विनये च[3] हेतवत्थो करणत्थो च सम्भवति । यो हि सो सिक्खापदपञ्ञत्तिसमयो सारिपुत्तादीहि पि दुब्बिञ्ञेय्यो, तेन समयेन हेतुभूतेन करणभूतेन च सिक्खापदानि पञ्ञपेन्तो[4] सिक्खापदपञ्ञत्तिहेतुं च अपेक्खमानो[5] भगवा तत्थ तत्थ विहासि, तस्मा तदत्थजोतनत्थं तत्थ करणवचननिद्देसो[6] कतो ।

B. 91 इध पन अञ्ञस्मिं च एवंजातिके[7] सुत्तन्तपाठे अच्चन्तसंयोगत्थो सम्भवति । यञ्हि समयं भगवा इमं अञ्ञं वा सुत्तन्तं देसेसि, अच्चन्तमेव तं समयं करुणाविहारेन विहासि । तस्मा तदत्थजोतनत्थं इध उपयोगवचननिद्देसो कतो ति विञ्ञेय्यो । होति चेत्थ—

"तं तं अत्थमपेक्खित्वा[8], भुम्मेन करणेन च ।
अञ्ञत्र समयो वुत्तो, उपयोगेन सो इधा" ति ॥

१. वुच्चते०—स्या० ।
२-२. कालक्ख्यो समूहाख्यो—स्या०, रो० ।
३. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
४. पञ्ञापेन्तो—सी०, रो० ।
५. अवेक्खमानो—सी० ।
६. करणवचनेन निद्देसो—सी० ।
७. एवं जातके—स्या० ।
८. ० वेक्खित्वा—सी० ।

भगवा ति गुणविसिट्ठसत्तुत्तमगरुगारवाधिवचनमेतं। यथाह—

"भगवा ति वचनं सेट्ठं, भगवा ति वचनमुत्तमं। R. 107
गरु गारवयुत्तो सो, भगवा तेन वुच्चती" ति॥

चतुब्बिधञ्हि नामं आवत्थिकं लिङ्गिकं नेमित्तकं[1] अधिच्चसमुप्पन्नं ति। अधिच्चसमुप्पन्नं नाम "यदिच्छकं[2]" ति वुत्तं होति। तत्थ वच्छो दम्मो बलिबद्धो[3] ति एवमादि आवत्थिकं दण्डी छत्ती सिखी करी ति एवमादि लिङ्गिकं, तेविज्जो छळभिञ्ञो ति एवमादि नेमित्तकं, सिरिवड्ढको धनवड्ढको ति एवमादि वचनत्थमनपेक्खित्वा पवत्तं अधिच्चसमुप्पन्नं। इदं पन भगवा ति नामं गुणनेमित्तकं, न महामायाय, न सुद्धोदनमहाराजेन, न असीतिया[4] ञातिसहस्सेहि कतं, न सक्कसन्तुसितादीहि देवताविसेसेहि कतं[5]। यथाह आयस्मा सारिपुत्तत्थेरो "भगवा ति नेतं नामं मातरा कतं ...पे०... सच्छिका पञ्ञत्ति यदिदं भगवा" ति।

यं गुणनेमित्तकं[6] चेतं नामं, तेसं गुणानं पकासनत्थं इमं गाथं वदन्ति—

"भगी भजी भागी विभत्तवा इति;
अकासि भग्गन्ति गरूति भाग्यवा।
बहूहि ञायेहि सुभावितत्तनो,
भवन्तगो सो भगवा ति वुच्चती" ति॥

निद्देसादीसु वुत्तनयेनेव चस्स अत्थो दट्ठब्बो।

अयं पन अपरो परियायो—

"भाग्यवा भग्गवा युत्तो, भगेहि च विभत्तवा।
भत्तवा वन्तगमनो, भवेसु भगवा ततो ति॥

१. नेमित्तिकं—सी०, स्या०, रो०। २. यादिच्छिकं—स्या०, रो०।
३. बलिवद्दो—सी०, स्या०। ४ असीति—सी०, स्या०।
५. स्या० नत्थि। ६. ० नेमित्तिकं—सी०, स्या०, रो०।

B. 92 तत्थ "वण्णागमो वण्णविपरियाया[१]" ति एवं[२] निरुत्तिलक्खणं गहेत्वा सद्दनयेन वा पिसोदरादिपक्खेपलक्खणं गहेत्वा यस्मा
R. 108 लोकियलोकुत्तरसुखाभिनिब्बत्तकं दानसीलादिपारप्पत्तं[३] भाग्यमस्स अत्थि, तस्मा भाग्यवा ति वत्तब्बे भगवा ति वुच्चती ति ञातब्बं। यस्मा पन लोभदोसमोहविपरीतमनसिकार-अहिरिकानोत्तप्प-कोधूपनाह-मक्खपलासइस्सामच्छरिय मायासाठेय्यथम्भसारम्भमानातिमान[४]मदपमादतण्हाविज्जा[४]तिविधाकुसलमूलदुच्चरितसङ्किलेसमलविसमसञ्ञावितक्कपपञ्चचतुब्बिधविपरियेसआसवगन्थओघयोगअगतितण्हुपादान[५] पञ्चचेतोखिलविनिबन्धनीवरणाभिनन्दनछविवादमूलतण्हाकायसत्तानुसयअट्ठमिच्छत्तनवतण्हामूलक दसाकुसलकम्मपथ द्वासट्ठिदिट्ठिगतअट्ठसततण्हाविचरितप्पभेदसब्बदरथपरिळाहकिलेससतसहस्सानि, सङ्खेपतो वा पञ्च[६] किलेसक्खन्धअभिसङ्खारमच्चुदेवपुत्तमारे अभञ्जि, तस्मा **भग्गत्ता एतेसं[७] परिस्सयानं[८] भग्गवा** ति वत्तब्बे **भगवा** ति वुच्चति। आह चेत्थ—

"भग्गरागो भग्गदोसो, भग्गमोहो अनासवो।
भग्गास्स पापका धम्मा, भगवा तेन वुच्चती" ति॥

भाग्यवताय चस्स सतपुञ्ञलक्खणधरस्स रूपकायसम्पत्ति दीपिता होति, भग्गदोसताय[९] धम्मकायसम्पत्ति। तथा लोकियसरिक्खकानं[१०] बहुमानभावो[११], गहट्ठपब्बजितेहि अभिगमनीयता। तथा अभिगतानं च नेसं कायचित्तदुक्खापनयने पटिबलभावो, आमिसदानधम्मदानेहि[१२] उपकारिता। लोकियलोकुत्तरसुखेहि च संयोजनसमत्थता दीपिता होति।

१. वण्णविकारलोपो—रो०।
२. एतं—रो०।
३. ० पारमिता सागर०—रो०।
४-४. ०मदप्पमादतण्हा विचरित०—सी०।
५. तण्हुप्पादूपादान—सी०।
६. चत्तारो—स्या०।
७. ० दोसानं—सी०, रो०।
८. रो० नत्थि।
९. ० पि—स्या०।
१०. ० परिक्खकानं—रो०।
११. बहुमतभावो—रो०।
१२. तथा०—स्या०, रो०।

यस्मा च लोके इस्सरियधम्मयससिरिकामपयत्तेसु[1] छसु धम्मेसु
भगसद्दो वत्तति, परमञ्चस्स सकचित्ते इस्सरियं, अणिमालघिमादिकं[2]
वा लोकियसम्मतं सब्बाकारपरिपूरं अत्थि, तथा लोकुत्तरो धम्मो, R. 109
लोकत्तयब्यापको यथाभुच्चगुणाधिगतो[3] अतिविय परिसुद्धो यसो,
रूपकायदस्सनब्यावटजननयनमनप्पसादजननसमत्था सब्बाकारपरिपूरा
सब्बङ्गपच्चङ्गसिरी, यं यं अनेन इच्छितं पत्थितं अत्तहितं[4] परहितं
वा, तस्स तस्स तथेव अभिनिप्फन्नत्ता इच्छितत्थनिप्फत्तिसञ्ञितो
कामो, सब्बलोकगरुभावप्पत्तिहेतुभूतो सम्मावायामसङ्खातो पयत्तो[5]
च अत्थि, तस्मा इमेहि भगेहि युत्तत्ता पि **भगा** अस्स **सन्ती** ति
इमिना अत्थेन "भगवा" ति वुच्चति।

यस्मा पन कुसलादिभेदेहि[6] सब्बधम्मे, खन्धायतनधातु[7]सच्च- B. 93
इन्द्रिय[7]पटिच्चसमुप्पादादीहि वा कुसलादिधम्मे, पीळनसङ्खतसन्ता-
पविपरिणामट्ठेन वा दुक्खमरियसच्चं, आयूहननिदानसंयोगपलिबोध-
ट्ठेन[8] समुदयं, निस्सरणविवेकासङ्खतअमतट्ठेन निरोधं, निय्यानिक-
हेतुदस्सनाधिपतेय्यट्ठेन मग्गं विभत्तवा, विभजित्वा विवरित्वा
देसितवा, ति वुत्तं होति, तस्मा **विभत्तवा** ति वत्तब्बे "भगवा" ति
वुच्चति।

यस्मा च एस दिब्बब्रह्मअरियविहारे कायचित्तउपधिविवेके
सुञ्ञताप्पणिहितानिमित्तविमोक्खे[9] अञ्ञे च लोकियलोकुत्तरे[10]
उत्तरिमनुस्सधम्मे भजि सेवि बहुलमकासि, तस्मा **भत्तवा** ति वत्तब्बे
"भगवा" ति वुच्चति।

१. ०कामप्पयतनेसु—सी०, रो०।
२. अणिमालग्घिमादिकं—स्या०; अणिमल०—सी०, रो०।
३. यथाभूत०—रो०।
४. ० वा—स्या०।
५. पयतनो—सी०, रो०।
६. कुसलादीहि भेदेहि—सी०।
७-७. ० सद्धिन्द्रिय०—रो०।
८. ० पळि ०—सी०।
९. सुञ्ञातापणिहिता०—रो०।
१०. ०लोकुत्तर—सी०, रो०।

यस्मा पन तीसु भवेसु तण्हासङ्खातं गमनं *अनेन वन्तं*, तस्मा **भवेसु वन्तगमनो** ति वत्तब्बे भवसद्दतो भकारं गमनसद्दतो गकारं वन्तसद्दतो वकारं च दीघं कत्वा आदाय "भगवा" ति वुच्चति, यथा लोके "मेहनस्स खस्स माला" ति वत्तब्बे "मेखला" ति।

R.110 एत्तावता चेत्थ **एवं मे सुतं** ति वचनेन यथासुतं यथापरियत्तं[१] धम्मं[२] देसेन्तो पच्चक्खं कत्वा भगवतो धम्मसरीरं पकासेति, तेन "नयिदं अतीतसत्थुकं[३] पावचनं, अयं वो सत्था" (सु० वि० १-४४) ति भगवतो अदस्सनेन उक्कण्ठितजनं समस्सासे ति[४]।

एकं समयं भगवा ति वचनेन तस्मिं समये भगवतो अविज्जमानभावं दस्सेन्तो रूपकायपरिनिब्बानं दस्सेति। तेन "एवंविधस्स इमस्स अरियधम्मस्स देसेता[५] दसबलधरो वजिरसङ्खातकायो सो पि भगवा परिनिब्बुतो, तत्थ केनञ्ञेन जीविते[६] आसा[६] जनेतब्बा" ति जीवितमदमत्तं[७] जनं[७] संवेजेति, सद्धम्मे चस्स उस्साहं जनेति।

एवं ति च भणन्तो देसनासम्पत्तिं निद्दिसति, **मे सुतं** ति सावकसम्पत्तिं,[८] **एकं समयं** ति कालसम्पत्तिं, **भगवा** ति देसकसम्पत्तिं।

सावत्थियं विहरती ति एत्थ **सावत्थी** ति सवत्थस्स[९] इसिनो निवासट्ठानभूतं नगरं,[१०] यथा काकन्दी माकन्दी ति, एवं इत्थिलिङ्गवसेन सावत्थी ति वुच्चति, एवं अक्खरचिन्तका। अट्ठकथाचरिया B. 94 पन भणन्ति "यं किञ्चि मनुस्सानं उपभोगपरिभोगं सब्बमेत्थ अत्थी" ति सावत्थी। सत्थसमायोगे च "किं भण्डमत्थी" ति पुच्छिते "सब्बमत्थी" ति वचनमुपादाय सावत्थी।

-. गमनमनेन—सी०, स्या०।
१. रो० नत्थि।
२. स्या० नत्थि।
३. अतिक्कन्तसत्थुकं—सी०, स्या०, रो०।
४. समस्सासेसि—स्या०; समस्सासेति—रो०।
५. देसको—सी०, स्या०, रो०।
६-६. जीवितासा—स्या०, रो०।
७-७. जीवितमदमत्तजनं—रो०।
८. ० सवनसम्पत्ति च—स्या०।
९. सावत्थस्स—रो०।
१०. नगरी—रो०।

"सब्बदा सब्बूपकरणं, सावत्थियं समोहितं।
तस्मा सब्बमुपादाय, सावत्थी ति पवुच्चति॥
कोसलानं पुरं रम्मं, दस्सनेय्यं[1] मनोरमं।
दसहि सद्देहि अविवित्तं, अन्नपानसमायुतं॥
वुड्ढिं वेपुल्लतं पत्तं, इद्धं फीतं मनोरमं। R.111
आळकमन्दा व देवानं, सावत्थिपुरमुत्तमं" ति॥

तस्सं **सावत्थियं**। समीपत्थे भुम्मवचनं।

विहरती ति अविसेसेन[2] इरियापथदिब्बब्रह्मअरियविहारेसु अञ्ञतरविहारसमङ्गिपरिदीपनमेतं[3]। इध पन ठानगमनासन-सयनप्पभेदेसु इरियापथेसु अञ्ञतरइरियापथसमायोगपरिदीपनं, तेन ठितो पि गच्छन्तो पि निसिन्नो पि सयानो पि भगवा विहरतिच्चेव वेदितब्बो। सो हि एकं इरियापथबाधनं अपरेन इरियापथेन विच्छिन्दित्वा अपरिपतन्तं अत्तभावं हरति पवत्तेति। तस्मा विहरती ति वुच्चति (सु० वि० १-१५२)।

जेतवने ति एत्थ अत्तनो पच्चत्थिकजनं जिनाती ति जेतो, रञ्ञा वा अत्तनो पच्चत्थिकजने जिते जातो ति जेतो, मङ्गलकम्यताय वा तस्स एवं नाममेव[4] कतं ति पि[5] जेतो। वनयती ति वनं, अत्तसम्पदाय सत्तानं भत्तिं[6] कारेति[7], अत्तनि सिनेहं उप्पादेती ति अत्थो। वनुते[8] इति वा वनं, नानाविधकुसुमगन्धसम्मोदमत्तकोकिलादि-विहङ्गविरुतेहि[9] मन्दमालुत[10]चलितरुक्खसाखाविटपपुप्फफलपल्लव-पलासेहि[11] च "एथ मं परिभुञ्जथा" ति पाणिनो याचति विया

१. दस्सनीयं—स्या०।
२. विसेसेन—सी०।
३. ० परिदीपन वचनमेतं—स्या०, रो०।
४. नायं—सी०।
५. स्या०, रो० नत्थि।
६. भत्ति—स्या०।
७. करोति—सी०, स्या०, रो०।
८. वनते—रो०।
९. विहग ०—सी०, रो०।
१०. मन्दमारुत ०—सी०, रो०।
११. ० विटपफल ०—सी०, रो०।

ति अत्थो। **जेतस्स वनं जेतवनं**। तं हि जेतेन राजकुमारेन रोपितं संवड्ढितं परिपालितं, सो च तस्स सामी अहोसि, तस्मा जेतवनं ति वुच्चति। तस्मिं **जेतवने**।

अनाथपिण्डिकस्स आरामे ति एत्थ सुदत्तो नाम सो गहपति मातापितूहि कतनामवसेन, सब्बकामसमिद्धिताय[1] तु[2] विगतमल-
R. 112 मच्छेरताय करुणादिगुणसमङ्गिताय च निच्चकालं अनाथानं पिण्डं
B. 95 अदासि, तेन अनाथपिण्डिको ति सङ्ख्यं[3] गतो। आरमन्ति[4] एत्थ पाणिनो, विसेसेन वा पब्बजिता ति[5] आरामो, तस्स पुप्फफलपल्लवादिसोभनताय नातिदूरनाच्चासन्नतादिपञ्चविधसेनासनङ्गसम्पत्तिया च ततो ततो आगम्म रमन्ति अभिरमन्ति अनुक्कण्ठिता हुत्वा निवसन्ती ति अत्थो। वुत्तप्पकाराय वा सम्पत्तिया तत्थ तत्थ गते पि अत्तनो[6] अब्भन्तरंयेव आनेत्वा रमेती ति आरामो। सो हि अनाथपिण्डिकेन गहपतिना जेतस्स राजकुमारस्स हत्थतो अट्ठारसहिरञ्ञकोटिसन्थारेन किणित्वा अट्ठारसहिरञ्ञकोटीहि सेनासनं[7] कारापेत्वा अट्ठारसहिरञ्ञकोटीहि विहारमहं निट्ठापेत्वा एवं चतुपञ्ञासाय[8] हि[8]रञ्ञकोटिपरिच्चागेन बुद्धप्पमुखस्स[9] भिक्खुसङ्घस्स[10] निय्यातितो[11], तस्मा "अनाथपिण्डिकस्स आरामो" ति वुच्चति। तस्मिं **अनाथपिण्डिकस्स आरामे**।

एत्थ च "जेतवने" ति वचनं पुरिमसामिपरिकित्तनं, "अनाथपिण्डिकस्स आरामे" ति पच्छिमसामिपरिकित्तनं। किमेतेसं परिकित्तने[12] पयोजनं ति? वुच्चते—अधिकारतो ताव "कत्थ

१. ० समङ्गिताय—सी०, रो०। २. पन—सी०, स्या०, रो०।
३. संखं—सी०, रो०। ४. आरामन्ति—सी०, रो०।
५. आरमन्ती ति—सी०, रो०। ६. सी०, रो० नत्थि।
७. सेनासनानि—सी०, स्या०, रो०। ८-८. चतुपञ्ञास ०—रो०।
९. बुद्धपमुखस्स—सी०, रो०। १०. सङ्घस्स—रो०, सी०।
११. नियादितो—सी०। १२. परिकित्तनेन—स्या०।

भासितं" ति पुच्छानियामकरणं[1] अञ्ञेसं[2] पुञ्ञकामानं दिट्ठानुगतिआपज्जने नियोजनं च[3]। तत्थ हि द्वारकोट्ठकपासादमापने भूमिविक्कयलद्धा अट्ठारस हिरञ्ञकोटियो अनेककोटिअग्घनका[4] रुक्खा[4] च जेतस्स परिच्चागो, चतुपञ्ञास कोटियो अनाथपिण्डिकस्स[5]। यतो तेसं परिकित्तनेन "एवं पुञ्ञकामा पुञ्ञानि करोन्ती" ति दस्सेन्तो आयस्मा आनन्दो अञ्ञे पि पुञ्ञकामे तेसं दिट्ठानुगतिआपज्जने[6] नियोजेति। एवमेत्थ पुञ्ञकामानं[7] दिट्ठानुगतिआपज्जने नियोजनं[8] पयोजनं ति वेदितब्बं।

एत्थाह[9]—"यदि ताव भगवा सावत्थियं विहरति, 'जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे' ति न वत्तब्बं, अथ तत्थ विहरति, 'सावत्थियं' ति न वत्तब्बं। न हि सक्का उभयत्थ एकं समयं R. 113 विहरितुं" ति। वुच्चते—ननु वुत्तमेतं[10] "समीपत्थे भुम्मवचनं" ति, यतो यथा गङ्गायमुनादीनं समीपे गोयूथानि चरन्तानि "गङ्गाय चरन्ति, यमुनाय चरन्ती" ति वुच्चन्ति[11], एवमिधा पि यदिदं सावत्थिया समीपे जेतवनं[12] अनाथपिण्डिकस्स[13] आरामो, तत्थ विहरन्तो वुच्चति[14] "सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स B. 96 आरामे" ति वेदितब्बो[15]। गोचरगामनिदस्सनत्थं हिस्स सावत्थिवचनं, पब्बजितानुरूपनिवासट्ठाननिदस्सनत्थं सेसवचनं।

तत्थ सावत्थिकित्तनेन भगवतो गहट्ठानुग्गहकरणं दस्सेति, जेतवनादिकित्तनेन पब्बजितानुग्गहकरणं। तथा पुरिमेन पच्चयग्गहणतो अत्तकिलमथानुयोगविवज्जनं, पच्छिमेन वत्थुकामप्पहानतो

१. पुच्छाय निन्नयकरणं—सी०,स्या०,रो०। २. अञ्ञेसं पन—स्या०; अञ्ञेसं च—रो०।
३. रो० नत्थि।
४-४. ०अग्घनकरुक्खा—सी०, रो०।
५. ०परिच्चागो—स्या०।
६. ०पि—स्या०।
७. ०पि—स्या०।
८. ०च—स्या०।
९. आह—रो०।
१०. वुत्तं एवं—सी०।
११. वुच्चति—सी०।
१२. जेतस्स वनं—सी०, स्या०, रो०।
१३. ०च—सी०, स्या०, रो०।
१४. ०तस्मा—स्या०।
१५. सी० नत्थि; अत्थोवेदितब्बो—स्या०।

कामसुखल्लिकानुयोगवज्जनूपायदस्सनं[१]। पुरिमेन च धम्मदेसनाभियोगं, पच्छिमेन विवेकाधिमुत्तिं। पुरिमेन करुणाय उपगमनं, पच्छिमेन च[२] पञ्ञाय अपगमनं। पुरिमेन सत्तानं हितसुखनिप्फादनाधिमुत्तितं, पच्छिमेन परहितसुखकरणे निरुपलेपतं[३]। पुरिमेन धम्मिकसुखापरिच्चागनिमित्तं फासुविहारं, पच्छिमेन उत्तरिमनुस्सधम्मानुयोगनिमित्तं। पुरिमेन मनुस्सानं उपकारबहुलतं, पच्छिमेन देवानं। पुरिमेन लोके जातस्स[४] लोके संवड्ढभावं, पच्छिमेन लोकेन अनुपलित्ततं ति एवमादि[५]।

अथा ति अविच्छेदत्थे[६], **खो** ति अधिकारन्तरनिदस्सनत्थे निपातो। तेन अविच्छिन्नेयेव तत्थ भगवतो विहारे इदमधिकारन्तरं उदपादी ति दस्सेति। किं तं ति ? **अञ्ञतरा देवता** ति आदि। तत्थ **अञ्ञतरा** ति अनियमितनिद्देसो[७]। सा हि नामगोत्ततो[८] अपाकटा, तस्मा "अञ्ञतरा" ति वुत्ता। देवो एव देवता, इत्थि-
R. 114 पुरिससाधारणमेतं। इध पन पुरिसो एव, सो[९] देवपुत्तो किन्तु, साधारणनामवसेन देवता ति वुत्तो।

अभिक्कन्ताय रत्तिया (म॰ नि॰ १-१८८) ति एत्थ अभिक्कन्तसद्दो खयसुन्दराभिरूपअब्भनुमोदनादीसु[१०] दिस्सति। तत्थ "अभिक्कन्ता भन्ते रत्ति, निक्खन्तो पठमो यामो, चिरनिसिन्नो भिक्खुसङ्घो, उद्दिसतु भन्ते भगवा भिक्खूनं पातिमोक्खं"

१. कामसुखल्लिकानुयोगविवज्जनूपायनिदस्सनं—सी॰; कामसुखल्लिकानुयोगविवज्जनूपायदस्सनं—रो॰।
२. रो॰ नत्थि।
३. निरूपलेपनतं—सी॰, रो॰।
४. जाता—रो॰।
५. ॰अत्थो—स्या॰।
६. ॰निपातो—स्या॰।
७. अनियामित॰—सी॰, रो॰।
८. नामगोत्तेन—स्या॰।
९. स्या॰ नत्थि।
१०. खय पूजनीयसुन्दराभि॰—सी॰; खयलक्खणियसुन्दराभिरूपअब्भानुमोदनादीसु—स्या॰; खयपब्बनियसुन्दराभि॰—रो॰।

(चु० व० ३५३) ति एवमादीसु खये दिस्सति*। "अयं इमेसं चतुन्नं[1] पुग्गलानं अभिक्कन्ततरो च पणीततरो चा" (अं० नि० २-१०५) ति एवमादीसु सुन्दरे।

"को मे वन्दति पादानि, इद्धिया यससा जलं।
अभिक्कन्तेन वण्णेन, सब्बा ओभासयं दिसा" ति—

एवमादीसु अभिरूपे। "अभिक्कन्तं भो गोतम, अभिक्कन्तं भो B. 97
गोतमा" (पारा० ८) ति एवमादीसु अब्भनुमोदने। इध पन खये। तेन **अभिक्कन्ताय रत्तिया** ति[2] परिक्खीणाय रत्तिया ति वुत्तं होति।

अभिक्कन्तवण्णा ति एत्थ[3] अभिक्कन्तसद्दो अभिरूपे, वण्णसद्दो पन छविथुतिकुलवग्गकारणसण्ठानपमाणरूपायतनादीसु दिस्सति। तत्थ "सुवण्णवण्णोसि भगवा" ति एवमादीसु छवियं[4]। "कदा सञ्ञूळ्हा[5] पन ते गहपति इमे[6] समणस्स गोतमस्स वण्णा" (म० नि० २-६०) ति एवमादीसु थुतियं। "चत्तारोमे भो[7] गोतम वण्णा" (दी० नि० १-८०) ति एवमादीसु कुलवग्गे। "अथ केन नु वण्णेन, गन्धथेनो[8] ति वुच्चती" (सं० नि० १-२०५) ति R.115
एवमादीसु कारणे। "महन्तं हत्थिराजवण्णं अभिनिम्मिनित्वा" (सं० नि० १-१०४) ति एवमादीसु सण्ठाने। "तयो पत्तस्स वण्णा" ति एवमादीसु पमाणे। "वण्णो गन्धो रसो ओजा" ति एवमादीसु रूपायतने। सो इध छवियं[9] दट्ठब्बो। तेन **अभिक्कन्तवण्णा** ति अभिरूपच्छवी[10] ति वुत्तं होति।

*. "या ता रत्तियो अभिञ्ञाता अभिलक्खिता अट्ठमी चातुद्दसी पञ्चदसी ति एवमादिसु पूजनीये" ति सी० पोत्थके अयं पाठो अधिको।
"याता रत्तियो अभिक्कन्ता अभिलक्खिता अट्ठमी चतुद्दसी पञ्चदसी ति एवमादिसु पब्बनिये"—रो०।

१. तिण्णं—स्या०।
२. सी०, रो० नत्थि।
३. इध—स्या०, रो०।
४. छविया—रो०; छविया दिस्सति—स्या०।
५. संव्यूळ्हा—सी०, स्या०, रो०।
६. स्या० नत्थि।
७. स्या० नत्थि।
८. गन्धत्थेनो—सी०, स्या०, रो०।
९. छविया—सी०, रो०।
१०. अभिरूपछवी—सी०।

केवलकप्पं ति एत्थ केवलसद्दो अनवसेसयेभुय्यअब्यामिस्सानतिरेकदळहत्थविसंयोगादिअनेकत्थो । तथा हिस्स "केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं" (दी० नि० १-५५) ति एवमादीसु अनवसेसता[1] अत्थो । "केवलकप्पा[2] च[3] अङ्गमागधा[4] पहूतं खादनीयं भोजनीयं आदाय उपसङ्कमिस्सन्ती" ति एवमादीसु येभुय्यता । "केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होती" (अं० नि० १-१६४) ति एवमादीसु अब्यामिस्सता[5] । "केवलं सद्धामत्तकं नून अयमायस्मा" (अं० नि० ३-८७) ति एवमादीसु अनतिरेकता । "आयस्मतो[6] भन्ते[7] अनुरुद्धस्स बाहियो[8] नाम सद्धिविहारिको केवलकप्पं[9] सङ्घभेदाय ठितो" (अं० नि० २-२५४) ति एवमादीसु दळहत्थता । "केवली वुसितवा उत्तमपुरिसो ति वुच्चती" ति एवमादीसु विसंयोगो । इध पनस्स अनवसेसत्तमत्थो[10] अधिप्पेतो ।

कप्पसद्दो पनायं अभिसद्दहनवोहारकालपञ्ञत्तिछेदनविकप्पलेस-
B. 98 समन्तभावादिअनेकत्थो । तथा हिस्स "ओकप्पनीयमेतं भोतो
गोतमस्स, यथा तं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्सा" (म० नि० १-३०७)
ति एवमादीसु अभिसद्दहनमत्थो । "अनुजानामि भिक्खवे पञ्चहि
R. 116 समणकप्पेहि फलं परिभुञ्जितुं" (चु० व० १९८) ति एवमादीसु
वोहारो । "येन सुदं निच्चकप्पं विहरामी" (म० नि० १-३०७) ति एवमादीसु कालो । इच्चायस्मा कप्पो" ति एवमादीसु पञ्ञत्ति । "अलङ्कतो कप्पितकेसमस्सू" ति एवमादीसु छदनं[11] । "कप्पति द्वङ्गुलकप्पो" (चु० व० ४२२) ति एवमादीसु विकप्पो । "अत्थि कप्पो निपज्जितुं" ति एवमादीसु लेसो । "केवलकप्पं वेळुवनं[12]

१. ० तं ति—स्या० । २. केवला—स्या० ।
३. स्या० नत्थि । ४. अङ्गमगधा—स्या० ।
५. अब्यामिस्सता—रो० । ६. अयं०—सी०, स्या० ।
७. सी०, रो० नत्थि । ८. बाहिको—रो०, स्या० ।
९. केवलं—स्या० । १०. अनवसेसता अत्थो ति—सी०, रो० ।
११. छेदनं—सी०, स्या०, रो० । १२. वेत्थवनं—सी०, स्या० ।

ओभासेत्वा" (सं० नि०१-६४) ति एवमादीसु समन्तभावो। इध पनस्स समन्तभावो अत्थो[1] अधिप्पेतो। यतो **केवलकप्पं जेतवनं** ति एत्थ अनवसेसं समन्ततो जेतवनं ति एवमत्थो दट्ठब्बो।

ओभासेत्वा ति आभाय फरित्वा, चन्दिमा विय सूरियो[2] विय च एकोभासं एकपज्जोतं करित्वा ति अत्थो।

येन भगवा तेनुपसङ्कमी ति भुम्मत्थे करणवचनं। यतो यत्थ भगवा, तत्थ उपसङ्कमी ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। येन वा कारणेन भगवा देवमनुस्सेहि उपसङ्कमितब्बो, तेनेव कारणेन उपसङ्कमी ति एवं[3] पेत्थ[3] अत्थो दट्ठब्बो। केन च कारणेन भगवा उपसङ्कमितब्बो ? नानप्पकारगुणविसेसाधिगमाधिप्पायेन, सादुरस-फलूपभोगाधिप्पायेन[4] दिजगणेहि निच्चफलितमहारुक्खो विय। **उपसङ्कमी** ति च गता ति वुत्तं होति। **उपसङ्कमित्वा** ति उपसङ्कमनपरियोसानदीपनं। अथ वा एवं गता ततो आसन्नतरं ठानं भगवतो समीपसङ्खातं गन्त्वा ति वुत्तं होति। **भगवन्तं अभिवादेत्वा** ति भगवन्तं वन्दित्वा[5] पणमित्वा[6] नमस्सित्वा।

एकमन्तं ति भावनपुंसकनिद्देसो एकोकासं एकपस्सं ति वुत्तं होति। भुम्मत्थे वा उपयोगवचनं। **अट्ठासी** ति निसज्जादिपटिक्खेपो, R. 117
ठानं कप्पेसि, ठिता अहोसी ति अत्थो।

कथं ठिता पन सा एकमन्तं ठिता अहू ति ? B. 99

न पच्छतो न पुरतो, ना[7] पि आसन्नदूरतो।
न कच्छे[8] नो पि[8] पटिवाते, न चा पि ओणतुण्णते[9]।
इमे दोसे विवज्जेत्वा, एकमन्तं ठिता अहू ति॥

१. अत्थो ति—सी०, स्या०, रो०। २. सुरियो—सी०, स्या०। ३-३. एवमेत्थ—स्या०। ४. सादुफलूप०—स्या०, रो०। ५. अभिवन्दित्वा—स्या०। ६. पणामित्वा—स्या०। ७. न—सी०, रो०; नापी—स्या०। ८-८. तिट्ठन्तो—स्या०। ९. ओणतुन्नते—सी०; ओण्णतुण्णते—स्या०।

कस्मा पनायं अट्ठासि एव, न निसीदी ति ? लहुं[1] निवत्तितुकामताय । देवतायो[2] हि कञ्चिदेव अत्थवसं पटिच्च सुचिपुरिसो विय वच्चट्ठानं मनुस्सलोकं आगच्छन्ति । पकतिया पन[3] तासं[3] योजनसततो[4] पभुति मनुस्सलोको दुग्गन्धताय पटिकूलो[5] होति, न एत्थ[6] अभिरमन्ति, तेन सा आगतकिच्चं कत्वा लहुं निवत्तितुकामताय न निसीदि । यस्स च गमनादिइरियापथपरिस्समस्स विनोदनत्थं निसीदन्ति, सो देवानं परिस्समो नत्थि, तस्मा पि न निसीदि । ये च महासावका भगवन्तं परिवारेत्वा ठिता, ते पतिमानेति[7], तस्मा पि न निसीदि । अपि च भगवति गारवेनेव न निसीदि । देवतानं हि निसीदितुकामानं आसनं निब्बत्तति, तं अनिच्छमाना निसज्जाय चित्तं पि अकत्वा एकमन्तं अट्ठासि ।

एकमन्तं ठिता खो सा देवता ति एवं इमेहि कारणेहि एकमन्तं ठिता खो[8] सा देवता । **भगवन्तं गाथाय अज्झभासी** ति भगवन्तं अक्खरपदनियमितगन्थितेन वचनेन अभासी[9] ति अत्थो । कथं ? **बहू देवा मनुस्सा च ...पे०... ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं** ति ।

मङ्गलपञ्हसमुट्ठानकथा

तत्थ यस्मा "**एवमिच्चादिपाठस्स, अत्थं नानप्पकारतो । वण्णयन्तो समुट्ठानं, वत्वा**" ति मातिका ठपिता, तस्स च समुट्ठानस्स अयं वत्तब्बताय ओकासो, तस्मा मङ्गलपञ्हसमुट्ठानं ताव वत्वा
R. 118 पच्छा[10] इमेसं गाथापदानमत्थं वण्णयिस्सामि[11] । किं च मङ्गलपञ्हसमुट्ठानं ? जम्बुदीपे किर तत्थ तत्थ नगरद्वारसन्थागारसभादीसु

१. लहु—स्या० ।
२. देवता—सी०, स्या०, रो० ।
३-३. पनेतासं—सी०, रो०, स्या० ।
४. योजनसता—रो०; योजनसतप्पभुति—स्या० ।
५. पटिक्कुलो—रो०, सी०, स्या० ।
६. तत्थ—सी०, रो०, स्या० ।
७. पतिमानेसि—सी०, रो०; पटिमानेति—स्या० ।
८. रो० नत्थि ।
९. अज्झभासी—रो०, स्या० ।
१०. मयं पच्छा—स्या० ।
११. वण्णयिस्साम—स्या० ।

महाजनो[१] सन्निपतित्वा हिरञ्ञसुवण्णं दत्वा नानप्पकारं[२] सीताहरणादिकथं[३] 'कथापेति[४]', एकेका कथा चतुमासच्चयेन निट्ठाति। तत्थ एकदिवसं मङ्गलकथा समुट्ठासि "किं[५] नु[५] खो मङ्गलं, किं दिट्ठं मङ्गलं, सुतं[६] मङ्गलं, मुतं मङ्गलं, को मङ्गलं जानाती" ति।

अथ दिट्ठमङ्गलिको नामेको पुरिसो आह "अहं मङ्गलं जानामि, B.100 दिट्ठं लोके मङ्गलं दिट्ठं नाम अभिमङ्गलसम्मतं रूपं। सेय्यथिदं ? इधेकच्चो कालस्सेव वुट्ठाय[७] चातकसकुणं[८] वा पस्सति, बेलुवलट्ठिं[९] वा गब्भिनिं वा कुमारके वा अलङ्कतपटियत्ते पुण्णघटे वा अल्लरोहितमच्छं वा आजञ्ञं वा आजञ्ञरथं वा उसभं वा गाविं वा कपिलं[१०] वा, यं वा पनञ्ञं पि किञ्चि एवरूपं अभिमङ्गलसम्मतं रूपं पस्सति, इदं वुच्चति दिट्ठमङ्गलं" ति। तस्स वचनं एकच्चे अग्गहेसुं, एकच्चे न अग्गहेसुं[११]। ये न अग्गहेसुं, ते तेन सह विवदिंसु।

अथ सुतमङ्गलिको नाम एको पुरिसो आह "चक्खुनामेतं भो सुचिं पि[१२] पस्सति[१३] असुचिं पि[१४], तथा सुन्दरं पि, असुन्दरं पि, मनापं पि, अमनापं पि। यदि तेन दिट्ठं मङ्गलं सिया, सब्बं पि मङ्गलं सिया। तस्मा न दिट्ठं मङ्गलं, अपि च खो पन सुतं मङ्गलं। R. 119 सुतं नाम अभिमङ्गलसम्मतो सद्दो। सेय्यथिदं[१५] ? इधेकच्चो

१. महाजना—स्या०।
२. नानप्पाकारका—रो०; नानप्पकारा—सी०।
३. सीताहरणादि बाहिरक्खानकथा—सी०; सीताहरणादिबाहिरककथा—रो०; सीताहरणादिकं बाहिरकथं—स्या०।
४. कथापेन्ति—स्या०।
५-५. किन्नु—सी०, स्या०, रो०।
६. किं०—स्या०; एवमेव।
७. उट्ठाय—सी०।
८. भाससकुणं—रो०; भासमानसकुणं—सी०; वातसकुणं—स्या०।
९. वेलुवलट्ठिं—स्या०।
१०. कपिलगावं—रो०।
११. नाग्गहेसुं—स्या०, रो०।
१२. सुचिम्पी—स्या०।
१३. स्या०, रो० नत्थि।
१४. ० पस्सति—सी०, रो०; असुचिम्पी पस्सति—स्या०।
१५. ० थीदं—स्या०।

कालस्सेव वुट्ठाय वड्ढा ति वा वड्ढमाना ति वा पुण्णा ति वा फुस्सा ति वा सुमना ति वा सिरी ति वा सिरिवड्ढा ति वा अज्ज सुनक्खत्तं सुमुहुत्तं सुदिवसं सुमङ्गलं ति एवरूपं वा यं किञ्चि अभिमङ्गलसम्मतं सद्दं सुणाति, इदं वुच्चति सुतमङ्गलं" ति । तस्सा पि[1] वचनं एकच्चे अग्गहेसुं, एकच्चे न अग्गहेसुं[2]। ये न अग्गहेसुं, ते तेन सह विवदिंसु ।

अथ मुतमङ्गलिको नामेको पुरिसो आह "सोतं पि[3] हि नामेतं भो साधुं पि असाधुं पि मनापं पि अमनापं पि सद्दं[4] सुणाति । यदि तेन सुतं मङ्गलं सिया, सब्बं पि मङ्गलं सिया । तस्मा न सुतं मङ्गलं, अपि च खो पन मुतं मङ्गलं । मुतं नाम अभिमङ्गल-सम्मतं गन्धरसफोट्ठब्बं । सेय्यथिदं ? इधेकच्चो कालस्सेव वुट्ठाय पदुमगन्धादिपुप्फगन्धं वा घायति, फुस्सदन्तकट्ठं[5] वा खादति, पथविं वा आमसति, हरितसस्सं वा अल्लगोमयं वा कच्छपं वा तिलं[6] वा पुप्फं वा फलं वा आमसति, फुस्समत्तिकाय वा सम्मा[7] लिम्पति[7], फुस्ससाटकं वा निवासेति, फुस्सवेठनं वा धारेति । यं वा पनञ्ञं पि किञ्चि एवरूपं अभिमङ्गलसम्मतं गन्धं वा घायति, रसं वा सायति, फोट्ठब्बं वा फुसति, इदं वुच्चति मुतमङ्गलं" ति । तस्सा पि वचनं एकच्चे अग्गहेसुं, एकच्चे न अग्गहेसुं ।

B. 101 तत्थ न दिट्ठमङ्गलिको सुतमुतमङ्गलिके असक्खि ञापेतुं[8], न तेसं अञ्ञतरो इतरे द्वे । तेसु च मनुस्सेसु ये दिट्ठमङ्गलिकस्स वचनं गण्हिंसु, ते "दिट्ठंयेव मङ्गलं" ति गता । ये सुतमुतमङ्गलिकानं, ते "सुतंयेव मुतंयेव मङ्गलं" ति गता । एवमयं मङ्गलकथा सकल-जम्बुदीपे पाकटा जाता ।

१. पी—स्या० ।
२. नाग्गहेसुं—स्या०, रो०, एवमेव ।
३. लम्पी सोतम्पी—स्या० ।
४. सी०, रो० नत्थि ।
५. पुस्स ०—स्या० ।
६. तिलवाहं—सी०, स्या०, रो० ।
७-७. समालिम्पति—सी०, रो० ।
८. सञ्ञापेतुं—सी०, स्या०, रो० ।

अथ सकलजम्बुदीपे मनुस्सा गुम्बगुम्बा हुत्वा "किं नु खो मङ्गलं" ति मङ्गलानि चिन्तयिंसु। तेसं मनुस्सानं आरक्खदेवता तं कथं सुत्वा तथेव मङ्गलानि चिन्तयिंसु, तासं देवतानं भुम्मदेवता मित्ता होति, अथ ततो सुत्वा भुम्मदेवता पि तथेव मङ्गलानि चिन्तयिंसु, तासं[1] देवतानं आकासट्ठदेवता[2] मित्ता होन्ति, आकासट्ठदेवतानं[3] चतुमहाराजिका[4] देवता मित्ता[5] होन्ति[5], एतेनुपायेन[6] याव सुदस्सीदेवतानं अकनिट्ठदेवता मित्ता होन्ति, अथ ततो सुत्वा अकनिट्ठदेवता पि[7] तथेव गुम्बगुम्बा हुत्वा मङ्गलानि चिन्तयिंसु। एवं याव दससहस्सचक्कवाळेसु सब्बत्थ मङ्गलचिन्ता उदपादि। उप्पन्ना च "इदं मङ्गलं इदं मङ्गलं" ति विनिच्छयमाना पि अप्पत्ता एव विनिच्छयं द्वादस वस्सानि अट्ठासि। सब्बे मनुस्सा च देवा च ब्रह्मानो च ठपेत्वा अरियसावके दिट्ठसुतमुतवसेन तिधा भिन्ना, एको पि "इदमेव मङ्गलं" ति यथाभुच्चतो[8] निट्ठङ्गतो[9] नाहोसि, मङ्गलकोलाहलं लोके उप्पज्जि। R. 120

कोलाहलं नाम पञ्चविधं—कप्पकोलाहलं, चक्कवत्तिकोलाहलं, बुद्धकोलाहलं, मङ्गलकोलाहलं, मोनेय्यकोलाहलं ति। तत्थ कामावचरदेवा[10] मुत्तसिरा[11] विकिण्णकेसा रुदम्मुखा अस्सूनि हत्थेहि पुञ्छमाना रत्तवत्थनिवत्था अतिविय विरूपवेसधारिनो[12] हुत्वा "वस्ससतसहस्सच्चयेन[13] कप्पुट्ठानं[14] होहिति[15], अयं लोको विनस्सिस्सति, महासमुद्दो सुस्सिस्सति[16], अयं च महापथवी[17] सिनेरु

१. ० पि—सी०, रो०; तासम्पी—स्या०। २. आकासट्ठकदेवता—स्या०।
३. ० देवतानम्पी—स्या०। ४. चातुम्महाराजिका—रो०, सी०; चातुम्महाराजिका—स्या०।
५-५. रो० नत्थि।
६. एतेनेव उपायेन—सी०, स्या०, रो०। ७. ० पी—स्या०।
८. यथाभुततो—सी०, रो०। ९. ० नाम—स्या०।
१०. ०देवता—सी०; कामावचरा देवा—स्या०। ११. विमुत्तसिरा—स्या०।
१२. ० रूप ०—स्या०।
१३. वस्ससतसहस्स अच्चयेन—स्या०। १४. कप्प०—स्या०।
१५. हेस्सति—सी०, स्या०। १६. उस्सस्सिस्सति—स्या०।
१७. महापठवी—स्या०।

R. 121 च[१] पब्बतराजा[२] उड्डय्हिस्सति विनस्सिस्सति, याव ब्रह्मलोका लोकविनासो भविस्सति, मेत्तं मारिसा भावेथ, करुणं[३] मुदितं[४] उपेक्खं मारिसा भावेथ, मातरं उपट्ठहथ, पितरं[५] उपट्ठहथ, कुले जेट्ठापचायिनो होथ, जागरथ मा पमादत्था" ति मनुस्सपथे विचरित्वा आरोचेन्ति। इदं **कप्पकोलाहलं** नाम।

कामावचरदेवायेव[६] "वस्ससतस्सच्चयेन[७] चक्कवत्तिराजा लोके उप्पज्जिस्सती" ति मनुस्सपथे विचरित्वा आरोचेन्ति। इदं **चक्कवत्तिकोलाहलं** नाम। सुद्धावासा पन देवा ब्रह्माभरणेन[८]
B. 102 अलङ्करित्वा ब्रह्मवेठनं सीसे कत्वा पीतिसोमनस्सजाता बुद्धगुणवादिनो "वस्ससहस्सच्चयेन बुद्धो लोके उप्पज्जिस्सती" ति मनुस्सपथे विचरित्वा आरोचेन्ति। इदं **बुद्धकोलाहलं** नाम। सुद्धावासा एव देवा देवमनुस्सानं चित्तं ञत्वा "द्वादसन्नं वस्सानं अच्चयेन सम्मासम्बुद्धो मङ्गलं कथेस्सती" ति मनुस्सपथे विचरित्वा आरोचेन्ति। इदं **मङ्गलकोलाहलं** नाम। सुद्धावासा एव देवा "सत्तन्नं वस्सानं अच्चयेन अञ्ञतरो भिक्खु भगवता सद्धिं समागम्म मोनेय्यप्पटिपदं[९] पुच्छिस्सती" ति मनुस्सपथे विचरित्वा आरोचेन्ति। इदं **मोनेय्य**कोलाहलं नाम। इमेसु पञ्चसु कोलाहलेसु देवमनुस्सानं[१०] इदं मङ्गलकोलाहलं लोके उप्पज्जि।

अथ देवेसु च[११] मनुस्सेसु च विचिनित्वा विचिनित्वा मङ्गलानि अलभमानेसु द्वादसन्नं वस्सानं अच्चयेन तावतिंसकायिका देवता[१२]

१. स्या० नत्थि।
२. ० च—स्या०।
३. ० भावेथ—स्या०।
४. ० भावेथ—स्या०।
५. पीतरं—स्या०।
६. ० वचरा ०—स्या०।
७. ० अच्चयेन—स्या०।
८. ० हि—स्या०।
९. मोनेय्यपटि ०—सी०, रो०।
१०. दिट्ठमङ्गलादिवसेन तिधा भिन्नेसु देवमनुस्सेसु—सी०, रो०, स्या०।
११. सी० नत्थि।
१२. देवा—स्या०।

सङ्गम्म समागम्म एवं समचिन्तेसुं "सेय्यथापि* नाम[1] घरसामिको
अन्तोघरजनानं[2], गामसामिको गामवासीनं, राजा सब्बमनुस्सानं, R. 122
एवमेव अयं सक्को देवानमिन्दो अम्हाकं अग्गो च सेट्ठो च यदिदं
पुञ्ञेन[2] तेजेन[2] इस्सरियेन पञ्ञाय द्विन्नं देवलोकानं अधिपति, यन्नून
मयं सक्कं देवानमिन्दं एतमत्थं पुच्छेय्यामा" ति। ता सक्कस्स
सन्तिकं गन्त्वा सक्कं देवानमिन्दं तङ्खणानुरूप[3]पनिवासनाभरणसस्सिरि[4]-
कसरीरं[5] अड्ढतेय्यकोटिअच्छरागणपरिवुतं पारिच्छत्तकमूले
पण्डुकम्बलवरासने[6] निसिन्नं अभिवादेत्वा एकमन्तं ठत्वा एतदवोचुं
"यग्घे मारिस जानेय्यासि, एतरहि मङ्गलपञ्हा समुट्ठिता, एके
'दिट्ठं मङ्गलं' ति वदन्ति, एके 'सुतं मङ्गलं' ति[7], एके 'मुतं मङ्गलं'
ति, तत्थ मयं च अञ्ञे च अनिट्ठङ्गता, साधु वत नो त्वं याथावतो[8]
ब्याकरोही" ति। देवराजा पकतिया पि पञ्ञवा "अयं मङ्गलकथा
कत्थ पठमं समुट्ठिता" ति आह। "मयं देव चातुमहाराजिकानं[9]
अस्सुम्हा" ति आहंसु। ततो चातुमहाराजिका आकासट्ठदेवतानं,
आकासट्ठदेवता भुम्मदेवतानं, भुम्मदेवता मनुस्सारक्खदेवतानं,
मनुस्सारक्खदेवता "मनुस्सलोके समुट्ठिता" ति आहंसु।

अथ[10] देवानमिन्दो "सम्मासम्बुद्धो कत्थ वसती" ति पुच्छि।
"मनुस्सलोके देवा" ति आहंसु। तं भगवन्तं कोचि पुच्छी ति, न
कोचि देवा ति। किन्नु[11] नाम तुम्हे मारिसा अग्गिं छड्डेत्वा खज्जो- B. 103
पनकं[12] उज्जालेथ, येन[13] तुम्हे[13] अनवसेसमङ्गलदेसकं तं भगवन्तं

*. ० पी—स्या०।
२-२. पुञ्ञातेजेन—रो०, स्या०।
३. ० रूपं ०—स्या०।
५. ०सस्सिरीकसरीरं—सी०, रो०।
७. ०वदन्ति—रो०।
९. चातुम्महाराजिकानं—सी०, स्या०, रो०।
१२. खज्जोतकं—रो०; जज्जोपनकं—स्या०।
१. नाममारिसा—सी०; मारिसा—रो०, स्या०।
४. ०रीकसरीरं—स्या०।
६. ० सिला वरासने—स्या०।
८. यथासभावतो—स्या०।
१०. ०मे सक्को—स्या०।
११. ०खो—सी०, स्या०, रो०।
१३-१३. ये—सी०, रो०।

अतिक्कमित्वा[१] मं पुच्छितब्बं मञ्ञथ[२], आगच्छथ मारिसा, तं भगवन्तं पुच्छाम, अद्धा सस्सिरिकं[३] पञ्हवेय्याकरणं लभिस्सामा ति R. 123 एकं देवपुत्तं आणापेसि "तं[४] भगवन्तं पुच्छा" ति। सो देवपुत्तो तङ्खणानुरूपेन अलङ्कारेन अत्तानं अलङ्करित्वा विज्जुरिव विज्जोतमानो देवगणपरिवुतो जेतवनमहाविहारं गन्त्वा[५] भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं ठत्वा मङ्गलपञ्हं पुच्छन्तो गाथाय अज्झभासि "**बहू देवा मनुस्सा चा**[६]" ति[६]।

इदं मङ्गलपञ्हसमुट्ठानं।

बहूदेवा ति गाथावण्णना

इदानि गाथापदानं अत्थवण्णना होति। **बहू** ति[७] अनियमितसङ्खानिद्देसो[८], तेन अनेकसता अनेकसहस्सा अनेकसतसहस्सा[९] ति वुत्तं होति। दिब्बन्ती ति **देवा**, पञ्चहि कामगुणेहि कीळन्ति, अत्तनो वा सिरिया जोतन्ती ति अत्थो। अपि च **देवा** ति तिविधा देवा सम्मुतिउपपत्तिविसुद्धिवसेन[१०]। यथाह—

"देवा ति तयो देवा—सम्मुतिदेवा, उपपत्तिदेवा, विसुद्धिदेवा[११]। तत्थ[१२] सम्मुतिदेवा नाम राजानो देवियो राजकुमारा[१३]। उपपत्तिदेवा नाम चातुमहाराजिके देवे उपादाय तदुत्तरिदेवा[१४]। विसुद्धिदेवा नाम अरहन्तो वुच्चन्ती" ति।

तेसु इध उपपत्तिदेवा अधिप्पेता। मनुनो अपच्चा ति **मनुस्सा**। पोराणा पन भणन्तिमनसो[१५] उस्सन्नताय[१५] मनुस्सा, ते जम्बुदीपका

१. अतिसित्वा—सी०, रो०। २ मञ्ञेथ—स्या०, रो०।
३. सस्सिरीकं—सी०, रो०, स्या०। ४. त्वंपन—स्या०।
५. आगन्त्वा—सी०, रो०। ६-६. च ...पे०...ति—रो०; च-पे-मुत्तमन्ति—स्या०।
७. तत्थ०—स्या०। ८. अनियामितसंखा० —सी०, रो०; अनियामित०—स्या०।
९. रो० नत्थि। १०. ०उप्पत्ति०—सी०,रो०; सम्मति०—स्या०।
११. ०ति—रो०। १२. रो० नत्थि।
१३. कुमारा—रो०; ०च—स्या०। १४. तदुत्तरि देवा—सी०, रो०।
१५-१५. मन उस्सन्नताय—रो०; मनुस्स०—स्या०।

अपरगोयानका[1] उत्तरकुरुका पुब्बविदेहका ति चतुब्बिधा, इध जम्बुदीपका अधिप्पेता। मङ्गलं[2] ति[2] महन्ति[3] इमेहि सत्ता ति **मङ्गलानि**, इद्धिं वुद्धिं च पापुणन्ती[4] ति अत्थो। **अचिन्तयुं**[5] ति[5] चिन्तेसुं **आकङ्खमाना** ति इच्छमाना पत्थयमाना[6] पिहयमाना। **सोत्थानं** ति सोत्थिभावं, सब्बेसं दिट्ठधम्मिकसम्परायिकानं सोभनानं सुन्दरानं कल्याणानं धम्मानमत्थितं[7] ति वुत्तं होति। **ब्रूही** ति देसेहि पकासेहि[8], आचिक्ख[9] विवर विभज उत्तानीकरोहि। **मङ्गलं** ति इद्धिकारणं वुद्धिकारणं सब्बसम्पत्तिकारणं। **उत्तमं** ति विसिट्ठं[10] पवरं सब्बलोकहितसुखावहं ति अयं गाथाय **अनुपुब्बपदवण्णना**। B. 104 R. 124

अयं पन **पिण्डत्थो**—सो देवपुत्तो दससहस्सचक्कवाळेसु देवता[11] मङ्गलपञ्हं सोतुकामताय इमस्मिं चक्कवाळे[12] सन्निपतित्वा एकवालग्गकोटिओकासमत्ते दस पि[13] वीसं[14] पि तिंसं[15] पि चत्तालीसं[16] पि पञ्ञासं पि सट्ठि[17] पि सत्तति[18] पि असीति[19] पि सुखुमत्तभावे[20] निम्मिनित्वा सब्बदेवमारब्रह्मानो[21] सिरिया च तेजसा च अधिग्गय्ह[22] विरोचमानं पञ्ञत्तवरबुद्धासने निसिन्नं भगवन्तं परिवारेत्वा ठिता दिस्वा तस्मिं च समये अनागतानं पि सकलजम्बुदीपकानं मनुस्सानं चेतसा चेतोपरिवितक्कमञ्ञाय सब्बदेवमनुस्सानं विचिकिच्छासल्लसमुद्धरणत्थं आह—

१. ०गोयानिका—सी०, स्या०, रो०। २-२. मंगलन्ति—स्या०, रो०।
३. स्या०, रो० नत्थि।
४. पापुणाती ति—स्या०।
५-५. अचिन्तन्ति—स्या०।
६. पट्ठयमाना—स्या०।
७. धम्मानं अत्थितो—सी०।
८. सी० नत्थि।
९. आचिक्खाहि—स्या०।
१०. विसित्थं—स्या०।
११. देवतायो—स्या०।
१२. एकचक्कवाळे—स्या०।
१३. दसम्पी—स्या०।
१४. वीसंति—रो०।
१५. तिंसंति—रो०।
१६. चत्ताळीसं—सी०।
१७. सट्ठि—सी०, रो०।
१८. सत्तंति—सी०, रो०।
१९. असीति—सी०, रो०।
२०. ० भावं—रो०।
२१. ० सब्बे ०—रो०।
२२. अधिभुय्य—रो०।

"बहू देवा मनुस्सा च, मङ्गलानि अचिन्तयुं ।
आकङ्खमाना सोत्थानं[1], ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं" ति ॥

तासं[2] देवतानं[3] अनुमतिया मनुस्सानं च अनुग्गहेन मया पुट्ठो समानो यं सब्बेसमेव अम्हाकं एकन्तहितसुखावहतो उत्तमं मङ्गलं, तं नो अनुकम्पं उपादाय ब्रूहि भगवा ति ।

असेवना चातिगाथावण्णना

एवमेतं[4] देवपुत्तस्स वचनं सुत्वा भगवा **"असेवना च बालानं"** ति गाथमाह । तत्थ **असेवना** ति अभजना अपयिरुपासना । **बालानं** ति बलन्ति अस्ससन्ती[5] ति बाला, अस्ससितपस्ससितमत्तेन जीवन्ति, न पञ्ञाजीवितेना ति अधिप्पायो । तेसं **बालानं** । **पण्डितानं** ति पण्डन्ती ति पण्डिता, सन्दिट्ठिकसम्परायिकेसु अत्थेसु ञाणगतिया
R. 125 गच्छन्ती ति अधिप्पायो । तेसं **पण्डितानं** । **सेवना** ति भजना पयिरुपासना तंसहायता तंसम्पवङ्कता तंसमङ्गिता[6] **पूजा** ति सक्कारगरुकारमाननवन्दना । **पूजनेय्यानं** ति पूजारहानं । **एतं मङ्गलमुत्तमं** ति या च बालानं[7] असेवना, या च पण्डितानं सेवना, या च पूजनेय्यानं पूजा, तं सब्बं सम्पिण्डेत्वा आह "एतं मङ्गलमुत्तमं" ति । यं तया पुट्ठं "ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं" ति, एत्थ ताव एतं मङ्गलमुत्तमं ति गण्हाही ति वुत्तं होति । अयमेतिस्सा गाथाय **पदवण्णना** ।

B 105 **अत्थवण्णना** पनस्सा एवं वेदितब्बा—एवमेतं देवपुत्तस्स वचनं सुत्वा भगवा "असेवना[8] च बालानं" ति इमं गाथमाह । तत्थ यस्मा

१. ०अत्तनो सोत्थिभावं इच्छन्ता—सी०; ०अत्तनो सोत्थिभावं इच्छन्ता—रो०; ०अत्तनो सोत्थिभावं इच्छन्तानं—स्या० ।
२. तेसं—स्या०, रो० ।
३. देवानं—स्या०, रो० ।
४. मेवमेतं—स्या० ।
५. अनन्ति—रो०; न जानन्तीति—स्या० ।
६. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
७. बालानमसेवना—स्या० ।
८. रो० नत्थि ।

चतुब्बिधा गाथा[१] पुच्छितगाथा[२] अपुच्छितगाथा[३] सानुसन्धिकगाथा[४] अननुसन्धिकगाथा[५] ति। तत्थ "पुच्छामि तं गोतम भूरिपञ्ञ, कथङ्करो सावको साधु होती" ति च "कथं[६] नु[६] त्वं मारिस ओघमतरी" (सं० नि० १-३) ति च एवमादीसु पुच्छितेन कथिता पुच्छितगाथा[७]। "यं परे सुखतो आहु, तदरिया आहु दुक्खतो" ति एवमादीसु अपुच्छितेन अत्तज्झासयवसेन[८] कथिता अपुच्छितगाथा[९]। सब्बा पि* बुद्धानं गाथा[१०] "सनिदानाहं भिक्खवे धम्मं देसेस्सामी[११]" ति वचनतो सानुसन्धिकगाथा[१२]। अननुसन्धिकगाथा[१३] इमस्मिं सासने नत्थि। एवमेतासु गाथासु[१४] अयं देवपुत्तेन पुच्छितेन भगवता कथितत्ता पुच्छितगाथा[१५]। अयं[१६] च यथा छेको पुरिसो कुसलो मग्गस्स कुसलो अमग्गस्स मग्गं पुट्ठो पठमं विजहितब्बं आचिक्खित्वा पच्छा गहेतब्बं आचिक्खति "असुकस्मिं[१७] नाम ठाने द्वेधापथो होति, तत्थ वामं मुञ्चित्वा दक्खिणं गण्हथा" ति, एवं सेवितब्बासेवितब्बेसु असेवितब्बं आचिक्खित्वा सेवितब्बं आचिक्खति[१८]। भगवा च मग्गकुसलपुरिस- R. 126
सदिसो। यथाह—

"पुरिसो मग्गकुसलो ति खो तिस्स[१९] तथागतस्सेतं अधिवचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स (सं० नि० २.३३१)। सो हि कुसलो इमस्स लोकस्स, कुसलो परस्स लोकस्स, कुसलो मच्चुधेय्यस्स,

१. कथा—सी०, रो०।
२. ० कथा—सी०, रो०।
३. ० कथा—रो०।
४. सानुसन्धिकथा—सी०।
५. अननुसन्धिकथा—सी०, रो०।
६-६. कथन्नु—सी०, रो०।
७. ० कथा—सी०, रो०।
८. ०वसेनेव—सी०, रो०।
९. ० कथा—सी०, रो०
*. ० पी—स्या०।
१०. कथा—सी०, स्या०, रो०।
११. देसेमी—सी०, रो०।
१२. सानुसन्धिकथा—सी०, रो०।
१३. अननुसन्धिकथा—सी०, रो०।
१४. कथासु—रो०।
१५. ० कथा—सी०, रो०।
१६. पुच्छितकथायं—सी०, रो०।
१७. अमुस्मिं—रो०।
१८. आचिक्खितब्बं—सी०, रो०; ० पच्छा—स्या०।
१९. भिक्खवे—स्या०।

कुसलो अमच्चुधेय्यस्स, कुसलो मारधेय्यस्स, कुसलो अमारधेय्यस्सा (म० नि० १-२७९)" ति।

तस्मा पठमं असेवितब्बं आचिक्खन्तो आह—"असेवना च बालानं[1], पण्डितानं[2] च सेवना" ति। विजहितब्बमग्गो विय हि पठमं बाला न सेवितब्बा न पयिरुपासितब्बा, ततो गहेतब्बमग्गो विय पण्डिता सेवितब्बा पयिरुपासितब्बा ति। कस्मा पन भगवता मङ्गलं कथेन्तेन पठमं बालानमसेवना[3] पण्डितानं च सेवना कथिता ति? वुच्चते—यस्मा इदं[4] दिट्ठादीसु[5] मङ्गलदिट्ठिं बालसेवनाय[6] देवमनुस्सा गण्हिंसु, सा च अमङ्गलं, तस्मा तेसं[7] तं इधलोकपरलोकत्थभञ्जकं[8]
B.106 अकल्याणमित्तसंसग्गं गरहन्तेन उभयलोकत्थसाधकं च कल्याणमित्त-संसग्गं पसंसन्तेन भगवता पठमं बालानमसेवना[3] पण्डितानं च सेवना कथिता ति।

तत्थ बाला नाम ये केचि पाणातिपातादिअकुसलकम्मपथसमन्नागता सत्ता, ते तीहाकारेहि जानितब्बा। यथाह "तीणिमानि भिक्खवे बालस्स बाललक्खणानी" (अं० नि० १-९४) ति सुत्तं। अपि च पूरणकस्सपादयो छ सत्थारो देवदत्तकोकालिककटमोदक[9]-तिस्सखण्डदेवियापुत्तसमुद्ददत्तचिञ्चमाणविकादयो अतीतकाले च
R. 127 दीघविदस्स भाता ति इमे अञ्ञे च एवरूपा सत्ता बाला ति वेदितब्बा।

ते अग्गिपदित्तमिव अगारं[10] अत्तना दुग्गहितेन अत्तानं चेव[11] अत्तनो वचनकारके च विनासेन्ति। यथा दीघविदस्स भाता चतुबुद्धन्तरं सट्ठियोजनमत्तेन अत्तभावेन उत्तानो पतितो महानिरये

१. ० नन्ति—स्या०। २. सेवितब्बं आचिक्खन्ति आह ०—स्या०। ३. बालानं असेवना—सी०, रो०। ४. इमं—सी०, रो०। ५. दिट्ठमङ्गलादिसु—सी०, रो०। ६. बालानं सेवनाय—स्या०। ७. नेसं—रो०। ८. इधलोकत्थ०—रो०। ९. कटमोरक—सी०, स्या०, रो०। १०. अङ्गारं—स्या०, रो०। ११. च—स्या०, रो०।

पच्चति, यथा च तस्स दिट्ठिं अभिरुचनकानि[1] पञ्च कुलसतानि तस्सेव सहब्यतं[2] उपपन्नानि महानिरये पच्चन्ति। वुत्तञ्चेतं भगवता[3]—

"सेय्यथापि* भिक्खवे नळागारा[4] वा तिणागारा[4] वा अग्गि मुत्तो[5] कूटागारानि पि डहति उल्लित्तावलित्तानि निवातानि फुसितग्गळानि[6] पिहितवातपानानि, एवमेव खो भिक्खवे यानि कानिचि भयानि उप्पज्जन्ति, सब्बानि तानि बालतो उप्पज्जन्ति, नो पण्डिततो। ये केचि उपद्दवा उप्पज्जन्ती ...पे०... ये केचि उपसग्गा ...पे०... नो पण्डिततो। इति खो भिक्खवे सप्पटिभयो बालो, अप्पटिभयो पण्डितो। सउपद्दवो बालो, अनुपद्दवो[7] पण्डितो, सउपसग्गो बालो, अनुपसग्गो[8] पण्डितो" (अं० नि० १-९३) ति।

अपि च पूतिमच्छसदिसो बालो, पूतिमच्छबन्धपत्तपुटसदिसो होति तदुपसेवी, छड्डनीयतं[9] जिगुच्छनीयतं च पापुणाति[10] विञ्ञूनं। वुत्तञ्चेतं—

"पूतिमच्छं कुसग्गेन, यो नरो उपनय्हति।
कुसा पि पूती[11] वायन्ति, एवं बालूपसेवना"
(इ० वु० २२८) ति॥

अकित्तिपण्डितो चा पि सक्केन देवानमिन्देन वरे दिय्यमाने[12] एवमाह—

"बालं न पस्से न सुणे, न च बालेन संवसे। B.107
बालेनल्लापसल्लापं[13], न करे न च रोचये॥

१. अभिरूच्चनकानि—सी०; अभिरूचितानि—स्या०, रो०।
२. सहव्यतं—रो०।
३. रो० नत्थि।
*. ० पी—स्या०।
४-४. ० गारो—सी०।
५. मुक्को—रो०।
६. फुस्सितग्ग०—सी०, स्या०, रो०।
७. न उपद्दवो—स्या०।
८. न उपसग्गो—स्या०।
९. ० नीयतञ्च—स्या०।
१०. आपज्जति—स्या०।
११. पूति—सी०, रो०।
१२. दीयमाने—सी०, रो०।
१३. बालेन अल्लाप०—सी०, रो०; बालेनाल्लापसल्लापं—स्या०।

किन्नु ते अकरं बालो, वद कस्सप कारणं ।
केन कस्सप बालस्स, दस्सनं नाभिकङ्खसि ।।
अनयं नयति दुम्मेधो, अधुरायं नियुञ्जति ।
दुन्नयो सेय्यसो होति, सम्मा वुत्तो[1] पकुप्पति[2] ।
विनयं सो न जानाति, साधु तस्स अदस्सनं"
(जा० १.२५९) ति ।।

R. 128 एवं भगवा सब्बाकारेन बालूपसेवनं गरहन्तो "बालानमसेवना[3] मङ्गलं" ति वत्वा इदानि पण्डितसेवनं पसंसन्तो "**पण्डितानं च सेवना मङ्गल**" ति आह । तत्थ **पण्डिता नाम** ये केचि पाणातिपातावेरमणि* आदिदसकुसलकम्मपथसमन्नागता सत्ता, ते तीहाकारेहि जानितब्बा । यथाह "तीणिमानि भिक्खवे पण्डितस्स पण्डितलक्खणानी" (अं०नि०१-९४) ति सुत्तं । अपि च बुद्धपच्चेकबुद्धअसीतिमहासावका[4] अञ्ञे च तथागतस्स[5] सावका[5] सुनेत्तमहागोविन्दविधुरसरभङ्ग-महोसधसुतसोमनिमिराजअयोघरकुमारअकित्तिपण्डितादयो च पण्डिता ति वेदितब्बा[6] ।

ते भये विय रक्खा अन्धकारे विय पदीपो खुप्पिपा[7]सादिदुक्खा-भिभवे विय अन्नपानादिप्पटिलाभो[8] अत्तनो वचनकरानं[9] सब्बभयुपद्द-वूपसग्गविद्धंसनसमत्था होन्ति । तथा हि तथागतं आगम्म असङ्ख्येय्या अपरिमाणा देवमनुस्सा आसवक्खयं पत्ता, ब्रह्मलोके पतिट्ठिता, देवलोके पतिट्ठिता, सुगतिलोके उप्पन्ना, सारिपुत्तत्थेरे चित्तं पसादेत्वा चतूहि च पच्चयेहि थेरं उपट्ठहित्वा असीति कुलसहस्सानि सग्गे

१. ० पी—स्या० ।
२. कप्पति—स्या० ।
३. बालानं असेवना—सी०, रो०; ० सेवनं—स्या० ।
*. ० मणी० —स्या० ।
४. बुद्धपच्चेकबुद्धा असीति ०—सी०, रो० ।
५-५. तथागत सावका—सी०, रो० ।
६. स्या० नत्थि ।
७. ० खुप्पी ०—स्या० ।
८. ०पानादिपटि०—सी०, स्या०, रो० ।
९. ० कारानं—स्या० ।

निब्बत्तानि। तथा महामोग्गल्लानमहाकस्सपप्पभुतीसु सब्बमहासावकेसु[1], सुनेत्तस्स सत्थुनो सावका अप्पेकच्चे ब्रह्मलोके उप्पज्जिसु, अप्पेकच्चे परनिम्मितवसवत्तीनं देवानं सहब्यतं...पे०...अप्पेकच्चे गहपतिमहासालानं[2] सहब्यतं उपपज्जिसु[3] (अं० नि० ३-२३३)। वुत्तं पि[4] चेतं—

"नत्थि भिक्खवे पण्डिततो भयं, नत्थि पण्डिततो उपद्दवो, नत्थि पण्डिततो उपसग्गो[5]" (अं० नि० १-९३) ति।

अपि च तगरमालादिगन्धसदिसो[6] पण्डितो, तगरमालादिगन्धबन्धपलिवेठनपत्तसदिसो[7] होति तदुपसेवी, भावनीयतं मनुञ्ञतं च आपज्जति विञ्ञूनं। वुत्तं पि[8] चेतं— B. 108

"तगरं च पलासेन, यो नरो उपनय्हति। R. 129
पत्ता पि सुरभी[9] वायन्ति, एवं धीरूपसेवना"
(इ० वु० २२८) ति॥

अकित्तिपण्डितो चा पि सक्केन देवानमिन्देन वरे दिय्यमाने[10] एवमाह—

"धीरं पस्से सुणे धीरं, धीरेन सह संवसे।
धीरेनल्लापसल्लापं[11], तं करे तं च रोचये॥
किन्नु ते अकरं धीरो, वद कस्सप कारणं।
केन कस्सप धीरस्स, दस्सनं अभिकङ्खसि॥

१. सब्बेसु महासावकेसु—सी०, रो०। २. ० महासालकुलानं—सी०, रो०।
३. उप्पज्जिसु—सी०। ४. सी०, रो० नत्थि।
५. उपसग्गो—सी०, रो०। ६. ०गन्धभण्डसदिसो—सी०।
७. ०गन्धभण्डपलिवेठन०—सी०, रो०। ८. सी०, रो० नत्थि।
९. सुरभि—सी०, रो०। १०. दीयमाने—सी०, रो०।
११. धीरेन अल्लाप०—सी०, रो०; धीरेना०—स्या०।

नयं नयति मेधावी, अधुरायं न युञ्जति ।
सुनयो सेय्यसो होति, सम्मा वुत्तो न कुप्पति ।
विनयं सो पजानाति, साधु तेन समागमो"
(जा० १.२५९) ति ॥

एवं भगवा सब्बाकारेन पण्डितसेवनं* पसंसन्तो "पण्डितानं सेवना[1] मङ्गलं" ति वत्वा इदानि ताय बालानं असेवनाय पण्डितानं सेवनाय च अनुपुब्बेन पूजनेय्यभावं[2] उपगतानं पूजं पसंसन्तो "**पूजा च पूजनेय्यानं[3] मङ्गलं**" ति आह । तत्थ **पूजनेय्या**[4] नाम सब्बदोसविरहितत्ता सब्बगुणसमन्नागतत्ता च बुद्धा भगवन्तो, ततो पच्छा पच्चेकबुद्धा अरियसावका च । तेसं हि पूजा अप्पका[5] पि दीघरत्तं हिताय सुखाय होति, सुमनमालाकारमल्लिकादयो चेत्थ निदस्सनं ।

तत्थेकं निदस्सनमत्तं भणाम—भगवा हि[6] एकदिवसं पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय राजगहं पिण्डाय पाविसि, अथ खो सुमनमालाकारो[7] रञ्ञो मागधस्स सेनियस्स[8] बिम्बिसारस्स[8] पुप्फानि गहेत्वा गच्छन्तो अद्दस भगवन्तं नगरद्वारमनुप्पत्तं[9] पासादिकं पसादनीयं द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणासीतानुब्यञ्जनप्पटिमण्डितं[10]
R. 130 बुद्धसिरिया जलन्तं, दिस्वानस्स, एतदहोसि "राजा पुप्फानि गहेत्वा
B. 109 सतं वा सहस्सं वा ददेय्य, तं च इधलोकमत्तमेव सुखं भवेय्य, भगवतो पन पूजा अप्पमेय्यअसङ्खेय्यफला[11] दीघरत्तं हितसुखावहा

*. पण्डितूपसेवनं—स्या० ।
१. सेवनं—सी०, स्या०, रो० ।
२. पूजनीयभावं—सी० ।
३. पूजनीयानं—सी० ।
४. पूजनीया—सी० ।
५. अप्पिका—रो०; ० पी—स्या० ।
६. किर—स्या०, रो० ।
७. सुमनो मालाकारो—स्या०, रो० ।
८-८. रो० नत्थि ।
९. नगरद्वारं अनुप्पत्तं—स्या० ।
१०. रो० नत्थि; द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खण असीत्यानु० पटिमण्डितं—स्या० ।
११. अप्पमेय्या असङ्खेय्यफला—स्या०, रो० ।

होति, हन्दाहं इमेहि पुप्फेहि भगवन्तं पूजेमी" ति पसन्नचित्तो एकं पुप्फमुट्ठिं गहेत्वा भगवतो पटिमुखं खिपि, पुप्फानि आकासेन गन्त्वा भगवतो उपरि मालावितानं हुत्वा अट्ठंसु। मालाकारो[1] तमानुभावं दिस्वा पसन्नतरचित्तो पुन एकं पुप्फमुट्ठिं[2] खिपि, तानि पि गन्त्वा मालाकञ्चुको हुत्वा अट्ठंसु। एवं अट्ठ[3] पुप्फमुट्ठियो[3] खिपि, तानि[4] गन्त्वा पुप्फकूटागारं हुत्वा अट्ठंसु।

भगवा अन्तोकूटागारे अहोसि, महाजनकायो सन्निपति। भगवा मालाकारं पस्सन्तो सितं पात्वाकासि। आनन्दत्थेरो "न बुद्धा अहेतू अपच्चया[5] सितं पातुकरोन्ती" ति सितकारणं[6] पुच्छि। भगवा आह "एसो आनन्द मालाकारो इमिस्सा पूजाय आनुभावेन सतसहस्सकप्पे देवेसु च मनुस्सेसु च संसरित्वा परियोसाने सुमनिस्सरो नाम पच्चेकबुद्धो भविस्सती" ति। वचनपरियोसाने[7] धम्मदेसनत्थं इमं गाथं अभासि—

"तं च कम्मं कतं साधु, यं कत्वा नानुतप्पति।
यस्स पतीतो सुमनो, विपाकं पटिसेवती"
(खु० नि० १-२३) ति॥

गाथावसाने[8] चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो अहोसि। एवं अप्पका पि[9] तेसं पूजा दीघरत्तं हिताय सुखाय होती ति वेदितब्बा। सा च आमिसपूजा व, को पन वादो पटिपत्तिपूजाय। यतो ये कुलपुत्ता सरणगमनसिक्खापदप्पटिग्गहणेन[10] उपोसथङ्गसमादानेन[11] चतुपारिसुद्धिसीलादीहि च अत्तनो गुणेहि[12] भगवन्तं

१. रो० नत्थि।
२. मुट्ठि—रो०।
३. अट्ठमुट्ठि—सी०, रो०।
४. ता—रो०।
५. अप्पच्चया—सी०, रो०।
६. कारणं—रो०।
७. च—सी०, रो०।
८. गाथापरियोसाने—सी०, रो०।
९. ० पी—स्या०।
१०. सरणागमन०—सी०; सरणगमनेन सिक्खापद पटि०—रो०; ० पटि ०—स्या०।
११. च—सी०, स्या०, रो०।
१२. सीलगुणेहि—सी०।

पूजेन्ति, को तेसं पूजाफलं[१] वण्णयिस्सति । ते हि तथागतं परमाय पूजाय पूजेन्ती ति वुत्ता[२] । यथाह—

"यो खो आनन्द[३] भिक्खु वा भिक्खुनी वा उपासको वा उपासिका वा धम्मानुधम्मप्पटिपन्नो[४] विहरति सामीचिप्पटिपन्नो[५]
R. 131 अनुधम्मचारी, सो तथागतं सक्करोति गरुं[६] करोति[६] मानेति पूजेति अपचियति[७] परमाय पूजाया" (दी० नि० २-१०७) ति ।

एतेनानुसारेन पच्चेकबुद्धअरियसावकानं पि पूजाय हितसुखावहता वेदितब्बा ।

B. 110 अपि च गहट्ठानं कनिट्ठस्स[८] जेट्ठो[९] भाता[९] पि[१०] भगिनी[११] पि पूजनेय्या[१२], पुत्तस्स मातापितरो, कुलवधूनं सामिकसस्सुससुरा[१३] ति एवमेत्थ[१४] पूजनेय्या वेदितब्बा । एतेसं पि हि पूजा कुसलधम्मसङ्खातत्ता आयुआदिवुड्ढिहेतुत्ता[१५] च मङ्गलमेव । वुत्तञ्हेतं—

"ते[१६] मत्तेय्या भविस्सन्ति पेत्तेय्या सामञ्ञा ब्रह्मञ्ञा कुले जेट्ठापचायिनो, इदं[१७] कुसलं[१८] धम्मं[१८] समादाय वत्तिस्सन्ति, ते तेसं कुसलानं धम्मानं समादानहेतु आयुना पि वड्ढिस्सन्ति, वण्णेन[१९] पि वड्ढिस्सन्ती" (दी० नि० ३-५९) ति आदि ।

इदानि यस्मा "**यं यत्थ मङ्गलं । ववत्थपेत्वा तं तस्स, मङ्गलत्तं विभावये**" ति इति मातिका निक्खित्ता, तस्मा इदं वुच्चति—

१. पूजाय फलं—स्या० ।
२. वुत्तं—सी० ।
३. पनानन्द—स्या० ।
४. ० पटिपन्नो—स्या०, रो० ।
५. ० पटिपन्नो—स्या०, रो० ।
६-६. गरुकरोति—सी०, स्या०, रो० ।
७. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
८. कणिट्ठस्स—सी० ।
९-९. जेट्ठमाता—स्या०, रो० ।
१०. सी० नत्थि; पी—स्या० ।
११. भगिनि—सी० ।
१२. पूजनीया—सी० ।
१३. सामिको सस्सु ससुरो—सी०, रो० ।
१४. एवम्पेथ—सी०, रो० ।
१५. ० वड्ढि ०—सी०, रो० ।
१६. ये ते—सी०, रो० ।
१७. इमं—सी०, रो० ।
१८-१८. कुसलधम्मं -सी०, रो० ।
१९. वण्णेनापि—सी०, रो० ।

एवमेतिस्सा गाथाय बालानं असेवना, पण्डितानं सेवना, पूजनेय्यानं[1] च[2] पूजा ति तीणि मङ्गलानि वुत्तानि, तत्थ बालानं असेवना बालसेवनपच्चयभयादिपरित्ताणेन[3] उभयलोकत्थहेतुत्ता[4], पण्डितानं सेवना पूजनेय्यानं पूजा च तासं फलविभूतिवण्णनायं वुत्तनयेनेव[5] निब्बानसुगतिहेतुत्ता मङ्गलं ति वेदितब्बा। इतो परं तु मातिकं अदस्सेत्वा एव यं यत्थ मङ्गलं, तं ववत्थपेत्वा[6] तस्स मङ्गलत्तं[7] विभावयिस्सामा[8] ति।

निट्ठिता असेवना च बालानं ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना।

पतिरूपदेसवासो चा ति गाथावण्णना

एवं भगवा "ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं" ति एकं अज्झेसितो पि अप्पं
याचितो बहुदायको उळारपुरिसो विय एकाय गाथाय तीणि R. 132
मङ्गलानि वत्वा ततो उत्तरि[9] पि देवतानं सोतुकामताय मङ्गलान-
मत्थिताय[10] येसं येसं यं यं अनुकुलं, ते ते सत्ते तत्थ तत्थ मङ्गले
नियोजेतुकामताय च "**पतिरूपदेसवासो चा**[11]" तिआदीहि गाथाहि
पुन पि अनेकानि मङ्गलानि वत्तुमारद्धो[12]। तत्थ पठमगाथाय ताव
पतिरूपो[13] ति अनुच्छविको[14]। **देसो** ति गामो पि निगमो पि नगरं
पि जनपदो पि यो कोचि सत्तानं निवासो[15] ओकासो[15]। **वासो** ति
तत्थ निवासो। **पुब्बे** ति पुरा अतीतासु जातीसु। **कतपुञ्ञता** ति B. 111
उपचितकुसलता। **अत्ता** ति चित्तं वुच्चति सकलो वा अत्तभावो,

१. पूजनीयानं—सी०।
२. रो० नत्थि।
३. बालसेवनप्पच्चयभयानं परित्ताणेन—सी०, रो०।
४. उभयलोकत्थहितहेतुत्ता—सी०; ० लोकहित ०—रो०।
५. वुत्तनयेन—रो०।
६. ववत्थपेस्सामि—रो०।
७. च ०—रो०।
८. ० स्सामि—रो०।
९. उत्तरि—सी०, रो०; उत्तरिम्पी—स्या०।
१०. मङ्गलानं च अत्थिताय—सी०, रो०।
११. सी०, रो० नत्थि।
१२. वुत्तमारद्धो—स्या०।
१३. पटि०—स्या०।
१४. अनुच्छवियो—रो०।
१५-१५. निवासोकासो—स्या०, रो०।

सम्मापणिधी ति तस्स अत्तनो सम्मा पणिधानं नियुञ्जनं, ठपनं ति वुत्तं होति। सेसं वुत्तनयमेवा ति। अयमेत्थ **पदवण्णना**।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा—**पतिरूपदेसवासो**[*] नाम यत्थ चतस्सो परिसा विचरन्ति, दानादीनि पुञ्ञकिरियवत्थूनि वत्तन्ति, नवङ्गं[1] सत्थु सासनं दिब्बति[1], तत्थ निवासो सत्तानं पुञ्ञकिरियाय पच्चयत्ता[2] मङ्गलं ति वुच्चति। **सीहळदीपपविट्ठकेवट्टादयो**[3] चेत्थ निदस्सनं।

अपरो नयो—पतिरूपदेसवासो[4] नाम भगवतो बोधिमण्डप्पदेसो धम्मचक्कवत्तितप्पदेसो[5] द्वादसयोजनाय परिसाय मज्झे सब्बतित्थियमतं भिन्दित्वा[6] यमकपाटिहारियदस्सितकण्डम्ब[7]रुक्खमूलप्पदेसो देवोरोहणप्पदेसो, यो वा पनञ्ञो पि **सावत्थिराजगहादि** बुद्धाधिवासप्पदेसो[8], तत्थ निवासो सत्तानं छअनुत्तरियप्पटिलाभपच्चयतो[9] मङ्गलं ति वुच्चति।

अपरो नयो—पुरत्थिमाय दिसाय **गजङ्गलं**[10] नाम निगमो, तस्स[11] परेन[11] महासाला, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा, ओरतो मज्झे। दक्खिणपुरत्थिमाय दिसाय **सल्लवती**[12] नाम नदी, ततो परं
R. 133 पच्चन्तिमा जनपदा, ओरतो मज्झे। दक्खिणाय दिसाय **सेतकण्णिकं** नाम निगमो, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा, ओरतो मज्झे। पच्छिमाय दिसाय **थूणं** नाम ब्राह्मणगामो, ततो परं पच्चन्तिमा

*. पटिरूपदेसो—स्या०।
१-१. नवङ्गसत्थुसासनं दिप्पति—सी०, स्या०; नवङ्गं सत्थु सासनं दिप्पति—रो०।
२. पच्चयतो—रो०।
३. सीहलदीपं०—सी०, रो०।
४. पतिरूपदेसो—सी०, रो०; पटिरूपदेसो—स्या०, एवमेव।
५. धम्मचक्कपवत्तितप्पदेसो—सी०; धम्मचक्कप्पवत्तित०—स्या०, रो०।
६. छिन्दित्वा—सी०।
७. ० गण्डम्ब०—सी०, स्या०, रो०।
८. ० देसा—सी०।
९. छानुत्तरिय ०—सी०; ० पटि ०—रो०; ० पटि० प्पच्चयतो—स्या०।
१०. कजङ्गलं—सी०, स्या०, रो०।
११-११. तस्सा अपरेन—सी०; तस्सा ०—स्या०।
१२. सललवती—रो०।

जनपदा, ओरतो मज्झे। उत्तराय दिसाय उसीरद्धजो नाम पब्बतो, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा, ओरतो मज्झे (म० व० २१६)। अयं मज्झिमदेसो आयामेन तीणि योजनसतानि, वित्थारेन अड्ढतेय्यानि[१], परिक्खेपेन नव योजनसतानि होन्ति[२], एसो पतिरूपदेसो नाम।

एत्थ चतुन्नं महादीपानं द्विसहस्सानं परित्तदीपानं इस्सरियाधिपच्चकारका चक्कवत्ती[३] उप्पज्जन्ति, एकं असङ्ख्येय्यं कप्पसतसहस्सं च पारमियो पूरेत्वा सारिपुत्तमोग्गल्लानादयो महासावका उप्पज्जन्ति, द्वे असङ्ख्येय्यानि कप्पसतसहस्सं च पारमियो पूरेत्वा पच्चेकबुद्धा[४], चत्तारि अट्ठ सोळस वा असङ्ख्येय्यानि कप्पसतसहस्सं च पारमियो पूरेत्वा सम्मासम्बुद्धा[५] उप्पज्जन्ति। तत्थ सत्ता चक्कवत्तिरञ्ञो B. 112
ओवादं गहेत्वा पञ्चसु सीलेसु पतिट्ठाय सग्गपरायणा होन्ति। तथा पच्चेकबुद्धानं[६] ओवादे पतिट्ठाय, सम्मासम्बुद्धानं[७] पन[८] बुद्धसावकानं[७] ओवादे[९] पतिट्ठाय सग्गपरायणा निब्बानपरायणा[१०] च होन्ति। तस्मा तत्थ वासो इमासं सम्पत्तीनं पच्चयतो मङ्गलं ति वुच्चति।

पुब्बे[११] कतपुञ्ञता नाम अतीतजातियं[१२] बुद्धपच्चेकबुद्धखीणासवे आरब्भ उपचितकुसलता, सा पि मङ्गलं। कस्मा? बुद्धपच्चेकबुद्धसम्मुखतो[१३] दस्सेत्वा बुद्धानं बुद्धसावकानं वा सम्मुखा सुताय चतुप्पदिकाय[१४] पि गाथाय परियोसाने अरहत्तं पापेती[१५] ति कत्वा[१५]।

१. ०सतानि—स्या०।
२. सी० नत्थि।
३. ० राजानो—स्या०।
४. पच्चेकसम्बुद्धा—सी०, स्या०, रो०।
५. ० च—सी०, स्या०।
६. पच्चेकसम्बुद्धानं—सी०, स्या०, रो०।
७-७. सम्मासम्बुद्धा—रो०; सम्मासम्बुद्धसावकानं—स्या०।
८. रो० नत्थि।
९. पन ०—रो०।
१०. निब्बाणामतपरायणा—सी०।
११. ० च—स्या०।
१२. ० जातिया—स्या०।
१३. ० सम्मुखा—रो०; ० बुद्धे सम्मुखा—स्या०।
१४. चतुप्पदाया—सी०; चतुप्पदाय—रो०।
१५-१५. पापुणन्तो—सी०, रो०; पापुणातीति कत्वा—स्या०।

यो च मनुस्सो पुब्बे कताधिकारो उस्सन्नकुसलमूलो होति, सो तेनेव कुसलमूलेन विपस्सनं उप्पादेत्वा आसवक्खयं पापुणाति यथा राजा महाकप्पिनो[१] अग्गमहेसी च। तेन वुत्तं "पुब्बे च[२] कतपुञ्ञता मङ्गलं" ति।

R.134 **अत्तसम्मापणिधि** नाम इधेकच्चो अत्तानं दुस्सीलं सीले[३] पतिट्ठापेति, अस्सद्धं सद्धासम्पदाय पतिट्ठापेति, मच्छरिं चागसम्पदाय पतिट्ठापेति। अयं वुच्चति "अत्तसम्मापणिधी" ति, एसो[४] च मङ्गलं। कस्मा? दिट्ठधम्मिकसम्परायिकवेरप्पहानविविधानिसंसाधिगमहेतुतो ति[५]।

एवं इमिस्सा पि गाथाय पतिरूपदेसवासो च, पुब्बे च कतपुञ्ञता अत्तसम्मापणिधी चा ति[६] तीणियेव मङ्गलानि वुत्तानि। मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति।

निट्ठिता पतिरूपदेसवासो चा ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना।

बाहुसच्चञ्चातिगाथावण्णना

इदानि **बाहुसच्चं चा** ति इत्थ **बाहुसच्चं** ति बहुस्सुतभावो। **सिप्पं** ति यं किञ्चि हत्थकोसल्लं। **विनयो** ति कायवाचाचित्तविनयनं। **सुसिक्खिता** ति सुट्ठु सिक्खितो। **सुभासिता** ति सुट्ठु भासिता। या ति अनियतनिद्देसो। **वाचा** ति गिरा ब्यप्पथो। सेसं वुत्तनयमेवा ति। अयमेत्थ **पदवण्णना**।

B. 113 **अत्थवण्णना** पन एवं वेदितब्बा—**बाहुसच्चं** नाम यं तं "सुतधरो होति सुतसन्निचयो (म० नि० १-२६७)" ति च "इधेकच्चस्स

१. महाकप्पीनो—स्या०। २. रो० नत्थि।
३. सुसीले—स्या०। ४. सो—सी०, रो०।
५. स्या० नत्थि। ६. चे ति—स्या०।

बहुकं[1] सुतं[1] होति, सुत्तं गेय्यं वेय्याकरणं (अं० नि० २-९)" ति च एवमादिना नयेन सत्थुसासनधरत्तं वण्णितं, तं अकुसलप्पहान-कुसलाधिगमहेतुतो अनुपुब्बेन परमत्थसच्चसच्छिकिरियाहेतुतो[2] च मङ्गलं ति वुच्चति। वुत्तञ्हेतं भगवता—

"सुतवा च खो भिक्खवे अरियसावको अकुसलं पजहति, कुसलं भावेति, सावज्जं पजहति, अनवज्जं भावेति, सुद्धमत्तानं परिहरती (अं० नि० ३-२३७)" ति।

अपरं पि वुत्तं—

"धतानं धम्मानं अत्थमुपपरिक्खति, अत्थं उपपरिक्खतो धम्मा निज्झानं खमन्ति, धम्मनिज्झानक्खन्तिया सति छन्दो जायति, छन्दजातो उस्सहति, उस्सहन्तो तुलयति[3], तुलयन्तो पदहति पदहन्तो कायेन चेव परमत्थसच्चं[4] सच्छिकरोति, पञ्ञाय च अतिविज्झ[5] पस्सती (द्र० म० नि० २-४३६-४३७)" ति। R. 135

अपि च अगारिकबाहुसच्चं[6] पि यं अनवज्जं, तं उभयलोकहित-सुखावहनतो मङ्गलं ति वेदितब्बं।

सिप्पं नाम अगारिकसिप्पं[7] च अनगारिकसिप्पं[8] च। तत्थ अगारिकसिप्पं नाम[9] यं परूपरोधविरहितं[10] अकुसलविवज्जितं मणिकारसुवण्णकारकम्मादिकं[11], तं इधलोकत्थावहनतो मङ्गलं। अनगारिकसिप्पं नाम चीवरविचारणसिब्बनादिसमणपरिक्खाराभि-सङ्खरणं, यं तं "इध भिक्खवे भिक्खु यानि तानि सब्रह्मचारीनं उच्चावचानि किं करणीयानि, तत्थ दक्खो होती" (दी०नि० ३-२०६)

१-१. बहु—रो०; बहुस्सुतं—स्या०।
२. परमत्थसच्छि०—सी०, रो०।
३. तुलेति—रो०।
४. परमसच्चं—रो०।
५. पटि ०—स्या०।
६. आगारिय०—स्या०।
७. अगारियसिप्पं—सी०, रो०; आगारियसिप्पं—स्या०।
८. अनागारिय०—स्या०, एवमेव।
९. स्या०, रो० नत्थि।
१०. परपाणुपरोध०—सी०, स्या०, रो०।
११. ०कम्मादि—सी०, स्या०, रो०।

तिआदिना नयेन तत्थ तत्थ संवण्णितं, यं "नाथकरो[1] धम्मो[1]" (दी० नि० ३-२०५) ति च[2] वुत्तं, तं अत्तनो च परेसं च उभयलोकहितसुखावहनतो मङ्गलं ति[3] वेदितब्बं ।

विनयो नाम अगारिकविनयो[4] च अनगारिकविनयो[5] च । तत्थ अगारिकविनयो नाम[5] दसअकुसलकम्मपथविरमणं, सो तत्थ सुसिक्खितो[6] असङ्किलेसापज्जनेन आचारगुणववत्थानेन च[7]
B. 114 उभयलोकहितसुखावहनतो मङ्गलं । अनगारिकविनयो नाम[8] सत्तापत्तिक्खन्धअनापज्जनं, सो पि वुत्तनयेनेव सुसिक्खितो, चतुपारिसुद्धिसीलं वा अनगारिकविनयो, सो यथा तत्थ पतिट्ठाय अरहत्तं पापुणाति, एवं सिक्खनेन सुसिक्खितो लोकियलोकुत्तरसुखाधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वेदितब्बो ।

सुभासिता वाचा नाम मुसावादादिदोसविरहिता । यथाह "चतूहि भिक्खवे अङ्गेहि समन्नागतो[9] वाचा सुभासिता होती" ति । असम्फप्पलापा वाचा एव वा सुभासिता । यथाह—

"सुभासितं उत्तममाहु सन्तो,
धम्मं भणे नाधम्मं[10] तं दुतियं ।
पियं भणे नाप्पियं तं ततियं,
सच्चं भणे नालिकं[11] तं चतुत्थं"
(सं० नि० १-१८९) ति ॥

R.136 अयं पि उभयलोकहितसुखावहनतो मङ्गलं ति वेदितब्बा । यस्मा च अयं विनयपरियापन्ना एव, तस्मा विनयग्गहणेन एतं असङ्गण्हित्वा

१-१. नाथकरणधम्मो—सी०, रो०; नाथकरणो धम्मो—स्या० ।
२. स्या० नत्थि ।
३. रो० नत्थि ।
४. अगारियविनयो—सी०, स्या० ।
५-५. रो० पोत्थके नत्थि; अनागारिय०—स्या०, एवमेव ।
६. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
७. च सुसिक्खितो—सी०, स्या०, रो० ।
८. च—सी०, स्या०, रो० ।
९. समन्नागता—स्या०, रो० ।
१०. न अधम्मं—सी०, स्या०, रो० ।
११. न अलिकं—स्या० ।

विनयो सङ्गहेतब्बो। अथ वा किं इमिना परिस्समेन परेसं धम्मदेसनादिवाचा[1] इध सुभासिता वाचा ति वेदितब्बा। सा हि यथा पतिरूपदेसवासो, एवं सत्तानं उभयलोकहितसुखनिब्बानाधिगमपच्चयतो मङ्गलं ति वुच्चति। आह च[2]—

"यं बुद्धो भासति वाचं, खेमं निब्बानपत्तिया।
दुक्खस्सन्तकिरियाय, सा वे वाचानमुत्तमा" ति॥

एवं इमिस्सा गाथाय बाहुसच्चं[3], सिप्पं, विनयो सुसिक्खितो, सुभासिता वाचा[3] ति चत्तारि मङ्गलानि वुत्तानि। मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति।

निट्ठिता बाहुसच्चं चा ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना।

मातपितुउपट्ठानं ति गाथावण्णना

इदानि **मातापितुउपट्ठानं** ति एत्थ मातु च पितु चा ति **मातापितु**। **उपट्ठानं** ति उपट्ठहनं। पुत्तानं च दारानं चा ति **पुत्तदारस्स** सङ्गण्हनं **सङ्गहो**। न आकुला **अनाकुला**। कम्मानि[4] एव **कम्मन्ता**। सेसं वुत्तनयमेवा ति अयं **पदवण्णना**। B. 115

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा-**माता** नाम जनिका वुच्चति, तथा **पिता**। **उपट्ठानं** नाम पादधोवनसम्बाहनुच्छादनन्हापनेहि[5] चतुपच्चयसम्पदानेन[6] च उपकारकरणं। तत्थ यस्मा मातापितरो बहूपकारा[7] पुत्तानं अत्थकामा अनुकम्पका, ये[8] पुत्तके बहि कीळित्वा पंसुमक्खितसरीरके आगते दिस्वा पंसुं[9] पुञ्छित्वा मत्थकं

१. धम्मदेसनावाचा—सी०, स्या०।
२. चा पि—सी०, रो०।
३-३. बाहुसच्चं च, सिप्पं च, विनयो च ० सुभासिता च या ०—स्या०।
४. कम्मा—सी०, रो०।
५. ० नहापनेहि—सी०, स्या०, रो०।
६. ० सम्पादनेन—सी०, रो०।
७. बहुकारा—सी०।
८. यं—सी०, स्या०, रो०।
९. पंसुकं—सी०, स्या०, रो०।

उपसिङ्घायन्ता परिचुम्बन्ता[1] च सिनेहं उप्पादेन्ति, वस्ससतं पि मातापितरो सीसेन परिहरन्ता पुत्ता तेसं[2] पतिकारं[3] कातुं[4] असमत्था[4]। यस्मा च ते आपादका पोसका[5] इमस्स[5] लोकस्स R. 137 दस्सेतारो, ब्रह्मसम्मता[6] पुब्बाचरियसम्मता, तस्मा तेसं उपट्ठानं इध पसंसं, पेच्च सग्गसुखं च आवहति। तेन मङ्गलं ति वुच्चति। वुत्तञ्हेतं[7] भगवता—

"ब्रह्मा ति मातापितरो, पुब्बाचरिया ति वुच्चरे।
आहुनेय्या च पुत्तानं, पजाय अनुकम्पका॥
तस्मा हि ने नमस्सेय्य, सक्करेय्य च पण्डितो।
अन्नेन अथ पानेन, वत्थेन सयनेन च।
उच्छादनेन न्हापनेन[8], पादानं धोवनेन च॥
ताय नं पारिचरियाय, मातापितूसु पण्डिता।
इधेव[9] नं पंससन्ति, पेच्च सग्गे पमोदती[10]"
(अं० नि० १-१२२) ति॥

अपरो नयो—**उपट्ठानं** नाम भरणकिच्चकरणकुलवंसट्ठपनादि-पञ्चविधं, तं पापनिवारणादिपञ्चविधदिट्ठधम्मिकहितसुखहेतुतो[11] मङ्गलं ति वेदितब्बं। वुत्तञ्हेतं[12] भगवता—

"पञ्चहि खो गहपतिपुत्त ठानेहि पुत्तेन पुरत्थिमा दिसा मातापितरो पच्चुपट्ठातब्बा[13] भतो ने भरिस्सामि, किच्चं नेसं B.116 करिस्सामि, कुलवंसं ठपेस्सामि, दायज्जं पटिपज्जिस्सामि[14], अथ

१. उपरि चुम्बित्वा—स्या०। २. तस्सा—रो०।
३. पटिकारं—स्या०। ४-४. कातुमसमत्था—स्या०।
५-५. ० चोरस्स दायका पुत्तानं० स्या० अधिको पाठो। ६. ब्रह्मसमा—स्या०, रो०।
७. वुत्तं चेतं—सी०, स्या०। ८. नहापनेन—स्या०, रो०।
९. इध चेव—सी०, स्या०। १०. च मोदती—रो०।
११. ०धम्मिकहितहेतुतो—सी०,स्या०,रो०। १२. वुत्तं चेतं—सी०, रो०।
१३. उपट्ठातब्बा—रो०। १४. पटिपज्जामि—रो०।

वा[1] पन पेतानं कालकतानं दक्खिणं अनुप्पदस्सामी' ति। इमेहि खो गहपतिपुत्त पञ्चहि ठानेहि पुत्तेन पुरत्थिमा दिसा मातापितरो पच्चुपट्ठिता पञ्चहि ठानेहि पुत्तं अनुकम्पन्ति, पापा निवारेन्ति, कल्याणे निवेसेन्ति, सिप्पं सिक्खापेन्ति, पतिरूपेन[2] दारेन संयोजेन्ति, समये दायज्जं निय्यादेन्ती" (दी० नि० ३-१४६) ति।

अपि च यो मातापितरो तीसु वत्थूसु पसादुप्पादनेन[3] सीलसमादापनेन पब्बज्जाय वा उपट्ठहति, अयं मातापितुउपट्ठाकानं अग्गो, तस्स तं मातापितुउपट्ठानं मातापितूहि कतस्स उपकारस्स पच्चुपकारभूतं अनेकेसं दिट्ठधम्मिकानं सम्परायिकानं च अत्थानं पदट्ठानतो मङ्गलं ति वुच्चति। R. 138

पुत्तदारस्स ति एत्थ अत्ततो[4] जाता पुत्ता[5] पि धीतरो पि पुत्ताइच्चेव[6] सङ्ख्यं गच्छन्ति। **दारा**[7] ति वीसतिया भरियानं या काचि भरिया। पुत्ता च दारा च पुत्तदारं, तस्स पुत्तदारस्स। **सङ्गहो** ति सम्माननादीहि उपकारकरणं। तं सुसंविहितकम्मन्ततादि-दिट्ठधम्मिकहितसुखहेतुतो[8] मङ्गलं ति वेदितब्बं। वुत्तञ्हेतं भगवता "पच्छिमा दिसा पुत्तदारा वेदितब्बा" (दी० नि० ३-१४६) ति एत्थ उद्दिट्ठं पुत्तदारं भरियासद्देन सङ्गण्हित्वा "पञ्चहि खो गहपतिपुत्त ठानेहि सामिकेन पच्छिमा दिसा भरिया पच्चुपट्ठातब्बा सम्माननाय अनवमाननाय[9] अनतिचरियाय इस्सरियवोस्सग्गेन अलङ्कारानुप्पदानेन। इमेहि खो गहपतिपुत्त पञ्चहि ठानेहि सामिकेन पच्छिमा दिसा भरिया पच्चुपट्ठिता पञ्चहि ठानेहि सामिकं अनुकम्पति, सुसंविहितकम्मन्ता च होति, सङ्गहितपरिजना[10] च,

१. च—सी०, रो०। २. पटिरूपेन—स्या०।
३. पसादुप्पादापनेन—सी०। ४. अत्तनो—रो०; अत्तना—स्या०।
५. पसुता०—स्या०। ६. पुत्तात्वेव—सी०, स्या०, रो०।
७. दारो—रो०। ८. ० हितहेतुतो—सी०, रो०।
९. अविमाननाय—सी०, स्या०, रो०। १०. सुसङ्गहीतपरिजना—स्या०, रो०।

अनतिचारिनी च, सम्भतं च[1] अनुरक्खति दक्खा च होति अनलसा सब्बकिच्चेसू" (दी० नि० ३-१४६-१४७) ति ।

अयं वा अपरो नयो—**सङ्गहो** ति धम्मिकाहि दानपियवाचात्थचरियाहि[2] सङ्गण्हनं । सेय्यथिदं ? उपोसथदिवसेसु परिब्बयदानं नक्खत्तदिवसेसु नक्खत्तदस्सापनं मङ्गलदिवसेसु मङ्गलकरणं
R. 139 दिट्ठधम्मिकसम्परायिकेसु अत्थेसु ओवादानुसासनं ति । तं वुत्तनयेनेव दिट्ठधम्मिकहितहेतुतो सम्परायिकहितहेतुतो[3] देवताहि पि नमस्सनीयभावहेतुतो च मङ्गलं ति वेदितब्बं । यथाह सक्को देवानमिन्दो—

B. 117 "ये गहट्ठा पुञ्ञकरा, सीलवन्तो उपासका ।
धम्मेन दारं पोसेन्ति, ते नमस्सामि मातली"
(सं० नि० १-२३६) ति ॥

अनाकुला कम्मन्ता[4] नाम[5] कालञ्ञुताय पतिरूपकारिताय[6] अनलसताय उट्ठानवीरियसम्पदाय अब्यसनीयताय[7] च कालातिक्कमनुअप्पतिरूपकरणसिथिलकरणादिआकुलभावविरहिता[8] कसिगोरक्खवाणिज्जादयो कम्मन्ता । एते अत्तनो वा पुत्तदारस्स वा दासकम्मकरानं वा ब्यत्तताय एवं पयोजिता दिट्ठेव धम्मे धनधञ्ञवुद्धिपटिलाभहेतुतो मङ्गलं ति वुच्चन्ति[9] । वुत्तं हेतं[10] भगवता—

"पतिरूपकारी[11] धुरवा, उट्ठाता विन्दते धनं"
(खु० नि० १-२९६) ति च ।

"न दिवा सोप्पसीलेन[12], रत्तिमुट्ठानदेस्सिना[13] ।
निच्चं मत्तेन सोण्डेन, सक्का आवसितुं घरं ॥

१. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
२. ०वचनत्थचरियाहि—सी०, स्या०, रो० ।
३. धम्मिकत्ता सम्परायिक०—स्या०, रो० ।
४. च ०—स्या० ।
५. ति—स्या० ।
६. पटि ०—स्या० ।
७. अब्यसनीयताय—रो० ।
८. कालातिक्कमअप्पतिरूपकरणाकरणसिथिलकरणादिअकुसलभावविरहिता—सी०, रो०; ० अप्पटि ०—स्या० ।
९. वुत्ता—सी०, रो० ।
१०. चेतं—सी०, स्या०, रो० ।
११. पटि ०—स्या० ।
१२. सुपनसीलेन—सी० ।
१३. रत्तिनुट्ठानदस्सिना—सी०, रो०; रत्तिं उट्ठानदस्सिना—स्या० ।

अतिसीतं अतिउण्हं, अतिसायमिदं अहु ।
इति विस्सट्ठकम्मन्ते, अत्था अच्चेन्ति माणवे ॥
योध[१] सीतं च उण्हं च, तिणा भिय्यो[२] न मञ्ञति ।
करं पुरिसकिच्चानि, सो सुखं[३] न विहायति"
(दी॰ नि॰ ३-१४३) ति च ॥

"भोगे संहरमानस्स, भमरस्सेव इरीयतो ।
भोगा सन्निचयं यन्ति, वम्मिकोवूपचीयती"
(दी॰ नि॰ ३-१४५) ति च एवमादि ।

एवं इमिस्सा गाथाय मातुउपट्ठानं, पितुउपट्ठानं, पुत्तदारस्स सङ्गहो, R. 140
अनाकुला च कम्मन्ता ति चत्तारि मङ्गलानि[४] वुत्तानि, पुत्तदारस्स[५] सङ्गहं[५] वा द्विधा कत्वा पञ्च, मातापितुउपट्ठानं वा एकमेव कत्वा तीणि । मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति ।

निट्ठिता मातापितुउपट्ठानं ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना ।

दानं चा ति गाथावण्णना

इदानि **दानं चा** ति एत्थ दीयते इमिना ति दानं, अत्तनो सन्तकं परस्स पटीपादीयती ति वुत्तं होति । धम्मस्स चरिया, धम्मा वा अनपेता चरिया **धम्मचरिया** । ञायन्ते "अम्हाकं इमे" ति[६] B.118
ञातका । न अवज्जानि **अनवज्जानि**, अनिन्दितानि[७] अगरहितानी[८] ति[८] वुत्तं होति । सेसं वुत्तनयमेवा ति अयं **पदवण्णना** ।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा—**दानं** नाम परं उद्दिस्स सुबुद्धिपुब्बिका[९] अन्नादिदसदानवत्थुपरिच्चागचेतना, तंसम्पयुत्तो वा अलोभो । अलोभेन हि तं वत्थुं परस्स पटिपादेति, तेन वुत्तं "दीयते

१. यो च—स्या॰ । २. भीयो—सी॰, स्या॰ ।
३. सुखा—सी॰, स्या॰, रो॰ । ४. व॰—रो॰ ।
५-५. पुत्तदारसङ्गह—सी॰ । ६. इति—स्या॰ ।
७. अनिन्दिता—सी॰, रो॰ । ८-८. अगरहितानि—सी॰; अगरहिता ति—रो॰ ।
९. सन्तुट्ठिपुब्बिका—सी॰, रो॰ ।

इमिना ति दानं" ति। तं बहुजनपियमनापतादीनं[1] दिट्ठधम्मिकसम्परायिकानं फलविसेसानं अधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वुच्चति[2]। "दायको सीह दानपति बहुनो जनस्स पियो होति मनापो" (अं० नि० २-३०५) ति एवमादीनि चेत्थ सुत्तानि अनुस्सरितब्बानि।

अपरो नयो—दानं नाम दुविधं आमिसदानं[3] धम्मदानं च, (अं० नि० १-८४) तत्थ **आमिसदानं** वुत्तप्पकारमेव। इधलोकपरलोकदुक्खक्खयसुखावहस्स पन सम्मासम्बुद्धप्पवेदितस्स धम्मस्स
R. 141 परेसं हितकामताय देसना **धम्मदानं**, इमेसं च द्विन्नं दानानं एतदेव अग्गं। यथाह—

"सब्बदानं धम्मदानं जिनाति, सब्बरसं[4] धम्मरसो जिनाति।
सब्बरतिं[5] धम्मरति जिनाति, तण्हक्खयो सब्बदुक्खं जिनाती"
(खु० नि० १-५१) ति॥

तत्थ आमिसदानस्स मङ्गलत्तं वुत्तमेव। धम्मदानं पन यस्मा अत्थपटिसंवेदितादीनं गुणानं पदट्ठानं, तस्मा मङ्गलं ति वूच्चति। वुत्तञ्हेतं भगवता—"यथा यथा भिक्खवे भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति, तथा तथा सो तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी चा" (अं० नि० २-२९०; दी० नि० ३-२१७) ति एवमादि।

धम्मचरिया नाम दसकुसलकम्मपथचरिया। यथाह तिविधा[6] खो गहपतयो कायेन धम्मचरिया समचरिया होती" (म० नि० १-३५२) ति एवमादि। सा पनेसा धम्मचरिया सग्गलोकूपपत्तिहेतुतो मङ्गलं ति वेदितब्बा। वुत्तञ्हेतं भगवता "धम्मचरियासमचरियाहेतु[7] खो गहपतयो एवमिधेकच्चे सत्ता कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्ती" (म० नि० १-३५०) ति।

१. बहुज्जनपीयादीनं—स्या०। २. वुत्तं हेतं—सी०; वुत्तं—स्या०, रो०।
३. आमिसदानं च—सी०, स्या०, रो०।
४. सब्बं रसं—सी०। ५. सब्बं रत्ति—सी०, रो०।
६. तिविधं—सी०, स्या०, रो०। ७. मम्मचरियसमचरियहेतु—स्या०।

ञातका नाम मातितो वा पितितो वा याव सत्तमा पितामहयुगा[1] सम्बन्धा[1], तेसं भोगपारिजुञ्ञेन वा ब्याधिपारिजुञ्ञेन वा अभिहतानं अत्तनो समीपं आगतानं यथाबलं घासच्छादनधनधञ्ञादीहि सङ्गहो पसंसादीनं दिट्ठधम्मिकानं सुगतिगमनादीनं च सम्परायिकानं विसेसाधिगमानं हेतुतो मङ्गलं ति वुच्चति । B. 119

अनवज्जानि[2] कम्मानि[2] नाम उपोसथङ्गसमादानवेय्यावच्चकरणआरामवनरोपनसेतुकरणादीनि कायवचीमनोसुचरितकम्मानि[3] । तानि[4] हि नानप्पकारहितसुखाधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वुच्चन्ति । "ठानं खो पनेतं विसाखे विज्जति यं इधेकच्चो इत्थी वा पुरिसो वा R. 142 अट्ठङ्गसमन्नागतं उपोसथं उपवसित्वा कायस्स भेदापरं मरणा चातुमहाराजिकानं[5] देवानं सहब्यतं उपपज्जेय्या" (अं०नि० १-१९७) ति एवमादीनि चेत्थ सुत्तानि अनुस्सरितब्बानि ।

एवं इमिस्सा गाथाय दानं च[6], धम्मचरिया च[6], ञातकानं च[6] सङ्गहो, अनवज्जानि कम्मानी ति चत्तारि मङ्गलानि वुत्तानि । मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति ।

निट्ठिता दानं चा ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना ।

आरती ति गाथावण्णना

इदानि **आरती विरती** ति एत्थ **आरती** ति आरमणं, **विरती** ति विरमणं, विरमन्ति वा एताय सत्ता ति विरति । **पापा** ति अकुसला । मदनीयट्ठेन मज्जं, मज्जस्स पानं मज्जपानं, ततो **मज्जपाना** । संयमनं **संयमो** अप्पमज्जनं **अप्पमादो** । **धम्मेसू** ति कुसलेसु । सेसं वुत्तनयमेवा ति अयं **पदवण्णना** ।

१-१. पीतामहयुगसम्बन्धा—स्या० । २-२. अनवज्जकम्मानि—सी०, रो० ।
३. स्या०, रो० नत्थि । ४. ती नि—स्या० ।
५. चातुम्महाराजिकान—सी०, स्या०, रो० । ६. सी०, रो० नत्थि ।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा—**आरति** नाम पापे आदीनवदस्साविनो[1] मनसा एव अनभिरति। **विरति** नाम कम्मद्वारवसेन कायवाचाहि विरमणं, सा चेसा विरति नाम सम्पत्तविरति समादानविरति समुच्छेदविरती ति तिविधा होति, तत्थ या कुलपुत्तस्स अत्तनो जातिं वा कुलं वा गोत्तं वा पटिच्च "न मे एतं[2] B. 120 पतिरूपं, य्वाहं इमं पाणं हनेय्यं, अदिन्नं आदियेय्यं" तिआदिना नयेन सम्पत्तवत्थुतो विरति, अयं **सम्पत्तविरति** नाम। सिक्खापदसमादानवसेन पवत्ता **समादानविरति** नाम, यस्सा पवत्तितो[3] पभुति[3] कुलपुत्तो पाणातिपातादीनि न करोति[4]। अरियमग्गसम्पयुत्ता **समुच्छेदविरति** नाम, यस्सा पवत्तितो पभुति अरियसावकस्स पञ्च भयानि वेरानि वूपसन्तानि होन्ति। **पापं** नाम यं तं "पाणातिपातो खो गहपतिपुत्त कम्मकिलेसो, अदिन्नादानं ...पे०[5]... कामेसुमिच्छाचारो ...पे०[5]... मुसावादो" (दी० नि० ३-१४०) ति एवं वित्थारेत्वा—

R.143 "पाणातिपातो अदिन्नादानं, मुसावादो च वुच्चति।
परदारगमनञ्चेव, नप्पसंसन्ति पण्डिता"
(दी० नि० ३-१४०) ति॥

एवं गाथाय सङ्गहितं[6] कम्मकिलेससङ्खातं चतुब्बिधं[7] अकुसलं[7], ततो पापा। सब्बापेसा[8] आरति च[9] विरति च दिट्ठधम्मिकसम्परायिकभयवेरप्पहानादिनानप्पकारविसेसाधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वुच्चति। "पाणातिपाता पटिविरतो खो गहपतिपुत्त अरियसावको" (अं० नि० ३-३४४) तिआदीनि चेत्थ सुत्तानि अनुस्सरितब्बानि।

१. ० दस्सिनो—सी०, स्या०।
२. तं—स्या०।
३-३. पवत्तितोप्पभुति—सी०, रो०।
४. समाचरति—सी०, स्या०।
५-५. स्या०, रो० नत्थि।
६. सङ्गहीतं—सी०, रो०।
७-७. चतुब्बिधमकुसलं—स्या०।
८. सब्बा चेसा—स्या०।
९. स्या० नत्थि।

मज्जपाना[१] संयमो नाम पुब्बे वुत्तसुरामेरयमज्जप्पमादट्ठाना वेरमणिया[२] एवेतं[२] अधिवचनं। यस्मा पन मज्जपायी अत्थं न जानाति, धम्मं न जानाति, मातु अन्तरायं करोति, पितु बुद्धपच्चेकबुद्धतथागतसावकानं पि अन्तरायं करोति, दिट्ठेव[३] धम्मे[३] गरहं सम्पराये दुग्गतिं अपरापरिये[४] उम्मादं च[५] पापुणाति। मज्जपाना पन संयमो तेसं दोसानं वूपसमं तब्बिपरीतगुणसम्पदं च पापुणाति, तस्मा अयं मज्जपाना[६] संयमो[६] मङ्गलं ति वेदितब्बो।

कुसलेसु धम्मेसु **अप्पमादो** नाम "कुसलानं वा[७] धम्मानं भावनाय असक्कच्चकिरियता असातच्चकिरियता अनट्ठितकिरियता[८] ओलीनवुत्तिता निक्खित्तछन्दता निक्खितधुरता अनासेवना अभावना अबहुलीकम्मं अनधिट्ठानं अननुयोगो पमादो। यो एवरूपो पमादो पमज्जना पमज्जितत्तं, अयं वुच्चति पमादो" (विभङ्ग ४१५-४१६) ति एत्थ वुत्तस्स पमादस्स पटिपक्खवसेन[९] अत्थतो कुसलेसु धम्मेसु सतिया अविप्पवासो वेदितब्बो। सो नानप्पकारकुसलाधिगमहेतुतो[१०] अमताधिगमहेतुतो च[११] मङ्गलं ति वुच्चति। तत्थ "अप्पमत्तस्स B. 121 R. 144
आतापिनो" (म० नि० २-१५) ति च, "अप्पमादो अमतं[१२] पदं[१२]" (खु० नि० १-१६) ति च, एवमादि सत्थु सासनं अनुस्सरितब्बं[१३]।

एवं इमिस्सा गाथाय पापा विरति, मज्जपाना संयमो, कुसलेसु धम्मेसु अप्पमादो ति तीणि मङ्गलानि वुत्तानि। मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति

निट्ठिता आरती[१४] ति इमिस्सा[१४]
गाथाय अत्थवण्णना।

१. ० च—स्या०। २-२. वेरमणियावेतं—सी०, रो०। ३-३ दिट्ठधम्मे—सी०, स्या०, रो०। ४. अपरापरियायेन—स्या०। ५ स्या०, रो० नत्थि। ६-६. मज्जपानसंयमो—स्या०। ७. सी०, रो० नत्थि। ८. अनिट्ठित०—सी०। ९. पटिपक्खनयेन—स्या०, रो०। १०. ० वा—सी०, स्या०। ११. वा—सी०, स्या०, रो०। १२-१२. अमतपदं—रो०। १३. ति—स्या०। १४-१४. आरती विरती पापाति०—स्या०।

गारवो चा ति गाथावण्णना

इदानि **गारवो चा** ति एत्थ **गारवो** ति गरुभावो। **निवातो** ति नीचवुत्तिता[1]। **सन्तुट्ठी** ति सन्तोसो। कतस्स जाननता **कतञ्ञुता**। **कालेना** ति खणेन समयेन। धम्मस्स सवनं **धम्मस्सवनं**[2]। सेसं वुत्तनयमेवा ति अयं **पदवण्णना**।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा-**गारवो** नाम गरुकारप्पयोगारहेसु बुद्धपच्चेकबुद्धतथागतसावकआचरियुपज्झायमातापितुजेट्ठकभातिक[3]-भगिनीआदीसु यथानुरूपं गरुकारो गरुकरणं सगारवता[4]। स[5] चायं[5] गारवो यस्मा सुगतिगमनादीनं हेतु। यथाह—

"गरुकातब्बं गरु[6] करोति[6], मानेतब्बं[7] मानेति, पूजेतब्बं पूजेति। सो तेन कम्मेन एवं समत्तेन एवं समादिन्नेन कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति[8]। नो च कायस्स ...पे०... उपपज्जति, सचे मनुस्सत्तं आगच्छति, यत्थ यत्थ पच्चाजायति[9], उच्चाकुलीनो[10] होती" (म० नि० ३-२८४) ति[11]।

यथा[12] चाह[12] "सत्तिमे भिक्खवे अपरिहानिया धम्मा, कतमे सत्त, सत्थुगारवता" (अं० नि० ३-१७४) ति आदि, तस्मा मङ्गलं ति वुच्चति।

निवातो नाम नीचमनता निवातवुत्तिता, याय समन्नागतो[13] पुग्गलो निहतमानो निहतदप्पो पादपुञ्छनकचोळसदिसो[14] छिन्नविसाण-
B. 122 उसभसमो[15] उद्धटदाठसप्पसमो च हुत्वा सण्हो सखिलो सुखसम्भासो

१. नीचवत्तनं—रो०।
२. धम्मसवनं—सी०; धम्मस्स सवनं—स्या०।
३. ०माति-पिति-जेट्ठभाति०—सी०; ० भातु ०—स्या०।
४. गारवता—सी०, रो०।
५-५. स्वायं—स्या०।
६-६. गरुकरोति—सी०, रो०, स्या०।
७. सक्कातब्बं सक्करोति०—स्या०।
८. उप्पज्जति—सी०; उप्पज्जती ति—स्या०।
९. उप्पज्जति—स्या०, रो०।
१०. तत्थ तत्थ०—स्या०।
११. स्या० नत्थि।
१२-१२. यथाह—स्या०।
१३. निवातवुत्तिताय०—स्या०।
१४. पादपुञ्छनचोळसमो—सी०; पादपुञ्छनचोळकसमो—स्या०।
१५. ०विसाणुसभसमो—स्या०।

होति[1], अयं निवातो[2]। स्वायं यसादिगुणप्पटिलाभहेतुतो मङ्गलं ति R. 145 वुच्चति। आह च "निवातवुत्ति अत्थद्धो, तादिसो लभते यसं" (दी० नि० ३-१४८) ति एवमादि।

सन्तुट्ठि (अं० नि० १-१२) नाम इतरीतरपच्चयसन्तोसो, सो द्वादसविधो होति। सेय्यथिदं? चीवरे यथालाभसन्तोसो यथाबलसन्तोसो यथासारुप्पसन्तोसो ति तिविधो। एवं पिण्डपातादीसु।

तस्सायं पभेदवण्णना[3]—इध भिक्खु चीवरं लभति सुन्दरं वा असुन्दरं वा, सो तेनेव यापेति, अञ्ञं न पत्थेति[4], लभन्तो पि न गण्हाति, अयमस्स चीवरे **यथालाभसन्तोसो**। अथ पन भिक्खु[5] आबाधिको होति, गरु चीवरं पारुपन्तो ओणमति[6] वा किलमति वा, सो सभागेन भिक्खुना सद्धिं तं परिवत्तेत्वा लहुकेन यापेन्तो पि सन्तुट्ठो व होति, अयमस्स चीवरे **यथाबलसन्तोसो**। अपरो भिक्खु पणीतपच्चयलाभी होति, सो पट्टचीवरादीनं[7] अञ्ञतरं महग्घं चीवरं लभित्वा[8] "इदं थेरानं चिरपब्बजितानं बहुस्सुतानं च अनुरूपं" ति तेसं दत्वा[9] अत्तना सङ्कारकूटा वा अञ्ञतो वा कुतोचि नन्तकानि उच्चिनित्वा सङ्घाटिं करित्वा[10] धारेन्तो पि सन्तुट्ठो[11] व होति, अयमस्स चीवरे **यथासारुप्पसन्तोसो**।

इध पन भिक्खु पिण्डपातं लभति लूखं वा पणीतं वा, सो तेनेव यापेति, अञ्ञं न पत्थेति, लभन्तो पि न गण्हाति, अयमस्स पिण्डपाते **यथालाभसन्तोसो**। अथ पन भिक्खु[12] आबाधिको होति, लूखं पिण्डपातं भुञ्जित्वा[13] गाळ्हं रोगातङ्कं[14] पापुणाति, सो तं[15] सभागस्स भिक्खुनो[16] दत्वा तस्स हत्थतो सप्पिमधुखीरादीनि

१. च ०—स्या०।
२. ० नाम—स्या०।
३. ० संवण्णना—स्या०।
४. पट्ठेति—स्या०, एवमेव।
५. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
६. ओनमति—सी०, स्या०, रो०।
७. पत्त ०—स्या०।
८. लद्धा—सी०, रो०।
९. तं—स्या०।
१०. कत्वा—सी०।
११. सन्तुट्ठ व—स्या०।
१२. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
१३. परिभुञ्जित्वा—सी०।
१४. बाळ्हं ०—स्या०।
१५. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
१६. ० तं—सी०, स्या०, रो०।

भुञ्जित्वा समणधम्मं करोन्तो पि सन्तुट्ठो[१] व[१] होति, अयमस्स R. 146 पिण्डपाते **यथाबलसन्तोसो**। अपरो भिक्खु पणीतं पिण्डपातं लभति, सो "अयं पिण्डपातो थेरानं चिरपब्बजितानं अञ्ञेसं च पणीत-पिण्डपातं[२] विना अयापेन्तानं सब्रह्मचारीनं अनुरूपो" ति तेसं[३] दत्वा अत्तना पिण्डाय चरित्वा मिस्सकाहारं भुञ्जन्तो पि सन्तुट्ठो व होति, अयमस्स पिण्डपाते **यथासारुप्पसन्तोसो**।

B. 123 इध पन भिक्खुनो सेनासनं पापुणाति, सो तेनेव सन्तुस्सति, पुन अञ्ञं सुन्दरतरं पि पापुणन्तं न गण्हाति, अयमस्स सेनासने **यथालाभसन्तोसो**। अथ पन भिक्खु[४] आबाधिको होति, निवातसेनासने वसन्तो अतिविय पित्तरोगादीहि आतुरीयति[५], सो तं[६] सभागस्स भिक्खुनो[७] दत्वा तस्स पापुणने[८] सवाते[९] सीतलसेनासने[९] वसित्वा समणधम्मं करोन्तो पि सन्तुट्ठो व होति, अयमस्स सेनासने **यथाबलसन्तोसो**। अपरो भिक्खु सुन्दरं[१०] सेनासनं[१०] पत्तं[११] पि न सम्पटिच्छति "सुन्दरसेनासनं पमादट्ठानं, तत्र[१२] निसिन्नस्स[१३] थिनमिद्धं ओक्कमति, निद्दाभिभूतस्स च[१४] पुन पटिबुज्झतो कामवितक्को[१५] समुदाचरती[१५]" ति। सो तं पटिक्खिपित्वा अज्झोकासरुक्खमूल-पण्णकुटीसु[१६] यत्थ कत्थचि निवसन्तो पि सन्तुट्ठो व होति, अयमस्स सेनासने **यथासारुप्पसन्तोसो**।

१-१. सन्तुट्ठो नाम—स्या०।
२. पणीतं पीण्डपातं—स्या०।
३. ०तं—स्या०।
४. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
५. आतुरिय्यति—सी०।
६. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
७. ० तं—सी०, रो०, स्या०।
८. पापुणनके—सी०, रो०; पापुणके—स्या०।
९-९. पवातसीतल०—सी०; सवात सीतल०—स्या०।
१०-१०. सुन्दरसेनासनं—सी०, रो०; सुन्दरं सेनासनं—स्या०, एवमेव।
११. सम्पत्तम्पी—स्या०।
१२. तत्थ—सी०, रो०।
१३. निसिन्नकाले—सी०, रो०।
१४. रो० नत्थि।
१५-१५. कामवितक्का समुदाचरन्ती—सी०।
१६. अब्भोकास०—स्या०, रो०।

इध पन भिक्खु भेसज्जं लभति हरीतकं वा आमलकं वा, सो तेनेव यापेति, अञ्ञेहि लद्धसप्पिमधुफणितादिं[१] पि न पत्थेति[२], लभन्तो पि न गण्हाति, अयमस्स गिलानपच्चये **यथालाभसन्तोसो**। अथ पन भिक्खु[३] आबाधिको[४] होति[४], तेलेनत्थिको फाणितं लभति, सो तं सभागस्स भिक्खुनो दत्वा तस्स हत्थतो तेलेन भेसज्जं कत्वा समणधम्मं करोन्तो पि सन्तुट्ठो व होति, अयमस्स गिलानपच्चये **यथाबलसन्तोसो**। अपरो भिक्खु एकस्मिं भाजने पूतिमुत्तहरीतकं[५] R. 147
ठपेत्वा एकस्मिं चतुमधुरं "गण्हथ[६] भन्ते यदिच्छसी" ति वुच्चमानो सचस्स तेसं द्विन्नमञ्ञतरेन[७] पि ब्याधि वूपसम्मति, अथ "पूतिमुत्तहरीतकं[८] नाम बुद्धादीहि वण्णितं" ति[९] च[१०] "पूतिमुत्तभेसज्जं निस्साय पब्बज्जा, तत्थ ते यावजीवं उस्साहो करणीयो ति वुत्तं" (म० व० १०४) ति च[११] चिन्तेन्तो चतुमधुरभेसज्जं पटिक्खिपित्वा पूतिमुत्तहरीतकेन[१२] भेसज्जं करोन्तो पि[१३] परमसन्तुट्ठो व होति। अयमस्स गिलानपच्चये **यथासारुप्पसन्तोसो**।

एवंपभेदो सब्बोपेसो सन्तोसो सन्तुट्ठी ति वुच्चति। सा अत्रिच्छतामहिच्छतापापिच्छतादीनं पापधम्मानं पहानाधिगमहेतुतो सुगतिहेतुतो अरियमग्गसम्भारभावतो चातुद्दिसादिभावहेतुतो च मङ्गलं ति वेदितब्बा। आह च—

"चातुद्दिसो अप्पटिघो च होति, B. 124
सन्तुस्समानो इतरीतरेना"

(खु० नि० १-२७५) ति एवमादि।

१. लद्धि०—सी०; लद्धं सप्पि०—रो०; लद्धि सप्पिमधुफाणि०—स्या०। २. पट्ठेति—स्या०। ३. सी०, स्या०, रो० नत्थि। ४-४. रो० नत्थि। ५. ० हरीटकं—सी०, स्या०, रो०, एवमेव। ६. गण्हाहि—स्या०। ७. दिन्नं०—सी०, स्या०, रो०। ८. मुत्तहरीतकं—रो०। ९. सी०, स्या०, रो० नत्थि। १०. अयं च—सी०। ११. सी०, स्या०, रो० नत्थि। १२. मुत्तहरीटकेन—सी०, स्या०, रो०। १३. सी० नत्थि।

कतञ्ञुता नाम अप्पस्स वा बहुस्स वा येन केनचि कतस्स उपकारस्स पुनप्पुनं अनुस्सरणभावेन जाननता। अपि च नेरयिकादि-दुक्खपरित्ताणतो पुञ्ञानि एव पाणीनं बहूपकारानि, ततो[1] तेसं पि उपकारानुस्सरणता कतञ्ञुता ति वेदितब्बा। सा सप्पुरिसेहि पसंसनीयादिनानप्पकारविसेसाधिगमहेतुतो[2] मङ्गलं ति वुच्चति[3]। आह च "द्वेमे भिक्खवे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मिं, कतमे द्वे, यो च पुब्बकारी यो च कतञ्ञू कतवेदी" (अं० नि० १-८०) ति।

कालेन धम्मस्सवनं[4] नाम यस्मिं काले उद्धच्चसहगतं चित्तं होति, कामवितक्कादीनं वा अञ्ञतरेन अभिभूतं, तस्मिं काले तेसं विनोदनत्थं धम्मस्सवनं। अपरे आहु "पञ्चमे पञ्चमे दिवसे
R. 148 धम्मस्सवनं कालेन धम्मस्सवनं नाम। यथाह आयस्मा अनुरुद्धो 'पञ्चाहिकं खो पन मयं भन्ते सब्बरत्तिं धम्मिया कथाय सन्निसीदामा' (म० नि० १-२५८) ति"।

अपि च यस्मिं काले कल्याणमित्ते उपसङ्कमित्वा सक्का होति[5] अत्तनो कङ्खाविनोदकं[6] धम्मं सोतुं, तस्मिं काले पि धम्मस्सवनं कालेन धम्मस्सवनं ति वेदितब्बं। यथाह "ते कालेन कालं उपसङ्कमित्वा परिपुच्छति परिपञ्हती" (दी० नि० ३-२२५) तिआदि। तदेतं कालेन धम्मस्सवनं नीवरणप्पहान[7]चतुरानिसंसआसवक्खयादिनानप्पकारविसेसाधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वेदितब्बं। वुत्तञ्हेतं[8]—

"यस्मिं[9] भिक्खवे[10] समये अरियसावको[10] अट्ठिं[11] कत्वा[11] मनसि कत्वा सब्बं[12] चेतसा[12] समन्नाहरित्वा ओहितसोतो धम्मं सुणाति, पञ्चस्स नीवरणा तस्मिं समये न होन्ती" ति च।

१. यतो—रो०, स्या०।
२. पसंसनीयतादि०—सी०, रो०।
३. वुत्ता—सी०, स्या०।
४. धम्मसवणं—सी०; धम्मसवनं—रो०, एवमेव।
५. स्या०, रो० नत्थि।
६. कङ्खापटिविनोदकं—सी०, रो०। कङ्खापटिविनोदनकरं—स्या०।
७. नीवरणप्पहानेन०—सी०।
८. वुत्तञ्चेतं—सी०।
९. भगवा—स्या०।
१०-१०. समये भिक्खवे अरियसावको—रो०।
११-११. अट्ठिकत्वा—स्या०, रो०; अट्ठीकत्वा—सी०।
१२-१२. सब्बचेतसा—सी०; सब्बचेतसो—स्या०, रो०।

"सोतानुगतानं भिक्खवे धम्मानं...पे०...सुप्पटिविद्धानं चत्तारो आनिसंसा पाटिकङ्खा" (अं० नि० २-१९७) ति च।

"चत्तारोमे भिक्खवे धम्मा कालेन[1] कालं[1] सम्मा भावियमाना सम्मा अनुपरिवत्तियमाना अनुपुब्बेन आसवानं खयं पापेन्ति। कतमे चत्तारो, कालेन धम्मस्सवनं" (अं० नि० २-१४८) ति च[2] एवमादि।

एवं[3] इमिस्सा[3] गाथाय गारवो, निवातो, सन्तुट्ठि, कतञ्ञुता, B. 125
कालेन धम्मस्सवनं ति पञ्च मङ्गलानि वुत्तानि। मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति।

निट्ठिता गारवो चा ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना।

खन्ती चा ति गाथावण्णना

इदानि **खन्ती चा** ति एत्थ खमनं **खन्ति**। पदक्खिणग्गाहिताय सुखं वचो अस्मि ति सुवचो, सुवचस्स कम्मं सोवचस्सं, सोवचस्सस्स भावो **सोवचस्सता**। किलेसानं समितत्ता **समणा**। **दस्सनं** ति पेक्खनं। धम्मस्स साकच्छा **धम्मसाकच्छा**। सेसं वुत्तनयमेवा ति। अयं **पदवण्णना**।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा-**खन्ति** नाम अधिवासनक्खन्ति, R.149
ताय[4] समन्नागतो भिक्खु दसहि अक्कोसवत्थूहि अक्कोसन्ते वधबन्धादीहि वा विहेसन्ते[5] पुग्गले असुणन्तो विय[6] अपस्सन्तो विय च निब्बिकारो होति खन्तिवादी विय। यथाह—

१-१. काले—रो०; कालेन—स्या०।
२. रो० नत्थि।
३-३. एवमिमिस्सा—सी०, स्या०, रो०।
४. याय—स्या०, रो०।
५. विहिंसन्ते—सी०, स्या०, रो०।
६. ० च—सी०, स्या०, रो०।

"अहु अतीतमद्धानं, समणो खन्तिदीपनो ।
तं खन्तियायेव[1] ठितं[1], कासिराजा अछेदयी"
(जातक १-९२) ति ॥

भद्रकतो वा मनसि करोति ततो उत्तरि[2] अपराधा भावेन आयस्मा पुण्णत्थेरो विय । यथाह सो[3]—

"सचे मं भन्ते सुनापरन्तका मनुस्सा अक्कोसिस्सन्ति परिभासिस्सन्ति, तत्थ मे एवं भविस्सति 'भद्दका[4] वतिमे सुनापरन्तका मनुस्सा, सुभद्दका वतिमे सुनापरन्तका मनुस्सा, यं मे नयिमे पाणिना पहारं देन्ती' (म० नि० ३-३५८) ति" आदि ।

याय च समन्नागतो इसीनं पि पसंसनीयो होति । यथाह सरभङ्गो इसि—

B. 126 "कोधं वधित्वा न कदाचि सोचति,
मक्खप्पहानं इसयो वण्णयन्ति ।
सब्बेसं वुत्तं फरुसं खमेथ,
एतं खन्ति उत्तममाहु सन्तो"
(जातक २-९) ति ॥

देवतानं पि पसंसनीयो होति । यथाह सक्को देवानमिन्दो—

"यो हवे बलवा सन्तो, दुब्बलस्स तितिक्खति ।
तमाहु परमं खन्ति, निच्चं खमति दुब्बलो"
(सं० नि० १-२२३) ति ॥

बुद्धानं पि पसंसनीयो होति । यथाह भगवा—

"अक्कोसं वधबन्धं च, अदुट्ठो यो तितिक्खति ।
खन्तीबलं बलाणीकं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं"
(खु० नि० १-५५, ३६५) ति ॥

१-१. खन्तिया एवट्ठितं—स्या० । २. उत्तरिं—सी०, स्या०, रो० ।
३. सी०, स्या०, रो० नत्थि । ४. भद्रका—सी०, स्या०, रो०, एवमेव ।

सा पनेसा खन्ति एतेसं च इध वण्णितानं अञ्ञेसं च गुणानं अधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वेदितब्बा। R. 150

सोवचस्सता नाम सहधम्मिकं वुच्चमाने[1] विक्खेपं वा तुण्हीभावं वा गुणदोसचिन्तनं वा अनापज्जित्वा अतिविय आदरं च गारवं च नीचमनतं च पुरक्खत्वा साधू ति वचनकरणता। सा सब्रह्मचारीनं सन्तिका ओवादानुसासनिप्पटिलाभहेतुतो दोसप्पहानगुणाधिगमहेतुतो च मङ्गलं ति वुच्चति।

समणानं दस्सनं नाम उपसमितकिलेसानं भावितकायवचीचित्तपञ्ञानं उत्तमदमथसमथसमन्नागतानं पब्बजितानं उपसङ्कमनुपट्ठानानुस्सरणस्सवनदस्सनं, सब्बं पि ओमकदेसनाय[2] दस्सनं ति वुत्तं, तं मङ्गलं ति वेदितब्बं। कस्मा? बहूपकारत्ता। आह च "दस्सनम्पहं भिक्खवे तेसं भिक्खूनं बहूपकारं[3] वदामी" (खु० नि० १-२५४) तिआदि। यतो हितकामेन कुलपुत्तेन सीलवन्ते भिक्खू घरद्वारं सम्पत्ते दिस्वा यदि देय्यधम्मो अत्थि, यथाबलं देय्यधम्मेन पतिमानेतब्बा। यदि नत्थि, पञ्चपतिट्ठितं कत्वा वन्दितब्बा। तस्मिं पि असम्पज्जमाने अञ्जलिं पग्गहेत्वा नमस्सितब्बा, तस्मिं पि[4] असम्पज्जमाने पसन्नचित्तेन पियचक्खूहि सम्पस्सितब्बा। एवं दस्सनमूलकेन[5] पि हि पुञ्ञेन अनेकानि जातिसहस्सानि चक्खुम्हि रोगो वा दाहो[6] वा उस्सदा वा पिळका वा न होन्ति, विप्पसन्न- B. 127
पञ्चवण्णसस्सिरिकानि[7] होन्ति चक्खूनि रतनविमाने उग्घाटितमणिकवाटसदिसानि, सतसहस्सकप्पमत्तं देवेसु च मनुस्सेसु च सम्पत्तीनं[8] लाभी होति। अनच्छरियञ्चेतं, यं मनुस्सभूतो

१. वुच्चमानो—रो०। २. लामकदेसनाय—स्या०, रो०।
३. बहुकारं ति—सी०, स्या०; बहुकारं—रो०। ४. रो० नत्थि।
५. ०मूलकेना—सी०, स्या०। ६. दोसो—स्या०, रो०।
७. विप्पसन्नानि पञ्चवण्ण०—सी०, स्या०। ८. सब्बसम्पत्तीनं—सी०, स्या०, रो०।

सप्पञ्ञजातिको सम्मा पवत्तितेन समणदस्सनमयेन पुञ्ञेन एवरूपं विपाकसम्पत्तिं अनुभवेय्य, यत्थ तिरच्छानगतानं पि केवलं सद्धामत्तकेन[1] कतस्स[1] समणदस्सनस्स एवं विपाकसम्पत्तिं वण्णयन्ति।

R. 151 उलूको[2] मण्डलक्खिको[2],
वेदियके[3] चिरदीघवासिको[4]।
सुखितो[5] वत कोसिको अयं[5],
कालुट्ठितं पस्सति बुद्धवरं॥
मयि चित्तं पसादेत्वा, भिक्खुसङ्घे अनुत्तरे[6]।
कप्पानं[7] सतसहस्सानि, दुग्गतेसो[8] न गच्छति॥
स[9] देवलोका चवित्वा[9], कुसलकम्मेन चोदितो।
भविस्सति अनन्तञाणो, सोमनस्सो ति विस्सुतो ति॥

कालेन धम्मसाकच्छा नाम पदोसे वा पच्चूसे वा द्वे सुत्तन्तिका भिक्खू अञ्ञमञ्ञं सुत्तन्तं साकच्छन्ति, विनयधरा विनयं, अभिधम्मिका अभिधम्मं, जातकभाणका जातकं, अट्ठकथिका अट्ठकथं, लीनुद्धतविचिकिच्छापरेतचित्तविसोधनत्थं वा तम्हि तम्हि काले साकच्छन्ति, अयं कालेन धम्मसाकच्छा। सा आगमब्यत्तिआदीनं[10] गुणानं हेतुतो मङ्गलं ति वुच्चती ति।

एवं[11] इमिस्सा[11] गाथाय खन्ति[12], सोवचस्सता, समणदस्सनं[13], कालेन धम्मसाकच्छा ति चत्तारि मङ्गलानि वुत्तानि। मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति।

निट्ठिता खन्ती चा ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना।

१-१. सद्धामत्तकं जायति, तस्स—सी०। सद्धामत्तकजनितस्स—स्या०, रो०। २-२. उलुकक मण्डलक्खि—सी०; उल्लुकको ०—स्या०। ३. वेदिसके—रो०। ४. चिरदीघवासिक—सी०। ५-५. सुखितोसित्वं अय्यकोसिक—सी०; ० कोसियो ०—रो०। ६. च ०—रो०। ७. कप्पानि—सी०, रो०। ८. दुग्गतिसो—सी०, स्या०, रो०। ९-९. देवलोका चवित्वान—सी०, स्या०, रो०। १०. ० ब्यत्तिआदीनं—रो०। ११-११. एवमिमिस्सा—सी०, स्या०। १२. ० च—स्या०। १३. समणानञ्च दस्सनं—स्या०।

तपो चातिगाथावण्णना

इदानि **तपो चा** ति एत्थ पापके धम्मे[1] तपती ति **तपो**, ब्रह्मं B. 128
चरियं, ब्रह्मानं[2] वा चरियं **ब्रह्मचरियं**, सेट्ठचरियं ति वुत्तं होति। अरियसच्चानं दस्सनं **अरियसच्चान दस्सनं**, अरियसच्चानि दस्सनं ति पि एके, तं न सुन्दरं। निक्खन्तं वानतो ति निब्बानं, सच्छिकरणं सच्छिकिरिया, निब्बानस्स सच्छिकिरिया**निब्बानसच्छिकिरिया**। सेसं वुत्तनयमेवा ति अयं **पदवण्णना**।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा—**तपो** नाम अभिज्झादोमनस्सा-
दीनं तपनतो इन्द्रियसंवरो, कोसज्जस्स वा तपनतो वीरियं[3] तेहि[4] R. 152
समन्नागतो पुग्गलो आतापी ति वुच्चति। स्वायं अभिज्झादिप्पहान-झानादिप्पटिलाभहेतुतो[5] मङ्गलं ति वेदितब्बो।

ब्रह्मचरियं नाम मेथुनविरतिसमणधम्मसासनमग्गानमधिवचनं[6]। तथा हि "अब्रह्मचरियं पहाय ब्रह्मचारी होती" (म० नि० १-२३०; दी० नि० १-५५) ति एवमादीसु मेथुनविरति ब्रह्मचरियं ति वुच्चति। "भगवति नो आवुसो ब्रह्मचरियं वुस्सती" ति? एवमावुसो (म० नि० १-१९४) ति एवमादीसु[7] समणधम्मो। "न तावाहं पापिम परिनिब्बायिस्सामि, याव मे इदं ब्रह्मचरियं न इद्धं चेव भविस्सति फीतं च वित्थारिकं बाहुजञ्ञं" (दी०नि० २-८३-८४) ति एवमादीसु सासनं। "अयमेव खो भिक्खु[8] अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो ब्रह्मचरियं। सेय्यथिदं, सम्मादिट्ठी" (दी० नि० २-२३३; सं० नि० ४-८) ति एवमादीसु मग्गो। इध पन अरियसच्चदस्सनेन परतो मग्गस्स सङ्गहितत्ता[9] अवसेसं सब्बं पि वट्टति। तं चेतं उपरूपरि नानप्पकारविसेसाधिगमहेतुतो मङ्गलं ति वेदितब्बं।

१. अकुसले धम्मे—सी०।
२. ब्रह्मचरियं०—स्या०।
३. विरियं—सी०, स्या०, रो०।
४. तेन हि—सी०, स्या०, रो०।
५. पटिलाभहेतुतो—स्या०, रो०।
६. ०मग्गानं इदं अधिवचनं—सी०, रो०; ०मग्गानं अधिवचनं—स्या०।
७. रो० नत्थि।
८. भिक्खवे—स्या०।
९. ० व—स्या०।

अरियसच्चान दस्सनं नाम कुमारपञ्हे[1] वुत्तानं[1] चतुन्नं अरियसच्चानं अभिसमयवसेन मग्गदस्सनं, तं संसारदुक्खवीतिक्कम-हेतुतो मङ्गलं ति वुच्चति।

निब्बानसच्छिकिरिया नाम इध अरहत्तफलं निब्बानं ति
अधिप्पेतं। तं पि हि पञ्चगतिवाननेन[2] वानसञ्ञिताय[2] तण्हाय
B. 129 निक्खन्तत्ता निब्बानं ति वुच्चति, तस्स पत्ति वा पच्चवेक्खणा वा
सच्छिकिरिया ति वुच्चति। इतरस्स पन निब्बानस्स अरियसच्चानं
दस्सनेनेव सच्छिकिरिया सिद्धा, तेनेतं[3] इध नाधिप्पेतं[4]। एवमेसा
R. 153 निब्बानसच्छिकिरिया दिट्ठधम्मिकसुखविहारादिहेतुतो[5] मङ्गलं ति
वेदितब्बा[6]।

एवं इमिस्सा[7] गाथाय तपो ब्रह्मचरियं, अरियसच्चानं[8] दस्सनं[8], निब्बानसच्छिकिरिया ति चत्तारि मङ्गलानि वुत्तानि। मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति।

निट्ठिता तपो चा ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना।

फुट्ठस्स लोकधम्मेही ति गाथावण्णना

इदानि **फुट्ठस्स लोकधम्मेही** ति एत्थ **फुट्ठस्सा** ति फुसितस्स छुपितस्स सम्पत्तस्स। लोके धम्मा **लोकधम्मा**, याव लोकप्पवत्ति, ताव अनिवत्तका[9] धम्मा ति वुत्तं होति। **चित्तं** ति मनो मानसं। **यस्सा** ति नवस्स वा मज्झिमस्स वा थेरस्स वा। **न कम्पती** ति न चलति न वेधति। **असोकं** ति निस्सोकं अब्बूळ्हसोकसल्लं। **विरजं** ति विगतरजं विद्धंसितरजं[10]। **खेमं** ति अभयं निरुपद्दवं। सेसं वुत्तनय-मेवा ति अयं **पदवण्णना**।

१-१. कुमार पञ्हेसु वुत्तत्थानं - सी०, रो०। २-२. पञ्चगतिवानसङ्खाताय—सी०, रो०। ३. तेन तं—सी०। ४. अनधिपेतं—स्या०। ५. दिट्ठधम्म० - स्या०। ६. ० ति—सी०, स्या०, रो०। ७-७. एवमिमिस्सा—स्या०; एवं सब्बत्थ। ८-८. ० सच्चानदस्सनं—सी०, स्या०। ९. अनिवत्तिका- स्या०, रो०। १०. विद्धस्तरजं सी०।

अत्थवण्णना पन एवं वेदितब्बा—**फुट्ठस्स लोकधम्मेहि चित्तं[1] यस्स[1] न कम्पति नाम[2]** यस्स लाभालाभादीहि अट्ठहि लोकधम्मेहि फुट्ठस्स अज्झोत्थटस्स चित्तं न कम्पति न चलति न वेधति, तस्स तं चित्तं केनचि[3] अकम्पनीयलोकुत्तमभावावहनतो[4] मङ्गलं ति वेदितब्बं।

कस्स च[5] एतेहि फुट्ठस्स चित्तं न कम्पती[6] ति[6] ? अरहतो खीणासवस्स, न अञ्ञस्स कस्सचि। वुत्तञ्हेतं[7]—

"सेलो यथा एकग्घनो[8], वातेन न समीरति।
एवं रूपा रसा सद्दा, गन्धा फस्सा च केवला ॥
इट्ठा धम्मा अनिट्ठा च, न[9] पवेधेन्ति[9] तादिनो।
ठितं चित्तं विप्पमुत्तं, वयञ्चस्सानुपस्सती"
(म० व० २०४; अं० नि० ३-८९-९०) ति ॥

असोकं नाम खीणासवस्सेव चित्तं। तञ्हि य्वायं[10] "सोको B. 130 R. 154
सोचना सोचितत्तं अन्तोसोको अन्तोपरिसोको चेतसो परिनिज्झायितत्तं*" (विभ० १२७) ति आदिना नयेन वुच्चति सोको[11], तस्स अभावतो असोकं। केचि निब्बानं[12] वदन्ति, तं पुरिमपदेन नानुसन्धियति[13]। यथा च असोकं, एवं विरजं खेमं ति पि खीणासवस्सेव[14] चित्तं। तं[15] हि[15] रागदोसमोहरजानं[16] विगतत्ता **विरजं**, चतूहि च योगेहि खेमत्ता **खेमं**, यतो एतं[17] तेन तेनाकारेन

१-१. यस्स चित्तं—सी०, रो०। २. सी०, रो० नत्थि। ३. ० धम्मेन—स्या०। ४. अकम्पनीयं लोकुत्तरमग्गभावा०—स्या०। ५. पन—सी०, स्या० नत्थि। ६-६. कम्पति—सी०, स्या०, रो०। ७ वुत्तं चेतं—सी०, स्या०, रो०। ८. एकघनो—सी०, स्या०, रो०। ९-९. नप्पवेधेन्ति—सी०, स्या०, रो०। १०. यो - स्या०, रो०। *. परिज्झा०—स्या०, रो०। ११. सो सोको—सी०; रो० नत्थि। १२. निब्बाणं—सी०, एवं सब्बत्थ। १३. नानुसन्धीयति—सी०, रो०। १४. ० हि—सी०, रो०। १५-१५. सी०, रो० नत्थि। १६. ० रजादीनं—स्या०। १७. एवं—रो०।

तम्हि तम्हि पवत्तिक्खणे गहेत्वा निद्दिट्ठवसेन तिविधं पि[१] अप्पवत्तक्खन्धतादिलोकुत्तमभावावहनतो आहुनेय्यादिभावावहनतो च मङ्गलं ति वेदितब्बं ।

एवं इमिस्सा गाथाय अट्ठलोकधम्मेहि[२] अकम्पितचित्तं, असोकचित्तं, विरजचित्तं, खेमचित्तं ति चत्तारि मङ्गलानि वुत्तानि । मङ्गलत्तं च नेसं तत्थ तत्थ विभावितमेवा ति ।

निट्ठिता फुट्ठस्स लोकधम्मेही ति
इमिस्सा गाथाय अत्थवण्णना ।

एतादिसानीतिगाथावण्णना

एवं भगवा असेवना च बालानं तिआदीहि दसहि गाथाहि अट्ठतिंस महामङ्गलानि[३] कथेत्वा इदानि एतानेव अत्तना वुत्तमङ्गलानि थुनन्तो "**एतादिसानि कत्वाना**" ति[४] अवसानगाथमभासि[५] ।

तस्सायमत्थवण्णना*-**एतादिसानी** ति एतानि ईदिसानि मया वुत्तप्पकारानि बालानं असेवनादीनि । **कत्वाना**[६] ति कत्वा[६] । कत्वान[७] कत्वा[७] करित्वा[८] ति हि[९] अत्थतो अनञ्ञं । **सब्बत्थम-**
R. 155 **पराजिता** ति सब्बत्थ खन्धकिलेसाभिसङ्खारदेवपुत्तमारप्पभेदेसु चतूसु पच्चत्थिकेसु एकेना पि अपराजिता हुत्वा, सयमेव ते चत्तारो मारे पराजेत्वा[१०] ति वुत्तं होति । मकारो चेत्थ पदसन्धिकरमत्तो[११] ति विञ्ञातब्बो ।

सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ती ति एतादिसानि मङ्गलानि कत्वा चतूहि मारेहि अपराजिता हुत्वा सब्बत्थ इधलोकपरलोकेसु

१. चित्तं—स्या० ।
२. अट्ठहि०—सी० ।
३. मङ्गलानि—स्या०, रो० ।
४. ति इमं—सी०, स्या०, रो० ।
५. अवसानगाथं अभासी ति—सी० ।
*. तस्सायं अत्थ ०—स्या० ।
६-६. रो० नत्थि ।
७-७. सी० नत्थि; कत्वान, करित्वा—रो० ।
८. कत्वा—रो० ।
९. सी०, रो० नत्थि ।
१०. पराजित्वा—स्या० ।
११. ०करणमत्तो—सी०, स्या०, रो० ।

ठानचङ्कमनादीसु[1] च सोत्थिं गच्छन्ति, बालसेवनादीहि ये उप्पज्जेय्युं आसवा[2] विघातपरिळाहा[2], तेसं अभावा[3] सोत्थिं गच्छन्ति, B. 131 अनुपद्दुता[4] अनुपसट्ठा[5] खेमिनो अप्पटिभया गच्छन्ती ति वुत्तं होति। अनुनासिको चेत्थ गाथाबन्धसुखत्थं वुत्तो ति वेदितब्बो।

तं तेसं मङ्गलमुत्तमं ति इमिना गाथापदेन भगवा देसनं निट्ठापेसि। कथं? एवं देवपुत्त ये एतादिसानि करोन्ति, ते यस्मा सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ति, तस्मा तं बालानं असेवनादिअट्ठतिंसविधं पि तेसं एतादिसकारकानं मङ्गलमुत्तमं सेट्ठं पवरं ति गण्हाही ति।

एवं च भगवता निट्ठापिताय देसनाय परियोसाने कोटिसतसहस्सदेवतायो अरहत्तं पापुणिंसु, सोतापत्तिसकदागामिअनागामिफलसम्पत्तानं[6] गणना असङ्ख्येय्या अहोसि। अथ भगवा दुतियदिवसे आनन्दत्थेरं आमन्तेसि "इमं पन[7] आनन्द रत्तिं अञ्ञतरा देवता मं उपसङ्कमित्वा मङ्गलपञ्हं पुच्छि, अथस्साहं[8] अट्ठतिंस मङ्गलानि अभासिं, उग्गण्हाहि[9] आनन्द इमं मङ्गलपरियायं, उग्गहेत्वा भिक्खू वाचेही" ति। थेरो उग्गहेत्वा भिक्खू वाचेसि। तयिदं आचरियपरम्पराय[10] आभतं[10] यावज्जतना[11] पवत्तति, "एवमिदं ब्रह्मचरियं इद्धं चेव फीतं च वित्थारिकं बाहुजञ्ञं पुथुभूतं याव[12] देवमनुस्सेहि[12] R. 156 सुप्पकासितं" (दी० नि० २-८४) ति वेदितब्बं।

इदानि एतेस्वेव मङ्गलेसु ञाणपरिचयपाटवत्थं अयमादितो[13] पभुति[13] योजना—एवमिमे इधलोकपरलोकलोकुत्तरसुखकामा सत्ता

१. ठानचङ्कमादीसु—स्या०।
२-२. आसवविघातपरिळाहा—स्या०।
३. अभवा—स्या०।
४. अनुपद्दवा—स्या०।
५. अनुसग्गा—स्या०।
६. ०फलप्पत्तानं—सी०, स्या०।
७. स्या०, रो० नत्थि।
८. तस्साहं—सी०, रो०।
९. उग्गण्हा—रो०।
१०-१०. ० परम्पराभतं—सी०; ० परम्परागतं—रो०।
११. याव अज्जत्तना—स्या०।
१२-१२. यावदेव मनुस्सेहि—स्या०।
१३-१३. अयं आदितोप्पभुति—सी०, रो०; अयं आदितो०—स्या०।

बालजनसेवनं पहाय, पण्डिते निस्साय, पूजनेय्ये[1] पूजेत्वा[2], पतिरूपदेसवासेन[3] पुब्बे च[4] कतपुञ्ञताय[4] कुसलप्पवत्तियं चोदियमाना अत्तानं सम्मा पणिधाय, बाहुसच्चसिप्पविनयेहि अलङ्कतत्तभावा, विनयानुरूपं सुभासितं भासमाना, याव गिहिभावं न विजहन्ति, ताव मातापितूपट्ठानेन[5] पोराणं इणमूलं विसोधयमाना, पुत्तदारसङ्गहेन नवं इणमूलं पयोजयमाना, अनाकुलकम्मन्तताय धनधञ्ञादिसमिद्धिं पापुणन्ता, दानेन भोगसारं धम्मचरियाय जीवितसारं च गहेत्वा, ञातिसङ्गहेन सकजनहितं अनवज्जकम्मन्तताय परजनहितं च करोन्ता, पापविरतिया परूपघातं मज्जपानसंयमेन अत्तूपघातं च विवज्जेत्वा, धम्मेसु अप्पमादेन कुसलपक्खं वड्ढेत्वा, वड्ढितकुसलताय गिहिब्यञ्जनं[6] ओहाय पब्बजितभावे ठिता पि बुद्धबुद्धसावकूपज्झाया-
B. 132 चरियादीसु गारवेन निवातेन च वत्तसम्पदं आराधेत्वा, सन्तुट्ठिया[7] पच्चयगेधं पहाय[8], कतञ्ञुताय सप्पुरिसभूमियं ठत्वा, धम्मस्सवनेन[9] चित्तलीनतं[10] पहाय, खन्तिया सब्बपरिस्सये अभिभवित्वा[11], सोवचस्सताय सनाथं[12] अत्तानं[12] कत्वा, समणदस्सनेन पटिपत्तिपयोगं[13] पस्सन्ता, धम्मसाकच्छाय कङ्खाट्ठानियेसु धम्मेसु कङ्खं विनोदेत्वा[14], इन्द्रियसंवरतपेन सीलविसुद्धिं[15] समणधम्मब्रह्मचरियेन चित्तविसुद्धिं[16]
R. 157 ततो परा[17] च चतस्सो विसुद्धियो सम्पादेन्ता*, इमाय पटिपदाय अरियसच्चदस्सनपरियायं[18] ञाणदस्सनविसुद्धिं पत्वा अरहत्तफलसङ्खं च[19]

१. पूजनीये—सी० ।
२. पूजेन्ता—रो० ।
३. पटिरूप०—स्या० ।
४-४. कतपुञ्ञताय च—सी०, स्या०, रो० ।
५. ० पीतु ०—स्या० ।
६. व्यञ्जनं—रो० ।
७. परमसन्तुट्ठिया—स्या० ।
८. विहाय—रो०, सी० ।
९. धम्मसवनेन—स्या०, रो० ।
१०. लीनचित्तं—स्या० ।
११. अभिभवन्ता—सी०, रो० ।
१२-१२. सनाथमत्तानं—स्या० ।
१३. पटिपत्तियोगं—स्या० ।
१४. पटिविनोदेत्वा—सी०, स्या०, रो० ।
१५. ० पत्वा—स्या० ।
१६. पत्वा—स्या० ।
१७. अपरा—स्या० ।
*. ० देत्वा—स्या० ।
१८. ०दस्सनपरियोसानं—सी० ।
१९. ० फलसङ्खातं—सी०, रो०; ० फलाख्यं—स्या० ।

निब्बानं सच्छिकरोन्ति, यं सच्छिकरित्वा[1] सिनेरुपब्बतो विय वातवुट्ठीहि अट्ठहि लोकधम्मेहि अविकम्पमानचित्ता असोका विरजा खेमिनो होन्ति, ये च खेमिनो होन्ति[2], ते सब्बत्थ एकेन[3] पि[3] अपराजिता होन्ति, सब्बत्थ[4] सोत्थिं गच्छन्ति। तेनाह भगवा—

"एतादिसानि कत्वा न, सब्बत्थमपराजिता।
सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ति, तं तेसं मङ्गलमुत्तमं" ति॥

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय[5]
मङ्गलसुत्तवण्णना निट्ठिता।

१. ० कत्वा—सी०, स्या०, रो०। २. सी०, रो० नत्थि।
३-३. सी०, स्या०, रो० नत्थि। ४. ० च—सी०, रो०, स्या०।
५. खुद्दकट्ठकथाय—स्या०।

६. रतनसुत्तवण्णना

निक्खेपप्पयोजनं

इदानि **यानीध भूतानी** ति एवमादिना मङ्गलसुत्तानन्तरं निक्खित्तस्स रतनसुत्तस्स अत्थवण्णनाक्कमो अनुप्पत्तो। तस्स इध निक्खेपप्पयोजनं वत्वा ततो परं सुपरिसुद्धेन तित्थेन नदितळाकादीसु सलिलज्झोगाहणमिव सुपरिसुद्धेन[1] निदानेन इमस्स सुत्तस्स अत्थज्झोगाहणं दस्सेतुं—

येन वुत्तं यदा यत्थ, यस्मा चेतं इमं नयं।
पकासेत्वान एतस्स, करिस्सामत्थवण्णनं॥

B. 133 तत्थ यस्मा मङ्गलसुत्तेन अत्तरक्खा अकल्याणकरणकल्याणाकरणपच्चयानं[2] च आसवानं पटिघातो दस्सितो, इमं च सुत्तं परारक्खं[3] अमनुस्सादिपच्चयानं च आसवानं पटिघातं साधेति, तस्मा तदनन्तरं निक्खित्तं सिया ति।

इदं तावस्स इध निक्खेपप्पयोजनं।

वेसालिवत्थु

इदानि "**येन वुत्तं**[4] **यदा यत्थ, यस्मा चेतं**" ति एत्थाह "केन पनेतं सुत्तं वुत्तं, कदा कत्थ, कस्मा च वुत्तं" ति। वुच्चते[5]—इदं हि R.158 भगवता एव वुत्तं, न सावकादीहि। तं च यदा दुब्भिक्खादीहि उपद्दवेहि उपद्दुताय वेसालिया लिच्छवीहि राजगहतो याचित्वा भगवा[6] वेसालिं आनीतो, तदा वेसालियं तेसं उपद्दवानं पटिघातत्थाय

१. परिसुद्धेन—रो०। २. ०कल्याणकरणपच्चयानं—सी०।
३. पररक्खं—स्या०; पुरारक्खं—रो०। ४. सी० नत्थि।
५. रो० नत्थि। ६. भगवन्तं—सी०।

वुत्तं ति । अयं[1] तेसं पञ्हानं[2] सङ्खेपविस्सज्जना । वित्थारतो पन वेसालिवत्थुतो[3] पभुति[3] पोराणेहि वण्णीयति ।

तत्राय वण्णना—बाराणसिरञ्ञो किर अग्गमहेसिया कुच्छिम्हि गब्भो सण्ठासि, सा[4] तं ञत्वा[4] रञ्ञो निवेदेसि, राजा गब्भपरिहारं अदासि । सा सम्मा परिहरियमानगब्भा गब्भपरिपाककाले विजायनघरं पाविसि । पुञ्ञवतीनं पच्चूससमये गब्भवुट्ठानं होति, सा च तासं अञ्ञतरा, तेन पच्चूससमये अलत्तकपटलबन्धुजीवकपुप्फसदिसं मंसपेसिं विजायि । ततो "अञ्ञा देवियो सुवण्णबिम्बसदिसे पुत्ते विजायन्ति, अग्गमहेसी मंसपेसिं ति रञ्ञो पुरतो मम अवण्णो उप्पज्जेय्या" ति चिन्तेत्वा तेन अवण्णभयेन तं मंसपेसिं एकस्मिं भाजने पक्खिपित्वा अञ्ञतरेन[5] पटिकुज्जित्वा[6] राजमुद्दिकाय लञ्छित्वा[7] गङ्गाय सोते पक्खिपापेसि । मनुस्सेहि छड्डितमत्ते देवता आरक्खं[8] संविदहिंसु । सुवण्णपट्टकं[9] चेत्थ जातिहिङ्गुलकेन "बाराणसिरञ्ञो अग्गमहेसिया पजा" ति लिखित्वा बन्धिंसु । ततो तं भाजनं ऊमिभयादीहि अनुपद्दुतं गङ्गासोतेन[10] पायासि ।

तेन च समयेन अञ्ञतरो तापसो गोपालकुलं निस्साय गङ्गातीरे विहरति[11], सो पातो व गङ्गं ओतरन्तो[12] भाजनं आगच्छन्तं दिस्वा [B. 134] पंसुकूलसञ्ञाय अग्गहेसि । ततो तत्थ तं अक्खरपट्टकं[13] राजमुद्दिकालञ्छनं[14] च दिस्वा मुञ्चित्वा तं मंसपेसिं अद्दस, दिस्वानस्स[15] [R. 159] एतदहोसि[16] "सिया गब्भो, तथा हिस्स दुग्गन्धपूतिभावो नत्थी"

१. अयमेव—स्या० ।
२. सी० नत्थि ।
३-३. ०वत्थुतोप्पभुति-सी०, स्या० ।
४-४. सा ञत्वा—रो०; सा गब्भसण्ठितं ञत्वा—स्या० ।
५. अञ्ञेन—सी०, रो० नत्थि; ० भाजनेन—स्या० ।
६. पटिकुज्झित्वा—स्या०; पटिकुज्जेत्वा—रो० ।
७. लञ्छेत्वा—रो०; लञ्चेत्वा—स्या० ।
८. रक्खं—सी०; रक्खं—रो०; रक्खि—स्या० ।
९. ० पट्टिकं—सी०, रो०; ० पटिकं—स्या० ।
१०. गङ्गाय सोतेन—सी०, स्या० ।
११. वसति—स्या० ।
१२. ओतिण्णो तं—सी०, स्या०, रो० ।
१३. ० पट्टिकं—सी०, रो०; ० पटिकं—स्या० ।
१४. ०मुद्दिकाय०—स्या० ।
१५. ० तस्स—रो० ।
१६. एतद अहोसि—रो० ।

ति। तं[1] अस्समं नेत्वा सुद्धे ओकासे ठपेसि। अथ अड्ढमासच्चयेन द्वे मंसपेसियो अहेसुं, तापसो[2] दिस्वा साधुतरं[3] ठपेसि, ततो पुन अड्ढमासच्चयेन एकमेकिस्सा पेसिया[4] हत्थपादसीसानमत्थाय पञ्च पञ्च पिळका उट्ठहिंसु[5]। तापसो[6] दिस्वा पुन साधुतरं ठपेसि[6]। अथ[7] अड्ढमासच्चयेन एका मंसपेसि सुवण्णबिम्बसदिसो दारको, एका दारिका अहोसि। तेसु तापसस्स पुत्तसिनेहो उप्पज्जि[8]। अङ्गुट्ठकतो चस्स खीरं निब्बत्ति, ततो पभुति च खीरभत्तं लभति, सो भत्तं भुञ्जित्वा खीरं दारकानं मुखे आसिञ्चति। तेसं यं यं उदरं पविट्ठं[9], तं सब्बं मणिभाजनगतं विय दिस्सति[10]। एवं लिच्छवी[11] अहेसुं। अपरे[12] पनाहु[12] "सिब्बेत्वा[13] ठपिता विय नेसं अञ्ञमञ्ञं लीना छवि अहोसी" ति। एवं ते निच्छविताय वा लीनच्छविताय वा **लिच्छवी** ति पञ्ञायिंसु।

तापसो दारके पोसेन्तो उस्सूरे गामं पिण्डाय पविसति, अतिदिवा पटिक्कमति। तस्स तं ब्यापारं ञत्वा गोपालका आहंसु "भन्ते पब्बजितानं दारकपोसनं पलिबोधो[14], अम्हाकं दारके देथ, मयं पोसेस्साम, तुम्हे अत्तनो कम्मं करोथा" ति। तापसो "साधू" ति पटिस्सुणि। गोपालका दुतियदिवसे मग्गं समं कत्वा पुप्फेहि ओकिरित्वा धजपटाकं[15] उस्सापेत्वा तूरियेहि वज्जमानेहि अस्समं आगता। तापसो[16] "महापुञ्ञा दारका, अप्पमादेन वड्ढेथ, वड्ढेत्वा च अञ्ञमञ्ञं आवाहविवाहं करोथ, पञ्चगोरसेन राजानं तोसेत्वा भूमिभागं गहेत्वा नगरं मापेथ, तत्थ[17] कुमारं अभिसिञ्चथा" ति

१. सी०, रो० नत्थि।
२. ० तं—स्या०।
३. साधुकतरं—सी०, रो०।
४. मंसपेसिया—स्या०।
५. अट्ठंसु—रो०।
६-६. सी०, रो० नत्थि।
७. अथ ततो—सी०, स्या०।
८. उप्पज्जति—स्या०।
९. पविसति—सी०, रो०।
१०. सन्दिस्सति—सी०, रो०।
११. निच्छवी—स्या०, रो०।
१२-१२. अपरे आहु—स्या०, रो०।
१३. सिब्बित्वा—स्या०।
१४. पळिबोधो—सी०।
१५. ०पटाकादि—स्या०; धजपटाका—रो०।
१६. भणे—स्या०।
१७. तत्र—सी०, रो०।

वत्वा दारके अदासि। ते "साधू" ति पटिस्सुणित्वा दारके नेत्वा R. 160
पोसेसुं।

दारका वुड्ढिमन्वाय कीळन्ता विवादट्ठानेसु अञ्ञे गोपालदारके
हत्थेन पि पादेन पि पहरन्ति, ते रोदन्ति। "किस्स रोदथा" ति[1]
च[1] मातापितूहि वुत्ता[2] "इमे निम्मातापितिका तापसपोसिता अम्हे
अतीव पहरन्ती" ति वदन्ति। ततो तेसं मातापितरो "इमे दारका
अञ्ञे दारके विहेठेन्ति[3] दुक्खापेन्ति, न इमे सङ्गहेतब्बा,
वज्जितब्बा[4] इमे[4]" ति आहंसु। ततो पभुति किर सो पदेसो
"वज्जी" ति वुच्चति, तियोजनसतं[5] परिमाणेन[5]। अथ तं पदेसं B. 135
गोपालका राजानं तोसेत्वा अग्गहेसुं। तत्थेव[6] नगरं मापेत्वा
सोळसवस्सुद्देसिकं कुमारं अभिसिञ्चित्वा राजानं अकंसु। ताय चस्स
दारिकाय सद्धिं वारेय्यं कत्वा कतिकं अकंसु "न बाहिरतो दारिका
आनेतब्बा, इतो दारिका न कस्सचि दातब्बा" ति। तेसं पठमसंवासेन
द्वे दारका जाता धीता च पुत्तो च, एवं सोळसक्खत्तुं द्वे द्वे जाता,
ततो तेसं दारकानं यथाक्कमं वड्ढन्तानं आरामुय्याननिवासट्ठान-
परिवारसम्पत्तिं[7] गहेतुं अप्पहोन्तं तं नगरं तिक्खत्तुं गावुतन्तरेन
गावुतन्तरेन पाकारेन परिक्खिपिंसु, तस्स पुनप्पुनं विसालीकतत्ता
वेसालीत्वेव नामं जातं। इदं **वेसालिवत्थु**।

भगवतो निमन्तनं

अयं पन वेसाली भगवतो उप्पन्नकाले इद्धा वेपुल्लप्पत्ता अहोसि।
तत्थ हि राजूनंयेव सत्त सहस्सानि सत्त सतानि सत्त च राजानो
अहेसुं। तथा युवराजसेनापतिभण्डागारिकप्पभुतीनं। यथाह— R. 161

१-१. एवं—स्या०। २. पुट्ठा—स्या०।
३. विनासेन्ति—रो०। ४-४. बज्जेतब्बा इमे बज्जेतब्बा इमे—सी०; इमे वज्जितब्बाति—स्या०।
५-५. योजनसतपरिणामेन—स्या०।
६. तत्थ च—सो०; तत्थ पन—स्या०; अत्थ च—रो०। ७. ० निवासनट्ठान ०—स्या०।

"तेन खो पन समयेन वेसाली इद्धा चेव होति फीता च बहुजना आकिण्णमनुस्सा[१] सुभिक्खा च[२], सत्त च पासादसहस्सानि सत्त च पासादसतानि सत्त च पासादा, सत्त च कूटागारसहस्सानि सत्त च कूटागारसतानि सत्त च कुटागारानि, सत्त च आरामसहस्सानि सत्त च आरामसतानि सत्त च आरामा, सत्त च पोक्खरणिसहस्सानि सत्त च पोक्खरणिसतानि सत्त च पोक्खरणियो" (म० व० २८६) ति ।

सा अपरेन समयेन दुब्भिक्खा अहोसि दुब्बुट्ठिका दुस्सस्सा । पठमं दुग्गतमनुस्सा मरन्ति, ते बहिद्धा छड्डेन्ति । मतमनुस्सानं कुणपगन्धेन अमनुस्सा नगरं पविसिंसु, ततो बहुतरा मरन्ति[३] । ताय पटिकूलताय[४] सत्तानं अहिवातरोगो उप्पज्जि । इति तीहि दुब्भिक्खअमनुस्सरोगभयेहि उपद्दुता[५] वेसालिनगरवासिनो[६] उपसङ्कमित्वा राजानं आहंसु "महाराज इमस्मिं नगरे तिविधं भयमुप्पन्नं, इतो पुब्बे याव सत्तमा राजकुलपरिवट्टा एवरूपं अनुप्पन्नपुब्बं, तुम्हाकं
B. 136 मञ्ञे अधम्मिकत्तेन तं[७] एतरहि[७] उप्पन्नं" ति । राजा सब्बे सन्थागारे सन्निपातापेत्वा "मय्हं अधम्मिकभावं विचिनथा" ति आह । ते सब्बं पवेणिं विचिनन्ता न किञ्चि अद्दसंसु ।

ततो रञ्ञो दोसमदिस्वा[८] "इदं भयं अम्हाकं कथं वूपसमेय्या" ति चिन्तेसुं । तत्थ एकच्चे छ सत्थारे अपदिसिंसु "एतेहि ओक्कन्तमत्ते वूपसमेस्सती[९]" ति । एकच्चे आहंसु "बुद्धो किर लोके[१०] उप्पन्नो, सो भगवा सब्बसत्तहिताय धम्मं देसेति महिद्धिको महानुभावो, तेन ओक्कन्तमत्ते सब्बभयानि वूपसमेय्युं" ति । तेन ते

१. ० च—स्या० ।
२. स्या० नत्थि ।
३. मीयन्ति—सी०, रो० ; मियन्ति—स्या० ।
४. पटिकुल्यताय च—स्या०, रो० ; पटिक्कुलताय—सी० ।
५. उपद्दुताय—सी०, स्या०, रो० ।
६. वेसालिया नगरवासिनो—सी०, स्या०, रो० ।
७-७. एतरहि तं—सी० ; एतरहि—रो० ; अधम्मिकत्तेन तरहि—स्या० ।
८. दोसं अदिस्वा—स्या०, रो० ।
९. वूपसम्मती—सी०, रो० ।
१०. इध लोके—स्या० ।

अत्तमना हुत्वा "कहं पन सो भगवा एतरहि विहरति, अम्हेहि पेसितो[1] न[1] आगच्छेय्या" ति आहंसु। अथापरे आहंसु "बुद्धा नाम R. 162
अनुकम्पका, किस्स नागच्छेय्युं[2], सो पन भगवा एतरहि राजगहे विहरति, राजा[3] बिम्बिसारो तं[3] उपट्ठहति, सो[4] आगन्तुं न ददेय्या" ति। "तेन हि राजानं सञ्ञापेत्वा आनेय्यामा" ति द्वे लिच्छविराजानो महता बलकायेन पहूतं पण्णाकारं दत्वा रञ्ञो सन्तिकं पेसिंसु[5] "बिम्बिसारं सञ्ञापेत्वा भगवन्तं आनेथा" ति। ते गन्त्वा रञ्ञो पण्णाकारं दत्वा तं पवत्तिं निवेदेत्वा "महाराज भगवन्तं अम्हाकं नगरं पेसेही" ति आहंसु। राजा न सम्पटिच्छि, "तुम्हेयेव[6] जानाथा" ति आह। ते भगवन्तं[7] उपसङ्कमित्वा वन्दित्वा एवमाहंसु "भन्ते अम्हाकं नगरे तीणि भयानि उप्पन्नानि, सचे भगवा आगच्छेय्य, सोत्थि नो भवेय्या" ति। भगवा[8] आवज्जेत्वा "वेसालियं रतनसुत्ते वुत्ते सा रक्खा कोटिसतसहस्सं[9] चक्कवाळानं[9] फरिस्सति, सुत्तपरियोसाने चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो भविस्सती" ति अधिवासेसि। अथ राजा बिम्बिसारो भगवतो अधिवासनं सुत्वा "भगवता वेसालिगमनं अधिवासितं" ति नगरे घोसनं[10] कारापेत्वा भगवन्तं उपसङ्कमित्वा आह "किं भन्ते सम्पटिच्छथ वेसालिगमनं" ति। आम महाराजा ति। तेन हि भन्ते ताव[11] आगमेथ, याव मग्गं पटियादेमी ति।

अथ खो राजा बिम्बिसारो राजगहस्स च गङ्गाय च अन्तरा[12] पञ्चयोजनभूमिं[13] समं कत्वा योजने योजने विहारं मापेत्वा भगवतो

१-१. वा पेसिते—सी०, रो०। पेसिते—स्या०।
२. ० ति—रो०।
३-३. राजा च बिम्बिसारो—स्या० राजा च नं बिम्बिसारो—सी०, रो०।
४. कदासि सो—सी; कदाचि सो—स्या०, रो०।
५. पेसेसुं—सी०, स्या०, रो०।
६. तुम्हेव—सी०।
७. साधुति भगवन्तं—स्या०।
८. ततो ०—स्या०।
९-९. कोटिसतसहस्सचक्कवाळे—सी०, रो०; कोटिसतसहस्सानं चक्कवाळानं—स्या०।
१०. उग्घोसनं—स्या०।
११. योजनं भूमि—सी०।
१२. अन्तरे—स्या०।
१३. ० योजनं भूमि—सी०, स्या०, रो०।

B. 137 गमनकालं पटिवेदेसि। भगवा पञ्चहि भिक्खुसतेहि परिवुतो पायासि। राजा पञ्चयोजनं[1] मग्गं[1] पञ्चवण्णेहि पुप्फेहि जाणुमत्तं
R. 163 ओकिरापेत्वा धजपटाकपुण्णघटकदलिआदीनि[2] उस्सापेत्वा भगवतो द्वे सेतच्छत्तानि एकमेकस्स च[3] भिक्खुस्स एकमेकं उक्खिपापेत्वा सद्धिं अत्तनो परिवारेन पुप्फगन्धादीहि पूजं करोन्तो एकेकस्मिं[4] विहारे भगवन्तं वसापेत्वा महादानानि दत्वा पञ्चहि दिवसेहि गङ्गातीरं नेसि[5] तत्थ सब्बालङ्कारेहि[6] नावं अलङ्करोन्तो वेसालिकानं सासनं[7] पेसेसि "आगतो भगवा, मग्गं पटियादेत्वा सब्बे भगवतो पच्चुग्गमनं करोथा" ति। ते "दिगुणं पूजं करिस्सामा" ति वेसालिया च गङ्गाय च अन्तरा[8] तियोजनभूमिं[9] समं कत्वा भगवतो चत्तारि[10] एकमेकस्स च[11] भिक्खुस्स द्वे द्वे सेतच्छत्तानि सज्जेत्वा[12] पूजं कुरुमाना गङ्गातीरं[13] आगन्त्वा अट्ठंसु।

अथ[14] बिम्बिसारो द्वे नावायो सङ्घटेत्वा[15] मण्डपं कत्वा पुप्फदामादीहि अलङ्करित्वा तत्थ सब्बरतनमयं बुद्धासनं पञ्ञपेसि, भगवा तत्थ[16] निसीदि। पञ्च सता भिक्खू पि नावं आरुहित्वा[17] यथानुरूपं निसीदिंसु। राजा भगवन्तं अनुगच्छन्तो गलप्पमाणं उदकं ओगाहेत्वा[18] "याव भन्ते भगवा आगच्छति, तावाहं इधेव गङ्गातीरे वसिस्सामी" ति वत्वा निवत्तो। उपरि देवता याव अकनिट्ठभवना[19] पूजं[20] अकंसु[20]। हेट्ठागङ्गानिवासिनो कम्बलस्सतरादयो नागराजानो

५-५. पञ्च योजनमग्गं—स्या०।
२. धजपताकाकदलिआदीनि—रो०।
३. सी०, रो० नत्थि।
४. एकमेकस्मि—स्या०।
५. नेत्वा—सी०, रो०।
६. सब्बालङ्कारेन—स्या०।
७. लेखं—स्या०, रो०।
८. अन्तरे—स्या०।
९. तियोजनं भूमिं—सी०, स्या०, रो०।
१०. चत्तारि चतारि—स्या०।
११. सी०, स्या० नत्थि।
१२. मापेत्वा—रो०।
१३. गङ्गातीरे—सी०, रो०।
१४. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
१५. सङ्घाटेत्वा—सी०, स्या०, रो०।
१६. तस्मिं—सी०, स्या०, रो०।
१७. अभिरूहित्वा—सी०, स्या०, रो०।
१८. ओरोहित्वा—स्या०, रो०।
१९. अकनिट्ठमानं—स्या०।
२०. पूजमकंसु—स्या०, एवमेव।

पूजं अकंसु । एवं महतिया पूजाय भगवा योजनमत्तं अद्धानं गङ्गाय गन्त्वा वेसालिकानं सीमन्तरं पविट्ठो ।

ततो लिच्छविराजानो बिम्बिसारेन[१] कतपूजाय दिगुणं करोन्ता गलप्पमाणे उदके भगवन्तं पच्चुग्गच्छिंसु । तेनेव खणेन तेन मुहुत्तेन विज्जुप्पभाविनद्धन्धकारविसटकूटो गळगळायन्तो चतूसु दिसासु महामेघो वुट्ठासि । अथ भगवता पठमपादे गङ्गातीरे[२] निक्खित्तमत्ते R. 164 पोक्खरवस्सं वस्सि । ये तेमेतुकामा[३], ते एव तेमेन्ति, अतेमेतुकामा[४] न तेमेन्ति । सब्बत्थ जाणुमत्तं ऊरुमत्तं कटिमत्तं गलप्पमाणं उदकं वहति, सब्बकुणपानि उदकेन गङ्गं[५] पवेसितानि, परिसुद्धो भूमिभागो अहोसि ।

लिच्छविराजानो भगवन्तं अन्तरा योजने योजने वासापेत्वा[६] महादानानि दत्वा तीहि दिवसेहि दिगुणं पूजं करोन्ता वेसालिं नयिंसु । वेसालिं सम्पत्ते भगवति सक्को देवानमिन्दो देवसङ्घपुरक्खतो B. 138 आगच्छि । महेसक्खानं देवतानं[७] सन्निपातेन अमनुस्सा येभुय्येन पलायिंसु । भगवा नगरद्वारे ठत्वा आनन्दत्थेरं आमन्तेसि "इमं आनन्द रतनसुत्तं उग्गहेत्वा बलिकम्मूपकरणानि गहेत्वा लिच्छविराजकुमारेहि सद्धिं वेसालिया तिपाकारन्तरे[८] विचरन्तो[९] परित्तं करोही[१०]" ति रतनसुत्तं अभासि । एवं केन पनेतं सुत्तं वुत्तं[११], कदा, कत्थ, कस्मा च वुत्तं" ति एतेसं पञ्हानं विस्सज्जना वित्थारेन वेसालिवत्थुतो[१२] पभुति[१२] पोराणेहि वण्णीयति ।

१. तेन—सी०, स्या० ।
२. गङ्गाय तीरे—स्या० ।
३ तेमितुकामा—स्या० ।
४. ये अतेमितुकामा—स्या० ।
५. गङ्गाय—स्या० ।
६. वासेत्वा—सी०, रो० ।
७. देवानं——सी०, स्या० ।
८. तीसु पाकारन्तरेसु—सी० ।
९. विचरन्ता—रो० ।
१०. करोथा—सी०, रो० ।
११. सी०, रो० नत्थि ।
१२-१२. वेसालीवत्थुतोप्पभूति—स्या० ।

एवं भगवतो वेसालिं अनुप्पत्तदिवसेयेव वेसालिनगरद्वारे तेसं उपद्दवानं पटिघातत्थाय वुत्तमिदं रतनसुत्तं उग्गहेत्वा आयस्मा आनन्दो परित्तत्थाय भासमानो भगवतो पत्तेन उदकमादाय सब्बनगरं अब्भुक्किरन्तो अनुविचरि। यं किञ्ची ति वुत्तमत्ते एव थेरेन[1] ये पुब्बे अपलाता सङ्कारकूटभित्तिप्पदेसादिनिस्सिता अमनुस्सा, ते चतूहि द्वारेहि पलायिंसु, द्वारानि अनोकासानि अहेसुं। ततो एकच्चे द्वारेसु ओकासं अलभमाना पाकारं भिन्दित्वा पलाता। अमनुस्सेसु[2] गतमत्तेसु मनुस्सानं गत्तेसु[2] रोगो वूपसन्तो, ते निक्खमित्वा
R. 165 सब्बपुप्फगन्धादीहि[3] थेरं पूजेसुं। महाजनो नगरमज्झे सन्थागारं सब्बगन्धेहि लिम्पित्वा[4] वितानं[5] कत्वा सब्बालङ्कारेहि अलङ्करित्वा तत्थ बुद्धासनं पञ्ञपेत्वा[6] भगवन्तं आनेसि।

भगवा सन्थागारं[7] पविसित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि भिक्खुसङ्घो पि खो राजानो मनुस्सा च पतिरूपे[8] पतिरूपे आसने[9] निसीदिंसु। सक्को पि देवानमिन्दो द्वीसु देवलोकेसु देवपरिसाय सद्धिं उपनिसीदि अञ्ञे च देवा, आनन्दत्थेरो पि सब्बं वेसालिं अनुविचरन्तो रक्खं कत्वा वेसालिनगरवासीहि सद्धिं आगन्त्वा एकमन्तं निसीदि। तत्थ भगवा सब्बेसं तदेव[10] रतनसुत्तं अभासी ति।

एत्तावता च या "**येन वुत्तं यदा यत्थ, यस्मा चेतं इमं नयं। पकासेत्वाना**[11]" ति मातिका निक्खित्ता, सा सब्बप्पकारेन वित्थारिता होति।

१. पन०—स्या०; च०—रो०।
२-२. ०गतेसु मनुस्सानं०—स्या०; मनुस्सानं गतेसु—रो०।
३. सब्बमन्ध पुप्फादीहि—सी०, स्या०, रो०।
४. विलिम्पीत्वा—स्या०।
५. रतनजचित्तं वितानं—स्या०।
६. पञ्ञापेत्वा—स्या०, सी०।
७. सण्ठागारं· स्या०।
८. पटिरूपे पटिरूपे—स्या०।
९. ओकासे—सी०, स्या०, रो०।
१०. तमेव—सी०।
११. पकासयित्वाति—स्या०।

यानीधातिगाथावण्णना

B. 139 इदानि "एतस्स करिस्सामत्थवण्णनं" ति वुत्तत्ता **अत्थवण्णना** आरब्भते[1]। अपरे पन वदन्ति "आदितो पञ्चेव गाथा भगवता वुत्ता, सेसा परित्तकरणसमये आनन्दत्थेरेना" ति। यथा[2] वा तथा वा[2] होतु, किं नो इमाय परिक्खाय[3], सब्बथा पि एतस्स रतनसुत्तस्स करिस्सामत्थवण्णनं।

यानीध भूतानी ति पठमगाथा। तत्थ **यानी** ति[4] यादिसानि अप्पेसक्खानि वा महेसक्खानि वा। **इधा** ति इमस्मिं[5] पदेसे, तस्मिं खणे सन्निपातट्ठानं[6] सन्धायाह। **भूतानी** ति किञ्चा पि भूतसद्दो "भूतस्मि पाचित्तियं (पाचि० ४०)" ति एवमादीसु[7] विज्जमाने[8]। "भूतमिदं ति[9] भिक्खवे समनूपस्सथा (म० नि० १-३१९)" ति R.166 एवमादीसु खन्धपञ्चके[10]। "चत्तारो खो भिक्खु[11] महाभूता हेतू (सं०नि० २-३२४)" ति एवमादीसु चतुब्बिधे पथवी धात्वादिरूपे[12]। "यो च कालघसो भूतो (जा० १-६३)" ति एवमादीसु खीणासवे[13]। "सब्बेव निक्खिपिस्सन्ति, भूता लोके समुस्सयं (दी० नि० २-१२०)" ति एवमादीसु सब्बसत्ते। "भूतगामपातब्यताया (पाचि०-५५)" ति एवमादीसु रुक्खादिके। "भूतं भूततो सञ्जानाती (म० नि० १-४)" ति एवमादीसु चातुमहाराजिकानं[14] हेट्ठा सत्तनिकायं[15] उपादाय वत्तति। इध पन अविसेसतो अमनुस्सेसु दट्ठब्बो।

१. आरभियते—स्या०।
२-२. यथा तथा वा—स्या०।
३. परिक्खनाय—रो०; अपरिक्खाय परित्ताय—स्या०।
४. ० या ति—सी०; यानी ति यानि—री०।
५. ० पी—स्था०।
६. सनिपतिट्ठानं—सी०, रो०।
७. एवमादिसु—सी०, रो०।
८. विज्जमानं—स्या०।
९. स्या० नत्थि।
१०. ० पञ्चकं—स्या०।
११ भिक्खवे—स्या०।
१२. पठवि०—सी०, स्या०।
१३. खीणासवं—स्या०।
१४. चातुम्महाराजिकानं—सी०,स्या०,रो०।
१५. सत्तकायं—सी०,रो०।

समागतानी ति सन्निपतितानि। **भुम्मानी** ति भूमियं निब्बत्तानि। **वा**-इति विकप्पने। तेन यानीध भुम्मानि वा भूतानि समागतानी ति इममेकं विकप्पं कत्वा पुन दुतियविकप्पं[१] कातुं "**यानि व अन्तलिक्खे**" ति आह। अन्तलिक्खे वा यानि भूतानि निब्बत्तानि, तानि सब्बानि इध समागतानी ति अत्थो। एत्थ च यामतो याव अकनिट्ठं, ताव निब्बत्तानि भूतानि आकासे पातुभूतविमानेसु[२] निब्बत्तत्ता "अन्तलिक्खे[३] भूतानी" ति वेदितब्बानि। ततो हेट्ठा सिनेरुतो पभुति याव भूमियं रुक्खलतादीसु अधिवत्थानि[४] पथवियं[५] च[५] निब्बत्तानि भूतानि, तानि सब्बानि भूमियं भुमिपटिबद्धेसु[६] च रुक्खलतापब्बतादीसु निब्बत्तत्ता "भुम्मानि भूतानी" ति वेदितब्बानि।

B. 140 एवं भगवा सब्बानेव अमनुस्सभूतानि "भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे" ति द्वीहि पदेहि विकप्पेत्वा पुन एकेन पदेन परिग्गहेत्वा दस्सेतुं "**सब्बेव भूता सुमना भवन्तु**" ति आह। **सब्बे** ति अनवसेसा। **एवा** ति अवधारणे, एकं पि अनपनेत्वा ति अधिप्पायो। **भूता** ति अमनुस्सा। **सुमना भवन्तु** ति सुखितमना पीतिसोमनस्सजाता भवन्तु। **अथो पी** ति किच्चन्तरसन्नियोजनत्थं वाक्योपादाने निपातद्वयं।
R. 167 **सक्कच्च**[७] **सुणन्तु भासितं** ति अट्ठिं कत्वा[८] मनसिकत्वा सब्बं[९] चेतसा[९] समन्नाहरित्वा दिब्बसम्पत्तिलोकुत्तरसुखावहं मम देसनं सुणन्तु।

एवमेत्थ भगवा "यानीध भूतानि समागतानी" ति अनियमितवचनेन[१०] भूतानि परिग्गहेत्वा पुन "भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे"

१. दुतियं विकप्पं—सी०, स्या०, रो०। २. पातुभूतविमाने—स्या०।
३. अन्तळिक्खे—सी०। ४. ० वट्ठानि—स्या०।
४-५. भूमियं च—स्या०। ६. पटिबद्धेसु—स्या०।
७. सक्कच्चं—स्या०। ८. अट्ठीकत्वा—स्या०, सी०।
९-९. सब्बचेतसो—सी०, रो०; सब्बेचेतसो—स्या०। १०. अनियामित०—सी०, स्या०, रो०।

ति द्विधा विकप्पेत्वा ततो "सब्बेव भूता" ति पुन एकज्झं कत्वा "सुमना भवन्तू" ति इमिना वचनेन आसयसम्पत्तियं नियोजेन्तो सक्कच्च[1] सुणन्तु भासितं" ति पयोगसम्पत्तियं, तथा योनिसोमनसिकारसम्पत्तियं परतोघोससम्पत्तियं च, तथा अत्तसम्मापणिधिसप्पुरिसूपनिस्सयसम्पत्तीसु[2] समाधिपञ्ञाहेतुसम्पत्तीसु च नियोजेन्तो गाथं समापेसि।

तस्मा हीतिगाथावण्णना

२. **तस्मा हि भूता** ति दुतियगाथा। तत्थ **तस्मा** ति कारणवचनं। **भूता** ति आमन्तनवचनं। **निसामेथा** ति सुणाथ। **सब्बे** ति अनवसेसा। किं वुत्तं होति? यस्मा तुम्हे दिब्बट्ठानानि तत्थ उपभोगपरिभोगसम्पदं[3] च पहाय धम्मस्सवनत्थं इध समागता, न नटनच्चनादिदस्सनत्थं[4], तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे ति[5]। अथ वा "सुमना भवन्तु, सक्कच्च[6] सुणन्तू" ति वचनेन तेसं सुमनभावं सक्कच्चं[7] सोतुकम्यतं[7] च दिस्वा आह "यस्मा तुम्हे सुमनभावेन अत्तसम्मापणिधियोनिसोमनसिकारासयसुद्धीहि[8] सक्कच्चं सोतुकम्यताय सप्पुरिसूपनिस्सयपरतोघोसपदट्ठानतो[9] पयोगसुद्धीहि च युत्ता, तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे" ति। अथ वा यं B. 141
पुरिमगाथाय अन्ते "भासितं" ति वुत्तं, तं कारणभावेन अपदिसन्तो आह "यस्मा मम भासितं नाम अतिदुल्लभं अट्ठक्खण परिवज्जितस्स खणस्स दुल्लभत्ता, अनेकानिसंसं च पञ्ञाकरुणागुणेन पवत्तत्ता, तञ्चाहं वत्तुकामो 'सुणन्तु भासितं' ति अवोचं, तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे" ति। इदं इमिना गाथापदेन वुत्तं होति।

१. सक्कच्चं—स्या०।
२. ०सप्पुरिसूपस्सयसम्पत्तीसु—सी०, स्या०, रो०।
३. उपभोगसम्पदं—सी०, रो०।
४. नट्टनाटकादिदस्सनत्थं—स्या०; नटनट्टकादिदस्सनत्थं—रो०।
५. स्या०, रो० नत्थि।
६. सक्कच्चं—स्या०।
७-७. सक्कच्चसोतुकम्यतञ्च—स्या०, रो०, एवमेव।
८. ० च युत्ता—स्या०।
९. सप्पुरिसूपस्सय०—सी०, स्या०, रो०।

एवमेतं कारणं निरोपेन्तो अत्तनो[१] भासितनिसामने[१] नियोजेत्वा R. 168 निसामेतब्बं वत्तुमारद्धो "मेत्तं करोथ मानुसिया पजाया" ति। तस्सत्थो—यायं तीहि उपद्दवेहि उपद्दुता मानुसी पजा, तस्सा मानुसिया पजाय मेत्तं[२] मित्तभावं हितज्झासयतं पच्चुपट्ठपेथा[३] ति। केचि पन "मानुसिकं[४] पजं[५]" ति पठन्ति, तं भुम्मत्थासम्भवा न युज्जति। यं पि अञ्ञे[६] अत्थं वण्णयन्ति[७], सो पि न युज्जति। अधिप्पायो पनेत्थ—नाहं बुद्धो ति इस्सरियबलेन वदामि, अपि तु[८] यं[८] तुम्हाकं च इमिस्सा च मानुसिया पजाय हितत्थं[९] वदामि "मेत्तं करोथ मानुसिया पजाया" ति। एत्थ च—

"ये सत्तसण्डं पथविं विजेत्वा,
राजिसयो यजमानानुपरियगा।
अस्समेधं पुरिसमेधं,
सम्मापासं वाजपेय्यं निरग्गळं[१०]॥
मेत्तस्स चित्तस्स सुभावितस्स,
कलं पि ते नानुभवन्ति सोळसिं।
एकं पि चे पाणमदुट्ठचित्तो,
मेत्तायति[११] कुसलो[११] तेन होति।
सब्बे[१२] च[१२] पाणे मनसानुकम्पी,
पहूतमरियो[१३] पकरोति[१४] पुञ्ञं
(अ०नि० ३.२७०-२७१)" ति—

१-१. अत्तभासित ०—सी०।
२. सी०, रो० नत्थि।
३. पच्चुपट्ठापेथा—सी०।
४. ० ति—स्या०; मानुसियं ति—रो०।
५. सी० नत्थि।
६. चञ्ञो—सी०, स्या०, रो०।
७. वण्णेन्ति—सी०, रो०।
८-८. च पन—सी०; च पन तुम्हाकं—रो०।
९. हितं तं—स्या०।
१०. निरग्गलं—सी०, रो०।
११-११. मेत्तायती कुसली—सी०, स्या०, रो०।
१२-१२. सब्बेव—सी०।
१३. ० च—स्या०।
१४. करोति—स्या०।

एवमादीनं सुत्तानं एकादसानिसंसानं च वसेन ये मेत्तं करोन्ति, एतेसं[1] मेत्ता हिता ति वेदितब्बा।

"देवतानुकम्पितो पोसो,
सदा भद्रानि पस्सती
(दी०नि० २-७१)" ति—

एवमादीनं सुत्तानं[2] वसेन येसु कयिरति[3], तेसं पि हिता ति B. 142
वेदितब्बा।

एवं उभयेसं पि हितभावं दस्सेन्तो "मेत्तं करोथ मानुसिया[4]" ति वत्वा इदानि उपकारं पि[5] दस्सेन्तो आह **"दिवा च रत्तो च** R. 169
हरन्ति ये बलिं, तस्मा हि ने रक्खथ अप्पमत्ता" ति। तस्सत्थो— ये मनुस्सा चित्तकम्मकट्ठकम्मादीहि पि देवता कत्वा चेतियरुक्खादीनि च उपसङ्कमित्वा देवता उद्दिस्स दिवा[6] बलिं करोन्ति[7], कालपक्खादीसु[8] च रत्तिं बलिं[9] करोन्ति, सलाकभत्तादीनि वा दत्वा आरक्खदेवता उपादाय याव ब्रह्मदेवतानं[10] पत्तिदाननिय्यातनेन दिवा बलिं करोन्ति, छत्तारोपनदीपमालाय सब्बरत्तिकधम्मस्सवनादीनि[11] कारापेत्वा पत्तिदाननिय्यातनेन च रत्तिं बलिं करोन्ति, ते कथं न रक्खितब्बा। यतो एवं दिवा च रत्तो च तुम्हे उद्दिस्स करोन्ति ये बलिं, **तस्मा हि ने[12] रक्खथ[13]**, तस्मा बलिकम्मकरणा[14] पि ते मनुस्से रक्खथ गोपयथ, अहितं[15] नेसं[16] अपनेथ, हितं उपनेथ अप्पमत्ता हुत्वा तं[17] कतञ्ञुभावं हदये कत्वा निच्चमनुस्सरन्ता ति।

१. तेसं—स्या०, रो०।
२. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
३. करियति—सी०; कयिरन्ति—स्या०।
४. ० पजाय—सी०, स्या०, रो०।
५. स्या० नत्थि।
६. ० च—स्या०।
७. ०दीपपूजनं च—सी०।
८. काळ०—सी०।
९. स्या०, रो० नत्थि।
१०. ०देवानं—सी०, रो०।
११. सब्बरत्तिं०—स्या०।
१२. नेति—स्या०।
१३. स्या० नत्थि।
१४. ०कारणा—सी०, रो०।
१५. अहितं च—स्या०।
१६. तेसं—रो०।
१७. तं तं—स्या०।

यंकिञ्चीतिगाथावण्णना

३. एवं देवतासु मनुस्सानं उपकारकभावं दस्सेत्वा तेसं उपद्दववूपसमनत्थं बुद्धादिगुणप्पकासनेन च[१] देवमनुस्सानं धम्मस्सवनत्थं **"यंकिञ्चि वित्तं"** तिआदिना नयेन सच्चवचनं पयुञ्जितुमारद्धो। तत्थ **यंकिञ्ची** ति अनियमितवसेन अनवसेसं परियादियति यंकिञ्चि तत्थ तत्थ वोहारूपगं। **वित्तं** ति धनं। तञ्हि वित्तिं जनेती ति वित्तं। **इध वा** ति मनुस्सलोकं निद्दिसति। **हुरं वा** ति ततो परं अवसेसलोकं, तेन च ठपेत्वा मनुस्से सब्बलोकग्गहणे पत्ते[२] "सग्गेसु वा" ति परतो वुत्तत्ता ठपेत्वा मनुस्से च सग्गे च अवसेसानं नागसुपण्णादीनं गहणं वेदितब्बं।

एवं[३] इमेहि[३] द्वीहि पदेहि यं मनुस्सानं वोहारूपगं अलङ्कार-परिभोगूपगं[४] च जातरूपरजतमुत्तामणिवेळुरिय[५]पवाळलोहितङ्कम-सारगल्लादिकं, यं च मुत्तामणिवालुकत्थताय भूमिया रतनमयविमानेसु
R. 170 अनेकयोजनसतवित्थतेसु[६] भवनेसु उप्पन्नानं नागसुपण्णादीनं वित्तं, तं[७] निद्दिट्ठं होति। **सग्गेसु वा** ति कामावचररूपावचरदेवलोकेसु।
B.143 ते हि सोभनेन कम्मेन अजीयन्ती[८] ति सग्गा। सुट्ठु[९] अग्गा ति पि सग्गा। **यं** ति यं ससामिकं[१०] वा असामिकं[११] वा। **रतनं** ति रतिं नयति वहति जनयति[१२] वड्ढेती ति रतनं। यंकिञ्चि चित्तीकतं महग्घं अतुलं दुल्लभदस्सनं अनोमसत्तपरिभोगं च, तस्सेतं अधिवचनं। यथाह—

"चित्तीकतं महग्घं च, अतुलं दुल्लभदस्सनं।
अनोमसत्तपरिभोगं, रतनं तेन वुच्चती" ति॥

१. स्या० नत्थि।
२. स्या० नत्थि।
३-३. एवमिमेहि—स्या०।
४. अलङ्कारं परिभोगूपगं—सी०; ०परिभोगूपयोगञ्च—स्या०।
५. ०वेत्थरिय०—सी०; ०पबाल०—स्या०।
६. नेकयोजन०—सी०, रो०।
७. तं वा—सी०।
८. इरीयन्ति गम्मन्ती—सी०, स्या०, रो०।
९. ० वा—सी०, स्या०, रो०।
१०. सस्सामिकं—सी०, स्या०, रो०।
११. अस्सामिकं—सी०, स्या०, रो०।
१२. जनेति—स्या०।

पणीतं ति उत्तमं सेट्ठं अतप्पकं[1]। एवं इमिना गाथापदेन यं सग्गेसु अनेकयोजनसतप्पमाणसब्बरतनमयविमानसुधम्मवेजयन्तप्पभुतीसु ससामिकं, यं च बुद्धुप्पादविरहेन[2] अपायमेव परिपूरेन्तेसु सत्तेसु सुञ्ञविमानप्पटिबद्धं[3] असामिकं[4], यं वा पनञ्ञं पि पथविमहासमुद्दहिमवन्तादिनिस्सितमसामिकं[5] रतनं, तं निद्दिट्ठं होति।

न नो समं अत्थि तथागतेना ति **न**—इति पटिसेधे। **नो**—इति अवधारणे। **समं** ति तुल्यं। **अत्थी** ति विज्जति। **तथागतेना** ति बुद्धेन। किं वुत्तं होति? यं एतं वित्तं च रतनं च पकासितं, एत्थ एकं पि बुद्धरतनेन सदिसं रतनं नेवत्थि। यं पि हि तं चित्तीकतट्ठेन[6] रतनं, सेय्यथिदं? रञ्ञो चक्कवत्तिस्स चक्करतनं मणिरतनं च, यम्हि उप्पन्ने महाजनो न अञ्ञत्थ चित्तीकारं करोति, न कोचि पुप्फगन्धादीनि गहेत्वा यक्खट्ठानं वा भूतट्ठानं वा गच्छति, सब्बो पि जनो चक्करतनमणिरतनमेव चित्तीकारं[7] करोति[7] पूजेति, तं तं वरं पत्थेति, पत्थितपत्थितं चस्स एकच्चं समिज्झति, तं पि रतनं बुद्धरतनेन समं नत्थि। यदि हि चित्तीकतट्ठेन रतनं, तथागतो व रतनं। तथागते हि उप्पन्ने ये केचि महेसक्खा देवमनुस्सा न ते R. 171
अञ्ञत्त चित्तीकारं करोन्ति, न कञ्चि अञ्ञं पूजेन्ति। तथा हि ब्रह्मा सहम्पति सिनेरुमत्तेन रतनदामेन तथागतं पूजेसि, यथाबलं च अञ्ञे देवा मनुस्सा च बिम्बिसारकोसलराजअनाथपिण्डिकादयो। परिनिब्बुतं पि भगवन्तं उद्दिस्स छन्नवुतिकोटिधनं विस्सज्जेत्वा असोकमहाराजा सकलजम्बुदीपे चतुरासीति विहारसहस्सानि पतिट्ठापेसि, को पन वादो अञ्ञेसं चित्तीकारानं। अपि च

१. अनप्पकं मनापं—स्या०।
२. ०विरहे—स्या०, रो०।
३. ० पटिबद्धं—स्या०, रो०।
४. अस्सामिकं—स्या०, रो०।
५. हिमवन्तादिनिस्सितं अस्सामिकरतनं—सी०, रो०।
६. वित्तं—स्या०।
७-७. चित्तिं करोति—सी०, स्या०, रो०।

कस्सञ्ञस्स परिनिब्बुतस्सा पि जातिबोधिधम्मचक्कप्पवत्तनपरिनिब्बानट्ठानानि पटिमाचेतियादीनि वा उद्दिस्स एवं चित्तीकारगरुकारो पवत्तति यथा भगवतो। एवंचित्तीकतट्ठेना पि तथागतसमं रतनं नत्थि।

B. 144 तथा यं पि तं महग्घट्ठेन रतनं। सेय्यथिदं[1] ? कासिकं[2] वत्थं[2]। यथाह "जिण्णं पि भिक्खवे कासिकं वत्थं वण्णवन्तं चेव होति सुखसम्फस्सं च महग्घं चा" (अं० नि० १-२२९) ति, तं पि बुद्धरतनेन समं नत्थि। यदि हि[3] महग्घट्ठेन रतनं, तथागतो व रतनं। तथागतो हि येसं पंसुकं[4] पि पटिग्गण्हाति, तेसं तं महप्फलं[5] होति[5] महानिसंसं सेय्यथापि असोकरञ्ञो[6], इदमस्स महग्घताय। एवं महग्घतावचनेन[7] चेत्थ दोसाभावसाधकं इदं[8] सुत्तपदं वेदितब्बं—

"येसं खो पन सो पटिग्गण्हाति[9] चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारं[10], तेसं तं महप्फलं होति महानिसंसं। इदमस्स महग्घताय वदामि। सेय्यथापि तं भिक्खवे कासिकं वत्थं महग्घं, तथूपमाहं भिक्खवे इमं पुग्गलं वदामी" (अं० नि० १-२३०) ति।

एवं महग्घट्ठेन[11] पि तथागतसमं रतनं नत्थि।

R. 172 तथा यं पि तं अतुलट्ठेन रतनं। सेय्यथिदं ? रञ्ञो चक्कवत्तिस्स चक्करतनं (दी० नि० २-१३२) उप्पज्जति इन्दनीलमणिमयनाभि[12] सत्तरतनमयसहस्सारं पवाळमयनेमि[13] रत्तसुवण्णमयसन्धि[14], यस्स

१. सेय्यथापि—सी०, स्या०, रो०। २-२. कासिकवत्थं—स्या०, एवमेव।
३. पि—सी०। ४. पंसुकूलं—सी०, स्या०।
५-५. होति महप्फलं—सी०, स्या०, रो०। ६. असोकस्स रञ्ञो—सी०, स्या०, रो०।
७. ०वचनेन—सी०, रो०; एवं महग्घट्ठेनापि तथागतसमं रतनं नत्थि ० स्या० पोत्थके अधिको पाठो। ८. ० ताव—सी०।
९. पटिगण्हाति—सी०, रो०।
१०. चीवर...पे०...परिक्खारं—सी०, रो०; चीवरं ...पे० .. परिक्खारं—स्या०।
११. महग्घट्ठेना—सी०, स्या०, रो०। १२. मणिनाभि—सी०, रो०।
१३. पवाळनेमि—सी०, रो०। १४. रत्तसुवण्णसन्धि—सी०, रो०।

दसन्नं दसन्नं अरानमुपरि एकं मुण्डारं होति वातं गहेत्वा सद्दकरणत्थं, येन कतो सद्दो सुकुसलप्पताळितपञ्चङ्गिकतूरियसद्दो विय होति, यस्स नाभिया उभोसु[1] पस्सेसु[1] द्वे[2] सीहमुखानि होन्ति, अब्भन्तरं सकटचक्कस्सेव सुसिरं। तस्स कत्ता वा कारेता वा नत्थि, कम्मपच्चयेन उतुतो[3] समुट्ठाति। यं राजा दसविधं चक्कवत्तिवत्तं पूरेत्वा तदहुपोसथे पुण्णमदिवसे[4] सीसंन्हातो[5] उपोसथिको उपरिपासादवरगतो सीलानि सोधेन्तो निसिन्नो पुण्णचन्दं विय सूरियं[6] विय च उट्ठेन्तं पस्सति, यस्स द्वादसयोजनतो सद्दो[7] सुय्यति, योजनतो वण्णो दिस्सति, यं महाजनेन "दुतियो मञ्ञे चन्दो सूरियो[8] वा उट्ठितो" ति अतिविय कोतूहलजातेन दिस्समानं नगरस्स उपरि आगन्त्वा रञ्ञो अन्तेपुरस्स[9] पाचीनपस्से नातिउच्चं[10] नातिनीचं[10] हुत्वा महाजनस्स गन्धपुप्फादीहि पूजेतुं[11], युत्तट्ठाने अक्खाहतं विय तिट्ठति।

तदेव अनुबन्धमानं **हत्थिरतनं** उप्पज्जति, सब्बसेतो रत्तपादो B. 145
सत्तप्पतिट्ठो[12] इद्धिमा वेहासङ्गमो उपोसथकुला वा छद्दन्तकुला वा आगच्छति, उपोसथकुला च[13] आगच्छन्तो[14] सब्बजेट्ठो आगच्छति[15], छद्दन्तकुला सब्बकनिट्ठो सिक्खितसिक्खो दमथूपेतो, सो द्वादसयोजनं परिसं गहेत्वा सकलजम्बुदीपं अनुसंयायित्वा पुरेपातरासमेव[16] सकं[17] राजधानिं[17] आगच्छति।

१-१. उभोहि पस्सेहि—सी०, रो०। २. सी०, रो० नत्थि।
३. उतुना—स्या०। ४. ०मीदिवसे—स्या०।
५. सीसं नहातो—सी०,रो०; सीसनहातो—स्या०। ६. सुरियं—सी०, स्या०, रो०।
७. पभुति०—स्या०। ८. वा ०—स्या०।
९. अन्तोपुरस्स—सी०, स्या०। १०-१०. नातिउच्चनीचं—सी०, रो०।
११. पूजितुं—स्या०। १२. सत्तप्पतिट्ठो—सी०, स्या०, रो०।
१३. सी० नत्थि; चे—स्या०। १४. ० हि—सी०।
१५. ० चे—स्या०। १६. पुरे पात०—स्या०।
१७-१७. सकराजधानिं—सी०।

तं पि अनुबन्धमानं **अस्सरतनं** उप्पज्जति, सब्बसेतो रत्तपादो काळसीसो[१] मुञ्जकेसो वलाहकस्सराजकुला[२] आगच्छति। सेसमेत्थ हत्थिरतनसदिसमेव।

R. 173 तं पि अनुबन्धमानं **मणिरतनं** उप्पज्जति, सो होति मणि वेळुरियो[३] सुभो जातिमा अट्ठंसो सुपरिकम्मकतो आयामतो चक्कनाभिसदिसो, वेपुल्लपब्बता आगच्छति, सो चतुरङ्गसमन्नागते पि अन्धकारे रञ्ञो धजग्गं गतो योजनं ओभासेति, यस्सोभासेन[४] मनुस्सा "दिवा" ति मञ्ञमाना कम्मन्ते पयोजेन्ति, अन्तमसो कुन्थ[५] किपिल्लिकं[५] उपादाय पस्सन्ति।

तं पि अनुबन्धमानं **इत्थिरतनं** उप्पज्जति, पकतिअग्गमहेसी वा होति, उत्तरकुरुतो वा आगच्छति मद्दराजकुलतो वा, अतिदीघतादि-छदोसविवज्जिता[६] अतिक्कन्ता मानुसवण्णं[७] अप्पत्ता दिब्बवण्णं[८], यस्सा रञ्ञो सीतकाले उण्हानि गत्तानि होन्ति, उण्हकाले सीतानि, सतधा फोटित[९] तूलपिचुनो[९] विय सम्फस्सो होति, कायतो चन्दनगन्धो वायति, मुखतो उप्पलगन्धो, पुब्बुट्ठायिनितादिअनेकगुणसमन्नागता[१०] च होति।

तं पि अनुबन्धमानं **गहपतिरतनं** उप्पज्जति रञ्ञो पकतिकम्म-कारो[११] सेट्ठि, यस्स चक्करतने उप्पन्नमत्ते दिब्बं[१२] चक्खु[१२] पातुभवति, येन समन्ततो[१३] योजनमत्ते निधिं पस्सति असामिकं[१४] पि ससामिकं पि[१४]

१. काकसीसो – सी०, स्या०।
२. वलाहकअस्सराजकुला—सी०।
३. वेत्थरियो—सी०।
४. यस्स ओभासेन—सी०, रो०।
५-५. कुण्ठकिपीलिकं ति—स्या०।
६. अतिदीघादिछदोस०—स्या०, रो०।
७. मानुसं वण्णं—सी०, रो०; मानुसिकवण्णं—स्या०।
८. दिब्बं वण्णं—सी०, रो०।
९-९. पोलिततूलपीचुनो—स्या०।
१०. पुब्बुट्ठायितादि०—सी०, रो०। पुब्बुट्ठायिकादि०—स्या०।
११. ० करो—स्या०।
१२-१२. दिब्बचक्खुं—स्या०; ० चक्खुं—सी०, रो०।
१३. समन्नागतो०—स्या०।
१४-१४. सस्सामिकं पि अस्सामिकं पि—सी०, स्या०, रो०।

सो राजानं उपसङ्कमित्वा पवारेति "अप्पोस्सुक्को त्वं देव होहि, अहं ते धनेन धनकरणीयं करिस्सामी" ति।

तं पि अनुबन्धमानं **परिणायकरतनं**[1] उप्पज्जति रञ्ञो B. 146
पकतिजेट्ठ पुत्तो, चक्करतने उप्पन्नमत्ते अतिरेकपञ्ञावेय्यत्तियेन समन्नागतो होति, द्वादसयोजनाय[2] परिसाय चेतसा चित्तं परिजानित्वा निग्गहपग्गहसमत्थो[3] होति, सो[4] राजानं उपसङ्कमित्वा पवारेति "अप्पोस्सुक्को त्वं देव होहि, अहं ते रज्जं अनुसासिस्सामी" ति। यं वा पनञ्ञं पि एवरूपं अतुलट्ठेन रतनं, यस्स न सक्का तुलयित्वा तीरयित्वा अग्घो[5] कातुं "सतं[6] वा सहस्सं[6] वा अग्घति कोटिं वा" ति। तत्थ एकरतनं[7] पि बुद्धरतनेन समं नत्थि। यदि R. 174
हि अतुलट्ठेन रतनं, तथागतो व रतनं। तथागतो हि न सक्का सीलतो वा समाधितो वा पञ्ञादीनं वा[8] अञ्ञतरतो केनचि[9] तुलयित्वा तीरयित्वा "एत्तकगुणो[10] वा[11] इमिना समो[12] वा सप्पटिभागो वा" ति परिच्छिन्दितुं। एवं अतुलट्ठेन[13] पि तथागतसमं रतनं नत्थि।

तथा यं पि तं **दुल्लभदस्सनट्ठेन रतनं**, सेय्यथिदं[14] दुल्लभपातुभावो राजा चक्कवत्ति, चक्कादीनि च तस्स रतनानि, तं पि बुद्धरतनेन समं नत्थि। यदि हि दुल्लभदस्सनट्ठेन रतनं, तथागतो व रतनं, कुतो चक्कवत्तिआदीनं[15] रतनत्तं[16]। तानि[17] हि[17] एकस्मिं

१. परिनायकरतनं—सी०, स्या०। २. सो ०—स्या०।
३. निग्गहपग्गहकरणसमत्थो—स्या०। ४. ० च—स्या०।
५. अग्घं—सी०। ६-६. सतसहस्सं—सी०, रो०।
७. एकं रतनं—स्या०। ८. स्या० नत्थि।
९. वा०—स्या०। १०. एत्तका गुणा—स्या०।
११. वा० स्या० नत्थि। १२. समा—स्या०, समोधानेत्वा—रो०।
१३. अतुलट्ठेना—सी०, स्या०, रो०। १४. सेय्यथापि—सी०, स्या०, रो०।
१५. चक्कवत्तादीनं—सी०। १६. रतनं—स्या०।
१७-१७. यानि—सी०, रो०; रतनत्तयानि—स्या०

येव कप्पे अनेकानि उप्पज्जन्ति। यस्मा पन असङ्खेय्ये पि कप्पे तथागतसुञ्ञो लोको होति, तस्मा तथागतो[१] व कदाचि करहचि उप्पज्जनतो दुल्लभदस्सनो। वुत्तं पि[२] चेतं भगवता परिनिब्बानसमये—

"देवता आनन्द[३] उज्झायन्ति 'दूरा च[४] वतम्ह[४] आगता तथागतं दस्सनाय, कदाचि करहचि तथागता लोके उप्पज्जन्ति अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, अज्जेव[५] रत्तिया पच्छिमे[६] यामे[६] तथागतस्स परिनिब्बानं भविस्सति, अयं च महेसक्खो भिक्खु भगवतो पुरतो ठितो ओवारेन्तो, न मयं लभाम पच्छिमे काले तथागतं दस्सनाया' (दी० नि० २.१०८) ति। एवं दुल्लभदस्सनट्ठेना पि तथागतसमं रतनं नत्थि।

तथा यं पि तं **अनोमसत्तपरिभोगट्ठेन रतनं**। सेय्यथिदं? रञ्ञो चक्कवत्तिस्स चक्करतनादि[७]। तञ्हि कोटिसतसहस्सधनानं पि
B. 147 सत्तभूमिकपासादवरतले[८] वसन्तानं[९] पि चण्डालवेननेसादरथकार[१०]-
R.175 पुक्कुसादीनं नीचकुलिकानं ओमकपुरिसानं सुपिनन्ते पि परिभोगत्थाय न निब्बत्तति। उभतो सजातस्स[११] पन रञ्ञो खत्तियस्सेव परिपूरितदसविधचक्कवत्तिवत्तस्स परिभोगत्थाय निब्बत्तनतो अनोमसत्तपरिभोगंयेव होति, तं पि बुद्धरतनसमं[१२] नत्थि। यदि हि अनोमसत्तपरिभोगट्ठेन रतनं, तथागतो व रतनं। तथागतो हि लोके ओमकसत्तसम्मतानं[१३] अनुपनिस्सयसम्पन्नानं विपरीतदस्सनानं पूरणकस्सपादीनं छन्नं सत्थारानं अञ्ञेसं[१४] च एवरूपानं सुपिनन्ते पि

१. तथागतो एव—स्या०, रो०। २. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
३. आनन्दं—स्या०। ४-४. वतम्हा—सी०, स्या०, रो०।
५. अज्ज च—सी०, स्या०, रो०। ६-६. पच्चूससमये—सी०, स्या०, रो०।
७. रतनादी ति—सी०। ८. सत्तभूमिपासाद०—स्या०। सत्तभूमकपासाद०—रो०।
९. निवसन्तानं—सी०, स्या०, रो०। १०. ०वेण०—सी०, स्या०, रो०।
११. सुजातस्स—सी०, स्या०, रो०। १२. बुद्धरतनेन समं—सी०।
१३. अनोमसत्तसम्मतानं पि—सी०, स्या०, रो०। १४. च अञ्ञेसं—स्या०।

अपरिभोगो। उपनिस्सयसम्पन्नानं[1] पन चतुप्पदाय पि गाथाय परियोसाने अरहत्तमधिगन्तुं[2] समत्थानं निब्बेधिकञाणदस्सनानं बाहियदारुचीरियप्पभुतीनं अञ्ञेसं च महाकुलप्पसुतानं महासावकानं परिभोगो, ते हि तं दस्सनानुत्तरियसवनानुत्तरियपारिचरियानुत्तरियादीनि (दी० नि० ३.१९३) साधेन्ता तथागतं[3] परिभुञ्जन्ति। एवं अनोमसत्तपरिभोगट्ठेना पि तथागतसमं रतनं नत्थि।

यं पि तं अविसेसतो **रतिजननट्ठेन रतनं**। सेय्यथिदं[4]? रञ्ञो चक्कवत्तिस्स चक्करतनं। तं हि दिस्वा व राजा चक्कवत्ति[5] अत्तमनो होति, एवं पि तं रञ्ञो रतिं जनेति। पुन च परं राजा चक्कवत्ति[6] वामेन हत्थेन सुवण्णभिङ्कारं[7] गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन चक्करतनं अब्भुक्किरति "पवत्ततु भवं चक्करतनं, अभिविजिनातु भवं चक्करतनं" ति। ततो चक्करतनं पञ्चङ्गिकं[8] विय तूरियं[8] मधुरस्सरं निच्छरन्तं आकासेन पुरत्थिमंदिसं[9] गच्छति, अन्वदेव R. 176
राजा चक्कवत्ति चक्कानुभावेन द्वादसयोजनवित्थिण्णाय चतुरङ्गिनिया सेनाय नातिउच्चं नातिनीचं उच्चरुक्खानं हेट्ठाभागेन, नीचरुक्खानं उपरिभागेन, रुक्खेसु पुप्फफलपल्लवादिपण्णाकारं गहेत्वा आगतानं हत्थतो पण्णाकारं च गण्हन्तो "एहि खो महाराजा" ति एवमादिना परमनिपच्चकारेन[10] आगते पटिराजानो "पाणो न हन्तब्बो" ति आदिना नयेन अनुसासन्तो गच्छति। यत्थ पन राजा भुञ्जितुकामो वा[11] दिवासेय्यं[12] वा कप्पेतुकामो होति, तत्थ चक्करतनं आकासा[13] ओरोहित्वा[14] उदकादिसब्बकिच्चक्खमे समे भुमिभागे अक्खाहतं विय

१. ० च—स्या०।
२. अरहत्तं अधिगन्तुं—सी०, रो०।
३. तथा तथा—सी०, रो०।
४. सेय्यथापि—सी०, स्या०, रो०।
५. सी० नत्थि।
६. ० वत्ती—स्या०, एवमेव।
७. सुवण्णभिङ्गारं—स्या०, एवमेव।
८-८. पञ्चाङ्गिकतुरियं विय—स्या०।
९. पुरत्थिमदिसं—स्या०।
१०. परमनिपच्चाकारेन—सी०।
११. सी०, रो० नत्थि।
१२. दिवा सेय्यं—स्या०।
१३. आकासतो—स्या०।
१४. ओतरित्वा—सी०, रो०।

तिट्ठति। पुन रञ्ञो गमनचित्ते उप्पन्ने पुरिमनयेनेव सद्दं करोन्तं
B. 148 गच्छति, तं[१] सुत्वा द्वादसयोजनिका पि परिसा आकासेन गच्छति। चक्करतनं अनुपुब्बेन पुरत्थिमं[२] समुद्दं[२] अज्झोगाहति, तस्मिं अज्झोगाहन्ते उदकं योजनप्पमाणं अपगन्त्वा भित्तीकतं[३] विय तिट्ठति। महाजनो यथाकामं सत्त रतनानि गण्हाति। पुन राजा सुवण्णभिङ्कारं[४] गहेत्वा "इतो पट्ठाय मम रज्जं" ति उदकेन अब्भुक्किरित्वा निवत्तति। सेना पुरतो होति, चक्करतनं पच्छतो, राजा मज्झे। चक्करतनेन[५] ओसक्कितोसक्कितट्ठानं उदकं परिपूरति। एतेनेव उपायेन दक्खिणपच्छिमुत्तरे पि समुद्दे गच्छति।

एवं चतुद्दिसं अनुसंयायित्वा चक्करतनं तियोजनप्पमाणं आकासं आरोहति। तत्थ ठितो राजा चक्करतनानुभावेन विजितविजयो[६] पञ्चसतपरित्तदीपपटिमण्डितं[७] सत्तयोजनसहस्सपरिमण्डलं पुब्बविदेहं,
R. 177 तथा अट्ठयोजनसहस्सपरिमण्डलं उत्तरकुरुं, सत्तयोजनसहस्सपरिमण्डलंयेव अपरगोयानं[८], दसयोजनसहस्सपरिमण्डलं जम्बुदीपं चा ति एवं चतुमहादीपद्विसहस्सपरित्तदीपपटिमण्डितं[९] एकं[१०] चक्कवाळं सुफुल्लपुण्डरीकवनं विय ओलोकेति। एवं ओलोकयतो चस्स अनप्पका[११] रति उप्पज्जति। एवं पि तं चक्करतनं रञ्ञो रतिं जनेति, तं पि बुद्धरतनसमं नत्थि। यदि हि रतिजननट्ठेन रतनं, तथागतो व रतनं, किं करिस्सति एतं चक्करतनं। तथागतो हि यस्सा दिब्बाय रतिया चक्करतनादीहि सब्बेहि पि जनिता चक्कवत्तिरति सङ्ख्यं पि कलं पि कलभागं पि न उपेति, ततो पि

१. यं—स्या०, रो०।
२-२. पुरत्थिमसमुद्दं—स्या०।
३. भित्तिकतं—स्या०, रो०।
४. भिङ्कारं—सी०, रो०।
५. चक्करतनस्स—सी०, रो०।
६. विजितं—सी०, रो०; अत्तना विजितविजयो—स्या०।
७. ० पतिमण्डितं—सी०, रो०।
८. अमरगोयानं—स्या०।
९. ० द्वीप—सी०।
१०. सी०, रो० नत्थि।
११. अनप्पिका—सी०, रो०।

रतितो उत्तरितरं च पणीततरं च अत्तनो ओवादप्पटिकरानं[१] असङ्ख्येय्यानं पि देवमनुस्सानं पठमज्झानरतिं दुतियततियचतुत्थ-पञ्चमज्झानरतिं[२], आकासानञ्चायतनरतिं, विञ्ञाणञ्चायतन-आकिञ्चञ्ञायतननेवसञ्ञानासञ्ञायतनरत्तिं, सोतापत्तिमग्गरतिं, सोतापत्तिफलरतिं, सकदागामिअनागामिअरहत्तमग्गफलरतिं च जनेति। एवं रतिजननट्ठेना पि तथागतसमं रतनं नत्थी ति।

अपि च रतनं[३] नामेतं[३] दुविधं होति सविञ्ञाणकमविञ्ञाणकं च। तत्थ अविञ्ञाणकं चक्करतनं मणिरतनं च[४], यं वा पनञ्ञं पि अनिन्द्रियबद्धसुवण्णरजतादि[५], सविञ्ञाणकं हत्थिरतनादिपरिणायक-रतनपरियोसानं, यं वा पनञ्ञं पि एवरूपं इन्द्रियबद्धं। एवं दुविधे चेत्थ सविञ्ञाणकरतनं अग्गमक्खायति। कस्मा? यस्मा अविञ्ञाणकं B. 149 सुवण्णरजतमणिमुत्तादिरतनं सविञ्ञाणकानं हत्थिरतनादीनं अलङ्कारत्थाय उपनीयति।

सविञ्ञाणकरतनं पि दुविधं तिरच्छानगतरतनं मनुस्सरतनं च। तत्थ मनुस्सरतनं अग्गमक्खायति। कस्मा? यस्मा तिरच्छानगतरतनं मनुस्सरतनस्स ओपवय्हं[६] होति। मनुस्सरतनं पि दुविधं इत्थिरतनं R. 178 पुरिसरतनं च। तत्थ पुरिसरतनं अग्गमक्खायति। कस्मा? यस्मा इत्थिरतनं पुरिसरतनस्स परिचारिकत्तं आपज्जति। पुरिसरतनं पि दुविधं अगारिकरतनं अनगारिकरतनं च। तत्थ अनगारिकरतनं अग्गमक्खायति। कस्मा? यस्मा अगारिकरतनेसु अग्गो चक्कवत्ति पि सीलादिगुणयुत्तं अनगारिकरतनं पञ्चपतिट्ठितेन वन्दित्वा उपट्ठहित्वा पयिरुपासित्वा दिब्बमानुसिका[७] सम्पत्तियो पापुणित्वा अन्ते निब्बान-सम्पत्तिं पापुणाति।

१. ओवादपतिकरानं—सी०; ०पटिकरानं—स्या०, रो०।

२. दुतियज्झान-ततियज्झान-चतुत्थज्झान-पञ्चमज्झानरत्ति—सी०; दुतियज्झान ...पे०... ततियज्झान चतुत्थज्झान पञ्चमज्झानरत्ति—रो०।

३-३ रत्तनन्नामेतं—स्या०।

४. सी०, रो० नत्थि।

५. अनिन्द्रियबद्धं सुवण्णरजतादि—सी०, स्या०, रो०।

६. उपगुय्हं—स्या०।

७. ० च—स्या०।

एवं अनगारिकरतनं पि दुविधं अरियपुथुज्जनवसेन । अरियरतनं पि दुविधं सेखासेखवसेन । असेखरतनं पि दुविधं सुक्खविपस्सक-समथयानिकवसेन । समथयानिकरतनं पि दुविधं सावकपारमिप्पत्त-मप्पत्तं च । तत्थ सावकपारमिप्पत्तं अग्गमक्खायति । कस्मा ? गुणमहन्तताय । सावकपारमिप्पत्तरतनतो पि पच्चेकबुद्धरतनं अग्गमक्खायति । कस्मा ? गुणमहन्तताय । सारिपुत्तमोग्गल्लान-सदिसा पि हि अनेकसता सावका एकस्स पच्चेकबुद्धस्स गुणानं[1] सतभागं पि न उपेन्ति[1] । पच्चेकबुद्धरतनतो पि सम्मासम्बुद्धरतनं[2] अग्गमक्खायति । कस्मा ? गुणमहन्तताय । सकलं[3] पि हि[4] जम्बुदीपं पूरेत्वा[5] पल्लङ्केन पल्लङ्कं घटेन्ता[6] निसिन्ना[7] पच्चेकबुद्धा एकस्स सम्मासम्बुद्धस्स गुणानं नेव सङ्खं न कलं न कलभागं उपेन्ति । वुत्तञ्हेतं[8] भगवता "यावता भिक्खवे सत्ता अपदा[9] वा[10] ...पे०... तथागतो तेसं अग्गमक्खायती" (अ० नि० २.३७, सं० नि० ४-४१) तिआदि । एवं केनचि[11] परियायेन तथागतसमं रतनं नत्थि । तेनाह
R.179 भगवा **"न नो समं अत्थि तथागतेना"** ति ।

एवं भगवा बुद्धरतनस्स अञ्ञेहि रतनेहि असमतं वत्वा इदानि तेसं सत्तानं उप्पन्नउपद्दववूपसमत्थं नेव जातिं न गोत्तं न कोलपुत्तियं न वण्णपोक्खरतादिं निस्साय, अपि च खो[12] अवीचिमुपादाय
B. 150 भवग्गपरियन्ते लोके सीलसमाधिक्खन्धादीहि गुणेहि बुद्धरतनस्स असदिसभावं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति **"इदं पि बुद्धे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतू"** ति ।

१-१. नेव संखं न कलं न कल भागं पि उपेन्ति—स्या० ।
२. ० पी—स्या० ।
३. यदि हि ०—स्या० ।
४ स्या० नत्थि ।
५. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
६. घट्टेन्ता—सी०, रो० ।
७. ० पी ०—स्या० ।
८. वुतुम्पी चेतं—स्या०; वुत्तं चेतं—रो० ।
९. अपादा—स्या० ।
१०. ० दिपदा वा—स्या० ।
११. केन चि पि—सी०, रो० ।
१२. खो पन—सी०, रो० ।

तस्सत्थो—इदं पि इध वा हुरं वा सग्गेसु वा यंकिञ्चि अत्थि वित्तं वा रतनं वा, तेन सद्धिं तेहि तेहि गुणेहि असमत्ता[१] बुद्धे रतनं पणीतं। यदि हि एतं सच्चं, अथ एतेन सच्चेन इमेसं पाणीनं सुवत्थि[२] होतु, सोभनानं अत्थिता होतु अरोगता निरुपद्दवता ति। एत्थ च यथा "चक्खु[३] खो आनन्द सुञ्ञं अत्तेन वा अत्तनियेन वा" (सं० नि० ३.५१) ति एवमादीसु अत्तभावेन वा अत्तनियभावेन वा ति अत्थो। इतरथा[४] हि चक्खु[५] अत्ता[६] वा अत्तनियं वा ति अप्पटिसिद्धमेव सिया[७]। एवं **रतनं पणीतं** ति रतनत्तं पणीतं, रतनभावो पणीतो ति अयमत्थो वेदितब्बो। इतरथा हि बुद्धो नेव रतनं ति सिज्झेय्य। न हि यत्थ रतनं अत्थि, तं रतनं ति न[८] सिज्झति। यत्थ पन चित्तीकतादिअत्थसङ्खातं येन वा तेन वा विधिना सम्बन्धगतं रतनं[९] अत्थि, यस्मा तं रतनत्तमुपादाय रतनं ति पञ्ञापीयति, तस्मा तस्स रतनस्स[१०] अत्थिताय रतनं[११] ति सिज्झति। अथ वा **इदं पि बुद्धे रतनं** ति इमिना पि पकारेन[१२] बुद्धो व[१३] रतनं ति एवमत्थो[१४] वेदितब्बो। वुत्तमत्ताय च भगवता इमाय गाथाय राजकुलस्स सोत्थि जाता, भयं वूपसन्तं। इमिस्सा[१५] गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

खयं विरागं ति गाथावण्णना

४. एवं बुद्धगुणेन सच्चं वत्वा इदानि निब्बानधम्मगुणेन R. 180
वत्तुमारद्धो "**खयं विरागं**" ति। तत्थ यस्मा निब्बानसच्छिकिरियाय

१. असमत्तं—स्या०।
२. सो त्थि—स्या०, रो०।
३. चक्खुं—सी०, स्या०, रो०।
४. इतरथा—स्या०, रो०।
५. चक्खुं—सी०, स्या०, रो०।
६. ऊत्तं—स्या०।
७. ० ति—सी०।
८. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
९. रतनत्तं—सी०, स्या०, रो०।
१०. रतनत्तस्स—सी०, स्या०, रो०।
११. रतनत्तं—सी०।
१२. कारणेन—सी०, रो०।
१३. सी०, रो० नत्थि।
१४. एवम्पेत्थ अत्थो—सी०, रो०।
१५. इमाय—स्या०।

रागादयो खीणा होन्ति परिक्खीणा, यस्मा वा[1] तं तेसं अनुप्पादनिरोधक्खयमत्तं, यस्मा च तं रागादिविप्पयुत्तं[2] सम्पयोगतो च आरम्मणतो च, यस्मा वा तम्हि सच्छिकते रागादयो अच्चन्तं विरत्ता होन्ति विगता विद्धस्ता[3], तस्मा खयं ति च विरागं ति च वुच्चति। यस्मा पनस्स न उप्पादो पञ्ञायति, न वयो[4], न[5] ठितस्स[5] अञ्ञथत्तं (अ० नि० १-१४०), तस्मा तं न जायति न जीयति न मीयती ति कत्वा **अमतं** ति वुच्चति। उत्तमत्थेन[6] पन अतप्पकट्ठेन च **पणीतं** ति। **यदज्झगा** ति यं अज्झगा विन्दि
B. 151 पटिलभि[7], अत्तनो ञाणबलेन सच्छाकासि। **सक्यमुनी** ति सक्यकुलप्पसुतत्ता सक्यो, मोनेय्यधम्मसमन्नागतत्ता मुनि, सक्यो एव मुनि सक्यमुनि। **समाहितो** ति अरियमग्गसमाधिना समाहितचित्तो। **न तेन धम्मेन समत्थि किञ्चो** ति तेन खयादिनामकेन सक्यमुनिना अधिगतेन धम्मेन समं किञ्चि धम्मजातं नत्थि। तस्मा सुत्तन्तरे पि वुत्तं "यावता भिक्खवे धम्मा सङ्खता वा असङ्खता वा, विरागो तेसं[8] अग्गमक्खायती" (अ० नि० २-३७) तिआदि।

एवं भगवा निब्बानधम्मस्स अञ्ञेहि धम्मेहि असमतं वत्वा इदानि तेसं सत्तानं उप्पन्नउपद्दववूपसमत्थं खयविरागामतपणीततागुणेहि निब्बानधम्मरतनस्स असदिसभावं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि धम्मे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतू**" ति। तस्सत्थो पुरिमगाथाय वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

यं बुद्धसेट्ठोतिगाथावण्णना

५. एवं निब्बानधम्मगुणेन सच्चं वत्वा इदानि मग्गधम्मगुणेन वत्तुमारद्धो "यं **बुद्धसेट्ठो**" ति। तत्थ "बुज्झिता सच्चानी"

१. च—सी०, रो०।
२. रागादिवियुत्तं—सी०, स्या०, रो०।
३. विद्धंसिता—स्या०।
४. ०...पे०...—सी०, रो०।
५-५ नत्थि तस्स—स्या०।
६. उत्तमट्ठेन—स्या०, रो०।
७. ० ति—स्या०।
८. तेसं धम्मानं—सी०, स्या०, रो०।

(महा० नि० ३९९) तिआदिना नयेन बुद्धो, उत्तमो पसंसनीयो चा ति सेट्ठो, बुद्धो च[1] सो सेट्ठो चा ति बुद्धसेट्ठो, अनुबुद्धपच्चेकबुद्धसुतबुद्धख्येसु[2] वा बुद्धेसु सेट्ठो ति[3] बुद्धसेट्ठो। सो बुद्धसेट्ठो यं परिवण्णयी[4] "अट्ठङ्गिको व[5] मग्गानं,खेमं निब्बानपत्तिया" (म० नि० २-२०६) ति च "अरियं वो भिक्खवे सम्मासमाधिं देसिस्सामि सउपनिसं सपरिक्खारं" (म० नि० ३-१३५) ति च एवमादिना नयेन तत्थ तत्थ पसंसि पकासयि। **सुचिं** ति किलेसमलसमुच्छेदकरणतो अच्चन्तवोदानं। **समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहु** ति यं च अत्तनो पवत्तिसमनन्तरं नियमेनेव फलपदानतो[6] "आनन्तरिकसमाधी"[7] ति आहु। न हि मग्गसमाधिम्हि उप्पन्ने तस्स फलुप्पत्तिनिसेधको कोचि अन्तरायो अत्थि। यथाह— R. 181

"अयं च पुग्गलो सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नो अस्स, कप्पस्स च उड्डय्हनवेला अस्स, नेव ताव कप्पो उड्डय्हेय्य, यावायं पुग्गलो न सोतापत्तिफलं सच्छिकरोति, अयं वुच्चति पुग्गलो ठितकप्पी। सब्बे पि मग्गसमङ्गिनो पुग्गला ठितकप्पिनो" (पु० प० २२) ति। B. 152

समाधिना तेन समो न विज्जती ति तेन बुद्धसेट्ठपरिवण्णितेन सुचिना आनन्तरिकसमाधिना[8] समो रूपावचरसमाधि वा अरूपावचरसमाधि वा कोचि न विज्जति। कस्मा ? तेसं भावितत्ता तत्थ तत्थ ब्रह्मलोके उपपन्नस्सा[9] पि पुन निरयादीसु पि[10] उपपत्तिसम्भवतो, इमस्स च अरहत्तसमाधिस्स भावितत्ता अरियपुग्गलस्स सब्बूपपत्तिसमुग्घातसम्भवतो[11]। तस्मा सुत्तन्तरे पि वुत्तं "यावता भिक्खवे

१. रो० नत्थि।
२. ०पच्चेकबुद्धसङ्खातेसु—सी०, रो०।
३. ति वा—सी०।
४. ० ति—सी०।
५. च स्या०, रो०।
६. फलप्पदानतो—सी०, स्या०, रो०।
७. ० ती—स्या०।
८. अन्तरिक ०—स्या०।
९. उप्पन्नस्सा—सी०, स्या०, रो०।
१०. सी०, रो० नत्थि।
११. सब्बुप्पत्ति०—स्या०, रो०।

R. 182 धम्मा सङ्खता ...पे०[1]... अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, तेसं अग्गमक्खायती" (अं० नि० २-३७) तिआदि।

एवं भगवा आनन्तरिकसमाधिस्स अञ्ञेहि समाधीहि असमतं वत्वा इदानि पुरिमनयेनेव मग्गधम्मरतनस्स असदिसभावं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि धम्मे**[2] **...पे०... होतू**" ति[2]। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

ये पुग्गला ति गाथावण्णना

६. एवं मग्गधम्मगुणेना पि सच्चं वत्वा इदानि सङ्घगुणेना पि वत्तुमारद्धो "**ये पुग्गला**" ति। तत्थ **ये** ति अनियमेत्वा उद्देसो। **पुग्गला** ति सत्ता। **अट्ठ** ति तेसं गणनपरिच्छेदो। ते हि चत्तारो च पटिपन्ना चत्तारो च फले ठिता[3] ति अट्ठ होन्ति। **सतं पसत्था** ति सप्पुरिसेहि बुद्धपच्चेकबुद्धबुद्धसावकेहि[4] अञ्ञेहि च देवमनुस्सेहि पसत्था। कस्मा ? सहजातसीलादिगुणयोगा। तेसञ्हि चम्पकवकुलकुसुमादीनं सहजातवण्णगन्धादयो विय सहजाता[5] सीलसमाधिआदयो गुणा, तेन ते वण्णगन्धादिसम्पन्नानि[6] विय पुप्फानि देवमनुस्सानं सतं पिया मनापा पसंसनीया[7] च होन्ति। तेन वुत्तं "**ये पुग्गला अट्ठसतं** पसत्था" ति।

अथ वा **ये** ति अनियमेत्वा[8] उद्देसो। **पुग्गला** ति सत्ता। **अट्ठसतं** ति तेसं गणनपरिच्छेदो। ते हि एकबीजी[9] कोलंकोलो सत्तक्खत्तुपरमो[9]
B. 153 ति तयो सोतापन्ना। कामरूपारूपभवेसु अधिगतफला तयो सकदागामिनो। ते सब्बे पि चतुन्नं पटिपदानं वसेन चतुवीसति। अन्तरापरिनिब्बायी उपहच्चपरिनिब्बायी ससङ्खारपरिनिब्बायी असङ्खारपरिनिब्बायी उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी ति अविहेसु पञ्च। तथा

१. सी०, स्या०, रो० नत्थि। २-२. धम्मेति—सी०, स्या०, रो०। ३. ट्ठिताति—स्या०। ४. बुद्धपच्चेकबुद्ध सावकेहि—सी०, रो०। ५. सहजात—सी०, रो०। ६. वण्णगन्धसम्पन्नानि—सी०। ७. पासंसिया—सी०, रो०। ८. अनियामेत्वा—सी०, रो०, स्या०। ९-९. एकबीजिकोलंकोलसत्तक्खत्तुपरमा—स्या०, रो०।

अतप्पसुदस्ससुदस्सीसु। अकनिट्ठेसु पन उद्धंसोतवज्जा चत्तारो ति चतुवीसति अनागामिनो। सुक्खविपस्सको समथयानिको ति द्वे अरहन्तो। चत्तारो मग्गट्ठा ति चतुपञ्ञास। ते सब्बे पि सद्धाधुर-पञ्ञाधुरानं वसेन दिगुणा[1] हुत्वा अट्ठसतं होन्ति। सेसं वुत्तनयमेव। R. 183

चत्तारि एतानि युगानि होन्ती ति ते सब्बे पि अट्ठ वा अट्ठसतं वा ति वित्थारवसेन उद्दिट्ठपुग्गला[2] सङ्खेपवसेन सोतापत्तिमग्गट्ठो फलट्ठो ति एकं युगं, एवं याव अरहत्तमग्गट्ठो फलट्ठो ति एकं युगं ति चत्तारि युगानि होन्ति। **ते दक्खिणेय्या** ति एत्थ ते हि[3] पुब्बे अनियमेत्वा[4] उद्दिट्ठानं नियमेत्वा[5] निद्देसो[6]। ये पुग्गला वित्थारवसेन अट्ठ वा, अट्ठसतं वा[7], सङ्खेपवसेन[8] चत्तारि युगानि होन्ती ति वुत्ता, सब्बे पि ते दक्खिणं अरहन्ती ति दक्खिणेय्या। दक्खिणा नाम कम्मं च कम्मविपाकं च सद्दहित्वा "एस मे इदं[9] वेज्जकम्मं वा जङ्घपेसनिकं वा करिस्सती" ति एवमादीनि अनपेक्खित्वा दिय्यमानो देय्य धम्मो, तं अरहं ति नाम सीलादिगुणयुत्ता पुग्गला, इमे च तादिसा, तेन वुच्चन्ति "ते[10] दक्खिणेय्या" ति।

सुगतस्स सावका ति भगवा सोभनेन गमनेन युत्तत्ता, सोभनं च ठानं गतत्ता, सुट्ठु च गतत्ता, सुट्ठु एव च गदत्ता सुगतो, तस्स सुगतस्स। सब्बे पि ते वचनं[11] सुणन्ती ति सावका। कामं च अञ्ञे पि सुणन्ति, न पन सुत्वा कत्तब्बकिच्चं करोन्ति, इमे पन सुत्वा कत्तब्बं धम्मानुधम्मप्पटिपत्तिं कत्वा मग्गफलानि पत्ता, तस्मा "सावका" ति वुच्चन्ति। **एतेसु दिन्नानि महप्फलानी** ति एतेसु सुगतसावकेसु[12] अप्पकानि पि दानानि दिन्नानि पटिग्गाहकतो

१. द्विगुणा—सी०, स्या०, रो०।
२. उद्दिट्ठा पुग्गला—स्या०।
३. ते—स्या०, रो०।
४. अनियामेत्वा—स्या०, रो०, सी०।
५. नियामेत्वा—स्या०, सी०, रो०।
६. उद्देसो—स्या०।
७. वा ति वा—सी०।
८. ० पन—स्या०, रो०।
९. इमं—सी०, स्या०, रो०।
१०. सी०, रो० नत्थि।
११. स्या०, रो० नत्थि।
१२. सुगतस्स सावकेसु—स्या०।

दक्खिणाविसुद्धिभावं[१] उपगतत्ता महप्फलानि होन्ति। तस्मा सुत्तन्तरे पि वुत्तं—

R. 184 "यावता भिक्खवे सङ्घा वा गणा वा तथागतसावकसङ्घो, तेसं अग्गमक्खायति, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठ पुरिसपुग्गला, एस भगवतो सावकसङ्घो ... पे० ... अग्गो विपाको होती" (अ० नि० २-३७) ति।

B. 154 एवं भगवा सब्बेसं पि मग्गट्ठफलट्ठानं वसेन सङ्घरतनस्स गुणं वत्वा इदानि तमेव गुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "इदं पि **सङ्घे**" ति। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

ये सुप्पयुत्तातिगाथावण्णना

७. एवं मग्गट्ठफलट्ठानं वसेन सङ्घगुणेन[२] सच्चं वत्वा इदानि ततो एकच्चानं[३] फलसमापत्तिसुखमनुभवन्तानं खीणासवपुग्गलानंयेव गुणेन वत्तुमारद्धो "ये **सुप्पयुत्ता**" ति। तत्थ **ये** ति अनियमितुद्देसवचनं[४]। **सुप्पयुत्ता** ति सुट्ठु पयुत्ता, अनेकविहितं अनेसनं पहाय सुद्धजीवितं[५] निस्साय विपस्सनाय अत्तानं पयुञ्जितुमारद्धा ति अत्थो। अथ[६] वा[६] **सुप्पयुत्ता** ति सुविसुद्धकायवचीपयोगसमन्नागता[७], तेन तेसं सीलक्खन्धं दस्सेति। **मनसा दळहेना** ति दळहेन मनसा, थिरसमाधियुत्तेन चेतसा ति अत्थो। तेन तेसं समाधिक्खन्धं दस्सेति। **निक्कामिनो** ति काये च जीविते च अनपेक्खा हुत्वा पञ्ञाधुरेन वीरियेन[८] सब्बकिलेसेहि कतनिक्कमना[९], तेन तेसं वीरियसम्पन्नं पञ्ञक्खन्धं[१०] दस्सेति।

१. दक्खिणानं विसुद्धिभावं - स्या०।
२. सङ्घरतनस्स गुणेन—स्या०; मग्गफलट्ठसङ्घगुणेन—रो०।
३. एकच्चियानं—सी०, रो०।
४. अनियामितुद्देसवचनं—स्या०,रो०।
५. सुद्धाजीवितं - सी०, रो०।
६-६. अथवा—स्या०।
७. विसुद्ध०—स्या०; परिसुद्ध०—रो०।
८. विरियेन - सी०, स्या०, रो०।
९. कतनिक्खमना—सी०, रो०।
१०. पञ्ञाक्खन्धं—स्या०, रो०।

गोतमसासनम्ही ति गोत्ततो गोतमस्स तथागतस्सेव सासनम्हि। तेन इतो बहिद्धा नानप्पकारं पि अमरतपं करोन्तानं सुप्पयोगादिगुणाभावतो किलेसेहि निक्कमनाभावं[1] दस्सेति[2]। **ते** ति पुब्बे उद्दिट्ठानं निद्देसवचनं। **पत्तिपत्ता** ति एत्थ पत्तब्बा ति पत्ति, पत्तब्बा नाम पत्तुं अरहा, यं पत्वा अच्चन्तयोगक्खेमिनो होन्ति, अरहत्त- R. 185 फलस्सेतं अधिवचनं, तं पत्तिं पत्ता ति पत्तिपत्ता। **अमतं** ति निब्बानं। **विगय्हा** ति आरम्मणवसेन विगाहित्वा। **लद्धा** ति लभित्वा। **मुधा** ति अब्ययेन काकणिकमत्तं पि ब्ययं अकत्वा। **निब्बुतिं** ति पटिप्पस्सद्धकिलेसदरथं फलसमापत्तिं। **भुञ्जमाना** ति अनुभवमाना। किं वुत्तं होति? ये इमस्मिं गोतमसासनम्हि सीलसम्पन्नत्ता सुप्पयुत्ता, समाधिसम्पन्नत्ता मनसा दळ्हेन, पञ्ञासम्पन्नत्ता निक्कामिनो, ते इमाय सम्मापटिपदाय अमतं विगय्ह मुधा लद्धा फलसमापत्तिसञ्ञितं निब्बुतिं भुञ्जमाना पत्तिपत्ता नाम होन्ती ति।

एवं भगवा फलसमापत्तिसुखमनुभवन्तानं खीणासवपुग्गलानमेव B.155 वसेन सङ्घरतनस्स गुणं वत्वा इदानि तमेव गुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि सङ्घे**" ति। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। इमिस्सा पि[3] गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

यथिन्दखीलोतिगाथावण्णना

८. एवं खीणासवपुग्गलानं गुणेन सङ्घाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि बहुजनपच्चक्खेन सोतापन्नस्सेव गुणेन वत्तुमारद्धो "**यथिन्दखीलो**[4]" ति। तत्थ[5] **यथा** ति उपमावचनं। **इन्दखीलो** ति

१. निक्खमनभावं—सी०, रो०; कतनिक्कमनाभावं—स्या०।
२. दीपेति—स्या०, रो०।
३. स्या० नत्थि।
४. यथिन्दखीलो—स्या०, रो०।
५. एत्थ—स्या०।

नगरद्वारविनिवारणत्थं[१] उम्मारब्भन्तरे अट्ठ वा दस वा हत्थे पथविं खणित्वा आकोटितस्स सारदारुमयथम्भस्सेतं अधिवचनं । **पथविं**[२] ति भूमिं । **सितो** ति अन्तो[३] पविसित्वा निस्सितो । **सिया** ति भवेय्य । **चतुब्भि वातेही** ति चतूहि दिसाहि आगतेहि[४] वातेहि[४] । **असम्पकम्पियो** ति कम्पेतुं वा चालेतुं वा असक्कुणेय्यो । **तथूपमं** ति तथाविधं । **सप्पुरिसं** ति उत्तमपुरिसं । **वदामी** ति भणामि । **यो[५] अरियसच्चानि अवेच्च पस्सती** ति यो चत्तारि अरियसच्चानि पञ्ञाय अज्झोगाहेत्वा पस्सति । तत्थ अरियसच्चानि कुमारपञ्हे[६] वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि[७] ।

R. 186 अयं पनेत्थ **सङ्खेपत्थो**—यथा हि[८] इन्दखीलो गम्भीरनेमताय पथविस्सितो[९] चतुब्भि वातेहि[१०] असम्पकम्पियो सिया, इमं पि[११] सप्पुरिसं तथूपममेव वदामि, यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति । कस्मा ? यस्मा सो पि इन्दखीलो विय चतूहि वातेहि सब्बतित्थियवादवातेहि असम्पकम्पियो होति, तम्हा दस्सना केनचि कम्पेतुं वा चालेतुं वा असक्कुणेय्यो । तस्मा सुत्तन्तरे पि वुत्तं—

"सेय्यथापि भिक्खवे अयोखीलो वा इन्दखीलो वा गम्भीरनेमो सुनिखातो अचलो असम्पकम्पी[१२], पुरत्थिमाय चे पि दिसाय आगच्छेय्य भुसा वातवुट्ठि, नेव नं[१३] सङ्कम्पेय्य न सम्पकम्पेय्य न सम्पचालेय्य[१४] । पच्छिमाय ...पे०[१५]... दक्खिणाय, उत्तरायपि चे[१६] ...पे०... न सम्पचालेय्य । तं किस्स हेतु, गम्भीरत्ता भिक्खवे
B.156 नेमस्स, सुनिखातत्ता इन्दखीलस्स । एवमेव खो भिक्खवे ये[१७] च खो[१७]

१. नगरद्वारसंवरणत्थं विवरनत्थं—स्या० । २. पठविं—स्या०, रो० ।
३. ० पठविं—स्या० ।
४-४. आगतवातेहि—स्या०, सी०, रो० ।
५. ० चत्तारि—स्या० ।
६. विसुद्धिमग्गे—स्या०, रो० ।
७. ० ति—स्या० ।
८. च—स्या० ।
९. पठविं सितो—स्या०, सी०, रो० ।
१०. वातेभि स्या० ।
११. स्या० नत्थि ।
१२. असम्पकम्पियो—स्या०, सी० ।
१३. स्या० नत्थि ।
१४. सञ्चालेय्य—स्या०, एवमेव ।
१५. सी०, रो० नत्थि ।
१६. चे पि- स्या० सी०, रो० ।
१७-१७. ये हि—सी०, रो०; ये—स्या० ।

केचि समणा वा ब्राह्मणा वा 'इदं दुक्खं ति ...पे०... पटिपदा' ति यथाभूतं पजानन्ति, ते न अञ्ञस्स समणस्स वा ब्राह्मणस्स वा मुखं ओलोकेन्ति[1] 'अयं नून भवं जानं जानाति, पस्सं पस्सती' ति । तं किस्स हेतु, सुदिट्ठत्ता भिक्खवे चतुन्नं अरियसच्चानं" (म० नि० ४-३८०) ति ।

एवं भगवा बहुजनपच्चक्खस्स सोतापन्नस्सेव वसेन सङ्घरतनस्स गुणं वत्वा इदानि तमेव गुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि सङ्घे**" ति । तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो । इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति ।

ये अरियसच्चानीतिगाथावण्णना

९. एवं अविसेसतो सोतापन्नस्स गुणेन सङ्घाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि ये ते तयो सोतापन्ना एकबीजी कोलंकोलो सत्तक्खत्तुपरमो ति । यथाह—

"इधेकच्चो पुग्गलो तिण्णं संयोजनानं परिक्खया सोतापन्नो होति...पे०[2]...सो एकंयेव भवं निब्बत्तित्वा दुक्खस्सन्तं करोति, अयं एकबीजी । तथा द्वे वा तीणि वा कुलानि सन्धावित्वा संसरित्वा R.187 दुक्खस्सन्तं करोति, अयं कोलंकोलो । तथा सत्तक्खत्तुं देवेसु च मनुस्सेसु च सन्धावित्वा संसरित्वा दुक्खस्सन्तं करोति, अयं सत्तक्खत्तुपरमो" (पु० प० २५) ति ।

तेसं सब्बकनिट्ठस्स सत्तक्खत्तुपरमस्स गुणेन वत्तुमारद्धो "**ये अरियसच्चानी**" ति । तत्थ **ये अरियसच्चानी** ति एतं[3] वुत्तनयमेव । **विभावयन्ती** ति पञ्ञाओभासेन सच्चप्पटिच्छादकं[4] किलेसन्धकारं[4] विधमित्वा[5] अत्तनो पकासानि[6] पाकटानि करोन्ति । **गम्भीरपञ्ञेना**

१. उल्लोकेन्ति—सी०, रो० ।
२. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
३. एवं—स्या० ।
४. सच्चपटिच्छादककिलेसन्धकारं—सी०,रो०; सच्चपटिच्छादकं०—स्या० ।
५. विधमेत्वा—स्या० ।
६. पकासितानि—सी०, रो० ।

ति अप्पमेय्यपञ्ञताय सदेवकस्स[१] लोकस्स ञाणेन अलब्भनेय्यप्पतिट्ठ-पञ्ञेन, सब्बञ्ञुना ति वुत्तं होति। **सुदेसितानी** ति समासब्यास-साकल्यवेकल्यादीहि तेहि तेहि नयेहि सुट्ठु देसितानि। **किञ्चा पि ते**
B. 157 **होन्ति भुसं[२] पमत्ता[२]** ति ते विभावितअरियसच्चा पुग्गला किञ्चा पि देवरज्जचक्कवत्तिरज्जादिप्पमादट्ठानं[३] आगम्म भुसं पमत्ता होन्ति, तथापि सोतापत्तिमग्गञाणेन[४] अभिसङ्खारविञ्ञाणस्स निरोधेन[५] ठपेत्वा सत्त भवे अनमतग्गे संसारे ये उप्पज्जेय्युं नामं च रूपं च, तेसं निरुद्धत्ता अत्थङ्गतत्ता[६] न अट्ठमं भवं आदियन्ति, सत्तमभवे एव पन विपस्सनं आरभित्वा अरहत्तं पापुणन्ति[७]।

एवं भगवा सत्तक्खत्तुपरमवसेन सङ्घरतनस्स गुणं वत्वा इदानि तमेव गुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि सङ्घे**" ति। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। इमिस्सा[८] पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

सहावस्सातिगाथावण्णना

१०. एवं सत्तक्खत्तुपरमस्स अट्ठमं भवं अनादियनगुणेन[९] सङ्घाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि तस्सेव सत्त भवे आदियतो पि अञ्ञेहि अप्पहीनभवादानेहि पुग्गलेहि विसिट्ठेन गुणेन वत्तुमारद्धो
R. 188 "**सहावस्सा**[१०]" ति। तत्थ **सहावा** ति सद्धिं येव। **अस्सा** ति "न ते भवं अट्ठममादियन्ती[११]" ति वुत्तेसु अञ्ञतरस्स। **दस्सनसम्पदाया** ति सोतापत्तिमग्गसम्पत्तिया। सोतापत्तिमग्गो हि निब्बानं दिस्वा कत्तब्बकिच्चसम्पदाय सब्बपठमं निब्बानदस्सनतो "दस्सनं" ति वुच्चति, तस्स अत्तनि पातुभावो दस्सनसम्पदा, ताय दस्सनसम्पदाय

१. ०पि—सी०, स्या०, रो०।
२-२. भुसप्पमत्ता—स्या०, रो०, एवमेव; भुसप्पत्ता—सी०।
३. रज्जादि पमादट्ठानं—सी०, रो०; ० रज्जादिपमादट्ठानं—स्या०।
४. सोतापति ञाणेन—स्या०, रो०।
५. निरोधा—सी०, रो०।
६. अट्ठङ्गतत्ता—स्या०।
७. पापुणन्ती ति—सी०, रो०; पापुणिस्सन्ती ति—स्या०।
८. इमिस्साय—सी०।
९. अनादियगुणेन—स्या०।
१०. सहा वस्सा—स्या०, रो०।
११. अट्ठमं आदियन्ती—स्या०।

सह एव। **तयस्सुधम्मा जहिता भवन्ती** ति एत्थ अस्सु[1]-इति पदपूरणमत्ते निपातो "इदं सु मे सारिपुत्त महाविकटभोजनस्मि होती" (म० नि० १-१११) ति आदीसु[2] विय। यतो सहावस्स दस्सनसम्पदाय तयो धम्मा जहिता भवन्ति पहीना[3] होन्ती[4] ति अयमेत्थ अत्थो।

इदानि जहितधम्मदस्सनत्थमाह[5] "**सक्कायदिट्ठी विचिकिच्छितं च, सीलब्बतं वा पि यदत्थि किञ्चि**" ति। तत्थ सति काये विज्जमाने उपादानक्खन्धपञ्चकाख्ये[6] काये वीसतिवत्थुका दिट्ठि सक्कायदिट्ठि, सती वा तत्थ[7] काये दिट्ठी ति पि सक्कायदिट्ठि, यथावुत्तप्पकारे काये विज्जमाना दिट्ठी ति अत्थो। सतियेव वा काये दिट्ठी ति पि सक्कायदिट्ठि, यथावुत्तप्पकारे काये विज्जमाने B. 158 रूपादिसङ्खातो अत्ता ति एवं पवत्ता दिट्ठी ति अत्थो। तस्सा च पहीनत्ता सब्बदिट्ठिगतानि पहीनानेव[8] होन्ति। सा हि नेसं मूलं। सब्बकिलेसब्याधिवूपसमनतो[9] पञ्ञा "चिकिच्छितं" ति वुच्चति, तं पञ्ञाचिकिच्छितं[10] इतो विगतं, ततो वा पञ्ञाचिकिच्छिता[11] इदं विगतं ति विचिकिच्छितं। "सत्थरि कङ्खती (ध० सं० २३२)" ति—आदिना नयेन वुत्ताय अट्ठवत्थुकाय विमतिया एतं अधिवचनं। तस्सा पहीनत्ता सब्बानि[12] पि विचिकिच्छितानि[12] पहीनानि होन्ति। तं हि नेसं मूलं। "इतो बहिद्धा समणब्राह्मणानं सीलेन सुद्धि वतेन सुद्धी (ध० सं० २६८)" ति R. 189 एवमादीसु आगतं गोसीलकुक्कुरसीलादिकं सीलं[13]गोवतकुक्कुरवतादिकं

१. सु—सी०, स्या०, रो०।
२. एवमादिसु—सी०, स्या०, रो०।
३. पहीण—सी०।
४. भवन्ती—स्या०।
५. जहितधम्मस्स दस्सनत्थं आह—स्या०।
६. ० पञ्चकसंखाते—सी०, रो०।
७. स्या०, रो० नत्थि।
८. पहीणानियेन—सी०, स्या०, रो०।
९. सब्ब ब्याधिवूपसमनतो—स्या०।
१०. पञ्ञाय चिकिच्छितं—स्या०।
११. पञ्ञाविकिच्छिता—स्या०।
१२. सब्बविचिकिच्छितानि—सी०, स्या०, रो०।
१३. नानाविजं०—स्या०।

च वतं[१] सीलब्बतं ति वुच्चति, तस्स पहीनत्ता सब्बं पि नग्गियमुण्डिकादिअमरतपं[२] पहीनं होति। तञ्हि तस्स मूलं, तेनेव[३] सब्बावसाने वुत्तं "**यदत्थि किञ्ची**" ति। दुक्खदस्सनसम्पदाय चेत्थ सक्कायदिट्ठि[४] समुदयदस्सनसम्पदाय विचिकिच्छितं[५], मग्गदस्सननिब्बानदस्सनसम्पदाय[६] सीलब्बतं पहीयती ति विञ्ञातब्बं।

चतूहपायेहीतिगाथावण्णना

११. एवमस्स किलेसवट्टप्पहानं दस्सेत्वा इदानि तस्मिं किलेसवट्टे सति येन[७] विपाकवट्टेन भवितब्बं, तप्पहाना तस्सा पि पहानं दीपेन्तो आह "**चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो**" ति। तत्थ चत्तारो अपाया नाम निरयतिरच्छानपेत्तिविसयअसुरकाया। तेहि एस सत्त भवे आदियन्तो[८] पि विप्पमुत्तो ति अत्थो।

एवमस्स विपाकवट्टप्पहानं दस्सेत्वा इदानि यमस्स[९] विपाकवट्टस्स मूलभूतं कम्मवट्टं, तस्सा पि पहानं दस्सेन्तो आह "**छच्चाभिठानानि**[१०] **अभब्ब**[११] **कातुं**" ति। तत्थ[१२] **अभिठानानी** ति ओळारिकट्ठानानि, तानि एस छ अभब्बो कातुं। तानि च "अट्ठानमेतं भिक्खवे अनवकासो, यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो मातरं जीविता वोरोपेय्य (अ० नि० १-२७)" ति आदिना नयेन एककनिपाते वुत्तानि मातुघातपितुघातअरहन्तघातलोहितुप्पादसङ्घभेदअञ्ञसत्थारुद्देसकम्मानी ति वेदितब्बानि। तानि हि किञ्चा पि दिट्ठिसम्पन्नो
B.159 अरियसावको कुन्थ[१३] किपिल्लिकं पि जीविता न वोरोपेति, अपि च

१. वत्तं—स्या०, रो०।
२. नग्गियमुण्डियादि०—सी०,स्या०,रो०।
३. तेन—स्या०, रो०।
४. ० पहीयति—स्या०।
५. ० पहीयति—स्या०।
६. मग्गनिब्बाण०—रो०।
७. येव—सी०।
८. उपादियन्तो—स्या०, रो०, सी०।
९. यं इमस्स—सी०, रो०, स्या०।
१०. छ चाभिठानानि—स्या०,सी०,रो०।
११. अभब्बो—स्या०, सी०, रो०।
१२. स्या०, रो० नत्थि।
१३. कुण्ठ—स्या०।

खो पन पुथुज्जनभावस्स विगरहणत्थं वुत्तानि। पुथुज्जनो हि अदिट्ठिसम्पन्नत्ता एवंमहासावज्जानि[1] अभिठानानि[2] पि करोति, दस्सनसम्पन्नो पन अभब्बो तानि कातुं ति। अभब्बग्गहणं[3] चेत्थ भवन्तरे पि अकरणदस्सनत्थं। भवन्तरे पि हि एस अत्तनो अरियसावकभावं अजानन्तो पि धम्मताय एव एतानि वा छ पकतिपाणातिपातादीनि[4] वा पञ्च वेरानि अञ्ञसत्थारुद्देसेन सह छ ठानानि[5] न करोति, यानि सन्धाय एकच्चे "छ छाभिठानानी" ति पि[6] पठन्ति। मतमच्छग्गाहादयो[7] चेत्थ अरियसावकगामदारकानं[8] निदस्सनं। R. 190

एवं भगवा सत्त भवे आदियतो पि अरियसावकस्स अञ्ञेहि अप्पहीनभवादानेहि पुग्गलेहि विसिट्ठगुणवसेन[9] सङ्घरतनस्स गुणं वत्वा इदानि तमेव गुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि सङ्घे**" ति। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

किञ्चापि सोतिगाथावण्णना

१२. एवं सत्त भवे आदियतो पि अञ्ञेहि अप्पहीनभवादानेहि पुग्गलेहि विसिट्ठगुणेन सङ्घाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि न केवलं दस्सनसम्पन्नो छ अभिठानानि अभब्बो, कातुं किन्तु[10] अप्पमत्तकं पि पापकम्मं[11] कत्वा तस्स पटिच्छादनाय पि अभब्बो ति पमादविहारिनो पि दस्सनसम्पन्नस्स कतप्पटिच्छादनाभावगुणेन[12] वत्तुमारद्धो "**किञ्चापि सो कम्म[13] करोति पापकं**" ति।

१. एव महासावज्जानि—स्या०। २. अभिट्ठानानि—सी०।
३. अभब्बगहणं—सी०, रो०; ४. पापकानि—स्या०।
५. ट्ठानानि—स्या०। ६. सी०, रो० नत्थि।
७. मतमच्छगाहादयो—स्या०, रो०। ८. अरियसाविकागामदारिका—स्या०; अरियसावकदारका—रो०।
९. विसित्थगुणभाववसेन—स्या०।
१०. किं पन—सी०, रो०। ११. पापं कम्मं—सी०।
१२. कतपटि०—स्या०, रो०। १३. कम्मं—सी०, स्या०, रो०।

तस्सत्थो—सो दस्सनसम्पन्नो किञ्चा पि सतिसम्मोसेन पमाद-
विहारं आगम्म यं तं भगवता लोकवज्जं सञ्चिच्चातिक्कमनं[१]
सन्धाय वुत्तं "यं मया सावकानं सिक्खापदं पञ्ञत्तं, तं मम सावका
जीवितहेतु पि नातिक्कमन्ती" (अ० नि० ३-३०९) ति तं ठपेत्वा
अञ्ञं कुटिकारसहसेय्यादिं[२] (पा० चि० २८) पण्णत्तिवज्जवीतिक्कम-
सङ्खातं बुद्धप्पतिकुट्ठं **कायेन** पापकम्मं करोति, पदसोधम्म
(पा० चि० २६) उत्तरिछप्पञ्चवाचा (पा० चि० ३७) धम्मदेसन-
R. 191 सम्फप्पलापफरुसवचनादिं[३] वा[४] **वाचाय उद चेतसा वा** कत्थचि
लोभदोसुप्पादनं जातरूपादिसादियनं चीवरादिपरिभोगेसु अपच्च-
B.160 वेक्खणादिं[५] वा पापकम्मं[५] करोति। **अभब्बो सो तस्स पटिच्छदाय**[६]
न सो तं "इदं अकप्पियमकरणीयं"[७] ति जानित्वा मुहुत्तं पि
पटिच्छादेति, तंखणं[८] एव[८] पन सत्थरि वा विञ्ञूसु वा सब्रह्मचारीसु
आवि[९] कत्वा[९] यथाधम्मं पटिकरोति, "न पुन करिस्सामी" ति एवं
संवरितब्बं वा संवरति। कस्मा ? यस्मा **अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता,**
एवरूपं पि पापकम्मं कत्वा तस्स पटिच्छादाय दिट्ठनिब्बानपदस्स
दस्सनसम्पन्नस्स पुग्गलस्स अभब्बता वुत्ता ति अत्थो[१०]।

कथं ?

"सेय्यथापि भिक्खवे दहरो कुमारो मन्दो उत्तानसेय्यको[११] हत्थेन वा पादेन वा अङ्गारं अक्कमित्वा खिप्पमेव पटिसंहरति, एवमेव खो भिक्खवे धम्मता एसा दिट्ठिसम्पन्नस्स पुग्गलस्स, किञ्चा पि तथारूपिं आपत्तिं आपज्जति, यथारूपाय आपत्तिया वुट्ठानं पञ्ञायति। अथ

१. सञ्चिच्चानतिक्कमनं—सी०।
२. ० सेय्यादि—स्या०।
३. पदसो धम्मं उत्तरि धप्पञ्चबाचाभि-धम्मदेसनं ०—सी०; पदसोधम्मं उत्तरिछप्पञ्चवाचा धम्मदेसनं धम्मप्पलापफरुवचनादि—स्या०।
४. स्या० नत्थि।
५-५. अपच्चवेक्खणादिपापकम्मं—स्या०।
६. पटिच्छादाय—सी०, रो०, स्या०।
७. अप्पीयं अकरणीयं - स्या०, रो०।
८-८. तं खणञ्ञेव—सी०, रो०।
९-९. आवीकत्वा—सी०, रो०; आवी कत्वा—स्या०।
१०. ०ति—स्या०।
११. उत्तानसयको- स्या०।

खो नं खिप्पमेव सत्थरि वा विञ्ञूसु वा सब्रह्मचारीसु[1] देसेति विवरति उत्तानीकरोति, देसेत्वा विवरित्वा उत्तानीकत्वा[2] आयतिं संवरं[3] आपज्जती"[3] (म० नि० १-३६६) ति ।

एवं भगवा पमादविहारिनो पि दस्सनसम्पन्नस्स कतप्पटिच्छादनाभावगुणेन[4] सङ्घरतनस्स गुणं वत्वा इदानि[5] तमेव गुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि सङ्घे**" ति । तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो । इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति ।

वनप्पगुम्बेतिगाथावण्णना

१३. एवं सङ्घपरियापन्नानं पुग्गलानं तेन तेन गुणप्पकारेन सङ्घाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि य्वायं भगवता रतनत्तयगुणं दीपेन्तेन इध सङ्खेपेन अञ्ञत्र[6] च वित्थारेन परियत्तिधम्मो देसितो, तं[7] पि निस्साय पुन[7] बुद्धाधिट्ठानं सच्चं वत्तुमारद्धो "**वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे**" ति । तत्थ आसन्नसन्निवेसववत्थितानं रुक्खानं[8] समूहो वनं, मूलसारफेग्गुतचसाखापलासेहि पवुद्धो गुम्बो पगुम्बो, वनस्स[9], R. 192 वने वा[10] पगुम्बो **वनप्पगुम्बो** । स्वायं "वनप्पगुम्बे" ति वुत्तो, एवं पि हि वत्तुं[11] लब्भति "अत्थि सवितक्कसविचारे[12], अत्थि अवितक्क- B. 161 विचारमत्ते[13], सुखे दुक्खे जीवे" (म० नि० २-२१६) तिआदीसु विय । **यथा** ति उपमावचनं[14] । फुस्सितानि अग्गानि अस्सा ति **फुस्सितग्गो**, सब्बसाखापसाखासु सञ्जातपुप्फो ति अत्थो । सो पुब्बे

१. ० वा—स्या० ।
२. उत्तानीकरित्वा—स्या० ।
३-३. संवरमापज्जती—स्या० ।
४. कतपटि—स्या०, रो० ।
५. आयत्ति—स्या० ।
६. अञ्ञात्थ—स्या० ।
७-७. तेन पुन—स्या० ।
८. रुक्खाणं—स्या० ।
९. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
१०. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
११. वनसण्डोति०—स्या० ।
१२. ० पी—स्या० ।
१३. ० पी—स्या० ।
१४. ओपम्मवचनं—सी०, रो० ।

वुत्तनयेनेव "फुस्सितग्गे" ति वुत्तो। **गिम्हानमासे पठमस्मिं गिम्हे** ति ये चत्तारो गिम्हानं[१] मासा[१], तेसं चतुन्नं गिम्हमासानं[२] एकस्मिं मासे। कतरस्मिं मासे इति चे? **पठमस्मिं गिम्हे**, चित्रमासे[३] ति अत्थो। सो हि "पठमगिम्हो" ति च "बालवसन्तो[४]" ति च[५] वुच्चति। ततो परं पदत्थतो पाकटमेव।

अयं पनेत्थ **पिण्डत्थो**—यथा पठमगिम्हनामके बालवसन्ते[६] नानाविधरुक्खगहने[७] वने[७] सुपुप्फितग्गसाखो तरुणरुक्खगच्छपरियायनामो पगुम्बो अतिविय सस्सिरिको होति, एवमेव[८] खन्धायतनादीहि सतिपट्ठानसम्मप्पधानादीहि सीलसमाधिक्खन्धादीहि वा नानप्पकारेहि अत्थप्पभेदपुप्फेहि अतिविय सस्सिरिकत्ता तथूपमं निब्बानगामिमग्गदीपनतो[९] निब्बानगामिं परियत्तिधम्मवरं नेव लाभहेतु न[१०] सक्कारादिहेतु, केवलं तु[११] महाकरुणाय अब्भुस्साहितहदयो[१२] सत्तानं परमहिताय[१३] अदेसयी ति। **परमं हिताया** ति एत्थ च गाथाबन्धसुखत्थं अनुनासिको। अयं पनत्थो—परमहिताय निब्बानाय अदेसयी ति।

एवं भगवा इमं सुपुप्फितग्गवनप्पगुम्बसदिसं परियत्तिधम्मं वत्वा इदानि तमेव[१४] निस्साय बुद्धाधिट्ठानं सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि बुद्धे**" ति। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। केवलं[१५] पन[१५] इदं
R. 193 पि यथावुत्तपकारपरियत्तिधम्मसङ्खातं बुद्धे[१६] रतनं[१६] पणीतं ति एवं

१-१. गिम्हमासा—स्या०; गिम्हानमासा—सी०, रो०।
२. गिम्हानानं—सी०, रो०; गिम्हानं—स्या०।
३. चित्तमासे—सी०।
४. बालवस्सानो—स्या०।
५-५. पवुच्चति—स्या०।
६. बालवस्साने—स्या०।
७-७. ०गहणे वने—स्या०; नानाविधरुक्खे गहनवने—रो०; ० रुक्खगहणवने—सी०।
८. एवमेतं—सी०, रो०।
९. निब्बाणगामि मग्गं दीपनतो—सी०, रो०।
१०. स्या० नत्थि।
११. हि—सी०।
१२. अब्भुस्साहितमानसो—स्या०।
१३. परमं हिताय—सी०, स्या०, रो०।
१४. ० गुणं—स्या०।
१५-१५. केवलन्तु—स्या०।
१६-१६. बुद्धरतनं—स्या०।

योजेतब्बं। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

वरो वरञ्ञू ति गाथावण्णना

१४. एवं भगवा परियत्तिधम्मेन बुद्धाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि लोकुत्तरधम्मेन वत्तुमारद्धो "**वरो वरञ्ञू**" ति। तत्थ **वरो** ति पणीताधिमुत्तिकेहि इच्छितो "अहो वत मयं पि एवरूपा अस्साम" ति, वरगुणयोगतो वा वरो उत्तमो सेट्ठो ति अत्थो। **वरञ्ञू** ति B. 162 निब्बानञ्ञू। निब्बानं हि सब्बधम्मानं उत्तमट्ठेन वरं, तं चेस बोधिमूले सयं पटिविज्झित्वा अञ्ञासि। **वरदो** ति पञ्चवग्गिय-भद्दवग्गियजटिलादीनं अञ्ञेसं च देवमनुस्सानं निब्बेधभागियवासना-भागियवरधम्मदायी[1] ति अत्थो। **वराहरो** ति वरस्स मग्गस्स आहटत्ता[2] वराहरो ति वुच्चति। सो हि भगवा दीपङ्करतो पभुति समतिंस पारमियो पूरेन्तो पुब्बकेहि सम्मासम्बुद्धेहि अनुयातं पुराणमग्गवरमाहरि[3], तेन "वराहरो" ति वुच्चति।

अपि च सब्बञ्ञुतञ्ञाणप्पटिलाभेन[4] वरो, निब्बानसच्छि-किरियाय वरञ्ञू, सत्तानं विमुत्तिसुखदानेन वरदो, उत्तमपटि-पदाहरणेन वराहरो, एतेहि लोकुत्तरगुणेहि अधिकस्स कस्सचि गुणस्स[5] अभावतो अनुत्तरो।

अपरो नयो—वरो उपसमाधिट्ठानपरिपूरणेन, वरञ्ञू पञ्ञाधिट्ठानपरिपूरणेन, वरदो चागाधिट्ठानपरिपूरणेन, वराहरो सच्चाधिट्ठानपरिपूरणेन, वरं मग्गसच्चमाहरी ति[6]। तथा वरो पुञ्ञुस्सयेन, वरञ्ञू पञ्ञुस्सयेन, वरदो बुद्धभावत्थिकानं तदुपायसम्पदानेन, वराहरो पच्चेकबुद्धभावत्थिकानं तदुपायाहरणेन,

१. निब्बेधभागियं वा वासनाभागियं वा वरधम्ममदासी—स्या०।

२. आहरत्ता—स्या०।

३. पुराणं मग्गवरमाहरि—स्या०; पुराणमग्गवरं आहरि—रो०।

४. सब्बञ्ञुतञ्ञाणपटि०—सी०, स्या०, रो०।

५. सी०, स्या०, रो० नत्थि।

६. स्या० नत्थि।

अनुत्तरो तत्थ तत्थ असदिसताय, अत्तना वा अनाचरियको हुत्वा परेसं[1] आचरियभावेन, धम्मवरं अदेसयि[2] सावकभावत्थिकानं तदत्थाय स्वाक्खातत्तादिगुणयुत्तस्स धम्मवरस्स[3] देसनतो। सेसं वुत्तनयमेवा ति।

एवं भगवा नवविधेन लोकुत्तरधम्मेन अत्तनो गुणं वत्वा इदानि R. 194 तमेव गुणं निस्साय बुद्धाधिट्ठानं सच्चवचनं पयुञ्जति "**इदं पि बुद्धे**" ति। तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। केवलं[4] पन[4] यं वरं लोकुत्तरधम्मं एस अञ्ञासि, यं च अदासि, यं च आहरि, यं च देसेसि[5], इदं पि बुद्धे रतनं पणीतं ति एवं योजेतब्बं। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति।

खीणं तिगाथावण्णना

१५. एवं भगवा परियत्तिधम्मं च नवलोकुत्तरधम्मं च निस्साय द्वीहि गाथाहि बुद्धाधिट्ठानं सच्चं वत्वा इदानि ये तं परियत्तिधम्मं B. 163 अस्सोसुं, सुतानुसारेन[6] च[6] पटिपज्जित्वा नवप्पकारं पि लोकुत्तरधम्मं अधिगमिंसु, तेसं अनुपादिसेसनिब्बानपत्तिगुणं[7] निस्साय पुन सङ्घाधिट्ठानं सच्चं वत्तुमारद्धो "**खीणं पुराणं**" ति। तत्थ **खीणं** ति समुच्छिन्नं[8]। **पुराणं** ति पुरातनं। **नवं** ति सम्पति वत्तमानं। **नत्थि सम्भवं** ति अविज्जमानपातुभावं। **विरत्तचित्ता** ति वीतरागचित्ता[9]। **आयतिके भवस्मिं** ति अनागतमद्धानं पुनब्भवे। **ते** ति येसं खीणं पुराणं नवं नत्थि सम्भवं, ये च आयतिके भवस्मिं विरत्तचित्ता, ते

१. ० वा—स्या०।
२. अदेसयी ति—सी०, रो०।
३. वरधम्मस्स—सी०, स्या०।
४-४. केवलन्तु—स्या०, एवमेव।
५. अदेसेति—स्या०।
६-६. सुत्तानुसारेनेव—स्या०।
७. ० निब्बानप्पत्तिगुणं—स्या०।
८. परिक्खीणं समुच्छिन्नं—स्या०।
९. विरागचित्ता—स्या०; विगतरागचित्ता—रो०।

खीणासवा भिक्खू[1] । **खीणबीजा** ति उच्छिन्नबीजा । **अविरूळ्हिछन्दा** ति विरूळ्हिछन्दविरहिता[2] । **निब्बन्ती** ति विज्झायन्ति । **धीरा** ति धितिसम्पन्ना । **यथायं पदीपो** ति अयं पदीपो विय ।

किं वुत्तं होति ? यं तं सत्तानं उप्पज्जित्वा निरुद्धं पि पुराणं अतीतकालिकं कम्मं तण्हासिनेहस्स अप्पहीनत्ता पटिसन्धिआहरणसमत्थताय अखीणंयेव[3] होति, तं पुराणं कम्मं येसं अरहत्तमग्गेन तण्हासिनेहस्स सोसितत्ता अग्गिना दड्ढबीजमिव आयतिं विपाकदानासमत्थताय खीणं । यं च नेसं बुद्धपूजादिवसेन इदानि पवत्तमानं कम्मं नवं ति वुच्चति, तं च तण्हापहानेनेव छिन्नमूलपादपपुप्फमिव आयतिं फलदानासमत्थताय येसं नत्थि सम्भवं, ये च तण्हापहानेनेव आयतिके भवस्मिं विरत्तचित्ता, ते खीणासवा भिक्खू "कम्मं खेत्तं विञ्ञाणं R. 195 बीजं" (अं० नि० १-२०७) ति एत्थ वुत्तस्स[4] पटिसन्धिविञ्ञाणस्स[4] कम्मक्खयेनेव खीणत्ता खीणबीजा । यो पि पुब्बे पुनब्भवसङ्खाताय[5] विरूळ्हिया छन्दो अहोसि, तस्स पि समुदयप्पहानेनेव पहीनत्ता पुब्बे विय चुतिकाले असम्भवेन अविरूळ्हिछन्दा धितिसम्पन्नत्ता धीरा चरिमविञ्ञाणनिरोधेन[6] यथायं पदीपो निब्बूतो, एवं निब्बन्ति, पुन "रूपिनो वा अरूपिनो वा" ति एवमादिं पञ्ञत्तिपथं अच्चेन्ती ति । तस्मिं किर समये नगरदेवतानं पूजनत्थाय जालितेसु पदीपेसु एको पदीपो विज्झायि, तं दस्सेन्तो आह "यथायं पदीपो" ति ।

एवं भगवा ये तं पुरिमाहि द्वीहि गाथाहि वुत्तं परियत्तिधम्मं अस्सोसुं, सुतानुसारेन[6] च[6] पटिपज्जित्वा नवप्पकारं पि लोकुत्तरधम्मं अधिगमिंसु, तेसं अनुपादिसेसनिब्बानपत्तिगुणं[7] वत्वा इदानि तमेव गुणं निस्साय सङ्घाधिट्ठानं सच्चवचनं पयुञ्जन्तो देसनं

१. ० एव—स्या० । २. विरूळ्हिया छन्दविरहिता—स्या० ।
३. अखीणञ्ञेव—सी० । ४. वुत्तपटि०—स्या० ।
५. ० सङ्खाताय—सी०, स्या०, रो० । ६. पुरिमविञ्ञाण०—स्या० ।
७-७. सुतानुसारेनेव—सी०, स्या०, रो० । ८. ० निब्बाणप्पत्तिगुणं—स्या० ।

B. 164 समापेसि **"इदं पि सङ्घे"** ति । तस्सत्थो पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। केवलं पन इदं पि यथावुत्तेन[1] पकारेन[1] खीणासवभिक्खूनं निब्बान-सङ्खातं सङ्घे रतनं पणीतं ति एवं योजेतब्बं। इमिस्सा पि गाथाय आणा कोटिसतसहस्सचक्कवाळेसु अमनुस्सेहि पटिग्गहिता ति ।

देसनापरियोसाने राजकुलस्स सोत्थि अहोसि, सब्बूपद्दवा वूपसमिंसु, चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो अहोसि ।

यानीधातिगाथात्तयवण्णना

१६. अथ सक्को देवानमिन्दो "भगवता रतनत्तयगुणं निस्साय सच्चवचनं पयुञ्जमानेन नागरस्स[2] सोत्थि कता, मया पि नागरस्स[2] सोत्तित्थं[3] रतनत्तयगुणं निस्साय किञ्चि[4] वत्तब्बं" ति चिन्तेत्वा अवसाने गाथात्तयं अभासि **"यानीध भूतानी"** ति तत्थ यस्मा बुद्धो R. 196 यथा लोकहितत्थाय उस्सुक्कं आपन्नेहि आगन्तब्बं, तथा आगततो यथा च* तेहि* गन्तब्बं, तथा गतत्तो यथा च* तेहि* आजानितब्बं[5], तथा आजाननतो, यथा च[6] जानितब्बं, तथा जाननतो, यं च तथेव होति, तस्स गदनतो च "तथागतो" ति वुच्चति । यस्मा च सो देवमनुस्सेहि पुप्फगन्धादिना[7] बहि निब्बत्तेन उपकारकेन[8], धम्मानुधम्मपटिपत्ता-दिना च अत्तनि निब्बत्तेन अतिविय पूजितो, तस्मा सक्को देवान-मिन्दो सब्बं देवपरिसं अत्तना सद्धिं सम्पिण्डेत्वा आह **"तथागतं देवमनुस्सपूजितं, बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतू"** ति ।

१७. यस्मा पन धम्मे मग्गधम्मो यथा युगनन्धसमथविपस्सनाबलेन गन्तब्बं किलेसपक्खं[9] समुच्छिन्दन्तेन[9], तथा गतो ति[10] तथागतो[10] ।

१-१. यथावुत्तप्पकारेन—स्या० । २. नगरस्स—सी०, रो० ।
३. सोत्थतथं—सी०, रो० । ४. यं किञ्चि—सी०, स्या०, रो० ।
.. एतेहि—रो० । ५. अजानितब्बं - सी० ।
६. सी०, रो० नत्थि । ७. ० पी०—स्या० ।
८. उपकरणेन—सी०, स्या०, रो० । ९-९. किलेसपक्खसमुच्छिन्दनेन—स्या० ।
१०-१०. स्या० नत्थि ।

निब्बानधम्मो पि[1] यथा[2] गतो[2] पञ्ञाय पटिविद्धो[3] सब्बदुक्खप्पटिविघाताय[4] सम्पज्जति, बुद्धादीहि तथा अवगतो[5]; तस्मा "तथागतो" त्वेव[6] वुच्चति। यस्मा च सङ्घो पि यथा अत्तहिताय पटिपन्नेहि गन्तब्बं तेन तेन मग्गेन, तथा गतो[7] ति[7] "तथागतो" त्वेव[8] वुच्चति। तस्मा अवसेसगाथाद्वये[9] पि **तथागतं धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु, तथागतं[10] सङ्घं नमस्साम सुवत्थि** होतू ति वुत्तं। सेसं वुत्तनयमेवा ति।

एवं सक्को देवानमिन्दो इमं गाथात्तयं भासित्वा भगवन्तं B. 165
पदक्खिणं कत्वा देवपुरमेव गतो सद्धिं देवपरिसाय। भगवा पन तदेव रतनसुत्तं दुतियदिवसे पि देसेसि, पुन चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो अहोसि, एवं याव सत्तमदिवसं[11] देसेसि, दिवसे दिवसे[12] तथेव धम्माभिसमयो अहोसि। भगवा अड्ढमासमेव वेसालियं विहरित्वा राजूनं "गच्छामा" ति पटिवेदेसि, ततो
राजानो दिगुणेन सक्कारेन पुन तीहि दिवसेहि भगवन्तं गङ्गातीरं R. 197
नयिंसु। गङ्गाय निब्बत्ता नागराजानो[13] चिन्तेसुं "मनुस्सा तथागतस्स सक्कारं करोन्ति, मयं किं न करिस्सामा" ति सुवण्णरजतमणिमया नावायो मापेत्वा सुवण्णरजतमणिमये एव पल्लङ्के पञ्ञपेत्वा[14] पञ्चवण्णपदुमसञ्छन्नं उदकं करित्वा "अम्हाकं अनुग्गहं करोथा" ति भगवन्तं याचिंसु[15]। भगवा अधिवासेत्वा[16] रतननावमारूळ्हो,

१. स्या०, रो० नत्थि।
२-२. यथावतो—सी०।
३. ० ब—सी०।
४. सब्बदुक्खविघाताय—सी०, स्या०, रो०।
५. गतो—स्या०, रो०।
६. ति—सी०, स्या०, रो०।
७-७. गततो—स्या०, रो०।
८. ति—रो०।
९. अवसानगाथाद्वये—स्या०।
१०. स्या० नत्थि।
११. सत्तमदिवसे—स्या०; सत्तमे दिवसे—रो०।
१२. ० देसनावसाने—सी०।
१३. ० च—सी०।
१४. पञ्ञापेत्वा—सी०, स्या०, रो०।
१५. उपगता—सी०, स्या०।
१६. अधिवासेसि०—स्या०।

पञ्च च[१] भिक्खुसतानि पञ्चसतं[२] नावायो अभिरूळ्हा[२]। नागराजानो भगवन्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेन नागभवनं पवेसेसुं। तत्र सुदं भगवा सब्बरत्तिं नागपरिसाय धम्मं देसेसि, दुतियदिवसे दिब्बेहि खादनीयभोजनीयेहि महादानं अकंसु[३], भगवा अनुमोदित्वा नागभवना निक्खमि।

भूमट्ठा देवा "मनुस्सा च नागा च तथागतस्स सक्कारं करोन्ति, मयं किं न करिस्सामा" ति चिन्तेत्वा वनप्पगुम्बरुक्खपब्बतादीसु छत्तातिछत्तानि[४] उक्खिपिंसु। एतेनेव उपायेन याव अकनिट्ठब्रह्मभवनं[५], ताव महासक्कारविसेसो निब्बत्ति। बिम्बिसारो पि लिच्छवीहि आगतकाले कतसक्कारतो दिगुणमकासि[६], पुब्बे वुत्तनयेनेव पञ्चहि दिवसेहि भगवन्तं राजगहं आनेसि।

राजगहमनुप्पत्ते भगवति पच्छाभत्तं मण्डलमाळे[७] सन्निपतितानं भिक्खूनं अयमन्तरकथा[८] उदपादि[९] "अहो बुद्धस्स भगवतो आनुभावो, यं उद्दिस्स गङ्गाय ओरतो च पारतो च अट्ठयोजनो भूमिभागो निन्नं च थलं च समं कत्वा वालुकाय[९] ओकिरित्वा पुप्फेहि सञ्छन्नो, योजनप्पमाणं गङ्गाय उदकं नानावण्णेहि पदुमेहि, सञ्छन्नं, याव अकनिट्ठभवनं[१०], ताव[११] छत्तातिछत्तानि[१२] उस्सितानी" ति। भगवा तं पवत्तिं ञत्वा गन्धकुटितो निक्खमित्वा तङ्खणानुरूपेन पाटिहारियेन
R. 198 गन्त्वा[१३] मण्डलमाळे[१३] पञ्ञत्तवरबुद्धासने[१४] निसीदि। निसज्ज खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि "काय नुत्थ भिक्खवे एतरहि कथाय

१. स्या० नत्थि।
२-२. सकं सकं नावं आरुळ्हा ति—स्या०; पञ्चसत०—सी०; सकं सकं०—रो०।
३. अदंसु—सी०, स्या०।
४. छत्ताधिछत्तानि—सी०।
५. अकनिट्ठभवना—सी०।
६ दिगुणं सक्कारमकासि—सी०; दिगुणं अकासि—रो०।
७. ० माले—सी०।
८. अयमन्तरा कथा—सी०, स्या०; अयं अन्तरा कथा—रो०।
९. वालिकाय—सी०, स्या०, रो०।
१०. ० भवना—रो०, सी०।
११. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
१२. छत्ताधिछत्तानि—सी०।
१३-१३. मण्डलमालं गन्त्वा—स्या०।
१४. पञ्ञत्ते पारबुद्धासने—स्या०।

सन्निसिन्ना'' ति। भिक्खू सब्बं आरोचेसुं भगवा एतदवोच ''न भिक्खवे अयं पूजाविसेसो मय्हं बुद्धानुभावेन निब्बत्तो, न[1] नागदेव-ब्रह्मानुभावेन, अपि च खो पुब्बे अप्पमत्तकपरिच्चागानुभावेन निब्बत्तो'' ति। भिक्खू आहंसु ''न मयं भन्ते तं अप्पमत्तकं परिच्चागं जानाम, साधु नो भगवा तथा कथेतु, यथा मयं तं जानेय्यामा'' ति। B, 166

भगवा आह—भूतपुब्बं भिक्खवे तक्कसिलायं सङ्खो[2] नाम ब्राह्मणो अहोसि, तस्स पुत्तो सुसीमो नाम माणवो सोळसवस्सुद्देसिको वयेन[3], सो[3] एकदिवसं पितरं उपसङ्कमित्वा अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि, अथ[4] तं पिता[5] आह ''किं तात सुसीमा'' ति। सो आह ''इच्छामहं तात बाराणसिं गन्त्वा सिप्पं उग्गहेतुं'' ति। ''तेन हि तात सुसीम असुको नाम ब्राह्मणो मम सहायको, तस्स सन्तिकं गन्त्वा उग्गण्हाही'' ति कहापणसहस्सं अदासि। सो तं गहेत्वा मातापितरो अभिवादेत्वा अनुपुब्बेन बाराणसिं गन्त्वा उपचारयुत्तेन विधिना आचरियं उपसङ्कमित्वा अभिवादेत्वा अत्तानं निवेदेसि। आचरियो ''मम सहायकस्स पुत्तो'' ति माणवं सम्पटिच्छित्वा सब्बं पाहुनेय्यवत्तमकासि[6]। सो अद्धानकिलमथं विनोदेत्वा[7] तं कहापण-सहस्सं आचरियस्स पादमूले ठपेत्वा सिप्पं उग्गहेतुं ओकासं याचि, आचरियो ओकासं कत्वा उग्गण्हापेसि।

सो लहुं च गण्हन्तो बहुं च गण्हन्तो गहितगहितं च सुवण्णभाजने पक्खित्ततेलमिव[8] अविनस्समानं धारेन्तो द्वादसवस्सिकं[9] सिप्पं[9] कतिपयमासेनेव परियोसापेसि। सो सज्झायं करोन्तो आदिमज्झंयेव[10]

१. नापी—स्या०।
२. संखो—स्या०, एवमेव।
३. सो सोळसवस्सुद्देसिको वयेन—स्या०; सोळसवस्सुद्देसिको वयेन—सी०।
४. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
५. पीता—स्या०।
६. पाहुनेय्यमकासि—स्या०; पाहुनेय्यम अकासि—रो०।
७. पटिविनोदेत्वा—सी०, स्या०, रो०।
८. पक्खित्तमिव सीहतेलं—सी०, रो०।
९-९. द्वादसवस्सिकसिप्पं—स्या०।
१०. आदिमज्झमेव—सी०।

पस्सति, नो परियोसानं। अथ आचरियं उपसङ्कमित्वा आह R. 199 "इमस्स सिप्पस्स आदिमज्झमेव पस्सामि, नो[1] परियोसानं"[1] ति। आचरियो आह "अहं पि तात एवमेवा" ति। अथ को आचरिय[2] इमस्स सिप्पस्स परियोसानं जानाती ति। इसिपतने तात इसयो अत्थि, ते जानेय्युं ति[3]। ते उपसङ्कमित्वा पुच्छामि आचरिया ति। पुच्छ तात यथासुखं ति। सो इसिपतनं गन्त्वा पच्चेकबुद्धे उपसङ्कमित्वा पुच्छि "अपि[4] भन्ते परियोसानं जानाथा" ति[4]। आम आवुसो जानामा ति। तं[5] मं पि सिक्खापेथा ति। तेन हावुसो पब्बजाहि, न सक्का अपब्बजितेन सिक्खापेतुं[6] ति। साधु भन्ते B.167 पब्बाजेथ वा[7] मं, यं[8] वा इच्छथ[8], तं कत्वा[9] परियोसानं जानापेथा ति। ते तं[10] पब्बाजेत्वा कम्मट्ठाने नियोजेतुं असमत्था "एवं ते निवासेतब्बं, एवं[11] पारुपितब्बं" ति आदिना नयेन आभिसमाचारिकं सिक्खापेसुं। सो तत्थ सिक्खन्तो उपनिस्सयसम्पन्नत्ता न चिरेनेव[12] पच्चेकबोधिं अभिसम्बुज्झि। सकलबाराणसियं "सुसीमपच्चेकबुद्धो"[13] ति[14] पाकटो अहोसि लाभग्गयसग्गप्पत्तो सम्पन्नपरिवारो। सो अप्पायुकसंवत्तनिकस्स कम्मस्स कतत्ता न चिरेनेव परिनिब्बायि, तस्स पच्चेकबुद्धा च महाजनकायो च सरीरकिच्चं कत्वा धातुयो गहेत्वा नगरद्वारे थूपं पतिट्ठापेसुं।

अथ खो सङ्खो ब्राह्मणो "पुत्तो मे चिरगतो[15], न[16] चस्स[16] पवत्तिं जानामी[17]" ति पुत्तं दट्ठुकामो तक्कसिलाय निक्खमित्वा अनुपुब्बेन

१. परियोसानं न पस्सामी—सी०, स्या०, रो०।
२. चरहि—सी०, रो०।
३. ० आह—सी०।
४-४. आदिमज्झपरियोसानं जानाथा ति—सी०, रो०।
५. स्या० नत्थि।
६. सिक्खितुं—सी०, स्या०, रो०।
७. स्या०, रो० नत्थि।
८-८. यथा इच्छथ—स्या०; यं वा—रो०।
९. ० वा—सी०, तं वा कत्वा—रो०।
१०. स्या०, रो० नत्थि।
११. एवमेत—स्या०।
१२. अचिरेनेव—सी०, रो०।
१३. सुसिमो पच्चेकबुद्धो—स्या०।
१४. जातो ति—स्या०।
१५. चिरं गतो—स्या०, रो०।
१६-१६. तस्स—स्या०।
१७. न जानामी—स्या०।

बाराणसिं गन्त्वा[1] महाजनकायं सन्निपतितं दिस्वा "अद्धा बहूसु[2] एको पि मे पुत्तस्स पवत्तिं जानिस्सती" ति चिन्तेन्तो उपसङ्कमित्वा[3] पुच्छि "सुसीमो नाम माणवो इध आगतो अत्थि, अपि नु तस्स पवत्तिं जानाथा" ति । ते "आम ब्राह्मण जानाम, इमस्मिं नगरे ब्राह्मणस्स सन्तिके तिण्णं वेदानं पारगू हुत्वा पच्चेकबुद्धानं सन्तिके
पब्बजित्वा पच्चेकबुद्धो हुत्वा अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया R. 200
परिनिब्बायि, अयमस्स थूपो पतिट्ठापितो" ति आहंसु । सो भूमिं हत्थेन पहरित्वा रोदित्वा च परिदेवित्वा च तं चेतियङ्गणं गन्त्वा तिणानि उद्धरित्वा उत्तरसाटकेन वालुकं[4] आनेत्वा पच्चेकबुद्धचेतियङ्गणे ओकिरित्वा कमण्डलुतो[5] उदकेन[5] समन्ततो[6] भूमिं[6] परिप्फोसित्वा[7] वनपुप्फेहि पूजं कत्वा उत्तरसाटकेन पटाकं आरोपेत्वा थूपस्स उपरि अत्तनो छत्तं बन्धित्वा पक्कामी ति ।

एवं अतीतं देसेत्वा[8] जातकं पच्चुप्पन्नेन अनुसन्धेन्तो भिक्खूनं धम्मकथं[9] कथेसि "सिया खो पन वो भिक्खवे एवमस्स[10] 'अञ्ञो नून तेन समयेन सङ्खो ब्राह्मणो अहोसी' ति, न खो पनेतं[11] एवं दट्ठब्बं, अहं तेन समयेन सङ्खो ब्राह्मणो अहोसिं, मया सुसीमस्स पच्चेकबुद्धस्स चेतियङ्गणे तिणानि उद्धटानि[12], तस्स मे कम्मस्स निस्सन्देन अट्ठयोजनमग्गं[13] विगतखाणुकण्टकं[14] कत्वा समं सुद्धमकंसु । मया तत्थ वालुका[15] ओकिण्णा, तस्स मे निस्सन्देन अट्ठयोजनमग्गे[16] वालुकं[17] ओकिरिंसु । मया तत्थ वनकुसुमेहि पूजा कता, तस्स मे निस्सन्देन

१. पत्वा – सी०, स्या०, रो० ।
२. ०जनकायेसु—स्या० ।
३. तत्थ०—स्या० ।
४. वालिकं—सी०, स्या०, रो० ।
५-५. कमण्डलुतोदकेन—स्या० ।
६-६. स्या०, रो० नत्थि ।
७. परिप्फोसेत्वा—स्या० ।
८. दस्सेत्वा तं—सी०, रो०; देसेत्वा तं—स्या० ।
९. धम्मं—स्या० ।
१०. स्या०, रो० नत्थि ।
११. ० भिक्खवे—सी० ।
१२. उद्धवितानि—स्या० ।
१३. अट्ठयोजनं मग्गं—सी० ।
१४. विहतखाणुकण्टकं—स्या० ।
१५. वालिका—सी०, स्या०, रो० ।
१६. अट्ठयोजने मग्गे—सी०, स्या०, रो० ।
१७. वालिकं—स्या०, रो० ।

B. 168 नवयोजने[1] मग्गे[1] थले च उदके च नानापुप्फेहि पुप्फसन्थरमकंसु[2]। मया तत्थ कमण्डलुदकेन भूमि[3] परिप्फोसिता, तस्स मे निस्सन्देन वेसालियं पोक्खरवस्सं वस्सि। मया तस्मिं चेतिये पटाका आरोपिता, छत्तं च बद्धं, तस्स मे निस्सन्देन याव अकनिट्ठभवना पटाका च[4] आरोपिता, छत्तातिछत्तानि[5] च उस्सितानि। इति खो भिक्खवे अयं
R. 201 मय्हं पूजाविसेसो नेव बुद्धानुभावेन निब्बत्तो, न नागदेवब्रह्मानुभावेन, अपि च खो अप्पमत्तकपरिच्चागानुभावेन निब्बत्तो" ति। धम्मकथापरियोसाने[6] इमं गाथमभासि[7]—

"मत्तासुखपरिच्चागा, पस्से चे विपुलं सुखं।
चजे मत्तासुखं धीरो, सम्पस्सं विपुलं सुखं" ति॥

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय*
रतनसुत्तवण्णना निट्ठिता।

१-१. नवयोजनमग्गे—सी०। २. ० सन्थरं अकंसु—स्या०, रो०। ३. भूमिं—स्या०। ४. सी०, रो० नत्थि। ५. छत्ताधिछत्तानि—सी०। ६. धम्मकथाय परियोसाने—स्या०। ७. गाथं अभासि—स्या०, रो०। * खुद्दकट्ठकथाय—स्या०।

७. तिरोकुड्डसुत्तवण्णना[1]

निक्खेपप्पयोजनं

इदानि[2] "तिरोकुड्डेसु तिट्ठन्ती" ति आदिना रतनसुत्तानन्तरं[3] निक्खित्तस्स[4] तिरोकुड्डसुत्तस्स[5] अत्थवण्णनाक्कमो अनुप्पत्तो, तस्स इध निक्खेपप्पयोजनं वत्वा अत्थवण्णनं करिस्साम।

तत्थ इदं हि तिरोकुड्डं इमिना[6] अनुक्कमेन[6] भगवता अवुत्तं पि यायं इतो पुब्बे नानप्पकारेन कुसलकम्मपटिपत्ति दस्सिता, तत्थ पमादं आपज्जमानो निरयतिरच्छानयोनीहि विसिट्ठतरे पि ठाने उप्पज्जमानो यस्मा एवरूपेसु पेतेसु उप्पज्जति, तस्मा न एत्थ पमादो करणीयो ति दस्सनत्थं, येहि च भूतेहि उपद्दुताय वेसालिया उपद्दववूपसमनत्थं रतनसुत्तं वुत्तं, तेसु एकच्चानि एवरूपानी ति दस्सनत्थं वा वुत्तं ति।

इदमस्स[7] इध
निक्खेपप्पयोजनं वेदितब्बं।

अनुमोदनाकथा

यस्मा पनस्स अत्थवण्णना— B. 169

येन यत्थ यदा यस्मा, तिरोकुड्डं पकासितं।
पकासेत्वान तं सब्बं, कयिरमाना[8] यथाक्कमं।
सुकता होति तस्माहं, करिस्सामि तथेव तं[9]॥

१. तिरोकुड्डवण्णना—स्या०। २. रो० नत्थि।
३. स्या०, रो० नत्थि। ४. स्या० नत्थि।
५. तिरोकुड्डस्स—स्या०। ६-६. इमिनानुक्कमेन—स्या०।
७. इमस्स—सी०, स्या०, रो०। ८. करियमाना—स्या०।
९. तं ति—स्या०।

केन पनेतं पकासितं कत्थ यदा[१] कस्मा चा ति। वुच्चते—
R. 202 भगवता पकासितं, तं[२] खो[२] पन राजगहे दुतियदिवसे[३] रञ्ञो मागधस्स अनुमोदनत्थं। इमस्स चत्थस्स[४] विभावनत्थं अयमेत्थ वित्थारकथा कथेतब्बा[५]—

इतो द्वानवुतिकप्पे कासि नाम नगरं अहोसि। तत्थ जयसेनो नाम राजा, तस्स सिरिमा नाम देवी[६], तस्सा कुच्छियं फुस्सो[७] नाम बोधिसत्तो निब्बत्तित्वा अनुपुब्बेन सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झि। जयसेनो राजा "मम पुत्तो अभिनिक्खमित्वा बुद्धो जातो, मय्हमेव बुद्धो, मय्हं[८] धम्मो[८], मय्हं[९] सङ्घो" ति ममत्तं उप्पादेत्वा सब्बकालं सयमेव उपट्ठहति, न[१०] अञ्ञेसं ओकासं देति[११]।

भगवतो कनिट्ठभातरो वेमातिका[१२] तयो भातरो[१२] चिन्तेसुं "बुद्धा नाम सब्बलोकहिताय उप्पज्जन्ति, न चेकस्सेवत्थाय, अम्हाकं च पिता अञ्ञेसं ओकासं न देति, कथं नु मयं लभेय्याम भगवन्तं उपट्ठातुं" ति। तेसं एतदहोसि "हन्द मयं किञ्चि[१३] उपायं करोमा" ति। ते पच्चन्तं कुपितं विय कारापेसुं। ततो राजा "पच्चन्तो कुपितो" ति सुत्वा तयो पि पुत्ते पच्चन्तवुपसमनत्थं[१४] पेसेसि। ते[१५] वूपसमेत्वा आगता, राजा तुट्ठो वरं अदासि "यं इच्छथ, तं गण्हथा" ति। ते "मयं भगवन्तं उपट्ठातुं इच्छामा" ति आहंसु। राजा "एतं ठपेत्वा अञ्ञं गण्हथा" ति आह। ते "मयं अञ्ञेन अनत्थिका" ति आहंसु। तेन हि परिच्छेदं कत्वा गण्हथा ति। ते सत्त वस्सानि

१. कदा—स्या०, रो०।
२-२. तञ्च—स्या०।
३. दुतियदानदिवसे—स्या०।
४. अत्थस्स—सी०, रो०; च अत्थस्स—स्या०।
५. वेदितब्बा—स्या०।
६. देवि—सी०।
७. पुस्सो—स्या०।
८-८. धम्मोमय्हमेव—स्या०।
९. स्या० नत्थि।
१०. स्या० नत्थि।
११. न देति—स्या०।
१२-१२. स्या० नत्थि।
१३. यं किञ्चि—सी०।
१४. पच्चन्तं वूपसमनत्थं—स्या०।
१५. ते पच्चन्तं—स्या०।

याचिंसु, राजा न[1] अदासि[1]। एवं छ पञ्च चत्तारि तीणि द्वे एकं[2], सत्त मासानि छ पञ्च चत्तारी ति[3] याव तेमासं याचिंसु। राजा "गण्हथा" ति अदासि।

ते वरं लभित्वा परमतुट्ठा भगवन्तं उपसङ्कमित्वा वन्दित्वा आहंसु "इच्छाम मयं भन्ते भगवन्तं तेमासं उपट्ठातुं, अधिवासेतु नो
भन्ते भगवा इमं तेमासं वस्सावासं" ति। अधिवासेसि भगवा तुण्ही B. 170
भावेन। ततो ते अत्तनो जनपदे[4] नियुत्तकपुरिसस्स लेखं पेसेसुं "इमं R. 203
तेमासं अम्हेहि भगवा उपट्ठातब्बो, विहारं आदिं कत्वा सब्बं भगवतो उपट्ठानसम्भारं करोही[5]" ति। सो तं[6] सब्बं सम्पादेत्वा पटिनिवेदेसि[7]। ते कासायवत्थनिवत्था हुत्वा अड्ढतेय्येहि[8] पुरिससहस्सेहि वेय्यावच्चकरेहि भगवन्तं सक्कच्चं उपट्ठहमाना जनपदं नेत्वा विहारं निय्यातेत्वा[9] वसापेसुं[10]।

तेसं भण्डागारिको एको गहपतिपुत्तो सपजापतिको सद्धो अहोसि पसन्नो, सो बुद्धप्पमुखस्स सङ्घस्स दानवत्तं[11] सक्कच्चं अदासि। जनपदे नियुत्तकपुरिसो तं गहेत्वा जानपदेहि एकादसमत्तेहि पुरिससहस्सेहि सद्धिं सक्कच्चमेव दानं पवत्तापेसि। तत्थ केचि जानपदा[12] पटिहतचित्ता अहेसुं, ते दानस्स अन्तरायं कत्वा देय्यधम्मे[13] अत्तना[14] खादिंसु, भत्तसालं[15] च अग्गिना दहिंसु। पवारिते राजपुत्ता भगवतो महन्तं सक्कारं कत्वा भगवन्तं पुरक्खत्वा[16] पितुनो सकासमेव अगमंसु। तत्थ गन्त्वा[17] एव[17] भगवा परिनिब्बायि। राजा च

१-१. नादासि—स्या०। २. एकं संवच्छरं—स्या०।
३ तीणि—स्या०। ४. जनपदेसु—स्या०।
५. सम्पादेही ति—स्या०। ६. स्या०, नत्थि।
७. लेखं पटिपेस्सि—स्या०। ८. सी० नत्थि।
९. निय्यादेत्वा—स्या०। १०. वस्सं वसापेसुं—स्या०।
११. दानवट्टं—सी०; दानवत्थुं—रो०। १२. जना—स्या०।
१३. देय्यधम्मं—स्या०, रो०। १४. ०पी—स्या०।
१५. पुत्तानं पी अदंसु भत्तसालञ्च—स्या०। १६. पुरक्खित्वा—स्या०।
१७-१७. गन्त्वा एवं—सी०, रो०; गन्त्वाव—स्या०।

राजपुत्ता च जनपदे नियुत्तकपुरिसो च भण्डागारिको च अनुपुब्बेन कालं कत्वा सद्धिं परिसाय सग्गे उप्पज्जिंसु[1], पटिहतचित्तजना[2] निरयेसु निब्बत्तिंसु[3]। एवं तेसं द्विन्नं गणानं सग्गतो सग्गं निरयतो निरयं उपपज्जन्तानं द्वानवुतिकप्पा वीतिवत्ता।

अथ इमस्मिं भद्दकप्पे कस्सपबुद्धस्स[4] काले ते पटिहतचित्तजना[5] पेतेसु उप्पन्ना। तदा[6] मनुस्सा अत्तनो ञातकानं पेतानं अत्थाय दानं दत्वा उद्दिसन्ति "इदं[7] अम्हाकं ञातीनं होतू" ति। ते सम्पत्तिं लभन्ति। अथ इमे पि पेता तं दिस्वा भगवन्तं कस्सपं उपसङ्कमित्वा पुच्छिंसु "किं नु खो भन्ते मयं पि एवरूपं सम्पत्तिं लभेय्यामा" ति।
R.204 भगवा आह "इदानि न लभथ, अपि च[8] अनागते गोतमो नाम बुद्धो भविस्सति, तस्स भगवतो काले बिम्बिसारो नाम राजा भविस्सति, सो तुम्हाकं इतो द्वानवुतिकप्पे ञाति अहोसि, सो बुद्धस्स दानं दत्वा तुम्हाकं उद्दिसिस्सति, तदा लभिस्सथा" ति। एवं वुत्ते किर तेसं पेतानं तं वचनं "स्वे लभिस्सथा" ति वुत्तं विय अहोसि।

अथ एकस्मिं बुद्धन्तरे वीतिवत्ते अम्हाकं भगवा लोके उप्पज्जि।
B. 171 ते पि तयो राजपुत्ता तेहि[9] अड्ढतेय्येहि[10] पुरिससहस्सेहि[11] सद्धिं देवलोका चवित्वा मगधरट्ठे ब्राह्मणकुले[12] उप्पज्जित्वा अनुपुब्बेन इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा गयासीसे तयो जटिला अहेसुं जनपदे नियुत्तकपुरिसो राजा अहोसि बिम्बिसारो, भण्डागारिको गहपति[13] विसाखो नाम[14] महासेट्ठि अहोसि, तस्स पजापति धम्मदिन्ना नाम

१. उपपज्जिंसु—स्या०।
२. पटिहतचित्ता जना—सी०, स्या०, रो०।
३. उपपज्जिंसु—स्या०।
४. कस्सपस्स बुद्धस्स—सी०, रो०; कस्सपबुद्धकाले—स्या०।
५. पटिहतचित्ता जना—स्या०।
६. सी०, रो० नत्थि।
७. रो०, सी० नत्थि।
८. च खो—स्या०।
९. तेन—सी०।
१०. सी० नत्थि।
११ पुरिससहस्सेन—सी०।
१२. ब्राह्मणकुलेसु—स्या०।
१३. गहपतिपुत्तो—स्या०।
१४. रो० नत्थि।

सेट्ठिधीता अहोसि। एवं सब्बा पि अवसेसा[1] परिसा[1] रञ्ञो[2] एव परिवारा हुत्वा निब्बत्ता[3]।

अम्हाकं[4] भगवा लोके उप्पज्जित्वा सत्तसत्ताहं अतिक्कमित्वा अनुपुब्बेन बाराणसिं आगम्म धम्मचक्कं पवत्तेत्वा पञ्चवग्गिये आदिं कत्वा याव अड्ढतेय्यसहस्सपरिवारे[5] तयो जटिले विनेत्वा राजगहं अगमासि। तत्थ च तदहुपसङ्कमन्तंयेव राजानं बिम्बिसारं सोतापत्तिफले पतिट्ठापेसि एकादसनवुतेहि मागधकेहि[6] ब्राह्मणगहपतिकेहि सद्धिं। अथ रञ्ञा स्वातनाय भत्तेन निमन्तितो भगवा[7] अधिवासेत्वा दुतियदिवसे सक्केन देवानमिन्देन पुरतो पुरतो गच्छन्तेन—

"दन्तो दन्तेहि सह पुराणजटिलेहि,
विप्पमुत्तो विप्पमुत्तेहि।
सिङ्गीनिक्खसवण्णो[8],
राजगहं पाविसि भगवा"
(म० व० ३७) ति—

एवमादीहि गाथाहि अभित्थवियमानो राजगहं पविसित्वा रञ्ञो
निवेसने महादानं सम्पटिच्छि। ते पेता "इदानि राजा अम्हाकं R. 205
दानं उद्दिसिस्सति, इदानि[9] उद्दिसिस्सती" ति आसाय परिवारेत्वा[10]
अट्ठंसु।

राजा दानं दत्वा "कत्थ नु खो भगवा विहरेय्या" ति भगवतो विहारट्ठानमेव[11] चिन्तेसि, न तं दानं कस्सचि उद्दिसि। पेता छिन्नासा

१-१. अवसेसपरिसा—सी०, रो०।
२. बिम्बिसाररञ्ञो—स्या०।
३. निब्बत्ति—सी०।
४. अम्हाकम्पी—स्या०।
५. सहस्सपरिवारे—सी०।
६. मागधिकेहि—स्या०, रो०।
७. सी०, रो० नत्थि।
८. ० सुवण्णो—स्या०, रो०।
९. इदानी अम्हाकं दानं—स्या०।
१०. सम्परिवारेत्वा—स्या०।
११. विहारट्ठानं, येव—रो०, स्या०।

हुत्वा रत्तिं रञ्ञो निवेसने अतिविय भिंसनकं विस्सरमकंसु। राजा भयसंवेगसन्तासमापज्जि[१], ततो पभाताय रत्तिया भगवतो आरोचेसि "एवरूपं सद्दमस्सोसिं, किं नु खो मे भन्ते भविस्सती" ति। भगवा आह "मा भायि महाराज, न ते[२] किञ्चि पापकं भविस्सति, अपि च खो ते पुराणञातका[३] पेतेसु उप्पन्ना सन्ति, ते एकं बुद्धन्तरं तमेव B. 172 पच्चासीसमाना[४] विचरन्ति 'बुद्धस्स दानं दत्वा अम्हाकं उद्दिसिस्सती' ति, न[५] तेसं त्वं हिय्यो[५] उद्दिसि, ते छिन्नासा तथारूपं विस्सरमकंसू" ति।

सो आह "इदानि पन भन्ते दिन्ने लभेय्युं" ति। आम महाराजा ति। तेन हि मे भन्ते अधिवासेतु भगवा अज्जतनाय दानं, तेसं उद्दिसिस्सामी ति। भगवा अधिवासेसि। राजा निवेसनं गन्त्वा महादानं पटियादेत्वा[६] भगवतो कालं[७] आरोचापेसि[७]। भगवा राजन्तेपुरं गन्त्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि सद्धिं भिक्खुसङ्घेन। ते[८] पि खो पेता[८] "अपि नाम अज्ज लभेय्यामा" ति गन्त्वा तिरोकुड्डादीसु अट्ठंसु। भगवा तथा अकासि, यथा ते सब्बेव रञ्ञो पाकटा अहेसुं। राजा दक्खिणोदकं देन्तो "इदं मे[९] ञातीनं होतू" ति उद्दिसि, तङ्खणञ्ञेव तेसं पेतानं पदुमसञ्छन्ना पोक्खरणियो निब्बत्तिंसु। ते तत्थ न्हत्वा[१०] च पिवित्वा च पटिप्पस्सद्धदरथकिलमथपिपासा सुवण्णवण्णा अहेसुं। राजा[११] यागुखज्जकभोजनानि दत्वा उद्दिसि, तङ्खणञ्ञेव[१२] तेसं[१२] दिब्बयागुखज्जकभोजनानि निब्बत्तिंसु। ते तानि परिभुञ्जित्वा पीणिन्द्रिया अहेसुं। अथ[१३] वत्थसेनासनानि दत्वा

१. ० समापज्जित्वा—स्या०; ० सन्तासम आपज्जित्वा—रो०।
२. सी०, रो० नत्थि।
३. पुराणञाती—रो०, सी०।
४. पच्चासिसमाना—सी०, स्या०, रो०।
५-५. तं त्वं हीयो न - सी०, रो०।
६. सम्पटिया देत्वा—स्या०।
७-७. कालमारोचापेसि—स्या०।
८-८. ते पि पेता—सी०, रो०; ते पेता—स्या०।
९. तेसं—सी०, रो०।
१०. नहात्वा—सी०, स्या०, रो०।
११. अथ राजा—स्या०।
१२-१२. तेसं तङ्खणञ्ञेव—स्या०।
१३. अथ राजा—स्या०।

उद्दिसि, तेसं दिब्बवत्थदिब्बयानदिब्बपासाददिब्बपच्चत्थरणदिब्ब- R. 206
सेय्यादिअलङ्कारविधयो[1] निब्बत्तिंसु। सा पि तेसं सम्पत्ति यथा सब्बा व पाकटा होति[2], तथा भगवा अधिट्ठासि। राजा अतिविय अत्तमनो अहोसि। ततो भगवा भुत्तावी पवारितो रञ्ञो मागधस्स अनुमोदनत्थं "**तिरोकुड्डेसु तिट्ठन्ती**" ति इमा गाथा[3] अभासि।

एत्तावता च "**येन यत्थ यदा यस्मा, तिरोकुड्डं पकासितं, पकासेत्वान[4] तं सब्बं**" ति अयं मातिका सङ्खेपतो वित्थारतो च विभत्ता होति।

पठमगाथावण्णना

१. इदानि इमस्स तिरोकुड्डस्स यथाक्कमं **अत्थवण्णनं** करिस्साम। सेय्यथिदं? पठमगाथाय ताव[5] **तिरोकुड्डा** ति कुड्डानं परभागा वुच्चन्ति। **तिट्ठन्ती** ति निसज्जादिप्पटिक्खेपतो[6] ठानकप्पनवचनमेतं। तेन यथापाकारपरभागं[7] पब्बतपरभागं च गच्छन्तं "तिरोपाकारं तिरोपब्बतं असज्जमानो गच्छती" (दी० नि० १-६८)
ति वदन्ति, एवमिधा पि कुड्डस्स परभागेसु तिट्ठन्ते "तिरोकुड्डेसु B. 173
तिट्ठन्ती" ति आह। **सन्धिसिङ्घाटकेसु चा** ति एत्थ[8] **सन्धियो** ति चतुक्कोणरच्छा[9] वुच्चन्ति घरसन्धिभित्तिसन्धिआलोकसन्धियो चा पि। **सिङ्घाटका** ति तिकोणरच्छा वुच्चन्ति, तदेकज्झं कत्वा पुरिमेन सद्धिं सङ्घटेन्तो[10] "सन्धिसिङ्घाटकेसु चा" ति आह। **द्वारबाहासु तिट्ठन्ती** ति नगरद्वारघरद्वारानं बाहा निस्साय तिट्ठन्ति। **आगन्त्वान**

१. ०दिब्बपासादपच्चत्थरणसेय्यादिअलङ्कारविधयो—स्या०, रो०।
२. अहोसि—स्या०।
३. गाथायो—सी०।
४. पकासयित्वा—स्या०।
५. सी०, रो० नत्थि।
६. निसज्जादिपटिक्खेपतो—स्या०, रो०।
७. पाकारपरभागञ्च—स्या०।
८. तत्थ—स्या०।
९. चतुकोणरच्छायो—सी०, रो०; चतुक्कोणरच्छायो—स्या०।
१०. संसन्धेन्तो—स्या०।

सकं घरं ति एत्थ सकं घरं नाम पुब्बञातिघरं पि अत्तना[१] सामिकभावेन अज्झावुत्थपुब्बघरं[२] पि, तदुभयं पि यस्मा ते सकघर-सञ्ञाय आगच्छन्ति, तस्मा "आगन्त्वान सकं घरं" ति आह ।

दुतियगाथावण्णना

२. एवं भगवा पुब्बे अनज्झावुत्थपुब्बं पि पुब्बञातिघरं[३] बिम्बिसारनिवेसनं सकघरसञ्ञाय[४] आगन्त्वा तिरोकुड्डसन्धि-सिङ्घाटकद्वारबाहासु ठिते इस्सामच्छरियफलं अनुभवन्ते, अप्पेकच्चे
R. 207 दीघमस्सुकेसविकारधरे[५] अन्धकारमुखे[६] सिथिलबन्धनविलम्बमान-किसफरुसकाळकङ्गपच्चङ्गे तत्थ तत्थ ठितवनदाहदड्ढतालरुक्खसदिसे[७], अप्पेकच्चे जिघच्छापिपासारणिनिम्मथनेन[८] उदरतो उट्ठाय मुखतो विनिच्छरन्ताय[९] अग्गिजालाय परिडय्हमानसरीरे, अप्पेकच्चे सूचिछिद्दाणुमत्तकण्ठबिलताय पब्बताकारकुच्छिताय च लद्धं पि पानभोजनं यावदत्थं भुञ्जितुं[१०] असमत्थताय[१०] खुप्पिपासापरेते[११] अञ्ञं रसमविन्दमाने[१२], अप्पेकच्चे अञ्ञमञ्ञस्स अञ्ञेसं वा सत्तानं पभिन्नगण्डपिळकमुखा[१३] पग्घरितरुधिरपुब्बलसिकादिं[१३] लद्धा[१४] अमतमिव[१४] सायमाने अतिविय दुद्दसिकविरूपभयानकसरीरे बहू पेते रञ्ञो निदस्सेन्तो—

"तिरोकुड्डेसु तिट्ठन्ति, सन्धिसिङ्घाटकेसु च ।
द्वारबाहासु तिट्ठन्ति, आगन्त्वा सकं घरं" ति—

१. अत्तनो—स्या० ।
२. ० पुब्बं घरं—सी०, रो० ।
३. पुब्बञातिघरत्ता—सी०, रो० ।
४. सकं घरसञ्ञाय—स्या० ।
५. दीघमस्सुकेसन्धकारवदने—स्या०; दीघमस्सुकेसविकारवरघने—रो० ।
६. स्या०, रो० नत्थि ।
७. वनदायड्ढतालरुक्खसदिसे—सी०, रो०; ठपितवनडाहदड्ढतालरुक्खसदिसे—स्या० ।
८. जिघच्छापिपासासारणिमत्थनेन—सी०, रो०; पिपासारणिनिम्मथनेन—स्या० ।
९. विनिरच्छरणकाय—सी० ।
१०-१०. भुञ्जितुमसमत्थताय—स्या० ।
११. खुप्पीपासरसतो—स्या०; खुप्पिपासारते—रो० ।
१२. रसं अविन्दमाने—सी०, रो० ।
१३-१३. पभिन्नगण्डपिळकमुखपग्घरितं रुधिरपुब्बलसिकादिं—सी०, रो० ।
१४-१४. लद्धामतं इव—सी० ।

वत्वा पुन तेहि कतस्स कम्मस्स दारुणभावं दस्सेन्तो "**पहूते अन्नपानम्हि**" ति दुतियगाथमाह।

तत्थ **पहूते** ति अनप्पके बहुम्हि, यावदत्थिके[1] ति वुत्तं होति। भकारस्स[2] हि हकारो[2] लब्भति "पहु सन्तो न भरती" ति आदीसु विय। केचि पन "बहूते[3]" इति च "बहूके[4]" इति च पठन्ति। पमादपाठा एते। अन्ने च पानम्हि च **अन्नपानम्हि**। खज्जे च भोज्जे च **खज्जभोज्जे**, एतेन[5] असितपीतखायितसायितवसेन चतुब्बिधं आहारं दस्सेति। **उपट्ठिते** ति उपगम्म ठिते, सज्जिते पटियत्ते समोहिते ति वुत्तं होति। **न तेसं कोचि सरति, सत्तानं** ति तेसं पेत्तिविसये[6] उप्पन्नानं सत्तानं कोचि माता वा[7] पिता[7] वा पुत्तो वा न सरति। किं कारणा? **कम्मपच्चया**, अत्तना कतस्स अदानदानप्पटिसेधनादिभेदस्स[8] कदरियकम्मस्स पच्चया। तं हि तेसं कम्मं ञातीनं सरितुं न देति।

B. 174

R. 208

ततियगाथावण्णना

३. एवं भगवा अनप्पके पि अन्नपानादिम्हि पच्चुपट्ठिते "अपि नाम अम्हे उद्दिस्स किञ्चि ददेय्यु[9]" ति ञाती[10] पच्चासीसन्तानं[11] विचरतं तेसं पेतानं तेहि कतस्स अतिकटुकविपाककरस्स[12] कम्मस्स पच्चयेन कस्सचि ञातिनो अनुस्सरणमत्ताभावं दस्सेन्तो—

"पहूते अन्नपानम्हि, खज्जभोज्जे उपट्ठिते।
न तेसं कोचि सरति, सत्तानं कम्मपच्चया" ति—

१. यावदत्थके—सी०, स्या०।
२-२. बकारस पकारो—सी०, स्या०, रो०।
३. पहूते—सी०, रो०।
४. पहुतं—सी०, रो०।
५. तेन—सी०, रो०।
६. पीत्तिविसये—स्या०; पित्तिविसये—रो०।
७-७. स्या० नत्थि।
८. कतस्सादानदानपटिसेन्धनादिभेदस्स—स्या०।
९. दज्जा—सी०; दज्जन्ती—रो०।
१०. ञातीनं—स्या०।
११. पच्चासिसन्तानं—सी०, स्या०, रो०।
१२. अतिकटुकदुक्खविपाकस्स—स्या०।

वत्वा पुन रञ्ञो पेत्तिविसयूपपन्ने ञातके उद्दिस्स दिन्नं[1] दानं[1] पसंसन्तो "**एवं ददन्ति ञातीनं**" ति ततियगाथमाह ।

तत्थ **एवं** ति उपमावचनं, तस्स द्विधा सम्बन्धो—तेसं सत्तानं कम्मपच्चया असरन्ते पि किस्मिञ्हि[2] ददन्ति, ञातीनं, ये एवं अनुकम्पका होन्ती ति च यथा तया महाराज दिन्नं, एवं सुचिं पणीतं कालेन कप्पियं[3] पानभोजनं ददन्ति ञातीनं, ये होन्ति अनुकम्पका ति च। **ददन्ती**[4] ति देन्ति उद्दिसन्ति निय्यातेन्ति[5] । **ञातीनं** ति मातितो च पितितो[6] च सम्बन्धानं । **ये** ति ये केचि पुत्ता वा धीतरो वा भातरो वा **होन्ती** ति भवन्ति। **अनुकम्पका** ति अत्थकामा हितेसिनो । **सुचिं** ति विमलं दस्सनेय्यं[7] मनोरमं धम्मिकं धम्मलद्धं । **पणीतं** ति उत्तमं सेट्ठं। **कालेन** ति ञातिपेतानं तिरोकुड्डादीसु आगन्त्वा ठितकालेन। **कप्पियं** ति अनुच्छविकं[8] पतिरूपं अरियानं परिभोगारहं। **पानभोजनं** ति पानं च भोजनं च[9]। इध पानभोजनमुखेन सब्बो पि देय्य धम्मो अधिप्पेतो ।

चतुत्थगाथापुब्बद्धवण्णना

B.175 ४. एवं भगवा रञ्ञा मागधेन पेतभूतानं ञातीनं अनुकम्पाय दिन्नं पानभोजनं पसंसन्तो—

"एवं ददन्ति ञातीनं, ये होन्ति अनुकम्पका ।
सुचिं पणीतं कालेन, कप्पियं पानभोजनं" ति—

वत्वा पुन येन पकारेन दिन्नं तेसं होति, तं दस्सेन्तो "इदं **वो ञातीनं होतू**" ति चतुत्थगाथाय पुब्बद्धमाह तं ततियगाथाय पुब्बद्धेन सम्बन्धितब्बं—

१-१. दिन्नदानं—सी०, रो० ।
२. किस्मिञ्चि—सी०, स्या०, रो० ।
३. कप्पीयं—स्या० ।
४. तत्थ ददन्ती—स्या० ।
५. निय्यादेन्ति—सी०, स्या०, रो० ।
६. पीतितो—स्या० ।
७. दस्सनीयं—सी० ।
८. अनुच्छवियं—सी०, रो० ।
९. ० पानभोजनं—स्या० ।

"एवं ददन्ति ञातीनं, ये होन्ति अनुकम्पका।
इदं वो ञातीनं होतु, सुखिता होन्तु ञातयो" ति ॥ R. 209

तेन "इदं वो ञातीनं होतू ति एवं ददन्ति, नो अञ्ञथा" ति एत्थ आकारत्थेन[१] एवंसद्देन दातब्बाकारनिदस्सनं कतं होति।

तत्थ **इदं** ति देय्यधम्मनिदस्सनं। **वो** ति "कच्चि पन वो अनुरुद्धा समग्गा सम्मोदमाना (म० नि० १-२५६) ति च, "येहि वो अरिया" ति च[२] एवमादीसु विय केवलं निपातमत्तं, न सामिवचनं। **ञातीनं होतू** ति पेत्तिविसये उप्पन्नानं ञातकानं होतु। **सुखिता होन्तु ञातयो** ति ते पेत्तिविसयूपपन्ना ञातयो इदं पच्चनुभवन्ता सुखिता होन्तू ति।

चतुत्थगाथापरद्धपञ्चमगाथापुब्बद्धवण्णना

४-५. एवं भगवा येन पकारेन पेत्तिविसयूपपन्नानं ञातीनं दातब्बं, तं दस्सेन्तो "इदं वा[३] ञातीनं होतु, सुखिता होन्तु ञातयो" ति वत्वा पुन यस्मा "इदं वो ञातीनं होतू" ति वुत्ते पि न अञ्ञेन कतं कम्मं अञ्ञस्स फलदं होति, केवलं तु तथा उद्दिस्स[४] दिय्यमानं[४] तं वत्थु[५] ञातीनं कुसलकम्मस्स पच्चयो होति। तस्मा यथा तेसं तस्मिं येव वत्थुस्मिं तङ्खणे[६] फलनिब्बत्तकं कुसलकम्मं होति, तं दस्सेन्तो "**ते च तत्था**" ति चतुत्थगाथाय पच्छिमद्धं "**पहूते अन्नपानम्ही**" ति पञ्चमगाथाय पुब्बद्धं च आह।

तेसं अत्थो—ते ञातिपेता तं[७] दानं दीयति, तत्थ समन्ततो B. 176
आगन्त्वा समागन्त्वा, समोधाय वा[८] एकज्झं हुत्वा ति वुत्तं होति, सम्मा[९] आगता समागता "इमे[१०] नो ञातयो अम्हाकं अत्थाय दानं

१. आकारट्ठेन—स्या०, रो०।
२ स्या० नत्थि।
३. वो—स्या०, रो०।
४-४. उद्दिस्समानं—सी०, रो०।
५. वत्थुं—सी०, स्या०, रो०।
६. तंखणं—स्या०।
७. यत्थ तं—स्या०, रो०।
८. स्या० नत्थि।
९. समं—सी०, सम—रो०।
१०. इमं—स्या०।

उद्दिसिस्सन्ती[१]" ति एतदत्थं सम्मा[२] आगता हुत्वा ति वुत्तं होति। **पहूते अन्नपानम्ही** ति तस्मिं अत्तनो उद्दिस्समाने[३] पहूते अन्नपानम्हि। सक्कच्चं **अनुमोदरे** ति अभिसद्दहन्ता कम्मफलं अविजहन्ता चित्तीकारं अविक्खित्तचित्ता हुत्वा "इदं नो दानं हिताय सुखाय होतू" ति मोदन्ति अनुमोदन्ति, पीतिसोमनस्सजाता होन्ती ति।

पञ्चमगाथापरद्धछट्ठगाथापुब्बद्धवण्णना

R. 210 ५-६. एवं भगवा यथा पेत्तिविसयूपपन्नानं[४] तङ्खणे[५] फलनिब्बत्तकं कुसलं[६] कम्मं[६] होति, तं दस्सेन्तो—

"ते च तत्थ समागन्त्वा, ञातिपेता समागता।
पहूते अन्नपानम्हि, सक्कच्चं अनुमोदरे" ति—

वत्वा पुन ञातके निस्साय निब्बत्तकुसलकम्मफलं[७] पच्चनुभोन्तानं तेसं ञाती आरब्भ थोमनाकारं दस्सेन्तो "**चिरं जीवन्तू**" ति पञ्चमगाथाय पच्छिमद्धं "**अम्हाकं च कता पूजा**" ति छट्ठगाथाय[८] पुब्बद्धं च आह।

तेसं अत्थो—**चिरं जीवन्तू** ति चिरजीविनो[९] दीघायुका होन्तु। **नो ञाती** ति अम्हाकं ञातका। **येसं हेतू** ति ये निस्साय येसं कारणा। **लभामसे**[१०] ति लभाम। अत्तना तङ्खणं पटिलद्धसम्पत्तिं अपदिसन्ता भणन्ति। पेतानञ्हि अत्तनो अनुमोदनेन, दायकानं उद्देसेन[११], दक्खिणेय्यसम्पदाय चा ति तीहि अङ्गेहि दक्खिणा समिज्झति, तङ्खणे[१२] फलनिब्बत्तिका होति। तत्थ दायका विसेसहेतु। तेनाहंसु "येसं हेतु लभामसे" ति। **अम्हाकं च कता पूजा** ति "इदं

१. उद्दिसन्ती—सी०।
२. समागता—स्या०।
३. उद्दिस्स दिय्यमाने—स्या०।
४. पित्ति०—स्या०, रो० एवमेव।
५. तं खणं—स्या०, एवमेव।
६-६. कुसलकम्मं—सी०, स्या०, रो०।
७. निब्बत्तं कुसलकम्मफलं—स्या०।
८. छट्ठमगाथाय—सी०, रो०।
९. सी० नत्थि; चिरं जीविनो—स्या०।
१०. लभाम्हसे—स्या०, एवमेव।
११. उद्दिसेन—स्या०।
१२. तं खणं—स्या०।

वो[1] ञातीनं होतू" ति एवं इमं[2] दानं उद्दिसन्तेहि अम्हाकं च पूजा[3] कता[3]। दायका च अनिप्फला ति यम्हि सन्ताने परिच्चागमयं कम्मं कतं, तस्स तत्थेव फलदानतो दायका च अनिप्फला ति।

एत्थाह—"किं पन पेत्तिविसयूपपन्ना एव ञातयो लभन्ति, B. 177
उदाहु अञ्ञे पि लभन्ती" ति? वुच्चते[4]—भगवता एवेतं ब्याकतं जाणुस्सोणिना ब्राह्मणेन[5] पुट्ठेन, किमेत्थ अम्हेहि वत्तब्बं अत्थि। वुत्तं हेतं—

"मयमस्सु भो गोतम ब्राह्मणा नाम दानानि देम, सद्धानि करोम 'इदं दानं पेतानं ञातिसालोहितानं उपकप्पतु, इदं दानं पेता ञातिसालोहिता परिभुञ्जन्तू' ति, कच्चि तं भो गोतम दानं पेतानं ञातिसालोहितानं उपकप्पति, कच्चि ते[6] पेता ञातिसालोहिता तं[7] दानं परिभुञ्जन्ती ति। ठाने खो ब्राह्मण उपकप्पति, नो अट्ठाने ति।

कतमं पन तं भो गोतम ठानं, कतमं अट्ठानं ति। इध ब्राह्मण
एकच्चो पाणातिपाती होति...पे०...मिच्छादिट्ठिको होति, सो R. 211
कायस्स भेदा परं मरणा निरयं उपपज्जति। यो नेरयिकानं सत्तानं आहारो, तेन सो तत्थ यापेति, तेन सो तत्थ तिट्ठति। इदं खो ब्राह्मण अट्ठानं, यत्थ[8] ठितस्स[8] तं दानं न उपकप्पति।

इध पन[9] ब्राह्मण एकच्चो पाणातिपाती होति...पे०... मिच्छादिट्ठिको होति, सो कायस्स भेदा परं मरणा तिरच्छानयोनिं उपपज्जति। यो तिरच्छानयोनिकानं सत्तानं आहारो, तेन सो तत्थ यापेति, तेन सो तत्थ तिट्ठति। इदं पि खो ब्राह्मण अट्ठानं, यत्थ ठितस्स तं दानं न उपकप्पति।

१. नो—स्या०।
२. इदं—सी०, रो०।
३-३. कता पूजा—स्या०।
४. सी०, रो० नत्थि।
५. नाम ब्राह्मणेन—स्या०।
६. तं—स्या०।
७. स्या० नत्थि।
८. यत्थट्ठितस्स—सी०, रो०।
९. सी०, स्या०, रो० नत्थि।

इध पन[१] ब्राह्मण एकच्चो पाणातिपाता पटिविरतो होति...पे०... सम्मादिट्ठिको होति, सो कायस्स भेदा परं मरणा मनुस्सानं सहब्यतं उपपज्जति...पे०...देवानं सहब्यतं उपपज्जति। यो देवानं आहारो, तेन सो तत्थ यापेति, तेन सो तत्थ तिट्ठति। इदं पि खो ब्राह्मणा अट्ठानं, यत्थ ठितस्स तं दानं न उपकप्पति।

इध पन[२] ब्राह्मण एकच्चो पाणातिपाती होति ... पे० ... मिच्छादिट्ठिको होति, सो कायस्स भेदा परं मरणा पेत्तिविसयं[३]
B. 178 उपपज्जति। यो पेत्तिवेसयिकानं[४] सत्तानं आहारो, तेन सो तत्थ यापेति, तेन सो तत्थ तिट्ठति। यं वा पनस्स इतो अनुपवेच्छन्ति[५] मित्तामच्चा[६] वा ञातिसालोहिता वा, तेन सो तत्थ यापेति, तेन सो तत्थ तिट्ठति। इदं खो ब्राह्मण ठानं, यत्थ ठितस्स तं दानं उपकप्पती ति।

सचे पन भो गोतम सो पेतो ञातिसालोहितो तं ठानं अनुपपन्नो होति, को तं दानं परिभुञ्जती ति। अञ्ञेपिस्स[७] ब्राह्मणपेता ञातिसालोहिता तं ठानं उपपन्ना होन्ति, ते तं दानं परिभुञ्जन्ती ति।

"सचे पन भो गोतम सो चेव पेतो ञातिसालोहितो तं ठानं अनुपपन्नो होति, अञ्ञेपिस्स पेता ञातिसालोहिता तं ठानं अनुपपन्ना होन्ति, को तं दानं परिभुञ्जती ति। अट्ठानं खो एतं ब्राह्मण अनवकासो, यं तं ठानं विवित्तं अस्स इमिना दीघेन अद्धना यदिदं पेतेहि ञातिसालोहितेहि। अपि च ब्राह्मण दायको पि अनिप्फलो[८]" (अं० नि० ४-३२३) ति।

१. सी०, स्या० नत्थि।
२. सी० नत्थि।
३. पित्तिविसयं—स्या०, रो०।
४. पेत्तिविसयिकानं—सी०; पित्तिविसयिकानं—स्या०, रो०।
५. अनुप्पवेच्छन्ति—सी०, स्या०, रो०।
६. मित्ता वा मच्चा वा—स्या०, रो०।
७. अञ्ञेपीस्स—स्या०।
८. ० होती—सी०, रो०।

छट्ठगाथापरद्ध सत्तमगाथावण्णना

६-७. एवं भगवा रञ्ञो मागधस्स पेत्तिविसयूपपन्नानं[1] R. 212
पुब्बञातीनं[1] सम्पत्तिं[2] निस्साय थोमेन्तो[3] "एते ते[4] महाराज ञाती इमाय दानसम्पदाय अत्तमना एवं थोमेन्ती" ति दस्सेन्तो—

"चिरं जीवन्तु नो ञाती, येसं हेतु लभामसे[5]।
अम्हाकं च कता पूजा, दायका च अनिप्फला ति—

वत्वा पुन तेसं पेत्तिविसयूपपन्नानं[6] अञ्ञस्स कसिगोरक्खादिनो सम्पत्तिपटिलाभकारणस्स अभावं इतो दिन्नेन यापनभावं च दस्सेन्तो "**न हि तत्थ कसी**[7] **अत्थी**[8]" ति छट्ठगाथाय पच्छिमद्धं[9] "**वणिज्जा तादिसी**" ति इमं सत्तमगाथं च आह।

तत्रायं अत्थवण्णना—न हि महाराज तत्थ पेत्तिविसये[10] कसि अत्थि, यं निस्साय ते पेता सम्पत्तिं पटिलभेय्युं। **गोरक्खेत्थ न विज्जती** ति न केवलं कसि एव, गोरक्खा पि एत्थ पेत्तिविसये न विज्जति, यं निस्साय ते सम्पत्तिं पटिलभेय्युं। **वणिज्जा तादिसी** B. 179
नत्थी ति वाणिज्जा[11] पि तादिसी नत्थि, या तेसं सम्पत्तिपटिलाभहेतु भवेय्य। **हिरञ्ञेन कयाकयं**[12] ति हिरञ्ञेन कयविक्कयं पि तत्थ तादिसं नत्थि, यं तेसं सम्पत्तिपटिलाभहेतु भवेय्य। **इतो दिन्नेन यापेन्ति, पेता कालगता तहिं** ति केवलं पन[13] इतो ञातीहि वा मित्तामच्चेहि वा दिन्नेन[14] यापेन्ति, अत्तभावं गमेन्ति। **पेता** ति पेत्तिविसयूपपन्ना[15] सत्ता। **कालगता**[16] ति अत्तनो मरणकालेन गता,

१-१. पेत्तिविसयूपपन्नपुब्बञातीनं—सी०, रो०; पीत्तिविसयूपपन्ने०—स्या०।
२. दानसम्पत्तिं—स्या०।
३. राजानं थोमेन्ते—स्या०।
४. वो—सी०, रो०।
५. लभाम्हसे—स्या०।
६. पीति०—स्या०, रो०।
७. कसि—स्या०।
८. सी०, रो० नत्थि।
९. ० च—स्या०।
१०. पीत्तिविसये—रो०, स्या०, एवमेव।
११. वणिज्जा पी—स्या०।
१२. कयाक्कयं - सी०, रो०।
१३. तु—स्या०।
१४. दिन्नेहि—सी०।
१५. पित्ति०—स्या०।
१६. कालकता—सी०।

"कालकता[१]" ति वा पाठो, कतकाला कतमरणा ति अत्थो। **तहिं** ति तस्मिं पेत्तिविसये[२]।

अट्ठमनवमगाथाद्वयवण्णना

८-९. एवं "इतो दिन्नेन यापेन्ति, पेता कालगता[३] तहिं" ति वत्वा इदानि उपमाहि तमत्थं पकासेन्तो "**उन्नमे[४] उदकं[४] वुट्ठं[५]**" ति इदं गाथद्वयमाह।

तस्सत्थो—यथा उन्नते[६] थले उस्सादे भूमिभागे मेघेहि अभिवुट्ठं[७] उदकं निन्नं पवत्तति, यो यो[८] भूमिभागो निन्नो ओणतो[९], तं तं
R. 213 पवत्तति गच्छति पापुणाति, एवमेव इतो दिन्नं दानं[१०] पेतानं उपकप्पति निब्बत्तति, पातुभवती ति अत्थो। निन्नमिव हि उदकप्पवत्तिया ठानं पेतलोको दानुपकप्पनाय। यथाह "इदं खो ब्राह्मण ठानं, यत्थ ठितस्स तं दानं उपकप्पती" ति। यथा च कन्दरपदरसाखापसाखकुसोब्भमहासोब्भसन्निपातेहि[११] वारिवहा महानज्जो पूरा हुत्वा सागरं परिपूरेन्ति, एवं पि इतो दिन्नदानं[१२] पुब्बे वुत्तनयेनेव पेतानं उपकप्पती ति।

दसमगाथावण्णना

१०. एवं भगवा "इतो दिन्नेन यापेन्ति, पेता कालगता तहिं" ति इमं अत्थं उपमाहि पकासेत्वा पुन यस्मा ते पेता "इतो किञ्चि लच्छामा" ति आसाभिभूता ञातिघरं आगन्त्वा पि "इदं नाम नो देथा" ति याचितुं असमत्था, तस्मा तेसं इमानि अनुस्सरणवत्थूनि

१. कालकता—सी०।
२. पीत्ति विसये—स्या०।
३. कालगता—सी०, एवमुपरि पि।
४-४. उन्नमेवुदकं—स्या०।
५. वट्टं—सी०।
६. उन्नमे—सी०, रो०।
७. अभिवट्टं—सी०, रो०।
८. सी०, रो० नत्थि।
९. ओनतो—सी०, स्या०, रो०।
१०. स्या० नत्थि।
११. ०पसाखकुस्सुब्भ०—सी०, रो०; कन्दरपदरसाखपसाखकुसुब्भमहाकुसुब्भसन्निपातेहि—
१२. दिन्नं दानं—सी०, स्या०, रो०।

अनुस्सरन्तो कुलपुत्तो दक्खिनं दज्जा ति दस्सेन्तो **"अदासी मे"** ति B. 180
इमं गाथमाह ।

तस्सत्थो—"इदं नाम मे धनं वा धञ्ञं वा अदासी" ति च, "इदं नाम मे किच्चं अत्तना उय्योगमापज्जन्तो[१] अकासी" ति च, "अमु[२] मे मातितो वा पितितो[३] वा सम्बन्धत्ता ञाती" ति[४] च सिनेहवसेन ताणसमत्थताय "मित्ता" ति[५] च, "असुको मे सह पंसुकीळको सखा" ति[६] च एवं सब्बमनुस्सरन्तो पेतानं दक्खिणं दज्जा, दानं निय्यातेय्या[७] ति । अपरो पाठो **"पेतानं दक्खिणा दज्जा"** ति । तस्सत्थो—दातब्बा[८] ति दज्जा, का सा ? पेतानं दक्खिणा, तेनेव[९] "अदासि मे" ति आदिना नयेन पुब्बे कतमनुस्सरं अनुस्सरता ति वुत्तं होति । करणवचनप्पसङ्गे पच्चत्तवचनं वेदितब्बं ।

एकादसमगाथावण्णना

११. एवं भगवा पेतानं दक्खिणानिय्यातने कारणभूतानि अनुस्सरणवत्थूनि दस्सेन्तो—

"अदासि मे अकासि मे, ञातिमित्ता सखा च मे ।
पेतानं दक्खिणं दज्जा, पुब्बे कतमनुस्सरं" ति—

वत्वा पुन ये ञातिमरणेन रुण्णसोकादिपरा एव हुत्वा तिट्ठन्ति, न R. 214
तेसं अत्थाय किञ्चि देन्ति, तेसं तं रुण्णसोकादि केवलं अत्तपरितापनमेव होति, न पेतानं किञ्चि अत्थं निप्फादेती ति दस्सेन्तो **"न हि रुण्णं वा"** ति इमं गाथमाह ।

तत्थ **रुण्णं** ति रोदना रोदितत्तं[१०] अस्सुपातनं, **एतेन** कायपरिस्समं दस्सेति । **सोको** ति सोचना सोचितत्तं, एतेन चित्तपरिस्समं दस्सेति । **या* चञ्ञा** ति या च[११] रुण्णसोकेहि अञ्ञा । **परिदेवना** ति

१. योगमापज्जन्तो—स्या०, रो० । २. असुको—स्या० ।
३. पीतितो—स्या० । ४. इति—स्या०, रो० ।
५. इति—सी०, स्या०, रो० । ६. इति—सी०, रो० ।
७. निय्यादेय्या—स्या० । ८. ददितब्बा—सी०, स्या०, रो० ।
९. तेन—सी०, स्या०, रो० । १०. रुदितत्तं—स्या० ।
*. सी०, रो० नत्थि । ११. वा—स्या० ।

ञातिब्यसनेन[१] फुट्ठस्स लालप्पना[२], "कहं एकपुत्तक पिय मनापा" ति एवमादिना नयेन गुणसंवण्णना, एतेन वचीपरिस्समं दस्सेति ।

द्वादसमगाथावण्णना

B. 181 १२. एवं भगवा "रुण्णं वा सोको वा या चञ्ञा परिदेवना, सब्बं पि तं पेतानं अत्थाय न होति, केवलं तु अत्तानं परितापनमत्तमेव, एवं तिट्ठन्ति ञातयो" ति रुण्णादीनं निरत्थकभावं दस्सेत्वा पुन मागधराजेन[३] या दक्खिणा दिन्ना, तस्सा सात्थकभावं दस्सेन्तो **"अयं च खो दक्खिणा"** ति इमं गाथमाह ।

तस्सत्थो—अयं च खो महाराज दक्खिणा तया अज्ज अत्तनो ञातिगणं उद्दिस्स दिन्ना, सा यस्मा सङ्घो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स, तस्मा सङ्घम्हि सुप्पतिट्ठिता अस्स पेतजनस्स दीघरत्तं हिताय[४] उपकप्पति[५] सम्पज्जति फलती ति वुत्तं होति । **उपकप्पती** ति च ठानसो उपकप्पति, तंखणंयेव[६] उपकप्पति, न चिरेन[७] । यथा हि[८] तंखणञ्ञेव पटिभन्तं "ठानसोवेतं[९] तथागतं पटिभाती (सं० नि० १-१९४)" ति वुच्चति, एवमिधा पि तंखणंयेव उपकप्पन्ता[१०] "ठानसो उपकप्पती" ति वुत्ता[११] । यं वा[१२] तं[१२] "इदं खो ब्राह्मण ठानं, यत्थ ठितस्स तं दानं उपकप्पती" ति वुत्तं, तत्थ खुप्पिपासिकवन्तासपरदत्तूपजीविनिज्झामतण्हिकादिभेदभिन्ने[१३] ठाने उपकप्पती[१४] ति[१५] वुत्तं[१६] यथा कहापणं देन्तो "कहापणसो[१७] देती[१८]"

१. तेन—स्या० ।
२. लालपना—स्या० ।
३. या मगधराजेन—स्या० ।
४. ०सुखाय—स्या० ।
५. ० होति—स्या० ।
६. तं खणञ्ञेव—सी०, स्या०, रो०, एवमेव ।
७. चिरेनेव—स्या० ।
८. सी०, रो० नत्थि ।
९. ठानसो चेतं—स्या०, रो० ।
१०. उपकप्पन्तं—सी०, रो० ।
११. वुत्तं—सी०, रो० ।
१२-१२. वा पन तं—सी०, रो०; ठानं—स्या० ।
१३. खुप्पीपासिक वन्तासा परदत्तूपजीवि०—स्या० ।
१४. उप कप्पन्ता—स्या० ।
१५. ठानसो उपकप्पतीति—स्या० ।
१६. वुत्तं होति—सी०, रो०; वुत्ता—स्या० ।
१७. कहापणं सो—स्या० ।
१८. ददाती—सी० ।

ति लोके वुच्चति। इमस्मिं च अत्थविकप्पे **उपकप्पती** ति पातुभवति, निब्बत्तती ति वुत्तं होति। R. 215

तेरसमगाथावण्णना

१३. एवं भगवा रञ्ञा दिन्नाय दक्खिणाय सात्थकभावं दस्सेन्तो—

"अयं च खो दक्खिणा दिन्ना, सङ्घम्हि सुप्पतिट्ठिता।
दीघरत्तं हितायस्स, ठानसो उपकप्पती" ति—

वत्वा पुन यस्मा इमं दक्खिणं देन्तेन ञातीनं[1] ञातीहि कत्तब्बकिच्चकरणवसेन[2] ञातिधम्मो निदस्सितो, बहुजनस्स पाकटीकतो[3], निदस्सनं वा कतो[4], तुम्हेहि पि ञातीनं एवमेव ञातीहि कत्तब्बकिच्चकरणवसेन ञातिधम्मो परिपूरेतब्बो, न निरत्थकेहि रुण्णादीहि अत्ता परितापेतब्बो ति च[5] पेते[5] दिब्बसम्पत्तिं अधिगमेन्तेन पेतानं पूजा कता[6] उळारा, बुद्धप्पमुखं च भिक्खुसङ्घं अन्नपानादीहि सन्तप्पेन्तेन भिक्खूनं बलं अनुपदिन्नं, अनुकम्पादिगुणपरिवारं च चागचेतनं निब्बत्तेन्तेन[7] अनप्पकं पुञ्ञं पसुतं, तस्मा भगवा[8] इमेहि B. 182 यथाभुच्चगुणेहि राजानं सम्पहंसेन्तो[9]—

* "सो ञातिधम्मो च अयं निदस्सितो,
पेतान पूजा च कता उळारा।
बलं च भिक्खूनमनुप्पदिन्नं,
तुम्हेहि पुञ्ञं पसुतं अनप्पकं" ति—

इमाय गाथाय देसनं परियोसापेति।*

१. रञ्ञा० - स्या०।
२. कत्तब्बकिच्चकरणेन—स्या०, एवमेव।
३. पाकटो कतो—स्या०।
४. कतं—सी०, रो०।
५-५ ते च पेता—सी०, स्या०।
६. च कता—स्या०।
७. निब्बत्तन्तेन—सी०।
८. स्या० नत्थि।
९. पसंसन्तो—सी०, रो०।
-. अयं पाठो सी० रो० पोत्थके च न दिस्सति।

अथ[१] वा[१] **"सो ञातिधम्मो च अयं निदस्सितो"** ति इमिना गाथापदेन भगवा राजानं धम्मिया कथाय सन्दस्सेति। ञातिधम्मनिदस्सनमेव हि एत्थ सन्दस्सनं[२] **पेतानं पूजा च कता उळारा** ति इमिना समादपेति। उळारा ति पसंसनमेव हि एत्थ पुनप्पुनं पूजाकरणे[३] समादपनं। **बलं च भिक्खूनमनुप्पदिन्नं** ति इमिना समुत्तेजेति। बलानुप्पदानमेव हि एत्थ एवं दानं[४], बलानुप्पदानता[५] ति तस्स[५] उस्साहवड्ढनेन समुत्तेजनं। **तुम्हेहि पुञ्ञं पसुतं अनप्पकं** ति इमिना सम्पहंसेति। पुञ्ञप्पसुतकित्तनमेव[६] हि एत्थ तस्स
R. 216 यथाभुच्चगुणसंवण्णनभावेन सम्पहंसनजननतो[७] सम्पहंसनं ति वेदितब्बं।

देसनापरियोसाने च पेत्तिविसयूपपत्तिआदीनवसंवण्णनेन[८] संविग्गानं योनिसो पदहतं चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो अहोसि। दुतियदिवसे पि भगवा देवमनुस्सानं इदमेव तिरोकुड्डं देसेसि[९], एवं याव सत्तमदिवसा[१०] तादिसो एव धम्माभिसमयो अहोसी ति।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय[११]
तिरोकुड्डसुत्तवण्णना[१२] निट्ठिता।

~~~~~~~~~~

१-१. सी०, रो० नत्थि।
२. पुनप्पुनं सन्दस्सना—स्या०।
३. पूजाकरनेन—स्या०।
४. विधानं—सी०, रो०।
५-५. बलानुप्पदाने—सी०; बलानुप्पदाता ति तस्स—स्या०।
६. पुञ्ञापसवनकित्तनमेव—स्या०; पुञ्ञापसुत०—रो०।
७. सम्पहंसजननतो—सी०, रो०, स्या० नत्थि।
८. पी ति०—स्या०, रो०; ०संवण्णनाय—सी०।
९. देसेति—स्या०।
१०. सत्त दिवसा—स्या०।
११. खुद्दकट्ठकथाय—स्या०, रो०।
१२. तिरोकुड्डवण्णना—स्या०।
~~~~~~~~~~

८. निधिकण्डसुत्तवण्णना

निक्खेपकारणं

इदानि यदिदं तिरोकुड्डानन्तरं **"निधिं निधेति पुरिसो"** तिआदिना निधिकण्डं निक्खित्तं, तस्स—

भासित्वा निधिकण्डस्स इधनिक्खेपकारणं । B. 183
अट्ठुप्पत्तिं च दीपेत्वा, करिस्सामत्थवण्णनं ।

तत्थ इध निक्खेपकारणं तावस्स एवं वेदितब्बं । इदं हि निधिकण्डं भगवता इमिना अनुक्कमेन अवुत्तं पि यस्मा अनुमोदनवसेन[१] वुत्तस्स तिरोकुड्डस्स मिथुनभूतं[२], तस्मा इध निक्खित्तं । तिरोकुड्डेन वा पुञ्ञविरहितानं विपत्तिं दस्सेत्वा इमिना कतपुञ्ञानं सम्पत्तिदस्सनत्थं पि इदं इध निक्खित्तं ति वेदितब्बं । इदमस्स इध निक्खेपकारणं ।

सुत्तट्ठुप्पत्ति

अट्ठुप्पत्ति पनस्स—सावत्थियं किर अञ्ञतरो कुटुम्बिको अड्ढो महद्धनो महाभोगो, सो च सद्धो होति पसन्नो, विगतमलमच्छेरेन चेतसा अगारं अज्झावसति । सो एकस्मिं दिवसे बुद्धप्पमुखस्स[३] भिक्खुसङ्घस्स दानं देति । तेन च समयेन राजा धनत्थिको होति, सो तस्स सन्तिके पुरिसं पेसेसि "गच्छ भणे इत्थन्नामं कुटुम्बिकं आनेही" ति । सो गन्त्वा तं कुटुम्बिकं आह "राजा तं गहपति आमन्तेती" ति । कुटुम्बिको सद्धादिगुणसमन्नागतेन चेतसा बुद्धप्पमुखं भिक्खुसङ्घं R. 217
परिविसन्तो आह "गच्छ भो पुरिस, पच्छा आगमिस्सामि, इदानि

१. ० वुत्तत्ता अनुमोदनावसेन—स्या० । २. विधानभूतं—सी०, रो० ।
३. बुद्धपमुखस्स—सी०, स्या०, रो० ।

तावम्हि निधिं निधेन्तो ठितो" ति। अथ[1] भगवा भुत्तावी पवारितो तमेव पुञ्ञसम्पदं परमत्थतो निधी ति दस्सेतुं तस्स कुटुम्बिकस्स अनुमोदनत्थं "**निधिं निधेति पुरिसो**" ति इमा गाथायो अभासि। अयमस्स[2] अट्ठुप्पत्ति[3]।

एवमस्स—

भासित्वा निधिकण्डस्स, इध निक्खेपकारणं।
अट्ठुप्पत्तिं च दीपेत्वा, करिस्सामत्थवण्णनं॥

पठमगाथावण्णना

१. तत्थ **निधिं निधेति पुरिसो** ति निधीयती[4] ति निधि, ठपीयति रक्खीयति गोपीयती ति अत्थो। सो चतुब्बिधो थावरो जङ्गमो अङ्गसमो अनुगामिको ति। तत्थ **थावरो** नाम भूमिगतं वा
B. 184 वेहासट्ठं वा हिरञ्ञं वा सुवण्णं वा खेत्तं वा वत्थु[5] वा, यं वा पनञ्ञं पि एवरूपं इरियापथविरहितं, अयं थावरो निधि। **जङ्गमो** नाम दासिदासं हत्थिगवस्सवळवं अजेळकं कुक्कुटसूकरं यं वा पनञ्ञं पि एवरूपं इरियापथपटिसंयुत्तं, अयं जङ्गमो निधि **अङ्गसमो** नाम कम्मायतनं सिप्पायतनं विज्जाट्ठानं[6] बाहुसच्चं, यं वा पनञ्ञं पि एवरूपं सिक्खित्वा[7] गहितं अङ्गपच्चङ्गमिव अत्तभावप्पटिबद्धं[8], अयं अङ्गसमो निधि। **अनुगामिको** नाम दानमयं पुञ्ञं सीलमयं भावनामयं धम्मस्सवनमयं[9] धम्मदेसनामयं, यं वा पनञ्ञं पि एवरूपं पुञ्ञं तत्थ तत्थ अनुगन्त्वा विय इट्ठफलमनुप्पदेति[10], अयं अनुगामिको निधि। इमस्मिं पन ठाने[11] थावरो अधिप्पेतो।

१. अथ खो—स्या०।
२. अयमस्सापी—स्या०।
३. अत्थुप्पत्ति—स्या०, एवमेव।
४. निधियति—सी०, स्या०।
५. वत्थुं—सी०, स्या०, रो०।
६. विज्जाठानं—सी०, स्या०, रो०।
७. ०सिखित्वा—स्या०।
८. अत्तभावपटिबद्धं—सी०, स्या०, रो०।
९. धम्मसवणमयं—सी०।
१०. इट्ठफलमनुप्पादेति—स्या०, रो०।
११. गाथापदे—स्या०।

निधेती ति ठपेति पटिसामेति गोपेति। **पुरिसो** ति मनुस्सो। कामं च पुरिसो पि इत्थी पि पण्डको पि निधिं निधेति, इध पन पुरिससीसेन देसना कता, अत्थतो पन तेसं पि इध समोधानं दट्ठब्बं। **गम्भीरे ओदकन्तिके** ति ओगाहेतब्बट्ठेन गम्भीरं, उदकस्स अन्तिकभावेन ओदकन्तिकं। अत्थि गम्भीरं न ओदकन्तिकं जङ्गले भूमिभागे सतिकपोरिसो आवाटो विय, अत्थि ओदकन्तिकं न गम्भीरं निन्ने पल्लले एकद्विविदत्थिको आवाटो[1] विय, अत्थि गम्भीरं चेव ओदकन्तिकं च जङ्गले भूमिभागे याव इदानि उदकं आगमिस्सती[2] R. 218
ति, ताव खतो[3] आवाटो विय। तं सन्धाय इदं वुत्तं "गम्भीरे ओदकन्तिके" ति। **अत्थे किच्चे समुप्पन्ने** ति अत्था अनपेतं ति अत्थं, अत्थावहं हितावहं ति वुत्तं होति। कातब्बं ति किच्चं, किञ्चिदेव करणीयं ति वुत्तं होति। उप्पन्नं[4] एव[4] समुप्पन्नं, कत्तब्बभावेन उपट्ठितं ति वुत्तं होति। तस्मिं अत्थे किच्चे समुप्पन्ने। **अत्थाय मे भविस्सती** ति[5] निधानप्पयोजननिदस्सनमेतं[6]। एतदत्थं हि सो निधेति "अत्थावहे किस्मिञ्चिदेव[7] करणीये समुप्पन्ने अत्थाय मे भविस्सति, तस्स मे किच्चस्स निप्फत्तिया भविस्सती" ति। किच्चनिप्फत्तियेव हि तस्स किच्चे[8] समुप्पन्ने[8] अत्थो ति वेदितब्बो।

दुतियगाथावण्णना

एवं निधानप्पयोजनं दस्सेन्तो अत्थाधिगमाधिप्पायं दस्सेत्वा इदानि अनत्थापगमाधिप्पायं दस्सेतुमाह—

२. "राजतो वा दुरुत्तस्स, चोरतो पीळितस्स वा। B.185
इणस्स वा पमोक्खाय, दुब्भिक्खे आपदासु वा" ति॥

१. आवातो—स्या०, एवमेव। २. आगच्छिस्सती—स्या०; गच्छिस्सति—रो०।
३. कतो—सी०, रो०।
४-४. उप्पन्नमेव—सी०, रो०। ५. ति निधि—स्या०।
६. निधानप्पयोजनदस्सनमेतं—स्या०। ७. मे किञ्चिदेव—स्या०।
८-८. किच्चसमुप्पन्ने—स्या०।

तस्सत्थो "अत्थाय मे भविस्सती" ति च "इणस्स वा पमोक्खाया" ति च एत्थ वुत्तेहि द्वीहि[1] भविस्सतिपमोक्खाय-पदेहि सद्धिं यथासम्भवं योजेत्वा वेदितब्बो।

तत्थायं योजना—न केवलं अत्थाय मे भविस्सती[2] ति[2] एव पुरिसो निधिं निधेति, किन्तु[3] "अयं चोरो" ति वा "पारदारिको" ति वा "सुङ्कघातको[4]" ति वा एवमादिना नयेन पच्चत्थिकेहि पच्चामित्तेहि दुरुत्तस्स मे सतो राजतो वा पमोक्खाय भविस्सति, सन्धिच्छेदादीहि धनहरणेन वा, "एत्तकं हिरञ्ञसुवण्णं[5] देही" ति जीवग्गाहेन वा चोरेहि मे पीळितस्स सतो चोरतो वा पमोक्खाय भविस्सति। सन्ति[6] मे इणायिका, ते मं "इणं देही" ति चोदेस्सन्ति, तेहि मे[7] चोदियमानस्स इणस्स वा पमोक्खाय भविस्सति। होति सो समयो, यं[8] दुब्भिक्खं होति दुस्सस्सं दुल्लभपिण्डं, तत्थ न सुकरं अप्पधनेन यापेतुं, तथाविधे आगते[9] दुब्भिक्खे वा मे भविस्सति।
R. 219 यथारूपा[10] आपदा उप्पज्जन्ति अग्गितो वा उदकतो वा अप्पियदायादतो वा, तथारूपासु वा उप्पन्नासु आपदासु मे भविस्सती ति पि[11] पुरिसो निधिं निधेती ति।

एवं अत्थाधिगमाधिप्पायं अनत्थापगमाधिप्पायं[12] चा[13] ति[13] द्वीहि गाथाहि दुविधं निधानप्पयोजनं दस्सेत्वा इदानि[14] तमेव[14] दुविधं[15] पयोजनं निगमेन्तो आह—

"एतदत्थाय लोकस्मिं, निधि नाम निधीयती" ति।

१. स्या० नत्थि।
२-२. भविस्सति च—सी०, स्या०, रो०।
३. किं पन—सी०, रो०।
४. सङ्कघातिको—सी०, रो०।
५. हिरञ्ञं सुवण्णं—स्या०।
६. भविस्सति—सी०; भविस्सन्ति—रो०।
७. सी० नत्थि।
८. यं समयं—स्या०।
९. सी०, रो० नत्थि।
१०. या ता—स्या०, सी०, रो०।
११. सी०, रो० नत्थि।
१२. ०ति—स्या०।
१३-१३. स्या० नत्थि।
१४-१४. इदानिस्सेतमेव—स्या०।
१५. दुविधंपी—स्या०।

तस्सत्थो—य्वायं "अत्थाय मे भविस्सती" ति च "राजतो वा दुरुत्तस्सा" ति एवमादीहि च अत्थाधिगमो अनत्थापगमो च दस्सितो, **एतदत्थाय** एतेसं निप्फादनत्थाय[1] इमस्मिं ओकासलोके यो कोचि हिरञ्ञसुवण्णादिभेदो **निधि नाम निधीयति** ठपीयति पटिसामियती ति ।

ततियगाथावण्णना

इदानि यस्मा एवं निहितो पि सो निधि पुञ्ञवतंयेव अधिप्पेतत्थ- B. 186
साधको होति, न अञ्ञेसं, तस्मा तमत्थं[2] दीपेन्तो आह—

३. "तावस्सुनिहितो[3] सन्तो, गम्भीरे ओदकन्तिके ।
न सब्बो सब्बदा एव, तस्स तं उपकप्पती" ति ॥

तस्सत्थो—सो निधि[4] **ताव सुनिहितो सन्तो**, ताव सुट्ठु निखणित्वा ठपितो समानो ति वुत्तं होति । कीव सुट्ठू ति ? **गम्भीरे ओदकन्तिके**[5], याव गम्भीरे ओदकन्तिके निहितो ति सङ्खं गच्छति, ताव सुट्ठू ति वुत्तं होति । **न सब्बो सब्बदा एव, तस्स तं उपकप्पती** ति येन पुरिसेन निहितो, तस्स सब्बो पि सब्बकालं न उपकप्पति न सम्पज्जति, यथावुत्तकिच्चकरणसमत्थो न होती ति वुत्तं होति । किन्तु[6] कोचिदेव[7] कदाचिदेव[8] उपकप्पति, नेव वा उपकप्पती[8] ति । एत्थ च तं ति पदपूरणमत्ते निपातो दट्ठब्बो "यथा तं अप्पमत्तस्स आतापिनो" (म० नि० १-३०) ति एवमादीसु विय । लिङ्गभेदं वा कत्वा "सो" ति वत्तब्बे "तं" ति वुत्तं । एवं हि वुच्चमाने सो अत्थो सुखं बुज्झती ति ।

चतुत्थपञ्चमगाथावण्णना

एवं "न सब्बो सब्बदा एव, तस्स तं उपकप्पती" ति वत्वा R. 220
इदानि येहि कारणेहि न उपकप्पति, तानि दस्सेन्तो आह—

१. निप्फादनाय—स्या० ।
२. तं अत्थं—सी०, रो० ।
३. ताव सुनिहितो—सी०, रो० ।
४. निधिपी—स्या० ।
५. ० ति—स्या० ।
६. किं पन—सी०, रो० ।
७. ०उपकप्पति—स्या० ।
८-८. कदाचि नेव तं उपकप्पती—स्या० ।

४. "निधि वा ठाना चवति' सञ्ञा वास्स विमुय्हति ।
नागा वा अपनामेन्ति, यस्मा वा पि हरन्ति नं ॥

५. अप्पिया वापि दायादा, उद्धरन्ति अपस्सतो" ति ॥

तस्सत्थो—यस्मिं ठाने सुनिहितो होति निधि, सो वा **निधि तम्हा ठाना चवति** अपेति विगच्छति, अचेतनो[1] पि समानो पुञ्ञक्खयवसेन अञ्ञं ठानं गच्छति । **सञ्ञा वा**[2] **अस्स**[2] **विमुय्हति,** यस्मिं ठाने निहितो निधि, तं[3] न जानाति[3], अस्स पुञ्ञक्खयचोदिता **नागा वा** तं निधिं **अपनामेन्ति** अञ्ञं ठानं गमेन्ति । **यक्खा वा पि**
B. 187 **हरन्ति** येनिच्छकं आदाय गच्छन्ति । **अपस्सतो** वा अस्स **अप्पिया वा दायादा** भूमिं खणित्वा तं निधिं **उद्धरन्ति** । एवमस्स एतेहि ठाना चवनादीहि कारणेहि सो निधि न उपकप्पती ति ।

एवं ठाना चवनादीनि लोकसम्मतानि अनुपकप्पनकारणानि वत्वा इदानि यं तं एतेसं पि कारणानं मूलभूतं एकञ्ञेव पुञ्ञक्खय-सञ्ञितं कारणं, तं दस्सेन्तो आह—

"यदा पुञ्ञक्खयो होति, सब्बमेतं विनस्सती" ति ।

तस्सत्थो—यस्मिं समये भोगसम्पत्तिनिप्फादकस्स पुञ्ञस्स खयो होति, भोगपारिजुञ्ञसंवत्तनिकमपुञ्ञमोकासं[4] कत्वा ठितं होति, अथ यं निधिं निधेन्तेन निहितं हिरञ्ञसुवण्णादिधनजातं, सब्बमेतं विनस्सती ति ।

छट्ठगाथावण्णना

एवं भगवा तेन तेन अधिप्पायेन निहितं पि यथाधिप्पायं अनुपकप्पन्तं नानप्पकारेहि नस्सनधम्मं[5] लोकसम्मतं निधिं वत्वा

१. अचेतना—स्या० ।
२. वास्स—स्या० ।
३. तं ठानं न सञ्जानाति—स्या० ।
४. ०संवत्तनिकं अपुञ्ञं ओकासं—सी०, रो०; भोगपारिजुञ्ञ-संवत्तनिकं अपुञ्ञमोकासं—स्या० ।
५. विनस्सनधम्मं—स्या० ।

इदानि यं[१] पुञ्ञसम्पदं[२] परमत्थतो निधी ति दस्सेतुं तस्स कुटुम्बिकस्स अनुमोदनत्थमिदं निधिकण्डमारद्धं, तं दस्सेन्तो आह—

६. "यस्स दानेन सीलेन, संयमेन दमेन च।
निधी सुनिहितो होति, इत्थिया पुरिसस्स वा" ति ॥

तत्थ **दानं**[३] ति "दानं च धम्मचरिया चा[४]" ति एत्थ R. 221 वुत्तनयेनेव[५] गहेतब्बं। **सीलं** ति कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो। पञ्चङ्गदसङ्गपातिमोक्खसंवरादि[६] वा सब्बं पि सीलं इध सीलं ति अधिप्पेतं। **संयमो** ति संयमनं संयमो, चेतसो नानारम्मणगति-निवारणं ति वुत्तं होति, समाधिस्सेतं अधिवचनं। येन संयमेन[७] समन्नागतो "हत्थसंयतो पादसंयतो वाचासंयतो संयतुत्तमो" (खु० नि० १-५२) ति एत्थ संयतुत्तमो ति वुत्तो। अपरे आहु संयमनं संयमो, संवरणं ति वुत्तं होति, इन्द्रियसंवरस्सेतं अधिवचनं" ति। **दमो**[८] ति दमनं[८], किलेसूपसमनं ति वुत्तं होति, पञ्ञायेतं अधिवचनं। पञ्ञा हि कत्थचि पञ्ञात्वेव वुच्चति "सुस्सुसा[९] लभते B. 188 ति पञ्ञं" ति एवमादीसु। कत्थचि धम्मो ति सच्चं धम्मो[१०] धिति चागो" ति एवमादीसु। कत्थचि दमो ति "यदि सच्चा दमा चागा, खन्त्या भिय्यो न विज्जती" ति आदीसु।

एवं दानादीनि ञत्वा इदानि एवं इमिस्सा गाथाय सम्पिण्डेत्वा अत्थो वेदितब्बो—यस्स इत्थिया वा पुरिसस्स वा दानेन सीलेन संयमेन[११] दमेन चा ति इमेहि चतूहि धम्मेहि यथा हिरञ्ञेन सुवण्णेन मुत्ताय मणिना वा धनमयो निधि तेसं सुवण्णादीनं एकत्थ पक्खिपनेन निधीयति, एवं पुञ्ञमयो निधि तेसं दानादीनं एकचित्तसन्ताने चेतियादिम्हि वा वत्थुम्हि सुट्ठु करणेन सुनिहितो होती ति।

१. स्या० नत्थि।
२. पुञ्ञसम्पदेव—स्या०।
३. दानेन—सी०; दानेना—रो०।
४. स्या० नत्थि।
५. वुत्तनयेन—सी०, स्या०, रो०।
६. पञ्चङ्ग अट्ठङ्ग दसङ्ग०—स्या०; पञ्चङ्ग अट्ठङ्गपातिमोक्ख०—सी०, रो०।
७ स्या० नत्थि।
८-८. दमनं दमो—स्या०।
९. सुस्सूसं—स्या०।
१०. दमो—स्या०।
११. सञ्ञामेन - सी०, स्या०।

सत्तमगाथावण्णना

एवं भगवा "यस्स दानेना" ति इमाय गाथाय पुञ्ञसम्पदाय परमत्थतो निधिभावं दस्सेत्वा इदानि यत्थ निहितो सो निधि सुनिहितो होति, तं वत्थुं दस्सेन्तो आह—

७. "चेतियम्हि च सङ्घे वा, पुग्गले अतिथीसु वा ।
मातरि पितरि[1] चापि, अथो जेट्ठम्हि भातरी" ति ॥

तत्थ चयितब्बं ति **चेतियं**, पूजेतब्बं ति वुत्तं होति, चितत्ता वा[2]
R. 222 चेतियं । तं पनेतं चेतियं[4] तिविधं होति परिभोगचेतियं उद्दिस्सकचेतियं धातुकचेतियं[5] ति । तत्थ बोधिरुक्खो परिभोगचेतियं, बुद्धपटिमा उद्दिस्सकचेतियं, धातुगब्भथूपा[6] सधातुका धातुकचेतियं[7] । **सङ्घो** ति बुद्धप्पमुखादीसु[8] यो कोचि । **पुग्गलो** ति गहट्ठपब्बजितेसु[9] यो कोचि । नत्थि अस्स तिथि, यम्हि वा तम्हि[10] दिवसे आगच्छती ति **अतिथि** । तङ्खणे[11] आगतपाहुनकस्सेतं अधिवचनं । सेसं वुत्तनयमेव ।

एवं चेतियादीनि ञत्वा इदानि एवं इमिस्सा गाथाय सम्पिण्डेत्वा अत्थो वेदितब्बो—यो[12] सो निधि "सुनिहितो होती" ति वुत्ते, सो इमेसु वत्थूसु सुनिहितो होति । कस्मा ? दीघरत्तं इट्ठफलानुप्पदानसमत्थताय । तथा हि अप्पकं पि चेतियम्हि दत्वा दीघरत्तं इट्ठफललाभिनो होन्ति । यथाह—

B. 189 "एकपुप्फं[13] यजित्वान[14], असीतिकप्पकोटियो[15] ।
दुग्गतिं नाभिजानामि[16], पुप्फदानस्सिदं फलं" ति च ॥
"मत्तासुखपरिच्चागा, पस्से चे विपुलं सुखं" ति च ॥

१. पीतरि—स्या०, रो० ।
२. वा पी—स्या० ।
३. —स्या० ।
४. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
५. धातुचेतियं—सी०, रो०; सधातुकचेतियं—स्या० ।
६. धातुगब्भा थूपा—स्या० ।
७. ० नाम—स्या० ।
८. बुद्धपमुखादिसु—सी०, रो० ।
९. ० पब्बजितादीसु—स्या० ।
१०. तम्हि वा—सी०, स्या०, रो० ।
११. तंखणं—स्या० ।
१२. यो हि—सी०, रो० ।
१३. ० व—स्या० ।
१४. दत्वान—स्या० ।
१५. असीतिं कप्पकोटियो—सी० ।
१६. ० ति—स्या० ।

एवं दक्खिणाविसुद्धिवेलामसुत्तादीसु (म० नि० ३-३३९-३४२; अं० नि० ३-३५-३८) वुत्तनयेन सङ्घादिवत्थूसु पि दानफलविभागो वेदितब्बो। यथा च चेतियादीसु दानस्स पवत्ति फलविभूति च दस्सिता, एवं[1] यथायोगं सब्बत्थ तं तं आरभित्वा चारित्तवारित्तवसेन सीलस्स, बुद्धानुस्सतिवसेन संयमस्स, तब्बत्थुकविपस्सनामनसिकारपच्चवेक्खणवसेन[2] दमस्स च पवत्ति तस्स तस्स[3] फलविभूति च वेदितब्बा।

अट्ठमगाथावण्णना

एवं भगवा दानादीहि निधीयमानस्स पुञ्ञमयनिधिनो चेतियादिभेदं वत्थुं दस्सेत्वा इदानि एतेसु वत्थूसु सुनिहितस्स तस्स निधिनो गम्भीरे ओदकन्तिके निहितनिधितो विसेसं दस्सेन्तो आह—

८. "एसो निधि[4] सुनिहितो, अजेय्यो अनुगामिको। R. 223
पहाय गमनीयेसु, एतं आदाय गच्छती" ति॥

तत्थ पुब्बपदेन तं दानादीहि सुनिहितनिधिं निद्दिसति "**एसो निधि सुनिहितो**" ति। **अजेय्यो** ति परेहि जेत्वा गहेतुं न सक्का[5], अच्चेय्यो[6] ति पि पाठो, तस्स अच्चितब्बो[7] अच्चनारहो[7] हितसुखत्थिकेन उपचितब्बो[8] ति अत्थो। एतस्मिं[9] च[9] पाठे एसो निधि अच्चेय्यो[10] ति सम्बन्धित्वा पुन "कस्मा" ति अनुयोगं दस्सेत्वा "यस्मा सुनिहितो अनुगामिको" ति सम्बन्धितब्बं। इतरथा हि

१. एकं—स्या०।
२. ०पच्चवेक्खणावसेन—सी०, रो०।
३. ० च—स्या०।
४. निधी—सी०।
५. सक्का ति अजेय्या—सी०; सक्को ति अजेय्यो—रो०।
६. अज्जेय्यो—सी०, रो०; अजय्यो—स्या०।
७-७. अज्जितब्बो अज्जनारहो—सी०, रो०; अजितब्बो अजिनरहो—स्या०।
८. उपज्जेतब्बो—सी०, रो०।
९-९. तस्मिं वा—स्या०, रो०।
१०. अजेय्यो—स्या०, रो०।

सुनिहितस्स अच्चेय्यत्तं[1] वुत्तं भवेय्य, न च सुनिहितो अच्चनीयो[2]। अच्चितो[3] एव हि सो[4] ति[4]। अनुगच्छती ति अनुगामिको, परलोकं गच्छन्तं पि तत्थ तत्थ फलदानेन[5] न विजहती ति अत्थो।

पहाय गमनीयेसु एतं आदाय गच्छती ति मरणकाले पच्चुपट्ठिते सब्बभोगेसु पहाय गमनीयेसु एतं निधिं आदाय परलोकं गच्छती ति B. 190 अयं किर एतस्स अत्थो। सो पन न युज्जति[6]। कस्मा? भोगानं अगमनीयतो। पहातब्बा एव हि ते[7] ते[7] भोगा, न[8] गमनीया[8], गमनीया पन ते ते गतिविसेसा। यतो यदि एस अत्थो सिया, पहाय भोगे गमनीयेसु[9] गतिविसेसेसु[9] इति वदेय्य। तस्मा एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो—"निधि वा ठाना चवती" ति एवमादिना पकारेन पहाय मच्चं भोगेसु गच्छन्तेसु एतं आदाय गच्छती ति। एसो हि अनुगामिकत्ता तं नप्पजहती[10] ति।

तत्थ सिया "गमनीयेसू ति एत्थ गन्तब्बेसू ति अत्थो, न गच्छन्तेसू" ति। तं न एकंसतो गहेतब्बं। यथा हि "अरिया निय्यानिका[11]" ति एत्थ निय्यन्ता[12] ति अत्थो, न निय्यातब्बा ति, एवमिधा पि गच्छन्तेसू ति अत्थो, न गन्तब्बेसू ति।

अथ वा यस्मा एस मरणकाले कस्सचि दातुकामो भोगे R. 224 आमसितुं पि न लभति, तस्मा तेन ते भोगा पुब्बं कायेन पहातब्बा, पच्छा विहतासेन[13] चेतसा गन्तब्बा, अतिक्कमितब्बा ति वुत्तं होति। तस्मा पुब्बं कायेन पहाय पच्छा चेतसा गमनीयेसु भोगेसू ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। पुरिमस्मिं[14] अत्थे निद्धारणे भुम्मवचनं, पहाय

१. जेय्यत्तं—स्या०, रो०।
२. अजय्यो—स्या०; अज्जनियो—रो०।
३. अज्जितो—स्या०, रो०।
४-४. सो—सी०, रो०।
५. फलप्पदानेन—सी०, स्या०, रो०।
६. युज्जती ति—सी०, रो०।
७-७. तदा—स्या०।
८-८. सी० नत्थि।
९-९. गमनीये सुगतिविसेसे—सी०, स्या०, रो०।
१०. न अजहती—स्या०।
११. निय्याणिका—सी०।
१२. निय्याति—स्या०।
१३. विगतासेन—सी०, स्या०, रो०।
१४. ० च—स्या०, रो०।

गमनीयेसु भोगेसु एकमेवेतं पुञ्ञनिधिविभवं[1] ततो नीहरित्वा आदाय गच्छती ति। पच्छिमे[2] अत्थे[2] भावेनभावलक्खणे भुम्मवचनं। भोगानं हि गमनीयभावेन एतस्स निधिस्स आदाय गमनीयभावो[3] लक्खीयती ति।

नवमगाथावण्णना

एवं भगवा इमस्स पुञ्ञनिधिनो गम्भीरे ओदकन्तिके निहितनिधितो विसेसं दस्सेत्वा पुन अत्तनो भण्डगुणसंवण्णनेन कयजनस्स[4] उस्साहं जनेन्तो उळारभण्डवाणिजो विय अत्तना देसितपुञ्ञनिधिगुणसंवण्णनेन तस्मिं पुञ्ञनिधिम्हि देवमनुस्सानं उस्साहं जनेन्तो आह—

९. "असाधारणमञ्ञेसं, अचोराहरणो निधि।
कयिराथ धीरो पुञ्ञानि, यो निधि अनुगामिको" ति॥

तत्थ **असाधारणमञ्ञेसं** ति असाधारणो अञ्ञेसं, मकारो B. 191
पदसन्धिकरो "अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता" ति आदीसु विय। न चोरेहि आहरणो **अचोराहरणो**, चोरेहि आदातब्बो न होती ति अत्थो। निधातब्बो ति **निधि**। एवं द्वीहि पदेहि[5] पुञ्ञनिधिगुणं संवण्णेत्वा ततो द्वीहि तत्थ उस्साहं जनेति **"कयिराथ धीरो पुञ्ञानि, यो निधि अनुगामिको"** ति। तस्सत्थो—यस्मा पुञ्ञानि[6] नाम असाधारणो अञ्ञेसं, अचोराहरणो च निधि होति। न केवलं च असाधारणो अचोराहरणो च निधि[7], अथ खो पन "एसो निधि सुनिहितो, अजेय्यो अनुगामिको, ति एत्थ वुत्तो यो निधि अनुगामिको, सो च यस्मा पुञ्ञानियेव[8], तस्मा कयिराथ करेय्य धीरो बुद्धिसम्पन्नो धितिसम्पन्नो च पुग्गलो पुञ्ञानी ति।

१. ०विभागं—सी०, रो०; पुञ्ञनिधिभोगं—स्या०।
२-२. पच्छिमेत्थ—स्या०।
३. गमनभावो—स्या०।
४. कयिकजनस्स—स्या०।
५. पुब्बपदेहि—स्या०।
६. पुञ्ञानिदि—स्या०।
७. सी० नत्थि।
८. ०होति—स्या०।

दसमगाथावण्णना

एवं भगवा गुणसंवण्णनेन पुञ्ञनिधिम्हि देवमनुस्सानं उस्साहं जनेत्वा इदानि ये उस्सहित्वा पुञ्ञनिधिकिरियाय[१] सम्पादेन्ति, तेसं सो यं फलं देति, तं सङ्खेपतो दस्सेन्तो आह—

१०. "एस देवमनुस्सानं, सब्बकामदयो निधी" ति ।

R.225 इदानि यस्मा पत्थनाय[२] पटिबन्धितस्स सब्बकामददत्तं, न विना पत्थनं[३] होति । यथाह—

"आकङ्खेय्य चे गहपतयो धम्मचारी समचारी 'अहो वताहं कायस्स भेदा परं[४] मरणा[४] खत्तियमहासालानं[५] सहब्यतं उपपज्जेय्यं' ति, ठानं[६] खो पनेतं[५] विज्जति' यं सो कायस्स भेदा परं मरणा खत्तियमहासालानं[७] सहब्यतं[७] उपपज्जेय्य । तं किस्स हेतु, तथा हि सो[८] धम्मचारी समचारी[९]" ।

एवं[१०] "अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरेय्य । तं किस्स हेतु ? तथा हि सो धम्मचारी समचारी[११]" (म० नि० १-३५४) ति ।

B.192 तथा चाह—

"इध भिक्खवे भिक्खु सद्धाय समन्नागतो होति, सीलेन[१२], सुतेन[१३], चागेन[१४], पञ्ञाय समन्नागतो होति, तस्स एवं होति 'अहो वताहं कायस्स भेदा परं मरणा[१५] खत्तियमहासालानं[१६] सहब्यतं उपपज्जेय्यं'

१. पुञ्ञनिधि किरियाय—सी० ।
२. पट्ठनाय—स्या० ।
३. पत्थनाय—सी०; पट्ठनाय—रो०; पट्ठनं—स्या० ।
४-४. परम्मरणा—सी०, स्या० ।
५-५. ०महासालानं वा ...पे०...—सी०, रो० ।
६-६. ठानमेतं—सी०, स्या०, रो० ।
७-७. ...पे०...—सी०, स्या०, रो० ।
८. स्या० नत्थि ।
९. ० ति—सी०, रो० ।
१०. ० याव—स्या० ।
११. स्या० नत्थि ।
१२. ० समन्नागतो—स्या० ।
१३. ०समन्नागतो—स्या० ।
१४. ० समन्नागतो—स्या० ।
१५. परम्मरणा— सी०, स्या० ।
१६. ०वा...पे०...सी०, रो० ।

ति। सो तं चित्तं पदहति[1], तं चित्तं अधिट्ठाति, तं चित्तं भावेति। तस्स ते सङ्खारा च विहारा च एवं भाविता एवं बहुलीकता[2] तत्रूपपत्तिया[3] संवत्तन्ती" ति एवमादि।

तस्मा तं[4] तथा तथा आकङ्खपरियायं[5] चित्तपदहनाधिट्ठानभावनापरिक्खारं[6] पत्थनं तस्स सब्बकामददत्ते हेतुं दस्सेन्तो आह—

"यं[7] यदेवाभिपत्थेन्ति[8], सब्बमेतेन लब्भती" ति।

एकादसमगाथावण्णना

११. इदानि यं तं सब्बं एतेन लब्भति, तं ओधिसो ओधिसो[9] दस्सेन्तो "**सुवण्णता सुसरता**[10]" ति एवमादिगाथायो आह।

तत्थ पठमगाथाय ताव **सुवण्णता** नाम सुन्दरच्छविवण्णता कञ्चनसन्निभत्तचता, सा पि एतेन पुञ्ञनिधिना लब्भति। यथाह—

"यं पि भिक्खवे तथागतो पुरिमं जातिं...पे०[11]...पुब्बे मनुस्सभूतो समानो अक्कोधनो अहोसि अनुपायासबहुलो, बहुं पि वुत्तो समानो नाभिसज्जि न कुप्पि न ब्यापज्जि न पतित्थीयि[12], न कोपं च दोसं च अप्पच्चयं च पात्वाकासि, दाता च अहोसि सुखुमानं मुदुकानं अत्थरणानं[13] पावुरणानं[13] खोमसुखुमानं कप्पासिक[14] ...पे०... कोसेय्य[14] ...पे०[15]... कम्बलसुखुमानं। सो तस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता ...पे०...इत्थत्तं आगतो समानो इमं[16] महापुरिसलक्खणं पटिलभति। सुवण्णवण्णो[17] होति कञ्चनसन्निभत्तचो" (दी० नि० ३-१२३) ति। R. 226

१. दहति—स्या०।
२. बहुलीकत्वा—सी०।
३. तत्रूप्पत्तिया—सी०।
४. तं तं—स्या०।
५. आकङ्खापरियायं—सी०, रो०; आकङ्खन परियायं—स्या०।
६. चित्तदहनादिट्ठान०—स्या०।
७. यं यं—स्या०।
८. देवाभिपट्ठेन्ति—स्या०।
९. सी०, रो० नत्थि।
१०. सुस्सरता- सी०,स्या०,रो०।
११. पुरिमं भवं पुरिमं निकेतं—स्या०।
१२. पतिट्ठयि—स्या०।
१३-१३. अत्थरणपापुरणानं—सी०, रो०।
१४-१४. कप्पासिकसुखुमानं०—सी०; कप्पासिकसुखुमानं कोसेय्यसुखुमानं—स्या०; कप्पासिक...पे०...रो०।
१५. सी०, स्या० नत्थि।
१६. इदं—सी०, रो०।
१७. ०च-स्या०।

सुसरता[१] नाम ब्रह्मस्सरता[२] करवीकभाणिता, सा पि एतेन लब्भति। यथाह—

B. 193 "यं पि भिक्खवे तथागतो पुरिमं जातिं...पे०[३]...फरुसं वाचं पहाय फरुसाय वाचाय पटिविरतो अहोसि, या सा वाचा नेला कण्णसुखा...पे०[४]...तथारूपिं वाचं भासिता अहोसि। सो तस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता[५] ...पे०[५]... इत्थत्तं आगतो समानो इमानि द्वे महापुरिसलक्खणानि पटिलभति। पहूतजिव्हो च होति ब्रह्मस्सरो[६] च करवीकभाणी" (दी० नि० ३-१३३) ति[७]।

सुसण्ठाना ति सुट्ठु सण्ठानता, समचित[८] वट्टितयुत्तट्ठानेसु अङ्गपच्चङ्गानं समचित[८] वट्टितभावेन सन्निवेसो ति वुत्तं होति। सा[९] पि एतेन लब्भति[९]। यथाह—

"यं पि भिक्खवे तथागतो पुरिमं जातिं ...पे०... पुब्बे मनुस्सभूतो समानो बहुजनस्स अत्थकामो अहोसि हितकामो फासुकामो योगक्खेमकामो 'किन्ति मे सद्धाय वड्ढेय्युं, सीलेन सुतेन चागेन पञ्ञाय धनधञ्ञेन खेत्तवत्थुना द्विपदचतुप्पदेहि पुत्तदारेहि दासकम्मकरपोरिसेहि ञातीहि मित्तेहि बन्धवेहि वड्ढेय्युं" ति, सो तस्स कम्मस्स ...पे०[१०]...समानो इमानि तीणि महापुरिसलक्खणानि पटिलभति,
R. 227 सीहपुब्बड्ढकायो च होति चितन्तरंसो च समवट्टक्खन्धो चा" (दी० नि० ३-१२६-१२७) ति एवमादि।

१. सुस्सरता—स्या०, सी०, रो०।
२. ब्रह्मसरता—स्या०।
३. पुरिमं भवं पुरिमं निकेतं पुब्बे मनुस्सभूतो समानो—स्या०।
४. पेमनीया हदयङ्गमा पोरी बहुज्जनकन्ताबहुजनमनापा—स्या०।
५-५. ...पे०...स्या०।
६. ब्रह्मसरो—स्या०।
७. चा ति—स्या०।
८. समुपचित—सी०, रो०। समपित—स्या०।
९-९. स्या० नत्थि।
१०. कतत्ता उपचितत्ता...पे०...इत्थत्तं आगतो०—स्या०।

इमिना नयेन इतो परेसं[१] पि इमिना पुञ्ञनिधिना पटिलाभसाधकानि सुत्तपदानि ततो ततो आनेत्वा वत्तब्बानि। अतिवित्थारभयेन तु सङ्खित्तं[२], इदानि अवसेसपदानं[३] वण्णनं करिस्सामि[४]।

सुरूपता ति एत्थ सकलसरीरं रूपं ति वेदितब्बं "आकासो[५] परिवारितो रूपंत्वेव सङ्ख्यं गच्छती" (म०नि० १-२४०) ति आदीसु[६] विय, तस्स रूपस्स[७] सुन्दरता सुरूपता नातिदीघता नातिरस्सता नातिकिसता नातिथूलता नातिकाळता नच्चोदातता[८] ति वुत्तं होति। **आधिपच्चं** ति अधिपतिभावो, खत्तियमहासालादिभावेन सामिकभावो[९] ति अत्थो। **परिवारो** ति अगारिकानं सजनपरिजनसम्पत्ति[१०], अनगारिकानं[११] परिससम्पत्ति, आधिपच्चं च परिवारो च **आधिपच्चपरिवारो**। एत्थ च सुवण्णतादीहि सरीरसम्पत्ति, आधिपच्चेन भोगसम्पत्ति, परिवारेन सजनपरिजनसम्पत्ति वुत्ता ति वेदितब्बा। B.194 **सब्बमेतेन लब्भती** ति यं तं "**यं**[१२] यदेवाभिपत्थेन्ति, सब्बमेतेन लब्भती" ति वुत्तं, तत्थ इदं पि ताव पठमं[१३] ओधिसो वुत्तसुवण्णतादि[१४] सब्बमेतेन[१५] लब्भती ति वेदितब्बं ति दस्सेति।

द्वादसमगाथावण्णना

१२. एवमिमाय गाथाय पुञ्ञानुभावेन लभितब्बं[१६] रज्जसम्पत्तितो[१६] ओरं देवमनुस्ससम्पत्तिं दस्सेत्वा इदानि तदुभयरज्जसम्पत्तिं[१७] दस्सेन्तो—"**पदेसरज्जं**[१८]" ति इमं गाथमाह।

१. परेसु—स्या०। २. स्या० नत्थि।
३. अवतवाव सेसपदानं—स्या०। ४. करिस्साम—स्या०।
५. आकासेन—स्या०। ६. आदि—स्या०।
७. सी० नत्थि। ८. नाच्चोदातता—सी०,स्या०,रो०।
९. सामकभावो—सी०; सामिभावो—रो०। १०. सजनपरजन०—स्या०, एवमेव। ११. अनागारिकानं—स्या०।
१२. यं यं—स्या०। १३. छक्कं—सी०, रो०; एकं—स्या०।
१४. वुत्तं सुवण्णतादि—स्या०। १५. सब्बं च एतेन—सी०।
१६-१६. लभितब्बरज्जसम्पत्तितो—सी०,रो०। १७. तदुभयं रज्जसम्पत्ति—स्या०।
१८. पदेसरज्जं इस्सरियं, चक्कवत्ति सुखं पियं।
देबरज्जं पी दिब्बेसु, सब्बयेतेन लब्भती ति ॥—स्या० पोत्थके अयं गाथा दिस्सति।

तत्थ **पदेसरज्जं** ति एकदीपं पि[१] सकलं अपापुणित्वा पथविया[२] एकमेकस्मिं पदेसे रज्जं। इस्सरभावो[३] **इस्सरियं**, इमिना दीपचक्कवत्तिरज्जं दस्सेति। **चक्कवत्तिसुखं**[४] **पियं** ति इट्ठं कन्तं मनापं[५] चक्कवत्तिसुखं। इमिना चातुरन्तचक्कवत्तिरज्जं दस्सेति। देवेसु रज्जं **देवरज्जं**, एतेन मन्धातादीनं पि[६] मनुस्सानं देवरज्जं दस्सितं होति। **अपि दिब्बेसू** ति इमिना ये ते दिवि भवत्ता "दिब्बा" ति वुच्चन्ति, तेसु दिब्बेसु कायेसु उप्पन्नानं पि देवरज्जं दस्सेति। **सब्बमेतेन लब्भती** ति यं तं "यं यदेवाभिपत्थेन्ति[७], सब्बमेतेन
R. 228 लब्भती" ति वुत्तं, तत्थ इदं पि[८] दुतियं[९] ओधिसो पदेसरज्जादि सब्बमेतेन लब्भती ति वेदितब्बं ति दस्सेति।

तेरसमगाथावण्णना

१३. एवमिमाय गाथाय पुञ्ञानुभावेन लभितब्बं देवमनुस्सरज्जसम्पत्तिं दस्सेत्वा इदानि द्वीहि गाथाहि वुत्तं सम्पत्तिं समासतो पुरक्खत्वा निब्बानसम्पत्तिं दस्सेन्तो "**मानुस्सिका[१०] च सम्पत्ती**" ति इमं गाथमाह।

तस्सायं **पदवण्णना**—मनुस्सानं अयं[११] ति मानुस्सी[१२], मानुस्सी एव **मानुस्सिका**[१३]। सम्पज्जनं **सम्पत्ति**। देवानं लोको देवलोको। **तस्मिं देवलोके**[१४]। **या** ति[१४] अनवसेसपरियादानं, रमन्ति एताय

१. सी०, रो० नत्थि।
२. पठविया—सी०, स्या०, रो०।
३. इस्सरस्स भावो—सी०, स्या०।
४. चक्कवत्तिनो सुखं चक्कवत्तिसुखं—स्या०।
५. स्या०, रो० नत्थि।
६. स्या० नत्थि।
७. ० पट्ठेन्ति—स्या०।
८. स्या० नत्थि।
९. ० पी०—स्या०।
१०. मानुसिका—सी०, रो०;

मानुसिका च सम्पत्ति, देवलोको च या रति।
या च निब्बानसम्पत्ति, सब्बमेतेन लब्भती' ति॥

स्या० पोत्थके अयं गाथा दिस्सति।

११. अपच्चं—सी०, रो०।
१२. मानुसी—सी०, स्या०, रो०।
१३. मानुसिका—स्या०, रो०।
१४-१४. देवलोके च या रति—सी०, रो०।

अज्झत्तं उप्पन्नाय बहिद्धा वा उपकरणभूताया ति **रति**, सुखस्स सुखवत्थुनो चेतं अधिवचनं। **या** ति अनियतवचनं[१] **चसद्दो** पुब्बसम्पत्तिया[२] सह सम्पिण्डनत्थो। निब्बानंयेव **निब्बानसम्पत्ति**। B. 195

अयं पन **अत्थवण्णना**—या एसा "सुवण्णता" ति आदीहि पदेहि मानुस्सिका च सम्पत्ति देवलोके च या रति वुत्ता, सा च सब्बा, या चायमपरा[३] सद्धानुसारिभावादिवसेन पत्तब्बा निब्बानसम्पत्ति, सा[४] चा ति इदं ततियं पि ओधिसो सब्बमेतेन लब्भती ति।

अथ वा या पुब्बे सुवण्णतादीहि अवुत्ता "सुरा[५] सतिमन्तो[५] इध ब्रह्मचरियवासो" ति एवमादिना नयेन निद्दिट्ठा पञ्ञावेय्यत्तियादिभेदा च मानुस्सिका सम्पत्ति, अपरा देवलोके च या ञानादिरति, या च यथावुत्तप्पकारा निब्बानसम्पत्ति चा ति इदं पि ततियं ओधिसो सब्बमेतेन लब्भती ति। एवम्पेत्थ अत्थवण्णना वेदितब्बा।

चुद्दसमगाथावण्णना

१४. एवमिमाय गाथाय पुञ्ञानुभावेन लभितब्बं सद्धानुसारीभावादिवसेन[६] पत्तब्बं निब्बानसम्पत्तिं पि[७] दस्सेत्वा इदानि तेविज्जउभतोभागविमुत्तभाववसेन[८] पि पत्तब्बं तमेव[९] तस्स उपायं च दस्सेन्तो "**मित्तसम्पदमागम्मा**[१०]" ति इमं गाथमाह।

तस्सायं **पदवण्णना**—सम्पज्जति एताय गुणविभूतिं पापुणाती[११] ति सम्पदा, मित्तो एव सम्पदा मित्तसम्पदा, तं **मित्तसम्पदं**। **आगम्मा** R. 229

१. अनियामितवचनं—स्या०। २. सब्बसम्पत्तिया—स्या०।
३. चायं परासद्धानुसारिभावादिवसेन—सी०, रो०; चायम्परा०—स्या०। ४. स्या० नत्थि।
५-५. सुसतीमन्तो...पे०...—सी०, रो०।
६. ० च—स्या०। ७. स्या० नत्थि।
८. ० भाववसेना—सी०, स्या०, रो०। ९. तं एव—सी०, रो०।
१०. मित्तसम्पदमागम्म, योनिसो चे पयुञ्जतो।
विज्जाविमुत्तिवसिभावो, सब्बमेतेन लब्भती' ति॥
स्या० पोत्थके अयं गाथा दिस्सति।
११. पापुणाति वा—सी०, रो०।

ति निस्साय। **योनिसो** ति उपायेन। **पयुञ्जतो** ति योगानुट्ठानं करोतो। विजानाति एताया ति विज्जा, विमुच्चति एताय, सयं वा विमुच्चती[1] ति विमुत्ति, विज्जा[2] च विमुत्ति च विज्जाविमुत्तियो[2], विज्जाविमुत्तीसु वसीभावो **विज्जाविमुत्तिवसीभावो**।

अयं पन **अत्थवण्णना**—य्वायं मित्तसम्पदमागम्म सत्थारं वा अञ्ञतरं वा गरुट्ठानियं[3] सब्रह्मचारिं निस्साय ततो ओवादं च अनुसासनिं च गहेत्वा यथानुसिट्ठं पटिपत्तिया योनिसो पयुञ्जतो पुब्बेनिवासादीसु तीसु विज्जासु "तत्थ कतमा विमुत्ति, चित्तस्स च[3] अधिमुत्ति निब्बानं चा" ति एवं आगताय अट्ठसमापत्तिनिब्बानभेदाय
B.196 विमुत्तिया च तथा तथा अदन्धायितत्तेन वसीभावो, इदं पि चतुत्थं ओधिसो सब्बमेतेन लभती ति।

पन्नरसमगाथावण्णना

१५. एवमिमाय गाथाय पुब्बे कथितविज्जाविमुत्तिवसीभावभागियपुञ्ञानुभावेन[4] लभितब्बं तेविज्जउभतोभागविमुत्तभाववसेन[5] पि पत्तब्बं निब्बानसम्पत्तिं दस्सेत्वा इदानि यस्मा विज्जाविमुत्तिवसीभावप्पत्ता तेविज्जा उभतोभागविमुत्ता पि सब्बे[6] पटिसम्भिदादिगुणविभूतिं लभन्ति, इमाय[7] पुञ्ञसम्पदाय च[8] तस्सा गुणविभूतिया[9] पदट्ठानवसेन तथा तथा सा[10] पि लभति, तस्मा तं पि दस्सेन्तो "**पटिसम्भिदा विमोक्खा चा**" ति[11] इमं गाथमाह।

यतो सम्मा कतेन या चायं धम्मत्थनिरुत्तिपटिभानेसु[12] पभेदगता पञ्ञा पटिसम्भिदा" (विभङ्ग० ३५०-३५४) ति वुच्चति, ये चिमे

१. विमुत्ता—सी०, स्या०, रो०।
२-२. स्या०,
३. सी० नत्थि।
४. कतं विज्जाविमुत्तिवसिभावभागियपुञ्ञानुभावेन—स्या०।
५. ० वसेना—स्या०।
६. न ते सब्बे—स्या०।
७. ० च—सी०, स्या०, रो०।
८. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
९. विभूतिया—सी०, रो०; विमुत्तिया—स्या०।
१०. कताया—स्या०।
११. पटिसम्भिदा विमोक्खा च, या च सावकपारमि। पच्चेकबोधि बुद्धभूमि, सब्बमेतेन लब्भती'' ति॥—स्या०।
१२. पटिभाणेसु—सी०, स्या०, रो०।

रूपी रूपानि पस्सती" (विभङ्ग, ४०६) ति आदिना नयेन अट्ठ विमोक्खा, या चायं भगवतो सावकेहि पत्तब्बा सावकसम्पत्तिसाधिका सावकपारमी, या च सयम्भुभावसाधिका पच्चेकबोधि, या च सब्बसत्तुत्तमभावसाधिका बुद्धभूमि, इदं पि पञ्चमं ओधिसो सब्बमेतेन लब्भती ति वेदितब्बं।

सोळसमगाथावण्णना

१६. एवं भगवा यं तं "यं यदेवाभिपत्थेन्ति, सब्बमेतेन लब्भती" ति वुत्तं, तं इमाहि पञ्चहि[1] गाथाहि ओधिसो[2] ओधिसो[2] दस्सेत्वा R. 230
इदानि सब्बमेविदं सब्बकामददनिधिसञ्ञितं पुञ्ञसम्पदं पसंसन्तो "**एवं महत्थिका[3] एसा[4]**" ति इमाय गाथाय देसनं निट्ठपेसि।

तस्सायं **पदवण्णना—एवं** ति अतीतत्थनिदस्सनं। महन्तो[5] अत्थो अस्सा ति **महत्थिका**, महतो अत्थाय संवत्तती ति वुत्तं होति, महिद्धिका[6] ति पि पाठो। **एसा** ति उद्देसवचनं, तेन "यस्स दानेन सीलेना" ति इतो[7] पभुति[7] याव "कयिराथ धीरो पुञ्ञानी" ति वुत्तं पुञ्ञसम्पदं उद्दिसति। **यदिदं** ति अभिमुखकरणत्थे निपातो[8], तेन एसा ति उद्दिट्ठं निद्दिसितुं या एसा ति अभिमुखं करोति। पुञ्ञानं सम्पदा **पुञ्ञसम्पदा**। तस्मा ति कारणवचनं। **धीरा** ति धितिमन्तो[9]। B. 197
पसंसन्ती ति वण्णयन्ति। **पण्डिता** ति पञ्ञासम्पन्ना। **कतपुञ्ञतं** ति कतपुञ्ञभावं।

अयं पन **अत्थवण्णना**—इति भगवा सुवण्णतादिं[10] बुद्धभूमिपरियोसानं[10] पुञ्ञसम्पदानुभावेन अधिगन्तब्बमत्थं वण्णयित्वा इदानि

१. सी०, रो० नत्थि। २-२. सी०, रो० नत्थि।
३. महिद्धिका—सी०, रो०।
४. एवं महत्थिका एसा, यदिदं पुञ्ञसम्पदा।
तस्मा धीरा पसंसन्ति, पण्डिता कतपुञ्ञतं" ति ॥—स्या०।
५. महा—स्या०, रो०। ६. महिद्धिया—स्या०।
७-७. इतोप्पभुति—सी०, स्या०। ८. निपातोव—सी०, रो०।
९. धितिमन्ता—स्या०। १०-१०. सुवण्णतादिबुद्धभूमिपरियोसानं—स्या०।

तमेवत्थं सम्पिण्डेत्वा दस्सेन्तो तेनेवत्थेन यथावुत्तप्पकाराय पुञ्ञ-सम्पदाय महत्थिकत्तं थुनन्तो[१] आह—एवं महतो अत्थस्स आवहनेन महत्थिका एसा, यदिदं मया "यस्स दानेन सीलेना" ति आदिना नयेन देसिता[२] पुञ्ञसम्पदा, तस्मा मादिसा सत्तानं हितसुखावहाय धम्मदेसनाय अकिलासुताय यथाभूतगुणेन च धीरा पण्डिता असाधारणमञ्ञेसं, अचोराहरणो निधी" ति आदीहि इध वुत्तेहि च, अवुत्तेहि[३] च[३] "मा भिक्खवे पुञ्ञानं भायित्थ, सुखस्सेतं भिक्खवे अधिवचनं, यदिदं पुञ्ञानी" (अं० नि० ३-२२१) ति आदीहि वचनेहि अनेकाकारवोकारं कतपुञ्ञतं पसंसन्ति, न पक्खपातेना ति।

देसनापरियोसाने सो उपासको बहुजनेन[४] सद्धिं सोतापत्तिफले पतिट्ठासि, रञ्ञो[५] च पसेनदिकोसलस्स[५] सन्तिकं गन्त्वा एतमत्थं आरोचेसि, राजा अतिविय तुट्ठो हुत्वा "साधु[६] गहपति, साधु खो
R. 231 त्वं गहपति मादिसेहि पि अनाहरणीयं निधिं निधेसी" ति संराधेत्वा[७] महतिं पूजमकासी ति।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय
निधिकण्डसुत्तवण्णना निट्ठिता।

---

१. निरोपेन्ति—स्या०।
२. दस्सिता—सी०, रो०।
३-३. सी०, रो० नत्थि।
४. बहुज्जनेहि—स्या०।
५-५. सो च रञ्ञो पसेनदिकोसलस्स—स्या०।
६. साधु साधु—स्या०।
७. ० तस्स—स्या०।

९. मेत्तसुत्तवण्णना

निक्खेपप्पयोजनं

इदानि[1] निधिकण्डानन्तरं निक्खित्तस्स मेत्तसुत्तस्स वण्णनाक्कमो[2] अनुप्पत्तो, तस्स इध निक्खेपप्पयोजनं वत्वा ततो परं—

येन वुत्तं यदा यत्थ, यस्मा चेतेस[3] दीपना[4] ।
निदानं सोधयित्वास्स, करिस्सामत्थवण्णनं[5] ॥

तत्थ यस्मा निधिकण्डेन दानसीलादिपुञ्ञसम्पदा वुत्ता, सा च B.198 सत्तेसु मेत्ताय कताय महप्फला होति याव बुद्धभूमिं पापेतुं समत्था, तस्मा तस्सा पुञ्ञसम्पदाय उपकारदस्सनत्थं[6], यस्मा वा सरणेहि सासने ओतरित्वा सिक्खापदेहि सीले पतिट्ठितानं द्वत्तिंसाकारेन[7] रागप्पहानसमत्थं[8] कुमारपञ्हेन मोहप्पहानसमत्थं च कम्मट्ठानं दस्सेत्वा मङ्गलसुत्तेन तस्स पवत्तिया मङ्गलभावो अत्तरक्खा च रतनसुत्तेन तस्सानुरूपा पररक्खा तिरोकुड्डेन[9] रतनसुत्ते वुत्तभूतेसु एकच्चभूतदस्सनं वुत्तप्पकाराय पुञ्ञसम्पत्तिया पमज्जन्तानं[10] विपत्ति च निधिकण्डेन तिरोकुड्डे वुत्तविपत्तिपटिपक्खभूता सम्पत्ति च[11] दस्सिता, दोसप्पहानसमत्थं पन कम्मट्ठानं अदस्सितमेव, तस्मा तं दोसप्पहानसमत्थं[12] कम्मट्ठानं दस्सेतुं[13] इदं मेत्तसुत्तं इध निक्खित्तं । एवं हि सुपरिपूरो होति खुद्दकपाठो ति इदमस्स इध निक्खेपप्पयोजनं ।

१. ० यो—स्या० ।
२. अत्थ०—स्या० ।
३. चेतं—स्या० ।
४. सदीपना—स्या० ।
५. ० ति—सी०, रो० ।
६. ० वा—स्या० ।
७. द्वत्तिंसाकारेहि—स्या० ,
८. रागप्पहाण—सी० ।
९. तिरोकुट्टेन—सी० ।
१०. पमज्जना—सी०, रो०; पमज्जमानं—स्या० ।
११. स्या०, रो० नत्थि ।
१२. ० पन-स्या० ।
१३. ० च—सी० ।

निदानसोधनं

इदानि यायं—

"येन वुत्तं यदा यत्थ, यस्मा चेतेस[1] दीपना[2]।

निदानं सोधयित्वास्स, करिस्सामत्थवण्णनं" ति—

मातिका निक्खित्ता, तत्थ इदं मेत्तसुत्तं भगवता व[3] वुत्तं, न सावकादीहि, तं च पन यदा हिमवन्तपस्सतो देवताहि उब्बाळ्हा भिक्खू भगवतो सन्तिकं आगता, तदा सावत्थियं तेसं भिक्खूनं परित्तत्थाय कम्मट्ठानत्थाय च वुत्तं ति एवं ताव सङ्खेपतो एतेसं पदानं दीपना निदानसोधना वेदितब्बा।

वित्थारतो पन एवं वेदितब्बा—एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय, तेन खो पन समयेन सम्बहुला नानावेरज्जका भिक्खू भगवतो सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा तत्थ तत्थ वस्सं उपगन्तुकामा भगवन्तं उपसङ्कमन्ति। तत्र सुदं भगवा रागचरितानं सविञ्ञाणकअविञ्ञाणकवसेन एकादसविधं असुभकम्मट्ठानं, दोसचरितानं चतुब्बिधं मेत्तादिकम्मट्ठानं, मोहचरितानं मरणस्सतिकम्मट्ठानादीनि[4], वितक्कचरितानं आनापानस्सतिपथवी[5]-कसिणादीनि, सद्धाचरितानं बुद्धानुस्सतिकम्मट्ठानादीनि, बुद्धिचरितानं
B. 199 चतुधातुववत्थानादीनी[6] ति इमिना नयेन चतुरासीतिसहस्सप्पभेदचरितानुकूलानि कम्मट्ठानानि कथेति।

अथ खो पञ्चमत्तानि भिक्खुसतानि भगवतो सन्तिके कम्मट्ठानं उग्गहेत्वा सप्पायसेनासनं च गोचरगामं च परियेसमानानि[7] अनुपुब्बेन

१. चेतं—स्या०, रो०।
२. सदीपना—स्या०।
३. सी० नत्थि।
४. मरणसति०—सी०, रो०; मरणानुस्सति०—स्या०।
५. ० पठवी०—स्या०, रो०।
६. ० ववट्ठाना०—स्या०।
७. परियेसमाना—सी०, रो०।

गन्त्वा[1] पच्चन्ते हिमवन्तेन[2] सद्धिं एकाबद्धं नीलकाचमणिसन्निभसिलातलं[3] सीतलघनच्छायनीलवनसण्डमण्डितं[3] मुत्ताजालरजतपट्टसदिसवालुकाकिण्णभूमिभागं[4] सुचिसातसीतलजलासयपरिवारितं[5] पब्बतमद्दसंसु। अथ[6] ते भिक्खू[7] तत्थेकरत्तिं वसित्वा पभाताय रत्तिया सरीरपरिकम्मं कत्वा तस्स[8] अविदूरे[8] अञ्ञतरं गामं पिण्डाय पविसिंसु। गामो[9] घननिवेसनसन्निविट्ठकुलसहस्सयुत्तो[10], मनुस्सा चेत्थ सद्धा पसन्ना ते पच्चन्ते पब्बजितदस्सनस्स दुल्लभताय R. 233
भिक्खू दिस्वा एव पीतिसोमनस्सजाता हुत्वा ते भिक्खू भोजेत्वा "इधेव भन्ते तेमासं वसथा" ति याचित्वा पञ्च पधानकुटिसतानि कारेत्वा[11] तत्थ मञ्चपीठपानीयपरिभोजनीयघटादीनि सब्बूपकरणानि पटियादेसुं।

भिक्खू दुतियदिवसे[12] अञ्ञं गामं पिण्डाय पविसिंसु, तत्थ[13] पि मनुस्सा तथेव उपट्ठहित्वा वस्सावासं याचिंसु। भिक्खू "असति अन्तराये" ति अधिवासेत्वा तं वनसण्डं पविसित्वा सब्बरत्तिन्दिवं आरद्धवीरिया[14] यामघण्डिकं कोट्टेत्वा[15] योनिसोमनसिकारबहुला विहरन्ता रुक्खमूलानि उपगन्त्वा निसीदिंसु[16]। सीलवन्तानं भिक्खूनं तेजेन विहततेजा रुक्खदेवता अत्तनो अत्तनो विमाना ओरुय्ह दारके गहेत्वा इतो चितो विचरन्ति, सेय्यथापि नाम राजूहि वा राजमहामत्तेहि वा गामकावासं[17] गतेहि[17] गामवासीनं घरेसु ओकासे गहिते घरमनुस्सका[18] घरा[19] निक्खमित्वा अञ्ञत्र वसन्ता "कदा नु

१. स्या० नत्थि।
२. पच्चन्तहिमवन्तेन—स्या०।
३-३. ० सिलातलसीतल०—स्या०।
४. मुत्तादलरजतपटसदिसवालिकाकिण्णभूमिभागं—स्या०।
५. सुचिसातसीतूदकट्ठानपरिवारितं—स्या०।
६. अथ खो—स्या०।
७. ०दिस्वा—स्या०।
८-८. तस्साविदूरे—स्या०, रो०।
९. ० पन—सी०।
१०. घनसन्निवेससन्निविट्ठ०—सी०।
११. कारापेत्वा—सी०, स्या०, रो०।
१२. ततियदिवसे—स्या०।
१३. तत्था—सी०।
१४. ० विरिया—सी०।
१५. कोट्टेत्वा—स्या०।
१६. निसीदन्ति—सी०।
१७-१७. स्या० नत्थि।
१८. घरमानुसकानि—सी०, रो०; घरमानुसका—स्या०।
१९. घराहि—स्या०।

गमिस्सन्ती" ति दूरतो व[१] ओलोकेन्ति, एवमेव देवता अत्तनो अत्तनो विमानानि छड्डेत्वा इतो चितो च विचरन्तियो दूरतो व ओलोकेन्ति "कदा नु भदन्ता गमिस्सन्ती" ति। ततो एवं समचिन्तेसुं "पठम-वस्सूपगता भिक्खू अवस्सं तेमासं वसिस्सन्ति, मयं पन ताव चिरं दारके गहेत्वा ओक्कम्म वसितुं न सक्कोम, हन्द मयं भिक्खूनं भयानकं[२] आरम्मणं दस्सेमा[३]" ति। ता रत्तिं भिक्खूनं समणधम्म-
B. 200 करणवेलाय भिंसनकानि यक्खरूपानि निम्मिनित्वा[४] पुरतो पुरतो तिट्ठन्ति, भेरवसद्दं च करोन्ति। भिक्खूनं तानि रूपानि दिस्वा तं च
R. 234 सद्दं सुत्वा हदयं फन्दि[५], दुब्बण्णा च अहेसुं उप्पण्डुप्पण्डुकजाता। तेन ते भिक्खू चित्तं एकग्गं कातुं[६] नासक्खिंसु[६], तेसं[७] अनेकग्गचित्तानं[७] भयेन च पुनप्पुनं[८] संविग्गानं सति सम्मुस्सि[९], ततो तेसं मुट्ठसतीनं[१०] दुग्गन्धानि आरम्मणानि पयोजेसुं, तेसं तेन दुग्गन्धेन निम्मथियमानमिव मत्थलुङ्गं अहोसि, गाळ्हा[११] सीसवेदना उप्पज्जिंसु, न च तं पवत्तिं अञ्ञमञ्ञस्स आरोचेसुं।

अथेकदिवसं सङ्घत्थेरस्स उपट्ठानकाले सब्बेसु सन्निपतितेसु सङ्घत्थेरो पुच्छि "तुम्हाकं आवुसो इमं वनसण्डं पविट्ठानं कतिपाहं अतिविय परिसुद्धो छविवण्णो अहोसि परियोदातो, विप्पसन्नानि च[१२] इन्द्रियानि, एतरहि पनत्थ किसा[१३] दुब्बण्णा उप्पण्डुप्पण्डुकजाता, किं वो इध असप्पायं' ति। ततो एको भिक्खु आह "अहं भन्ते रत्तिं ईदिसं च ईदिसं[१४] च भेरवारम्मणं पस्सामि च सुणामि च, ईदिसं च गन्धं घायामि, तेन मे चित्तं न समाधियती" ति, एतेनेव

१. सी०, रो० नत्थि।
२. भयजनकं—सी०, स्या०, रो०।
३. दस्सेस्सामा—सी०, रो०।
४. निम्मित्वा—स्या०।
५. फन्दति—स्या०।
६-६. नासक्खिंसु कातुं—स्या०; असक्खिंसु कातुं—रो०।
७-७. अनेकग्गचित्तानं तेसं—स्या०।
८. पुनप्पुन—सी०, रो०।
९. पमुस्सति—स्या०।
१०. मुट्ठस्सतीनं—सी०, स्या०, रो०।
११. बाळ्हा—स्या०, रो०।
१२. सी० नत्थि।
१३. कीसा—स्या०।
१४. एदिसञ्च—स्या०।

उपायेन सब्बेव[1] ते[1] तं पवत्तिं आरोचेसुं। सङ्घत्थेरो आह "भगवता आवुसो द्वे वस्सूपनायिका पञ्ञत्ता, अम्हाकं च इदं[2] सेनासनं असप्पायं, आयामावुसो भगवतो सन्तिकं गन्त्वा अञ्ञं सप्पायसेनासनं[3] पुच्छामा" ति। "साधु भन्ते" ति ते भिक्खू थेरस्स पटिस्सुणित्वा[4] सब्बेव[5] सेनासनं संसामेत्वा पत्तचीवरमादाय अनुपलित्तत्ता कुलेसु कञ्चि[6] अनामन्तेत्वा एव येन सावत्थि तेन चारिकं पक्कमिंसु। अनुपुब्बेन सावत्थिं गन्त्वा भगवतो सन्तिकं आगमिंसु[7]।

भगवा ते भिक्खू दिस्वा एतदवोच "न भिक्खवे अन्तोवस्सं चारिका चरितब्बा ति मया सिक्खापदं पञ्ञत्तं, किस्स तुम्हे R. 235 चारिकं चरथा" (म० व० १४५) ति। ते भगवतो सब्बमारोचेसुं[8]। भगवा आवज्जेन्तो सकलजम्बुदीपे अन्तमसो चतुपादपीठकट्ठानमत्तं पि तेसं[9] सप्पायसेनासनं नाद्दस। अथ ते भिक्खू आह "न भिक्खवे तुम्हाकं अञ्ञं सप्पायसेनासनं अत्थि, तत्थेव तुम्हे विहरन्ता आसवक्खयं पापुणिस्सथ[10], गच्छथ भिक्खवे, तमेव सेनासनं उपनिस्साय विहरथ, सचे पन देवताहि अभयं इच्छथ, इमं परित्तं उग्गण्हथ[11]। एतञ्हि वो परित्तं च कम्मट्ठानं च भविस्सती" ति इदं[12] सुत्तमभासि।

अपरे पनाहु[13]—"गच्छथ भिक्खवे तमेव सेनासनं उपनिस्साय B. 201 विहरथा" ति इदं च[14] वत्वा भगवा आह "अपि च खो आरञ्ञकेन परिहरणं ञातब्बं। सेय्यथिदं? सायं पातं करणवसेन द्वे मेत्ता द्वे परित्ता द्वे असुभा द्वे मरणस्सती[15] अट्ठमहासंवेगवत्थुसमावज्जनं च,

१-१. सब्बे—सी०, रो०; सब्बे ते—स्या०।
२. इदं—स्या०, रो०।
३. सप्पायं सेनासनं—सी०।
४. पटिसुणित्वा—स्या०।
५. सब्बे—सी०, रो०।
६. किञ्चि—स्या०।
७. आगमंसु—सी०, रो०।
८. सब्बं आरोचेसुं—स्या०।
९. ० अञ्ञं—स्या०।
१०. पापुणेय्याथ—सी०, स्या०, रो०।
११. उग्गण्हाथ—स्या०।
१२. इमं—स्या०।
१३. आहु—स्या०।
१४. स्या० नत्थि।
१५. असुभामरणस्सति—स्या०; मरणसति—सी०।

अट्ठ महासंवेगवत्थूनि नाम जाति जरा ब्याधि मरणं चत्तारि अपाय दुक्खानी ति, अथ वा जातिजराब्याधिमरणानि चत्तारि, अपायदुक्खं पञ्चमं, अतीते[1] वट्टमूलकं दुक्खं, अनागते[2] वट्टमूलकं दुक्खं, पच्चुप्पन्ने आहारपरियेट्ठिमूलकं दुक्खं" ति। एवं भगवा परिहरणं आचिक्खित्वा तेसं भिक्खूनं मेत्तत्थं च परित्तत्थं च विपस्सनापादकज्झानत्थं च इदं[3] सुत्तमभासी ति। एवं वित्थारतो पि "येन वुत्तं यदा यत्थ, यस्मा चे" ति एतेसं पदानं दीपना निदानसोधना[4] वेदितब्बा।

एत्तावता च या सा "**येन वुत्तं यदा यत्थ, यस्मा चेतेस[5] R.236 दीपना। निदानं सोधयित्वा**" ति मातिका ठपिता, सा सब्बाकारेन वित्थारिता होति।

पठमगाथावण्णना

१. इदानि "**अस्स करिस्सामत्थवण्णनं**" ति वुत्तत्ता एवं कतनिदानसोधनस्स अस्स सुत्तस्स **अत्थवण्णना** आरभते। तत्थ **करणीयमत्थकुसलेना** ति इमिस्सा पठमगाथाय ताव अयं **पदवण्णना**– **करणीयं** ति कातब्बं, करणारहं ति अत्थो। **अत्थो** ति पटिपदा, यं वा किञ्चि अत्तनो हितं, तं सब्बं अरणीयतो अत्थो ति वुच्चति, अरणीयतो नाम उपगन्तब्बतो। अत्थे कुसलेन **अत्थकुसलेन** अत्थछेकेना[6] ति वुत्तं होति। **यं** ति अनियमितपच्चत्तं[7]। **तं** ति नियमितउपयोगं[8], उभयं पि वा यं तं ति पच्चत्तवचनं, **सन्तं पदं** ति उपयोगवचनं, तत्थ लक्खणतो सन्तं, पत्तब्बतो पदं, निब्बानस्सेतं अधिवचनं। **अभिसमेच्चा** ति अभिसमागन्त्वा। सक्कोती ति **सक्को**, समत्थो पटिबलो ति वुत्तं होति। **उजू** ति अज्जवयुत्तो।

१. ० च–सी०, रो०। २. ० च–सी०, रो०।
३. इमं–सी०, स्या०। ४. ० व–स्या०।
५. चेतं–स्या०। ६. अत्थे छेकेना–सी०।
७. अनियामितपच्चत्तं–सी०, स्या०, रो०। ८. नियामितउपयोगं–सी०, स्या०, रो०।

सुट्ठु उजू ति सुहुजु[१]। सुखं वचो तस्मिं ति सुवचो। अस्स ति भवेय्य। मुदू ति मद्दवयुत्तो। न अतिमानी ति अनतिमानि[२]।

अयं पनेत्थ अत्थवण्णना-करणीयमत्थकुसलेन, यन्त[३] सन्तं पदं अतिसमेच्चा[४] ति एत्थ ताव अत्थि करणीयं, अत्थि अकरणीयं। तत्थ सङ्खेपतो सिक्खत्तयं[५] करणीयं। सीलविपत्ति दिट्ठिविपत्ति B. 202 आचारविपत्ति आजीवविपत्ती ति एवमादि अकरणीयं। तथा अत्थि अत्थकुसलो, अत्थि अनत्थकुसलो। तत्थ यो इमस्मिं सासने पब्बजित्वा न अत्तानं सम्मा पयोजेति, खण्डसीलो होति, एकवीसतिविधं अनेसनं निस्साय जीविकं[६] कप्पेति। सेय्यथिदं ? वेळुदानं[७] पत्तदानं पुप्फदानं फलदानं दन्तकट्ठदानं मुखोदकदानं सिनानदानं चुण्णदानं मत्तिकादानं चाटुकम्यतं[८] मुग्गसूप्यतं[९] पारिभट्यतं[१०] जङ्घपेसनिकं वेज्जकम्मं दूतकम्मं पहिणगमनं[११] पिण्डपटिपिण्डं[१२] दानानुप्पदानं R. 237 वत्थुविज्जं नक्खत्तविज्जं[१३] अङ्गविज्जं ति[१४]। छब्बिधे च अगोचरे चरति। सेय्यथिदं ? वेसियागोचरे विधवथुल्लकुमारिकपण्डक-भिक्खुनीपानागारगोचरे[१५] ति[१६]। संसट्ठो च विहरति राजूहि राजमहामत्तेहि तित्थियेहि तित्थियसावकेहि अननुलोमिकेन गिहिसंसग्गेन[१७], यानि वा पन तानि कुलानि अस्सद्धानि अप्पसन्नानि अनोपानभूतानि अक्कोसकपरिभासकानि अनत्थकामानि अहितअफासुकयोगक्खेमकामानि[१८] भिक्खूनं...पे०[१९]...उपासिकानं, तथारूपानि कुलानि सेवति भजति पयिरुपासति। अयं अनत्थकुसलो।

१. सूजू—सी०, रो०।
२. अनतिमानी—स्या०, सी०।
३. यन्तं—सी०, स्या०, रो०।
४. अभिसमेच्चाति—स्या०, रो०।
५. सिक्खात्तयं—सी०, रो०।
६. जीवितं—स्या०।
७. वेत्थदानं निस्साय—सी०; ० निस्साय—रो०।
८. पातुकम्यतं—स्या०।
९. मुग्गसुप्पतं—सी०, स्या०, रो०।
१०. पारिभट्टतं—सी०, रो०।
११. पहेणगमनं—सी०।
१२. पिण्डपतिपिण्डं—सी०, स्या०।
१३. खेत्तविज्जं—रो०।
१४. स्या०, नत्थि।
१५. विधवगोचरे०—स्या०।
१६. व—स्या०।
१७. संसग्गेन—रो०।
१८. अहितअफासुअयोगक्खेमकमानि—सी०, रो०; अहितकामानि अफासुकामानि अयोगक्खेमानि—स्या०।
१९. भिक्खुनीनं उपासकानं—स्या०।

यो पन इमस्मिं सासने पब्बजित्वा अत्तानं सम्मा पयोजेति, अनेसनं पहाय चतुपारिसुद्धिसीले पतिट्ठातुकामो सद्धासीसेन पातिमोक्खसंवरं[१] सतिसीसेन इन्द्रियसंवरं वीरियसीसेन आजीवपारिसुद्धिं, पञ्ञासीसेन पच्चयपटिसेवनं पूरेति । अयं **अत्थकुसलो** ।

यो वा सत्तापत्तिक्खन्धसोधनवसेन पातिमोक्खसंवरं, छद्वारे घट्टितारम्मणेसु अभिज्झादीनं अनुप्पत्तिवसेन इन्द्रिसंवरं, अनेसनपरिवज्जनवसेन विञ्ञुप्पसत्थबुद्धबुद्धसावकवण्णितपच्चयपटिसेवनेन[२] च आजीवपारिसुद्धिं, यथावुत्तपच्चवेक्खणवसेन पच्चयपटिसेवनं, चतुइरियापथपरिवत्तने सात्थकतादिपच्चवेक्खणवसेन[३] सम्पजञ्ञं च सोधेति । अयं पि **अत्थकुसलो** ।

यो वा यथा ऊसोदकं[४] पटिच्च सङ्किलिट्ठं[५] वत्थं[५] परियोदापयति[६], छारिकं पटिच्च आदासो, उक्कामुखं पटिच्च जातरूपं, तथा ञाणं पटिच्च सीलं वोदायती ति ञत्वा ञाणोदकेन धोवन्तो सीलं परियोदापेति[७] । यथा च किकी सकुणिका अण्डं, चमरी मिगो[८]
B.203 वालधिं, एकपुत्तिका नारी पियं[९] एकपुत्तकं, एकनयनो पुरिसो तं एकनयनं च[१०] रक्खति, तथा अतिविय अप्पमत्तो अत्तनो सीलक्खन्धं
R. 238 रक्खति, सायं पातं पच्चवेक्खमानो अणुमत्तं पि वज्जं न[११] पस्सति । अयं पि **अत्थकुसलो** ।

यो वा[१२] पन अविप्पटिसारकरे[१३] सीले[१३] पतिट्ठाय किलेसविक्खम्भनपटिपदं पग्गण्हाति, तं पग्गण्हित्वा[१४] कसिणपरिकम्मं

१. पाटि०—स्या०, एवमेव ।
२. विञ्ञुपसट्ठ०—स्या०; ० पतिसेवनेन—सी० ।
३. सात्थकादीनं पच्चवेक्खणवसेन—सी०, स्या०, रो० ।
४. मासोदकं—रो० ।
५-५. संकिलिट्ठवत्थं—स्या० ।
६. परियोदायति—सी०, स्या०, रो० ।
७. परियादापेति—स्या० ।
८. मिगी—स्या०; चमरमिगो—रो० ।
९. पीयं—स्या० ।
१०. सी०, रो० नत्थि ।
११. स्या० नत्थि ।
१२. सी०, रो० नत्थि ।
१३-१३. अविप्पटिसारकर सीले—सी०, रो० ।
१४. पग्गहेत्वा—सी०, स्या०, रो० ।

करोति, कसिणपरिकम्मं कत्वा समापत्तियो निब्बत्तेति। अयं पि **अत्थकुसलो**।

यो वा[1] पन समापत्तितो वुट्ठाय सङ्खारे सम्मसित्वा अरहत्तं पापुणाति, अयं अत्थकुसलानं अग्गो। तत्थ ये इमे याव अविप्पटिसारकरे सीले पतिट्ठानेन याव वा किलेसविक्खम्भनपटिपदायपग्गहणेन[2] वण्णिता अत्थकुसला, ते इमस्मिं अत्थे **अत्थकुसला** ति अधिप्पेता। तथा विधा च ते भिक्खू। तेन भगवा ते भिक्खू सन्धाय एकपुग्गलाधिट्ठानाय देसनाय "करणीयमत्थकुसलेना" ति आह।

ततो[3] "किं करणीयं" ति तेसं सञ्जातकङ्खानं[4] आह "**यन्त[5] सन्तं पदं** अभिसमेच्चा" ति। अयमेत्थ अधिप्पायो—तं बुद्धानुबुद्धेहि वण्णितं सन्तं निब्बानपदं पटिवेधवसेन अभिसमेच्च विहरितुकामेन यं करणीयं ति। एत्थ च **यं** ति इमस्स गाथापदस्स आदितो वुत्तमेव करणीयं ति अधिकारतो अनुवत्तति, तं सन्तं पदं अभिसमेच्चा ति[6]। अयं पन यस्मा सावसेसपाठो अत्थो, तस्मा विहरितुकामेना ति वुत्तं ति वेदितब्बं।

अथ वा **सन्तं पदं अभिसमेच्चा** ति अनुस्सवादिवसेन लोकियपञ्ञाय निब्बानपदं "सन्तं" ति ञत्वा तं अधिगन्तुकामेन यं तं करणीयं ति अधिकारतो अनुवत्तति, तं करणीयमत्थकुसलेना ति एवम्पेत्थ[7] अधिप्पायो वेदितब्बो। अथ वा "करणीयमत्थकुसलेना" ति वुत्ते "किं" ति चिन्तेन्तानं आह "**यन्त[8] सन्तं पदं अभिसमेच्चा**" ति। तस्सेवं अधिप्पायो वेदितब्बो—लोकियपञ्ञाय सन्तं पदं अभिसमेच्च यं करणीयं कातब्बं[9], तं करणीयं, करणारहमेव तं ति वुत्तं होति।

१. सी०, रो० नत्थि।
२. ०पग्गण्हणेन मग्गफलेन—सी०, रो०; ० वा—स्या०।
३. ० परं—स्या०।
४. अजानित्वा ठितानं—सी०।
५. यन्तं—सी०, स्या०, रो०।
६. वा—स्या०।
७. एवमेत्थ—स्या०।
८. यन्तं—सी०, स्या०, रो०।
९. तं ति यं कातब्ब—सी०।

R. 239 किं पन तं ति ? किमञ्ञं सिया अञ्ञत्र तदधिगमुपायतो, कामं
चेतं करणारहट्ठेन[1] सिक्खत्तयदीपकेन[2] आदिपदेनेव वुत्तं। तथा हि
तस्स[3] अत्थवण्णनायं[4] अवोचुम्हा[5] "अत्थि करणीयं, अत्थि
B. 204 अकरणीयं। तत्थ सङ्खेपतो सिक्खत्तयं करणीयं" ति। अतिसङ्खेपेन[6]
देसितत्ता[6] पन तेसं भिक्खूनं केहिचि विञ्ञातं, केहिचि न विञ्ञातं। ततो येहि न विञ्ञातं, तेसं विञ्ञापनत्थं यं विसेसतो आरञ्ञकेन भिक्खुना कातब्बं, तं वित्थारेन्तो "**सक्को उजू च सुहुजू[7] च, सुवचो चस्स मुदु अनतिमानी**" ति इमं ताव उपड्ढगाथमाह।

किं वुत्तं होति ? सन्तं पदं अतिसमेच्च विहरितुकामो, लोकियपञ्ञाय वा तं अभिसमेच्च तदधिगमाय पटिपज्जमानो आरञ्ञको[8] भिक्खु दुतियचतुत्थपधानियङ्गसमन्नागमेन[9] काये[10] च जीविते च अनपेक्खो हुत्वा सच्चप्पटिवेधाय[11] पटिपज्जितुं सक्को अस्स, तथा कसिणपरिकम्मवत्तसमादानादीसु अत्तनो पत्तचीवरप्पटिसङ्खरणादीसु[12] च[13] यानि तानि सब्रह्मचारीनं उच्चावचानि किं करणीयानि, तेसु अञ्ञेसु च एवरूपेसु सक्को अस्स दक्खो अनलसो समत्थो। सक्को होन्तो पि च ततियपधानियङ्गसमन्नागमेन उजु अस्स। उजु होन्तो पि च सकिं उजुभावेन दहरकाले[14] वा उजुभावेन[14] सन्तोसं अनापज्जित्वा यावजीवं पुनप्पुनं[15] असिथिलकरणेन सुट्ठुतरं उजु अस्स। असठताय वा उजु, अमायाविताय सुहुजु[16]। कायवचीवङ्कप्पहानेन[17] वा उजु, मनोवङ्कप्पहानेन सुहुजु। असन्तगुणस्स वा

१. कारणारहत्तेन—सी०; करणरहत्थेन—स्या०, रो०। २. सिक्खात्तय०—सी०, रो०। ३. अस्स—सी०, रो०। ४. अत्थवण्णनाय—स्या०, रो०। ५. अवोचुम्ह—सी०, स्या०, रो०। ६-६. अतिसङ्खेपदेसितत्ता—सी०, स्या०, रो०। ७. सूजू—सी०, रो०। ८. आरञ्ञिको—स्या०। ९. दुतियपधानियङ्गसमन्नागमनेन—स्या०। १०. कायेन—स्या०। ११. सच्चपटिवेधाय—सी०, स्या०, रो०। १२. ० चीवरपटि०—सी०, स्या०, रो०। १३. स्या०, रो० नत्थि। १४-१४. सी०, स्या०, रो० नत्थि। १५. पुनप्पुन—सी०। १६. सूजू—सी०, रो०। १७. ०वङ्कप्पहाणेन सी०।

अनाविकरणेन उजु, असन्तगुणेन उप्पन्नस्स लाभस्स अनधिवासनेन सुहुजु। एवं आरम्मणलक्खणूपनिज्झानेहि पुरिमद्वयततियसिक्खाहि पयोगासयसुद्धीहि च उजु च सुहुजु च अस्स।

न केवलं च[1] उजु च सुहुजु च, अपि च पन **सुवचो च अस्स**। यो हि पुग्गलो "इदं न कत्तब्बं[2]" ति वुत्तो "किं ते दिट्ठं, किं ते सुतं, को मे सुत्वा[3] वदसि, किं उपज्झायो आचरियो सन्दिट्ठो सम्भत्तो वा[4]" ति[5] वदेति[6], तुण्हीभावेन वा तं[7] विहेसेति[8], सम्पटिच्छित्वा वा[9] न तथा करोति, सो विसेसाधिगमस्स[10] दूरे होति। यो पन ओवदियमानो "साधु भन्ते सुट्ठु वुत्तं, अत्तनो वज्जं नाम दुद्दसं होति, R. 240
पुन पि मं एवरूपं दिस्वा वदेय्याथ अनुकम्पं उपादाय[11], चिरस्सं मे तुम्हाकं सन्तिका[12] ओवादो लद्धो" ति वदति, यथानुसिट्ठं च पटिपज्जति, सो विसेसाधिगमस्स[13] अविदूरे होति। तस्मा एवं परस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा करोन्तो सुवचो च अस्स।

यथा च सुवचो, एवं **मुदु अस्स**। मुदू ति गहट्ठेहि दूतगमन- B. 205
पहिणगमनादीसु[14] नियुज्जमानो[15] तत्थ मुदुभावं अकत्वा थद्धो हुत्वा वत्तपटिपत्तियं सकलब्रह्मचरिये[16] च मुदु अस्स सुपरिकम्मकतसुवण्णं[17] विय तत्थ तत्थ विनियोगक्खमो। अथ वा मुदू ति अभाकुटिको[18] उत्तानमुखो सुखसम्भासो पटिसन्थारवुत्ति सुतित्थं विय सुखावगाहो

१. सी० नत्थि।
२. कातब्बं—सी०, स्या०, रो०।
३. हुत्वा—स्या०, रो०।
४. सी०, रो० नत्थि।
५. स्या० नत्थि।
६. वदति—सी०, स्या०, रो०।
७. सी०, स्या०, रो०।
८. विहेठेति—सी०, स्या०, रो०।
९. स्या० नत्थि।
१०. ० गमस्मा—सी०।
११. उपादायो—स्या०।
१२. सन्तिकाव—स्या०।
१३. ० गमस्मा—सी०।
१४. ० पहेण०—सी०।
१५. युज्जमानो—सी०, रो०; नियुञ्जमानो—स्या०।
१६. सकले ब्रह्मचरिये—सी०।
१७. सुपरिकम्मकतं सुवण्णं—स्या०।
१८. अब्भाकुटिको—सी०।

अस्स, न केवलं च मुदु, अपि च पन **अनतिमानी अस्स**, जातिगोत्तादीहि अतिमानवत्थूहि परे नातिमञ्ञेय्य, सारिपुत्तत्थेरो विय चण्डालकुमारकसमेन चेतसा विहरेय्या ति

दुतियगाथावण्णना

२. एवं भगवा सन्तं पदं अभिसमेच्च विहरितुकामस्स तदधिगमाय वा पटिपज्जमानस्स विसेसतो आरञ्ञकस्स[1] भिक्खुनो एकच्चं करणीयं वत्वा पुन ततुत्तरि[2] पि वत्तुकामो "**सन्तुस्सको चा**" ति दुतियगाथमाह ।

तत्थ "सन्तुट्ठी च कतञ्ञुता" ति एत्थ वुत्तप्पभेदेन द्वादसविधेन सन्तोसेन सन्तुस्सती ति **सन्तुस्सको** । अथ वा तुस्सती ति तुस्सको, सकेन तुस्सको, सन्तेन तुस्सको, समेन तुस्सको ति सन्तुस्सको । तत्थ **सकं** नाम "पिण्डियालोपभोजनं निस्साया" ति एवं उपसम्पदमण्डले उद्दिट्ठं अत्तना च सम्पटिच्छितं चतुपच्चयजातं, तेन सुन्दरेन वा असुन्दरेन वा सक्कच्चं[3] वा असक्कच्चं[3] वा दिन्नेन पटिग्गहणकाले परिभोगकाले च विकारं अदस्सेत्वा यापेन्तो "सकेन तुस्सको" ति
R.241 वुच्चति । **सन्तं** नाम यं लद्धं होति अत्तनो विज्जमानं, तेन सन्तेनेव तुस्सन्तो ततो परं[4] न पत्थेन्तो[4] अत्रिच्छतं पजहन्तो "सन्तेन तुस्सको" ति वुच्चति । **समं** नाम इट्ठानिट्ठेसु अनुनयपटिघप्पहानं, तेन समेन[5] सब्बारम्मणेसु तुस्सन्तो "समेन तुस्सको" ति वुच्चति ।

सुखेन भरीयती ति **सुभरो**, सुपोसो ति वुत्तं होति । यो हि भिक्खु मनुस्सेहि[6] सालिमंसोदनादीनं पत्ते पूरेत्वा दिन्ने पि दुम्मुखभावं अनत्तमनभावमेव च दस्सेति, तेसं वा सम्मुखा व तं पिण्डपातं "किं तुम्हेहि दिन्नं" ति अपसादेन्तो सामणेरगहट्ठादीनं देति, एस दुब्भरो[7] ।

१. आरञ्ञिकस्स – स्या० ।
२. ततुत्तरि – सी०, स्या०, रो० ।
३-३. सक्कच्चमसक्कच्चं – स्या० ।
४-४. परमं अपट्ठेन्तो – स्या० ।
५. समयेन – स्या० ।
६. सी०, स्या०, रो० नत्थि ।
७. दुभरो – सी०, एवमेव ।

एतं दिस्वा मनुस्सा दूरतो व परिवज्जेन्ति "दुब्भरो भिक्खु न सक्का पोसेतुं[1]" ति । यो पन यं किञ्चि लूखं वा पणीतं वा अप्पं B. 206 वा बहुं वा लभित्वा अत्तमनो विप्पसन्नमुखो हुत्वा यापेति[2], एस सुभरो । एतं दिस्वा मनुस्सा अतिविय विस्सत्था होन्ति, "अम्हाकं भदन्तो[3] सुभरो, थोकथोकेना[4] पि तुस्सति, मयमेव नं[5] पोसेस्सामा[6]" ति पटिञ्ञं कत्वा पोसेन्ति । एवरूपो इध सुभरो ति अधिप्पेतो ।

अप्पं किच्चमस्सा ति **अप्पकिच्चो**, न कम्मारामताभस्सारामतासङ्गणिकारामतादिअनेककिच्चब्यावटो, अथ वा सकलविहारे नवकम्मसङ्घपरिभोगसामणेर[7] आरामिकवोसासनादिकिच्चविरहितो, अत्तनो केसनखच्छेदनपत्तचीवरकम्मादिं[8] कत्वा समणधम्मकिच्चपरो होती ति वुत्तं होति ।

सल्लहुका वुत्ति अस्सा ति **सल्लहुकवुत्ति** । यथा एकच्चो बहुभण्डो[9] भिक्खु दिसापक्कमनकाले बहुं पत्तचीवरपच्चत्थरणतेलगुळादिं महाजनेन सीसभारकटिभारादीहि उब्बहापेत्वा[10] पक्कमति, एवं अहुत्वा यो अप्पपरिक्खारो होति, पत्तचीवरादिअट्ठसमणपरिक्खारमत्तमेव परिहरति, दिसापक्कमनकाले पक्खी सकुणो विय समादायेव पक्कमति, एवरूपो इध सल्लहुकवुत्ती ति अधिप्पेतो । R. 242 सन्तानि इन्द्रियानि अस्सा ति **सन्तिन्द्रियो**, इट्ठारम्मणादीसु रागादिवसेन अनुद्धतिन्द्रियो ति वुत्तं होति । **निपको** ति विञ्ञू विभावी पञ्ञवा, सीलानुरक्खणपञ्ञाय चीवरादिविचारणपञ्ञाय आवासादिसत्तसप्पायपरिजाननपञ्ञाय च समन्नागतो ति अधिप्पायो ।

१. पोसितुं—स्या०, रो० ।
२. याति—सी०, रो० ।
३. भद्दन्ता—सी० ।
४. थोकेन—सी०,रो०, थोकथोकेनं—स्या० ।
५. तं—स्या० ।
६. पोसिस्सामा—सी०, रो० ।
७. ० सङ्घभोगसामणेर ०—सी०, रो० ।
८. ० चीवरपरिकम्मादिं—सी०,स्या०,रो० ।
९. बहुभण्डको—स्या० ।
१०. उच्चारापेत्वा—सी०, स्या०; उद्धारापेत्वा—रो० ।

न पगब्भो ति अप्पगब्भो, अट्ठट्ठानेन कायपागब्भियेन चतुट्ठानेन[1] वचीपागब्भियेन अनेकेन[2] ठानेन[2] मनोपागब्भियेन च विरहितो ति अत्थो।

अट्ठट्ठानं कायपागब्भियं नाम सङ्घगणपुग्गलभोजनसालाजन्ताघरन्हानतित्थभिक्खाचारमग्गअन्तरघरप्पवेसनेसु कायेन अप्पतिरूपकरणं। सेय्यथिदं ? इधेकच्चो सङ्घमज्झे पल्लत्थिकाय वा निसीदति पादे[3] पादमोदहित्वा[4] वा ति एवमादि। तथा गणमज्झे[5] चतुपरिससन्निपाते, तथा वुड्ढतरे पुग्गले। भोजनसालायं पन B. 207 वुड्ढानं आसनं न देति, नवानं आसनं पटिबाहति। तथा जन्ताघरे, वुड्ढे चेत्थ अनापुच्छा अग्गिजालनादीनि करोति। न्हानतित्थे[6] च यदिदं "दहरो वुड्ढो ति पमाणं अकत्वा आगतपटिपाटिया न्हायितब्बं[7]" ति वुत्तं, तं पि अनादियन्तो पच्छा आगन्त्वा उदकं ओतरित्वा वुड्ढे च नवे च बाधेति। भिक्खाचारमग्गे पन अग्गासनअग्गोदकअग्गपिण्डत्थं वुड्ढानं पुरतो पुरतो याति, बाहाय बाहं पहरन्तो। अन्तरघरप्पवेसने वुड्ढानं पठमतरं पविसति, दहरेहि कायकीळनं करोती ति एवमादि।

चतुट्ठानं वचीपागब्भियं[8] नाम[8] सङ्घगणपुग्गलअन्तरघरेसु अप्पतिरूपवाचानिच्छारणं। सेय्यथिदं ? इधेकच्चो सङ्घमज्झे R. 243 अनापुच्छा धम्मं भासति, तथा पुब्बे वुत्तप्पकारे गणे वुड्ढतरे पुग्गले च, तत्थ मनुस्सेहि पञ्हं पुट्ठो वुड्ढतरं अनापुच्छा विस्सज्जेति, अन्तरघरे पन "इत्थन्नामे किं अत्थि, किं यागु उदाहु[9] खादनीयं वा[10] भोजनीयं वा, किं मे दस्ससि, किं अज्ज खादिस्सामि, किं भुञ्जिस्सामि, किं पिविस्सामी" ति एवमादि भासति।

१. ० च—सी०।
२-२. अनेकट्ठानेन—सी०, स्या०, रो०।
३. पादेन—स्या०।
४. पादं आदहेत्वा—स्या०, पादं आदहित्वा—रो०।
५. गणमज्झे "गणमज्झे" ति—सी०, री०।
६. सिनानतित्थे—सी०, रो०, नहानतित्थे—स्या०।
७. नहायितब्बं—स्या०, रो०।
८-८. ० पागब्भियन्नाम—स्या०।
९. ० किं—सी०।
१०. सी० नत्थि।

अनेकट्ठानं मनोपागब्भियं नाम तेसु तेसु ठानेसु कायवाचाहि अज्झाचारं अनापज्जित्वा पि मनसा एव कामवितक्कादिनानप्पकारं अप्पतिरूपवितक्कनं।

कुले स्वननुगिद्धो[1] ति यानि तानि[2] कुलानि[3] उपसङ्कमति, तेसु पच्चयतण्हाय वा अननुलोमिकगिहिसंसग्गवसेन वा अननुगिद्धो, न सहसोकी, न सहनन्दी, न सुखितेसु सुखितो, न दुक्खितेसु दुक्खितो, न उप्पन्नेसु किच्चकरणीयेसु अत्तना वा उय्योगमापज्जिता ति[4] वुत्तं होति। इमिस्साय[5] च गाथाय यं "सुवचो चस्सा" ति एत्थ वुत्तं अस्सा ति वचनं, तं सब्बपदेहि सद्धिं सन्तुस्सको च अस्स, सुभरो च अस्सा ति एवं योजेतब्बं।

ततियगाथावण्णना

३. एवं भगवा सन्तं पदं अभिसमेच्च विहरितुकामस्स तदधिगमाय वा पटिपज्जितुकामस्स विसेसतो आरञ्ञकस्स[6] भिक्खुनो तदुत्तरि[7] पि करणीयं आचिक्खित्वा इदानि अकरणीयं पि आचिक्खितुकामो **"न च खुद्दमाचरे[8] किञ्चि, येन विञ्ञू परे उपवदेय्युं"** ति इमं उपड्ढगाथमाह।

तस्सत्थो—एवमिमं करणीयं करोन्तो यं तं कायवचीमनो- B. 208
दुच्चरितं खुद्दं लामकं ति वुच्चति, तं न च खुद्दं समाचरे, असमाचरन्तो च न केवलं ओळारिकं, किन्तु[9] किञ्चि न समाचरे, अप्पमत्तकं पि अणुमत्तकं पि न समाचरे ति वुत्तं होति।

ततो तस्स समाचारे सन्दिट्ठिकमेवादीनवं[10] दस्सेति **"येन विञ्ञू परे उपवदेय्युं"** ति। एत्थ च यस्मा अविञ्ञू परे अप्पमाणं। ते

१. कुलेसु अननुगिद्धो—सी०, स्या०, रो०। २. सी०, स्या०, रो० नत्थि।
३. उपासककुलानि—स्या०। ४. योगमापज्जिताति—स्या०; वोयोगं आपज्जिता—रो०।
५. इमिस्सा—सी०, स्या०, रो०। ६. आरञ्ञिकस्स—स्या०। ७. ततुत्तरि—सी०, रो०।
८. खुद्दं समाचरे—सी०, स्या०, रो०। ९. किं पन—सी०, रो०।
१०. सन्दिट्ठिकमेव आदीनवं—स्या०; सन्दिट्ठिकं एवादीनवं—रो०।

हि अनवज्जं वा सावज्जं[1] करोन्ति, अप्पसावज्जं वा महासावज्जं[2]। विञ्ञू एव पन पमाणं। ते हि अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स R. 244 अवण्णं भासन्ति[3], वण्णारहस्स वण्णं भासन्ति। तस्मा "विञ्ञू परे" ति वुत्तं[4]।

एवं भगवा इमाहि अड्ढतेय्याहि[5] गाथाहि[5] सन्तं पदं अभिसमेच्च विहरितुकामस्स तदधिगमाय वा पटिपज्जितुकामस्स विसेसतो आरञ्ञकस्स, आरञ्ञकसीसेन[6] च सब्बेसं पि कम्मट्ठानं गहेत्वा विहरितुकामानं करणीयाकरणीयभेदं कम्मट्ठानूपचारं वत्वा इदानि तेसं भिक्खूनं तस्स देवताभयस्स पटिघाताय परित्तत्थं विपस्सनापादकज्झानवसेन कम्मट्ठानत्थं च **"सुखिनो व[7] खेमिनो होन्तू"** ति आदिना नयेन मेत्तकथं[8] कथेतुमारद्धो।

तत्थ **सुखिनो** ति सुखसम्पन्ना[9]। **खेमिनो** ति खेमवन्तो, अभया निरुपद्दवा ति वुत्तं होति। **सब्बे** ति अनवसेसा। **सत्ता** ति पाणिनो। **सुखितत्ता** ति सुखितचित्ता। एत्थ च कायिकेन सुखेन सुखिनो, मानसेन[10] सुखितत्ता, तदुभयेना पि[11] सब्बभयुपद्दवविगमेन वा खेमिनो ति वेदितब्बो। कस्मा पन एवं वुत्तं? मेत्ताभावनाकारदस्सनत्थं। एवं हि मेत्ता भावेतब्बा "सब्बे सत्ता सुखिनो होन्तू" ति वा, "खेमिनो होन्तू" ति वा, "सुखितत्ता होन्तू" ति वा।

चतुत्थगाथावण्णना

४. एवं याव[12] उपचारतो[12] अप्पनाकोटि, ताव सङ्खेपेन मेत्ताभावनं दस्सेत्वा इदानि वित्थारतो पि[13] तं दस्सेतुं **"ये केची"** ति गाथाद्वयमाह। अथ वा यस्मा पुथुत्तारम्मणे परिचितं चित्तं न

१. ० वा—सी०।
२. ० करोन्ति—स्या०।
३. सी०, रो० नत्थि।
४. ०होति—सी०।
५-५. अड्ढतेय्यगाथाहि—स्या०।
६. आरञ्ञिकसीसेन—स्या०।
७. वा—सी०, स्या०, रो०।
८. मेत्ताकथं—सी०।
९. सुखसमङ्गिनो—सी०, स्या०, रो०।
१०. सुखेन—स्या०।
११. तदुभयेन—सी०।
१२-१२. उपचारतो याव—स्या०।
१३. पन—स्या०।

आदिकेनेव एकत्ते सण्ठाति आरम्मणप्पभेदं पन अनुगन्त्वा अनुगन्त्वा कमेन[1] सण्ठाति, तस्मा तस्स[2] तसथावरादिदुकतिकप्पभेदे आरम्मणे B 209 अनुगन्त्वा अनुगन्त्वा सण्ठानत्थं पि "ये केची" ति गाथाद्वयमाह। अथ वा यस्मा यस्स यं आरम्मणं विभूतं होति, तस्स तत्थ चित्तं सुखं तिट्ठति, तस्मा तेसं भिक्खूनं यस्स यं विभूतं आरम्मणं, तस्स R. 245 तत्थ चित्तं सण्ठापेतुकामो तसथावरादिदुकतिकारम्मणभेददीपकं[3] "ये केची" ति इमं गाथाद्वयमाह।

एत्थ हि तसथावरदुकं दिट्ठादिट्ठदुकं दूरसन्तिकदुकं भूतसम्भवेसिदुकं ति चत्तारो[4] दुके[4], दीघादीहि च[5] छहि पदेहि मज्झिमपदस्स तीसु अणुकपदस्स च द्वीसु तिकेसु[6] अत्थसम्भवतो दीघरस्समज्झिमतिकं महन्ताणुकमज्झिमतिकं थूलाणुकमज्झिमतिकं ति तयो तिके च दीपेति। तत्थ **ये केची** ति अनवसेसवचनं। पाणा एव भूता **पाणभूता**। अथ वा पाणन्ती ति पाणा, एतेन अस्सासपस्सासप्पटिबद्धे पञ्चवोकारसत्ते गण्हाति। भवन्ती ति भूता, एतेन एकवोकारचतुवोकारसत्ते गण्हाति। **अत्थी** ति सन्ति संविज्जन्ति।

एवं "**ये केचि पाणभूतत्थी**" ति इमिना वचनेन दुकतिकेहि सङ्गहेतब्बे सब्बसत्ते[7] एकतो[8] दस्सेत्वा इदानि सब्बे पि ते **तसा वा थावरा व[9]' नवसेसा**[9] ति इमिना दुकेन सङ्गहेत्वा दस्सेति।

तत्थ तसन्ती ति **तसा**, सतण्हानं सभयानं चेतं[10] अधिवचनं। तिट्ठन्तो ति **थावरा**, पहीनतण्हाभयानं अरहतं एतं अधिवचनं। नत्थि तेसं अवसेसं ति **अनवसेसा**, सब्बे पी ति वुत्तं होति। यं च

१. कमेनेव—स्या०।
२. स्या० नत्थि।
३. ०तिकारम्मणप्पभेददीपकं—सी०, स्या०, रो०।
४-४. चत्तारि दुकानि—सी०, रो०।
५. सी० नत्थि।
६. ० च—स्या०।
७. सब्बे सत्ते—सी०, रो०।
८. एकज्झं—सी०, स्या०, रो०।
९-९. वा अनवसेसा—सी०, स्या०, रो०।
१०. एतं—सी०।

दुतियगाथाय अन्ते वुत्तं, तं सब्बदुकतिकेहि[1] सम्बन्धितब्बं "ये केचि पाणभूतत्थि तसा वा थावरा वा अनवसेसा, इमे पि सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता। एवं याव भूता[2] वा सम्भवेसी वा, इमे पि सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता" ति।

इदानि दीघरस्समज्झिमादितिकत्तयदीपकेसु **दीघा वा** ति आदीसु छसु पदेसु **दीघा** ति दीघत्तभावा नागमच्छगोधादयो। अनेकब्याम-सतप्पमाणा पि हि महासमुद्दे नागानं[3] अत्तभावा अनेकयोजनप्पमाणा[4] च[5] मच्छगोधादीनं अत्तभावा होन्ति। **महन्ता** ति महन्तत्तभावा जले R. 246 B. 210 मच्छकच्छपादयो[6], थले हत्थिनागादयो, अमनुस्सेसु दानवादयो। आह च "राहुग्गं अत्तभावीनं" (अं० नि० २.१६) ति। तस्स हि अत्तभावो उब्बेधेन चत्तारि योजनसहस्सानि अट्ठ च योजनसतानि, बाहू द्वादसयोजनसतपरिमाणा[7], पञ्ञासयोजनं[8] भमुकन्तरं, तथा अङ्गुलन्तरिका, हत्थतलानि[9] द्वे योजनसतानी ति। **मज्झिमा** ति अस्सगोणमहिंससूकरादीनं[10] अत्तभावा। **रस्सका** ति तासु तासु जातीसु वामनादयो दीघमज्झिमेहि[11] ओमकप्पमाणा सत्ता। **अणुका** ति मंसचक्खुस्स अगोचरा दिब्बचक्खुविसया उदकादीसु निब्बत्ता सुखुमत्तभावा सत्ता ऊकादयो[12] वा, अपि च ये तासु तासु जातीसु महन्तमज्झिमेहि थूलमज्झिमेहि च ओमकप्पमाणा सत्ता, ते अणुका ति वेदितब्बा। **थूला** ति परिमण्डलत्तभावा सिप्पिकसम्बुकादयो[13] सत्ता।

१. सब्बं दुकतिकेहि—सी०, रो०।
२. दीघा—स्या०।
३. नागादीनं—स्या०।
४. अनेकयोजनसतप्पमाणापी—स्या०।
५. व—सी०, स्या० नत्थि।
६. मच्छादयो—सी०; कच्छपादयो—रो०।
७. ० सतप्परिमाणा—स्या०।
८. पञ्ञासयोजनानि—सी०, स्या०।
९. हत्थतला—स्या०।
१०. अस्सगोमहिससूकरादीनं—सी०, स्या०।
११. ०थूलमज्झिमेहि च—स्या०।
१२. ओकादयो—स्या०।
१३. मच्छकुम्मसिप्पिसम्बुकादयो—सी०, स्या०, रो०।

पञ्चमगाथावण्णना

५. एवं तीहि तिकेहि अनवसेसतो सत्ते दस्सेत्वा इदानि "**दिट्ठा वा ये**[१] **अदिट्ठा**" ति आदीहि तीहि दुकेहि पि ते सङ्गहेत्वा दस्सेति।

तत्थ **दिट्ठा** ति ये अत्तनो चक्खुस्स आपाथमागतवसेन दिट्ठपुब्बा। **अदिट्ठा** ति ये परसमुद्दपरसेलपरचक्कवाळादीसु ठिता। "ये वा[२] दूरे वसन्ति अविदूरे" ति इमिना पन दुकेन अत्तनो[३] अत्तभावस्स दूरे च अविदूरे च वसन्ते सत्ते दस्सेति, ते अपदद्विपदवसेन[४] वेदितब्बा। अत्तनो हि काये वसन्ता सत्ता अविदूरे, बहिकाये[५] वसन्ता सत्ता[६] दूरे। तथा अन्तोउपचारे वसन्ता अविदूरे, बहिउपचारे[७] वसन्ता दूरे। अत्तनो विहारे गामे जनपदे दीपे चक्कवाळे वसन्ता अविदूरे, परचक्कवाळे वसन्ता दूरे वसन्ती ति वुच्चन्ति[८]।

भूता ति जाता अभिनिब्बत्ता। ये[९] भूता एव[९], न पुन भविस्सन्ती ति सङ्खं गच्छन्ति, तेसं खीणासवानं एतं अधिवचनं। सम्भवमेसन्ती ति **सम्भवेसी**[१०]। अप्पहीनभवसंयोजनत्ता आयतिं पि R. 247 सम्भवं एसन्तानं सेखपुथुज्जनानमेतं अधिवचनं। अथ वा चतूसु योनीसु अण्डजजलाबुजा सत्ता याव अण्डकोसं[११] वत्थिकोसं च न भिन्दन्ति, ताव सम्भवेसी नाम, अण्डकोसं वत्थिकोसं च भिन्दित्वा बहि निक्खन्ता भूता नाम। संसेदजा ओपपातिका[१२] च पठमचित्तक्खणे B. 21 सम्भवेसी नाम, दुतियचित्तक्खणतो पभुति भूता नाम। येन वा[१३] इरियापथेन जायन्ति, याव ततो अञ्ञं न पापुणन्ति, ताव सम्भवेसी नाम[१४], ततो परं भूता ति।

१. येव—सी०, रो०। २. च—सी०, रो०।
३. अत्तना—स्या०। ४. अपाददिपादवसेन—सी०,स्या०,रो०।
५. बहि कायतो—सी०, स्या०,रो०। ६. सी०, रो० नत्थि।
७. बहि उपचारतो—सी०, स्या०, रो०। ८. वुच्चति—सी०, स्या०।
९-९. ये च भूता—सी०। १०. सम्भवेसिनो—स्या०, रो०।
११. अण्डकोसञ्च—स्या०, एवमेवं। १२. ओपपातिका—स्या०।
१३. वा तेन—सी०। १४. सी० नत्थि।

छट्ठगाथावण्णना

६. एवं भगवा "सुखिनो वा" ति आदीहि अड्ढतेय्याहि गाथाहि नानप्पकारतो तेसं भिक्खूनं हितसुखागमपत्थनावसेन[1] सत्तेसु मेत्ताभावनं दस्सेत्वा इदानि अहितदुक्खानागमपत्थनावसेना[2] पि तं दस्सेन्तो आह "**न परो परं निकुब्बेथा**" ति। एस पोराणो[3] पाठो[3], इदानि पन "परं ही" ति पि पठन्ति, अयं न सोभनो[4]।

तत्थ **परो** ति परजनो। **परं** ति परजनं। न **निकुब्बेथा** ति न वञ्चेय्य। **नातिमञ्ञेथा** ति न अतिक्कमित्वा मञ्ञेय्य। **कत्थची** ति कत्थचि ओकासे, गामे वा गामखेत्ते[5] वा ञातिमज्झे वा पूगमज्झे वा ति आदि। **नं** ति एतं। **कञ्ची** ति यं कञ्चि खत्तियं वा ब्राह्मणं वा गहट्ठं वा पब्बजितं वा सुखितं[6] वा दुक्खितं[7] वा ति आदि। **ब्यारोसना पटिघसञ्ञा** ति कायवचीविकारेहि ब्यारोसनाय च मनोविकारेन पटिघसञ्ञाय च। "ब्यारोसनाय पटिघसञ्ञाया" ति हि वत्तब्बे "ब्यारोसना पटिघसञ्ञा" ति वुच्चति, यथा "सम्मदञ्ञाय विमुत्ता" ति वत्तब्बे "सम्मदञ्ञा विमुत्ता" ति, यथा च अनुपुब्बसिक्खाय अनुपुब्बकिरियाय अनुपुब्बपटिपदाया" (अं०नि० ३.३०९) ति वत्तब्बे "अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा[8]" (अं० नि० ३.३०९) ति। **नाञ्ञमञ्ञस्स दुक्खमिच्छेय्या** ति अञ्ञमञ्ञस्स दुक्खं
R. 248 न इच्छेय्य। किं वुत्तं होति? न केवलं "सुखिनो वा खेमिनो वा[9] होन्तू" ति आदिमनसिकारवसेनेव मेत्तं भावेय्य, किन्तु[10] "अहोवत यो कोचि परपुग्गलो यं कञ्चि[11] परपुग्गलं वञ्चनादीहि निकतीहि न निकुब्बेथ,

1. हितसुखादिगमनपट्ठानवसेन—स्या०। 2. ० वसेन—सी०, रो०; ०नागमनपट्ठानवसेन– स्या०।
3-3. पोराणपाठो—सी०, स्या०, रो०।
4. सुन्दरो—स्या०। 5. खेत्ते—सी०, स्या०, रो०।
6. सुगतं—सी०, रो०। 7. दुग्गतं—सी०, रो०।
8. ० अञ्ञाराधना" ति—स्या०। 9. सी०, रो० नत्थि।
10. किं पन सी०, स्या०, रो०। 11. किञ्चि—स्या०, रो०।

जातिआदीहि च नवहि[१] मानवत्थूहि कत्थचि पदेसे कञ्चि[२] परपुग्गलं नातिमञ्ञेय्य, अञ्ञमञ्ञस्स च ब्यारोसनाय वा पटिघसञ्ञाय वा दुक्खं न इच्छेय्या" ति एवं पि मनसिकरोन्तो भावेय्या ति।

सत्तमगाथावण्णना

B. 212

७. एवं अहितदुक्खानागमपत्थनावसेन[३] अत्थतो मेत्ताभावनं दस्सेत्वा इदानि तमेव उपमाय दस्सेन्तो आह "**माता यथा नियंपुत्तं**[४]" ति।

तस्सत्थो—यथा माता नियं पुत्तं अत्तनि जातं ओरसं पुत्तं, तं च एकपुत्तमेव आयुसा अनुरक्खे, तस्स दुक्खागमप्पटिबाहनत्थं[५] अत्तनो आयुं पि चजित्वा तं अनुरक्खे, एवं पि सब्बभूतेसु इदं मेत्तारव्यं[६] मानसं[६] भावये, पुनप्पुनं जनये वड्ढये, तं च अपरिमाण-सत्तारम्मणवसेन एकस्मिं वा सत्ते अनवसेसफरणवसेन अपरिमाणं भावये[७] ति[७]।

अट्ठमगाथावण्णना

८. एवं सब्बाकारेन मेत्ताभावनं दस्सेत्वा इदानि तस्सेव वड्ढनं दस्सेन्तो आह "**मेत्तं च सब्बलोकस्मी**[८]" ति।

तत्थ मिज्जति तायति चा ति मित्तो, हितज्झासयताय सिनिय्हं ति[९], अहितागमतो[१०] रक्खति चा ति अत्थो। मित्तस्स भावो

१. नं—रो०; स्या० नत्थि।
२. यं किञ्चि—स्या०।
३. पट्ठनाबसेन—स्या०।
४. नियं—सी०।
५. दुक्खागमपटि०—सी०,स्या०,रो०।
६-६. मेत्तामानसं—सी०; मेत्तं मानसं—रो०।
७-७. भावये इति—सी०, स्या०, रो०।
८. सब्बलोकस्मि—सी०, स्या०, रो०।
९. सिनिय्हति—सी०, स्या०, रो०।
१०. अहितापगमतो—सी०; अहिता गमनतो—स्या०।

मेत्तं। सब्बलोकस्मी[1] ति अनवसेसे सत्तलोके। मनसि भवं ति **मानसं**। तञ्हि चित्तसम्पयुत्तत्ता एवं वुत्तं। **भावये** ति[2] वड्ढये। न अस्स परिमाणं ति **अपरिमाणं**, अप्पमाणसत्तारम्मणताय एवं वुत्तं। **उद्धं** ति उपरि, तेन अरूपभवं गण्हाति। **अधो** ति हेट्ठा, तेन कामभवं गण्हाति। **तिरियं** ति वेमज्झं, तेन रूपभवं गण्हाति। **असम्बाधं** ति सम्बाधविरहितं, भिन्नसीमं[3] ति वुत्तं होति। सीमा नाम पच्चत्थिको वुच्चति, तस्मिं पि पवत्तं ति अत्थो। **अवेरं** ति वेरविरहितं,
R. 249
अन्तरन्तरा पि वेरचेतनापातुभावविरहितं ति अत्थो[4]। **असपत्तं** ति विगतपच्चत्थिकं। मेत्ताविहारी हि पुग्गलो मनुस्सानं पियो होति, अमनुस्सानं पियो होति, नास्स कोचि पच्चत्थिको होति, तेनस्स तं मानसं विगतपच्चत्थिकत्ता असपत्तं ति वुच्चति। परियायवचनं हि[5] एतं[5], यदिदं पच्चत्थिको सपत्तो ति। अयं अनुपदतो **अत्थवण्णना**।

B. 213
अयं पनेत्थ **अधिप्पेतत्थदीपना**[6]—यदिदं[7] "एवं पि सब्बभूतेसु मानसं भावये अपरिमाणं" ति वुत्तं, तं चेतं अपरिमाणं मेत्तं[8] मानसं[8] सब्बलोकस्मिं भावये वड्ढये, वुड्ढिं[9] विरूळ्हिं वेपुल्लं गमये पापये[10]। कथं? उद्धं अधो च तिरियं च, उद्धं याव भवग्गा, अधो याव अवीचितो, तिरियं याव अवसेसदिसा। उद्धं वा[11] आरुप्पं[12], अधो कामधातुं, तिरियं रूपधातुं अनवसेसं फरन्तो। एवं भावेन्तो पि च तं यथा असम्बाधं अवेरं असपत्तं च होति, ततो[13] सम्बाधवेरसपत्तानं[14] अभावं[14] करोन्तो भावये। यं वा तं भावनासम्पदं पत्तं सब्बत्थ

१. सब्बलोकस्मि—सी०, स्या०, रो०।
२. इति—सी०, रो०।
३. भिन्नसामं—स्या०।
४. वुत्तं होति—स्या०।
५-५. हि तं एतं—स्या०।
६. अधिप्पेतत्थवण्णना—सी०, रो०।
७. यदेतं—सी०, स्या०, रो०।
८-८. मेत्तमानसं—सी०, रो०।
९. बुद्धि—सी०, रो०।
१०. स्या०, रो० नत्थि।
११. वा याव—सी०।
१२. अरूप्पं—स्या०।
१३. यथा—सी०, स्या०; तथा—स्या०, रो०।
१४-१४. सम्बाधवेरसपत्ताभावं—सी०, रो०।

ओकासलोकवसेन[१] असम्बाधं, अत्तनो परेसु आघातप्पटिविनयनेन[२] अवेरं, अत्तनि च परेसं आघातविनयनेन[३] असपत्तं होति, तं असम्बाधमवेरमसपत्तं[४] अपरिमाणं मेत्तं मानसं उद्धं अधो[५] तिरियं चा ति तिविधपरिच्छेदे[६] सब्बलोकस्मि भावये वड्ढये ति[७]।

नवमगाथावण्णना

९. एवं मेत्ताभावनाय वड्ढनं दस्सेत्वा इदानि तं भावनमनुयुत्तस्स[८] विहरतो इरियापथनियमाभावं दस्सेन्तो आह "**तिट्ठं चरं... पे०...अधिट्ठेय्या**" ति।

तस्सत्थो—एवमेतं मेत्तं[९] मानसं[९] भावेन्तो सो "निसीदति R. 250
पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाया" (दी० नि० २.२१७) ति आदीसुं विय इरियापथनियमं अकत्वा यथासुखं अञ्ञतरञ्ञतर-इरियापथबाधनविनोदनं[१०] करोन्तो तिट्ठं वा चरं वा निसिन्नो वा सयानो वा यावता विगतमिद्धो अस्स, अथ एतं मेत्ताझानसतिं[११] अधिट्ठेय्य।

अथ वा एवं मेत्ताभावनाय वड्ढनं दस्सेत्वा इदानि वसीभावं दस्सेन्तो आह "**तिट्ठं चरं**" ति। वसिप्पत्तो[१२] हि तिट्ठं वा चरं वा निसिन्नो[१३] वा सयानो वा[१३] यावता इरियापथेन एतं मेत्ताझानसतिं अधिट्ठातुकामो होति, अथ वा तिट्ठं वा चरं वा...पे०[१४]...सयानो वा[१४] ति न तस्स ठानादीनि अन्तरायकरानि होन्ति, अपि च खो यावता

१. ओकासलाभवसेन—सी०, रो०।
२. आघातपटिविनयेन—सी०,स्या०,रो०।
३. आघातपटिविनयेन—सी०,स्या०,रो०।
४. असम्बाधं अवेरं असपत्तं—सी०, स्या०, रो०।
५. ० च—स्या०।
६. ० परिच्छेदेन—स्या०।
७. इति—सी०, स्या०, रो०।
८. भावनं अनुयुत्तस्स—स्या०, रो०।
९-९. मेत्तामानसं—सी०।
१०. अञ्ञातरञ्ञातरं इरिया०—स्या०।
११. मेत्तज्झानसतिं—सी०, रो०; मेत्तज्झानस्सतिं—स्या०। एवमेव।
१२. वसिभावप्पत्तो—स्या०।
१३-१३. ...पे०...—सी०, रो०।
१४-१४. सी०,रो० नत्थि।

एतं[1] मेत्ताझानसतिं अधिट्ठातुकामो होति, तावता विगतमिद्धो हुत्वा अधिट्ठाति, नत्थि तस्स तत्थ[2] दन्धायितत्तं। तेनाह "**तिट्ठं चरं निसिन्नो व**[3], **सयानो**[4] **यावता' स्स**[4] **वितमिद्धो**[5]। **एतं सतिं अधिट्ठेय्या**" ति।

B. 214 तस्सायमधिप्पायो[6]—यं तं "मेत्तं च सब्बलोकस्मि[7], मानसं भावये" ति वुत्तं, तं यथा भावेय्य[8], यथा ठानादीसु यावता इरियापथेन ठानादीनि वा अनादियित्वा यावता एतं मेत्ताझानसतिं अधिट्ठातुकामो अस्स, तावता विगतमिद्धो व हुत्वा एतं सतिं अधिट्ठेय्या ति।

एवं मेत्ताभावनाय वसीभावं दस्सेन्तो "एतं सतिं अधिट्ठेय्या" ति तस्मिं मेत्ताविहारे नियोजेत्वा इदानि तं विहारं थुनन्तो आह "**ब्रह्ममेतं विहारमिधमाहू**" ति।

तस्सत्थो—य्वायं "सुखिनो वा खेमिनो वा होन्तू" ति आदिं कत्वा याव "एतं सतिं अधिट्ठेय्या" ति वण्णितो मेत्ताविहारो, एतं चतूसु दिब्बब्रह्मअरियइरियापथविहारेसु निद्दोसत्ता[9] अत्तनो पि परेसं पि अत्थकरत्ता च इध अरियस्स धम्मविनये ब्रह्मविहारमाहु
R. 251 सेट्ठविहारमाहू ति, यतो सततं समितं अब्बोकिण्णं तिट्ठं चरं निसिन्नो वा सयानो वा यावतास्स[10] विगतमिद्धो, एतं सतिं अधिट्ठेय्या ति।

दसमगाथावण्णना

१०. एवं भगवा तेसं भिक्खूनं नानप्पकारतो मेत्ताभावनं दस्सेत्वा इदानि यस्मा मेत्ता सत्तारम्मणत्ता अत्तदिट्ठिया आसन्ना

१. एवं तं—सी०, रो०। २. सी०, रो० नत्थि।
३. वा—सी०, स्या०, रो०। ४-४. सयानो वा यावतस्स—सी०, स्या०, रो०।
५. विगतमिद्धो—सी०, स्या०, रो०। ६. तस्साधिप्पायो—सी०, रो०।
७. सब्बलोकस्मिं—सी०, स्या०, रो० ८. भावये—सी०, स्या०, रो०।
९. निद्दोसत्ता—सी०। १०. यावतस्स—सी०, स्या०, रो०।

होति, तस्मा दिट्ठिगहननिसेधनमुखेन तेसं भिक्खूनं तदेव मेत्ताझानं[१] पादकं कत्वा अरियभूमिप्पत्तिं दस्सेन्तो[२] "**दिट्ठिं च अनुपगम्मा**[३]" ति इमाय गाथाय देसनं समापेसि।

तस्सत्थो—य्वायं "ब्रह्ममेतं विहारमिधमाहू[४]" ति संवण्णितो मेत्ताझानविहारो, ततो वुट्ठाय ये तत्थ वितक्कविचारादयो धम्मा, ते तेसं च वत्थादिअनुसारेन[५] रूपधम्मे परिग्गहेत्वा[६] इमिना नामरूपपरिच्छेदेन "सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं, न यिध सत्तूपलब्भती" (सं० नि० १.१३५) ति एवं दिट्ठिं च अनुपगम्म अनुपुब्बेन लोकुत्तरसीलेन सीलवा हुत्वा लोकुत्तरसीलसम्पयुत्तेनेव सोतापत्तिमग्गसम्मादिट्ठिसञ्ञितेन दस्सनेन सम्पन्नो ततो परं योपायं वत्थुकामेसु[७] गेधो किलेसकामो अप्पहीनो होति, तं पि सकदागामिअनागामिमग्गेहि[८] तनुभावेन[९] अनवसेसप्पहानेन च कामेसु गेधं विनेय्य विनयित्वा B. 215 वूपसमेत्वा **न हि जातु गब्भसेय्यं पुन रे ति** एकंसेनेव पुन गब्भसेय्यं न एति, सुद्धावासेसु निब्बत्तित्वा तत्थेव अरहत्तं पापुणित्वा परिनिब्बाती ति।

एवं भगवा देसनं समापेत्वा ते भिक्खू आह "गच्छथ भिक्खवे तस्मिं येव वनसण्डे विहरथ, इमं च सुत्तं मासस्स अट्ठसु धम्मस्सवनदिवसेसु घण्डि[१०] आकोटेत्वा उस्सारेथ, धम्मकथं करोथ साकच्छथ अनुमोदथ, इदमेव कम्मट्ठानं आसेवथ भावेथ बहुलीकरोथ, ते पि वो R. 252 अमनुस्सा तं भेरवारम्मणं न दस्सेस्सन्ति, अञ्ञदत्थु अत्थकामा हितकामा भविस्सन्ती" ति। ते "साधू" ति भगवतो पटिस्सुणित्वा[११] उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थ गन्त्वा तथा

१. मेत्तज्झानं—सी०, स्या०, रो०, एवमेव। २. ० आहं—स्या०।
३. अनुपग्गम्मा—सी, स्या०, रो०। ४. विहारं इधमाहूति—सी०, स्या०, रो०।
५. वदट्ठादिअनुसारेन—सी०, स्या०, रो०। ६. ० अरूपधम्मे परिगहित्वा—स्या० अधिको पाठो।
७. वत्थुकामे—सी०।
८. ० च—स्या०। ९. पतनुभावेन—रो०।
१०. गण्डि—सी०, स्या०, रो०। ११. पटिस्सुत्वा—सी०, रो०।

अकंसु । देवतायो च[1] "भदन्ता अम्हाकं अत्थकामा हितकामा" ति पीतिसोमनस्सजाता हुत्वा सयमेव सेनासनं सम्मज्जन्ति, उण्होदकं पटियादेन्ति, पिट्ठिपरिकम्मं[2] पादपरिकम्मं करोन्ति, आरक्खं संविदहन्ति । ते पि भिक्खू तमेव[3] मेत्तं भावेत्वा तमेव च पादकं कत्वा विपस्सनं आरभित्वा सब्बे[4] तस्मिं येव अन्तोतेमासे अग्गफलं अरहत्तं पापुणित्वा महापवारणाय विसुद्धिपवारणं पवारेसुं ति ।

एवं पि अत्थकुसलेन तथागतेन,
धम्मिस्सरेन कथितं करणीयमत्थं ।
कत्वानुभुय्य परमं हदयस्स सन्ति,
सन्तं पदं अभिसमेन्ति समत्तपञ्ञा ।।
तस्मा हि तं अमतमब्भुतमरियकन्तं,
सन्तं पदं अभिसमेच्च विहरितुकामो[5] ।
विञ्ञू जनो विमलसीलसमाधिपञ्ञा-
भेदं करेय्य सततं करणीयमत्थं ति ।।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकपाठट्ठकथाय
मेत्तसुत्तवण्णना निट्ठिता ।

१. सी०, रो० नत्थि । २. ०करोन्ति—स्या० ।
३. तथेव—सी०, स्या०, रो० । ४. सब्बेव—सी०, रो० ।
५. विहातुकामो—सी०, स्या०, रो० ।

निगमनकथा

एत्तावता च यं वुत्तं— B. 216

"उत्तमं वन्दनेय्यानं[1], वन्दित्वा रतनत्तयं ।
खुद्दकानं करिस्सामि, केसञ्चि अत्थवण्णनं" ति ॥

तत्थ सरण सिक्खापदद्वत्तिंसाकारकुमारपञ्ह मङ्गलसुत्त रतनसुत्त-तिरोकुड्डनिधिकण्डमेत्तसुत्तवसेन नवप्पभेदस्स **खुद्दकपाठस्स** ताव अत्थवण्णना कता होति । तेनेतं वुच्चति—

"इमं खुद्दकपाठस्स, करोन्तेनत्थवण्णनं । R. 253
सद्धम्मट्ठितिकामेन, यं पत्तं कुसलं मया ॥
तस्सानुभावतो खिप्पं, धम्मे अरियप्पवेदिते ।
वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं, पापुणातु अयं जनो" ति ॥

परमविसुद्ध[2]सद्धाबुद्धिवीरियगुणप्पटिमण्डितेन सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणसमुदयसमुदितेन सकसमयसमयन्तरगहनज्झोगाहणसमत्थेन पञ्ञावेय्यत्तियसमन्नागतेन तिपिटकपरियत्तिधम्मप्पभेदे[3] साट्ठकथे सत्थुसासने अप्पटिहतञाणप्पभावेन महावेय्याकरणेन करणसम्पत्तिजनितसुखविनिग्गतमधुरोदारवचनलावण्णयुत्तेन युत्तमुत्तवादिना वादीवरेन[4] महाकविना छळभिञ्ञापटिसम्भिदादिप्पभेदगुणप्पटिमण्डिते उत्तरिमनुस्सधम्मे सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं थेरवंसप्पदीपानं थेरानं महाविहारवासीनं वंसालङ्कारभूतेन विपुलविसुद्धबुद्धिना **बुद्धघोसो** ति गरूहि गहितनामधेय्येन[5] थेरेन कता अयं **परमत्थजोतिका**[6] नाम खुद्दकपाठवण्णना[7]—

१. वन्दनीयानं—सी० ।
२. ०विसुद्धि०—सी०, स्या० ।
३. ०परियत्तिप्पभेदे—सी०, स्या०, रो० ।
४. वादिवरेन—सी०, स्या० ।
५. कतमानधेय्येन—स्या० ।
६. स्या०, रो० नत्थि ।
७. खुद्दकपाठट्ठकथा—सी० ।

ताव तिट्ठतु लोकस्मिं, लोकनित्थरणेसिनं ।
दस्सेन्ती कुलपुत्तानं, नयं सीलादिसुद्धिया[१] ।।
याव बुद्धो ति नामं पि, सुद्धचित्तस्स तादिनो ।
लोकम्हि लोकजेट्ठस्स, पवत्तति महेसिनो ति ।।

परमत्थजोतिकाय खुद्दकट्ठकथाय
खुद्दकपाठवण्णना[२] निट्ठिता ।

---

१. सीलविसुद्धिया—सी० । २. वण्णना—स्या० ।

अनुक्कमणिका

इ

प

———

524+16